प्रेमचंद

तीन नाटक

कर्बला, संग्राम और प्रेम की वेदी

[हिन्दीकोश]

Tittle: Teen Natak (Karbala, Sangram Aur Prem ki Vedi)

Author: Premchand

Release Date: 11 Dec 2020

Edition: 1.0

Language: Hindi

While every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher assumes no responsibility for errors or omissions, or for damages resulting from the use of the information contained herein.

Suggestions and corrections are welcome.

Visit https://www.hindikosh.in for more

सूची

[कर्बला]

[संग्राम]

[प्रेम की वेदी]

कर्बला

भूमिका

प्रायः सभी जातियों के इतिहास में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं, जो साहित्यिक कल्पना को अनंत काल तक उत्तेजित करती रहती हैं। साहित्यिक-समाज नित नये रूप में उनका उल्लेख किया करता है, छंदों में, गीतों में, निबंधों में, लोकोक्तियों में, व्याख्यानों में बार-बार उनकी आवृत्ति होती रहती है, फिर भी नये लेखकों के लिए गुंजाइश रहती है। हिन्दू-इतिहास में रामायण और महाभारत की कथाएँ ऐसी ही घटनाएँ है। मुसलमानों के इतिहास में कर्बला के संग्राम को भी वही स्थान प्राप्त है। उर्दू और फारसी के साहित्य पर दफ्तर के दफ्तर भरे पड़े हैं, यहाँ तक कि जैसे हिन्दी-साहित्य के कितने कवियों ने राम और कृष्ण की महिमा गाने में अपना जीवन व्यतीत कर दिया, उसी तरह उर्दू और फारसी में कितने ही कवियों ने केवल मर्सिया कहने में ही जीवन समाप्त कर दिया। किन्तु, जहाँ तक हमारा ज्ञान है, अब

तक, किसी भाषा में इस विषय पर नाटक की रचना शायद नहीं हुई। हमने हिन्दी में यह ड्रामा लिखने का साहस किया है।

कितने खेद और लज्जा की बात है कि कई शताब्दियों से मुसलमानों के साथ रहने पर भी अभी तक हम लोग प्रायः उनके इतिहास से अनभिज्ञ हैं। हिन्दू-मुसलिम वैमनस्य का एक कारण यह भी है कि हम हिन्दुओं को मुसलिम महापुरुषों के सच्चरित्रों का ज्ञान नहीं। जहाँ किसी मुसलमान बादशाह का जिक्र आया कि हमारे सामने औरंगज़ेब की तसवीर खिंच गयी। लेकिन अच्छे और बुरे चरित्र सभी समाजों में सदैव होते आये हैं, और होते रहेंगे। मुसलमानों में भी बड़े-बड़े दानी, बड़े-बड़े धर्मात्मा और बड़े-बड़े न्यायप्रिय बादशाह हुए है। किसी जाति के महान पुरुषों के चरित्रों का अध्ययन उस जाति के साथ आत्मीयता के सम्बन्ध का प्रवर्तक होता है, इसमें सन्देह नहीं।

नाटक दृश्य होते है, और पाठ्य भी। पर, हमारा विचार है, दोनों प्रकार के नाटकों में कोई रेखा नहीं खींची जा सकती। अच्छे अभिनेताओं द्वारा खेले जाने पर प्रत्येक नाटक मनोरंजक और उपदेशप्रद हो सकता है। नाटक का मुख्य अंग उसकी भाव-प्रधानता है, और सभी बातें गौण हैं। जनता की वर्तमान रुचि से किसी नाटक के अच्छे या बुरे होने का निश्चय करना न्याय-संगत नहीं। नौटंकी और धनुष-यज्ञ देखने के लिए लाखों की संख्या में

जनता टूट पड़ती है, पर उसकी यह सुरुचि आदर्श नहीं कही जा सकती। हमने यह नाटक खेले जाने के लिए नहीं लिखा, मगर हमारा विश्वास है कि यदि कोई इसे खेलना चाहें, तो बहुत थोड़ी काट-छाँट से खेल भी सकते हैं।

यह ऐतिहासिक और धार्मिक नाटक है। ऐतिहासिक नाटकों में कल्पना के लिए बहुत संकुचित क्षेत्र रहता है। घटना जितनी ही प्रसिद्ध होती है, उतनी ही कल्पना-क्षेत्र की संकीर्णता भी बढ़ जाती है। यह घटना इतनी प्रसिद्ध है कि इसकी एक-एक बात, इसके चरित्रों का एक-एक शब्द हजारों बार लिखा जा चुका है। आप उस वृत्तांत से जौ-भर आगे-पीछे नहीं जा सकते। हमने ऐतिहासिक आधार को कही नहीं छोड़ा है। हाँ, जहाँ किसी रस की पूर्ति के लिए कल्पना का आवश्यकता पड़ी है, वहाँ अप्रसिद्ध और गौण चरित्रों द्वारा उसे व्यक्त किया है। पाठक इसमें हिन्दुओं को प्रवेश करते देखकर चकित होंगे, परन्तु वह हमारी कल्पना नहीं है, ऐतिहासिक घटना है। आर्य लोग वहाँ कैसे और कब पहुँचे, यह विवाद-ग्रस्त है। कुछ लोगों का खयाल है कि महाभारत के बाद अश्वत्थामा के वंशधर वहाँ जा बसे थे। कुछ लोगों का यह भी मत है कि ये लोग उन हिन्दुओं की सन्तान थे, जिन्हें सिकन्दर यहाँ से कैद के ले गया। कुछ हो, इस बात के

ऐतिहासिक प्रमाण है कि कुछ हिन्दू भी हुसैन के साथ कर्बला के संग्राम में सम्मिलित होकर वीर-गति को प्राप्त हुए थे।

इस नाटक में स्त्रियों के अभिनय बहुत कम मिलेंगे। महाशय डी. एल. राय ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में स्त्री-चरित्र की कमी को कल्पना से पूरा किया है। उनके नाटक पूर्ण रूप से ऐतिहासिक हैं। कर्बला ऐतिहासिक ही नहीं, धार्मिक भी है, इसलिए इसमें किसी स्त्री-चरित्र की सृष्टि नहीं की जा सकी। भय था कि ऐसा करने से संभवतः हमारे मुसलमान-बन्धुओं को आपत्ति होगी।

यह नाटक दुःखांत (Tragedy) है। दुःखांत नाटकों के लिए आवश्यक है कि उनके नायक कोई वीरात्मा हों, और उनका शोकजनक अन्त उनके धर्म और न्याय-पूर्ण विचारों और सिद्धान्तों के फलस्वरूप हो। नायक की दारुण कथा दुःखान्त नाटकों के लिए पर्याप्त नहीं है। उसकी विपत्ति पर हम शोक नहीं करते, वरन् उसकी नैतिक विजय पर आनन्दित होते हैं। क्योंकि वहाँ नाटक को प्रत्यक्ष हार वस्तुतः उसकी विजय होती है। दुःखान्त नाटकों में शोक और हर्ष के भावों का विचित्र रूप से समावेश हो जाता है। हम नायक को प्राण त्यागते देखकर आँसू बहाते हैं, किन्तु वह आँसू करुणा के नहीं, विजय के होते है। दुःखान्त नाटक आत्म-बलिदान की कथा है, और आत्म-बलिदान केवल करुणा का वस्तु नहीं, गौरव की भी वस्तु हैं। हाँ, नायक का

वीरात्मा होना परम आवश्यक है, जिससे हमें उसकी अविचल सिद्धान्त-प्रियता और अदम्य सत्साहस पर गौरव और अभिमान हो सके।

नाटक में संगीत का अंश होना आवश्यक है, किन्तु इतना नहीं, जो अस्वाभाविक हो जाय। हम महान् विपत्ति और महान् सुख, दोनों की दशाओं में रोते और गाते हैं। हमने ऐसे ही अवसरों पर गान की आयोजना की है। मुसलिम पात्रों के मुख से ध्रुपद और विहाग कुछ बेजोड़-सा मालूम होता है, इसलिए हमने उर्दू-कवियों की गजलें दे दी है। कहीं-कहीं अनीस के मर्सियों में से दो-चार बन्द उद्धृत कर लिये है। इसके लिए हम उन महानुभावों के ऋणी हैं। कविवर श्रीधरजी पाठक की एक भारत-स्तुति भी ली गयी है। अतएव हम उन्हें भी धन्यवाद देते है।

इस नाटक की भाषा के विषय में भी कुछ निवेदन करना आवश्यक है। इसकी भाषा हिन्दी-साहित्य की भाषा नहीं है। मुसलमान-पात्रों से शुद्ध हिन्दी भाषा का प्रयोग कराना कुछ स्वाभाविक न होता। इसलिए हमने वही भाषा रखी है, जो साधारणतः सभ्य-समाज में प्रयोग की जाती है, जिसे हिन्दू और मुसलमान, दोनों ही बोलते और समझते हैं।

~प्रेमचंद।

कथा-सार

1

हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद कुछ ऐसी परिस्थिति हुई कि ख़िलाफ़त का पद उनके चचेरे भाई और दामाद हजरत अली को न मिलकर उमर फ़ारूक़ को मिला। हजरत मुहम्मद ने स्वयं ही व्यवस्था की थी कि ख़लीफ़ा सर्व-सम्मति से चुना जाया करे, और सर्व-सम्मति से उमर फ़ारूक़ चुने गये। उनके बाद अबू बकर चुने गये। अबू बकर के बाद यह पद उसमान को मिला। उसमान अपने कुटुम्बवालों के साथ पक्षपात करते थे, और उच्च राजकीय पद उन्हीं को दे रखे थे। उनकी इस अनीति से बिगड़कर कुछ लोगों ने उनकी हत्या कर डाली। उसमान के सम्बन्धियों को सन्देह हुआ कि उनका हत्या हज़रत अली की प्रेरणा से हुई है। अतएव उसमान के बाद अली ख़लीफा तो हुए, किन्तु उसमान के एक आत्मीय सम्बन्धी ने, जिसका नाम मुआबिया था, और शाम-प्रान्त का सूबेदार था, अली के हाथों पर

बैयत न की; अर्थात् अली को ख़लीफा नहीं स्वीकार किया। अली ने मुआबिया को दंड देने के लिए सेना नियुक्त की। लड़ाइयाँ हुई, किन्तु पाँच वर्ष की लगातार लड़ाई के बाद अन्त को मुआबिया की ही विजय हुई। हज़रत अली अपने प्रतिद्वन्द्वी के सामने कूट-नीतिज्ञ न थे। वह अभी मुआबिया को दबाने के लिए एक नयी सेना संगठित करने की चिन्ता में ही थे कि एक हत्यारे ने उनका वध कर डाला।

मुआबिया ने घोषणा की थी कि अपने बाद मैं अपने पुत्र को ख़लीफ़ा नामज़द न करूँगा, वरन् हज़रत अली के ज्येष्ठ पुत्र हसन को ख़लीफ़ा बनाऊँगा। किन्तु जब उसका अन्त-काल निकट आया, तो उसने अपने पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा बना दिया। हसन इसके पहले ही मर चुके थे। उनके छोटे भाई हज़रत हुसैन ख़िलाफ़त के उम्मीदवार थे, किन्तु मुआबिया ने यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी बनाकर हुसैन को निराश कर दिया।

ख़लीफ़ा हो जाने के बाद यज़ीद को सबसे अधिक भय हुसैन का था, क्योंकि वह हज़रत अली के बेटे और हज़रत मुहम्मद के नवासे (दौहित्र) थे। उनकी माता का नाम फ़ातिमा ज़ोहरा था, जो मुस्लिम विदुषियों में सबसे श्रेष्ठ थीं। हुसैन बड़े विद्वान्, सच्चरित्र, शान्त-प्रकृति, नम्र, सहिष्णु, ज्ञानी, उदार और धार्मिक पुरुष थे। वह वीर थे, ऐसे वीर कि अरब में कोई उनकी समता का न था।

किन्तु वह राजनीतिक छल-प्रपंच और कुत्सित व्यवहारों से अपरिचित थे। यज़ीद इन सब बातों में निपुण था। उसने अपने पिता अमीर मुआबिया से कूटनीति की शिक्षा पायी थी। उसके गोत्र (क़बीले) के सब लोग कूट-नीति के पंडित थे। धर्म को वे केवल स्वार्थ का एक साधन समझते थे। भोग-विलास और ऐश्वर्य को उनको चसका पड़ चुका था। ऐसे भोग-लिप्सु प्राणियों के सामने सत्यव्रती हुसैन की भला कब चल सकती थी, और चली भी नहीं।

यज़ीद ने मदीने के सूबेदार को लिखा कि तुम हुसैन से मेरे नाम पर बैयत, अर्थात् उनसे मेरे ख़लीफ़ा होने की शपथ लो। मतलब यह कि वह गुप्त रीति से उन्हें क़त्ल करने का षडयंत्र रचने लगा। हुसैन ने बैयत लेने से इनकार किया। यज़ीद ने समझ लिया कि हुसैन बग़ावत करना चाहते हैं, अतएव वह उनसे लड़ने के लिए शक्ति-संचय करने लगा। कूफ़ा-प्रान्त के लोगों को हुसैन से प्रेम था। वे उन्हीं को अपना ख़लीफ़ा बनाने के पक्ष में थे। यज़ीद को जब यह बात मालूम हुई, तो उसने कूफ़ा के नेताओं को धमकाना और नाना प्रकार के कष्ट देना आरम्भ किया। कूफ़ा-निवासियों ने हुसैन के पास, जो उस समय मदीने से मक्के चले गये थे, संदेशा भेजा कि आप आकर हमें इस संकट से मुक्त कीजिए। हुसैन ने इस संदेश का कुछ उत्तर न दिया, क्योंकि वह

राज्य के लिए ख़ून बहाना नहीं चाहते थे। इधर कूफ़ा में हुसैन के प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उनके नाम पर बैयत करने लगे। थोड़े ही दिनों में इन लोगों की संख्या २० हजार तक पहुँच गयी। इस बीच में इन्होंने हुसैन की सेवा में दो संदेश और भेजे, किन्तु हुसैन ने उनका भी कुछ उत्तर नहीं दिया। अन्त में कूफ़ा वालों ने एक अत्यन्त आग्रह-पूर्ण पत्र लिखा, जिसमें हुसैन को हज़रत मुहम्मद और दीन-इस्लाम के निहोरे अपनी सहायता करने को बुलाया। उन्होंने बहुत अनुनय के बाद लिखा था — "अगर आप न आये, तो कल क़यामत के दिल अल्लाह-ताला के हुज़ूर में हम आप पर दावा करेंगे कि या इलाही, हुसैन ने हमारे ऊपर अत्याचार किया था, क्योंकि हमारे ऊपर अत्याचार होते देखकर यह ख़ामोश बैठ रहे। और, सब लोग फ़रियाद करेंगे कि ऐ ख़ुदा, हुसैन से हमारा बदला दिला दे। उस समय आप क्या जवाब देंगे, और ख़ुदा को क्या मुँह दिखायेंगे?"

धर्म-प्राण हुसैन ने जब यह पत्र पढ़ा तो, उनके रोएँ खड़े हो आये, और उनका हृदय जल के समान तरल हो गया। उनके गालों पर धर्मानुराग के आँसू बहने लगे। उन्होंने तत्काल उन लोगों के नाम एक आश्वासन-पत्र लिखा — "मैं शीघ्र ही तुम्हारी सहायता को आऊँगा।" और अपने चचेरे भाई मुस्लिम के हाथ उन्होंने यह पत्र कूफ़ा वालों के पास भेज दिया।

मुस्लिम मार्ग की कठिनाइयाँ झेलते हुए कूफ़ा पहुँचे। उस समय कूफ़ा का सूबेदार एक शान्त पुरुष था। उसने लोगों को समझाया — “नगर में कोई उपद्रव न होने पाये। मैं उस समय तक किसी से न बोलूँगा, जब तक कोई मुझे क्लेश न पहुँचाएगा।”

जिस समय यज़ीद को मुस्लिम के कूफ़ा पहुँचने का समाचार मिला, तो उसने एक दूसरे सूबेदार को कूफ़ा में नियुक्त किया, जिसका नाम 'ओबैद बिन-ज़ियाद' था। यह बड़ा निठुर और कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। इसने आते-ही-आते कूफ़ा में एक सभा की, जिसमें घोषणा की गयी कि “जो लोग यज़ीद के नाम बैयत लेंगे, उन पर ख़लीफ़ा की कृपा-दृष्टि होगी; परन्तु जो लोग हुसैन के नाम पर बैयत लेंगे, उनके साथ किसी तरह की रियायत न की जायगी। हम उसे सूली पर चढ़ा देंगे, और उसकी जागीर या वृत्ति ज़ब्त कर लेंगे।”

इस घोषणा ने यथेष्ट प्रभाव डाला। कूफ़ा वालों के हृदय काँप उठे। ज़ियाद को वे भली-भाँति जानते थे। उस दिन जब मुस्लिम भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए, तो किसी ने उनका साथ न दिया। जिन लोगों ने पहले हुसैन की सेवा में आवेदन-पत्र भेजा था, उनका कहीं पता न था। सभी के साहस छूट गये थे। मुस्लिम ने एक बार कुछ लोगों की सहायता से ज़ियाद के घेर

लिया। किन्तु ज़ियाद ने अपने एक विश्वासपात्र सेवक के मकान की छत पर चढ़कर लोगों को यह संदेशा दिया कि "जो लोग यज़ीद की मदद करेंगे, उन्हें जागीर दी जायगी; और जो लोग बग़ावत करेंगे, उन्हें ऐसा दंड दिया जायगा कि कोई उनके नाम को रोनेवाला भी न रहेगा।" नेतागण यह धमकी सुनकर दहल उठे, और मुस्लिम को छोड़कर दस-दस, बीस-बीस आदमी बिदा होने लगे। यहाँ तक कि मुस्लिम वहाँ अकेला रह गया। विवश हो उसने एक वृद्धा के घर में शरण लेकर अपनी जान बचायी। दूसरे दिन जब ओबैदुल्लाह को मालूम हुआ कि मुस्लिम अमुक वृद्धा के घर में छिपा है, तो उसने तीन सौ सिपाहियों को उसे गिरफ़्तार करने के लिए भेजा। असहाय मुस्लिम ने तलवार खींच ली और शत्रुओं पर टूट पड़े। पर वह अकेले कर ही क्या सकते थे। थोड़ी देर में ज़ख़्मी होकर गिर पड़े। उस समय सूबेदार से उनकी जो बातें हुईं, उनसे विदित होता है कि वह कैसे वीर पुरुष थे। गवर्नर उनकी भय-शून्य बातों से और भी गरम हो गया। उसने उन्हें तुरन्त क़त्ल करा दिया।

हुसैन, अपने पूज्य पिता की भाँति, साधुओं का-सा सरल जीवन व्यतीत करने के लिए बनाये गये थे। कोई चतुर मनुष्य होता, तो उस समय दुर्गम पहाड़ियों में छिपता, और यमन के प्राकृतिक दुर्गों में बैठकर चारों ओर से सेना एकत्र करता। देश में उनका जितना मान था, और लोगों को उन पर जितनी भक्ति थी, उसके देखते बीस-पचीस हज़ार सेना एकत्र कर लेना उनके लिए कठिन न था। किन्तु वह अपने को पहले ही से हारा हुआ समझने लगे। यह सोच कर वह कहीं भागते न थे। उन्हें भय था कि शत्रु मुझे अवश्य खोज लेगा। वह सेना जमा करने का भी प्रयत्न नहीं करते थे। यहाँ तक कि जो लोग उनके साथ थे, उन्हें भी अपने पास से चले जाने की सलाह देते थे।

इतना ही नहीं, उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं ख़लीफ़ा बनना चाहता हूँ। वह सदैव यही कहते रहे कि मुझे लौट जाने दो, मैं किसी से लड़ाई नहीं करना चाहता। उनकी आत्मा इतनी उच्च थी कि वह सांसारिक राज्य-भोग के लिए संग्राम-क्षेत्र में उतरकर उसे कलुषित नहीं करना चाहते थे। उनके जीवन का उद्देश्य आत्मशुद्धि और धार्मिक जीवन था। वह कूफ़ा में जाने को इसलिए सहमत नहीं हुए थे कि वहाँ अपनी ख़िलाफ़त स्थापित करें, बल्कि इसलिए कि वह अपने सहधर्मियों की विपत्ति को देख न सकते थे. वह कूफ़ा जाते समय अपने सब सम्बन्धियों से स्पष्ट

शब्दों में कह गये थे कि मैं शहीद होने जा रहा हूँ। यहाँ तक कि वह एक स्वप्न का भी उल्लेख करते थे, जिसमें उनके नाना ने उनको स्वर्ग आने का निमंत्रण दिया था, और वह उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी टेक केवल यह थी कि मैं यज़ीद के नाम पर बैयत न करूँगा। इसका कारण यही थी कि यज़ीद मद्यप, व्यभिचारी और इस्लाम-धर्म के नियमों का पालन न करनेवाला था। यदि यज़ीद ने उनकी हत्या कराने की चेष्टा न की होती, तो वह शान्ति-पूर्वक मदीने में जीवन-भर पड़े रहते। पर समस्या यह थी कि उनके जीवित रहते हुए यज़ीद को अपना स्थान सुरक्षित नहीं मालूम हो सकता था। उसे निष्कंटक राज्य-भोग के लिए हुसैन का उसके मार्ग से सदा के लिए हट जाना परम आवश्यक था। और इस हेतु कि ख़िलाफ़त एक धर्म-प्रधान संस्था थी, अतः यज़ीद को हुसैन के रणक्षेत्र में आने का उतना भय न था, जितना उनके शान्ति-सेवन का। क्योंकि शान्ति-सेवन से जनता पर उनका प्रभाव बढ़ता जाता था। इसी लिए यज़ीद ने यह भी कहा था कि हुसैन का केवल उसके नाम पर बैयत लेना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें दरबार में आना चाहिए। यज़ीद को उनकी बैयत पर विश्वास न था। वह उन्हें किसी भाँति अपने दरबार में बुलाकर उनकी जीवन-लीला को समाप्त कर देना

चाहता था। इसलिए यह धारणा कि हुसैन अपनी ख़िलाफ़त क़ायम करने के लिए कूफ़ा गये, निर्मूल सिद्ध होती है।

वह कूफ़ा इस लिए गये कि अत्याचार-पीड़ित कूफ़ा-निवासियों की सहायता करें। उन्हें प्राण-रक्षा के लिए कोई जगह दिखाई न देती थी। यदि वह ख़िलाफ़त के उद्देश्य से कूफ़ा जाते, तो अपने कुटुम्ब के केवल बहत्तर प्राणियों के साथ न जाते, जिसमें बाल-वृद्ध सभी थे। कूफ़ा वालों पर कितना ही विश्वास होने पर भी वह अपने साथ अधिक मनुष्यों को लाने का प्रयत्न करते। इसके सिवा उन्हें यह बात पहले से ज्ञात थी कूफ़ा के लोग अपने वचनों पर दृढ रहने वाले नहीं हैं। उन्हें कई बार इसका प्रमाण मिल चुका था कि थोड़े-से प्रलोभन पर भी वे अपने वचनों से विमुख हो जाते हैं। हुसैन के इष्ट-मित्रों ने उनका ध्यान कूफ़ा वालों की इस दुर्बलता की ओर खींचा भी, पर हुसैन ने उनकी सलाह न मानी। वह शहादत का प्याला पीने के लिए, अपने धर्म की वेदी पर बलि देने के लिए, विकल हो रहे थे। इससे हितैषियों के मना करने पर भी वह कूफ़ा चले गये। दैव-संयोग से यह तिथि वही थी, जिस दिन कूफ़ा में मुस्लिम शहीद हुए थे। अट्ठारह दिन की कठिन यात्रा के बाद वह 'नाहनेवा' के समीप, कर्बला के मैदान में पहुँचे, जो फ़रात नदी के किनारे था। इस मैदान में न कोई बस्ती

थी, और न कोई वृक्ष। कूफ़ा के गवर्नर की आज्ञा से वह इसी निर्जन और निर्जल स्थान में डेरे डालने को विवश किये गये।

शत्रुओं की सेना हुसैन के पीछे-पीछे मक्के से ही आ रही थी। और सेनाएँ भी चारों ओर फैला दी गयी थीं कि हुसैन किसी गुप्त मार्ग से कूफ़ा न पहुँच जायँ। कर्बला पहुँचने के एक दिन पहले उन्हें हुर की सेना मिली।

हुसैन ने हुर को बुलाकर पूछा — "तुम मेरे पक्ष में हो, या विपक्ष में?""

हुर ने कहा — "मैं आपसे लड़ने के लिए भेजा गया हूँ।"

जब तीसरा पहर हुआ, तो हुसैन नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए, और उन्होंने हुर से पूछा — "तू क्या मेरे पीछे खड़ा होकर नमाज़ पढ़ेगा?"

हुर ने हुसैन के पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ना स्वीकार किया। हुसैन ने अपने साथियों के साथ हुर की सेना को भी नमाज़ पढ़ाई। हुर ने यज़ीद की बैयत ली थी। पर वह सद्विचारशील पुरुष था। हज़रत मोहम्मद के नवासे से लड़ने में उसे संकोच होता था। वह बड़े धर्म-संकट में पड़ा। वह सच्चे हृदय से चाहता था कि हुसैन मक्का लौट जायँ। प्रकट रूप से तो हुसैन को

ओबैदुल्लाह के पास ले चलने की धमकी देता था; पर हृदय से उन्हें अपने हाथों से कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता था।

उसने खुले हुए शब्दों में हुसैन से कहा — "यदि मुझसे कोई ऐसा अनुचित कार्य हो गया, जिससे आपको कोई कष्ट पहुँचा, तो मेरे लोक और परलोक, दोनों ही बिगड़ जायँगे। और यदि मैं आपको ओबैदुल्लाह के पास न ले जाऊँ, तो कूफ़ा में नहीं घुस सकता। हाँ, संसार विस्तृत है, क़यामत के दिन आपने नाना की कृपा दृष्टि से वंचित होने की अपेक्षा यहीं अच्छा है कि किसी दूसरी ओर निकल जाऊँ। आप मुख्य मार्ग को छोड़कर किसी अज्ञात मार्ग से कहीं और चले जायँ। मैं कूफ़ा के गर्वनर (अर्थात् 'आमिल') तो लिख दूँगा कि हुसैन से मेरी भेंट नहीं हुई, वह किसी ओर चले गये। मैं आपको क़सम दिलाता हूँ कि अपने ऊपर दया कीजिए, और कूफ़ा न जाइए।"

पर हुसैन ने कहा — "तुम मौत से क्या डराते हो? मैं तो शहीद होने के लिए चला ही हूँ।"

उस समय यदि हुसैन हुर की सेना पर आक्रमण करते, तो सम्भव था, उसे परास्त कर देते, पर अपने इष्ट-मित्रों के अनुरोध करने पर भी उन्होंने कहा — "हम लड़ाई के मैदान में अग्रसर न होंगे, यह हमारी नीति के विरुद्ध है।"

इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि हुसैन को अब अपनी आत्म-रक्षा का कोई उपाय न सूझता था। उनमें साधुओं का-सा सन्तोष था, पर योद्धाओं का-सा धैर्य न था, जो कठिन-से-कठिन समय पर भी कष्ट-निवारण का उपाय निकाल लेते हैं। उनमें महात्मा गाँधी का-सा आत्मसमर्पण था, किन्तु शिवाजी की दूरदर्शिता न थी।

3

इधर हुसैन और उनके आत्मीय तथा सहायकगण तो अपने-अपने ख़ेमे गाड़ रहे थे, और उधर ओबैदुल्लाह — कूफ़ा का गवर्नर — लड़ाई की तैयारी कर रहा था। उसने 'उमर बिन-साद' नाम के एक योद्धा को बुला कर हुसैन की हत्या करने के लिए नियुक्त किया, और इसके बदले में 'रे' सूबे के आमिल का उच्च पद देने को कहा। उमर बिन-साद विवेकहीन प्राणी न था। वह भली-भाँति जानता था कि हुसैन की हत्या करने से मेरे मुख पर ऐसी कालिमा लग जायगी, जो कभी न छूटेगी, किन्तु रे-सूबे का उच्च पद उसे असमंजस में डाले हुए थे। उसके सम्बन्धियों ने समझाया — “तुम हुसैन की हत्या करने का बीड़ा न उठाओ, इसका परिणाम अच्छा न होगा।” उमर ने जाकर ओबैदुल्लाह से

कहा — “मेरे सिर पर हुसैन के वध का भार न रखिए।” परन्तु ’रे’ की गवर्नरी छोड़ने को वह तैयार न हो सका। अतएव जब ओबैदुल्लाह ने साफ़-साफ़ कह दिया कि ’रे’ का उच्च पद हुसैन की हत्या किये बिना नहीं मिल सकता। यदि तुम्हें यह सौदा महँगा जँचता हो, तो कोई जबरदस्ती नहीं है। किसी और को यह पद दिया जायगा। तो उमर का आसन डोल गया। वह इस निषिद्ध कार्य के लिए तैयार हो गया। उसने अपनी आत्मा को ऐश्वर्य-लालसा के हाथ बेच दिया। ओबैदुल्लाह ने प्रसन्न होकर उसे बहुत कुछ इनाम-इकराम दिया, और चार हज़ार सैनिक उसके साथ नियुक्त कर दिये। उमर बिन-साद की आत्मा अब भी उसे क्षुब्ध करती रही। वह सारी रात पड़ा अपनी अवस्था या दुरवस्था पर विचार करता रहा। वह जिस विचार से देखता, उसी से अपना यह कर्म घृणित जान पड़ता था। प्रातःकाल वह फिर कूफ़ा के गवर्नर के पास गया। उसने फिर अपनी लाचारी दिखाई। परन्तु 'रे’ की सूबेदारी ने उस पर विजय पायी। जब वह चलने लगा, तो ओबैदुल्लाह ने उसे कड़ी ताक़ीद कर दी कि हुसैन और उनके साथी फ़रात नदी के समीप किसी तरह न आने पायँ, और एक घूँट पानी भी न पी सकें। हुर के एक हजार सैनिक भी उमर के साथ आ मिले। इस प्रकार उमर के साथ

पाँच हज़ार सैनिक हो गये। उमर अब भी यही चाहता था कि हुसैन के साथ लड़ना न पड़े।

उसने एक दूत उनके पास भेजकर पूछा — "आप अब क्या निश्चय करते है?"

हुसैन ने कहा — "कूफ़ा वालों ने मुझसे दग़ा की है। उन्होंने अपने कष्ट की कथा कहकर मुझे यहाँ बुलाया, और अब वह मेरे शत्रु हो गये हैं। ऐसी दशा में मक्के लौट जाना चाहता हूँ, यदि मुझे ज़बरदस्ती रोका न जाय।"

उमर मन में प्रसन्न हुआ कि शायद अब कलंक से बच जाऊँ। उसने यह समाचार तुरन्त ओबैदुल्लाह को लिख भेजा। किन्तु वहाँ तो हुसैन की हत्या का निश्चय हो चुका था। उसने उमर को उत्तर दिया — "हुसैन से बैयत लो, और यदि वह राज़ी न हों, तो मेरे पास लाओ।"

शत्रुओं को, इतना सेना जमा कर लेने पर भी, सहसा हुसैन पर आक्रमण करते डर लगता था कि कहीं जनता में उपद्रव न मच जाय। इसलिए इधर तो उमर बिन-साद कर्बला को चला, और उधर ओबैदुल्लाह ने कूफ़ा की जामा मस्जिद में लोगों को जमा किया। उसने एक व्याख्यान देकर उन्हें समझाया — "यज़ीद के ख़ानदान ने तुम लोगों पर कितना न्याय-युक्त शासन किया है, और

वे तुम्हारे साथ कितनी उदारता से पेश आये हैं! यज़ीद ने अपने सुशासन से देश को कितना समृद्धि-पूर्ण बना दिया है! रास्ते में अब चोरों और लुटेरों का कोई खटका नहीं है। न्यायालयों में सच्चा, निष्पक्ष न्याय होता है। उसने कर्मचारियों के वेतन बढ़ा दिये हैं। राजभक्तों की जागीरें बढ़ा दी गयी हैं। विद्रोहियों के कोट तहस-नहस कर दिये हैं, जिससे वे तुम्हारी शान्ति में बाधक न हो सकें। तुम्हारे जीवन-निर्वाह के लिए उसने चिरस्थायी सुविधाएँ दे रखी हैं। ये सब उसकी दयाशीलता और उदारता के प्रमाण हैं। यज़ीद ने मेरे नाम फ़रमान भेजा है कि मैं तुम्हारे ऊपर विशेष कृपा-दृष्टि करूँ, और जिसे एक दीनार वृत्ति मिलती है, उसकी वृत्ति सौ दीनार कर दूँ। इसी तरह वेतन में भी वृद्धि कर दूँ, और तुम्हें उसके शत्रु हुसैन से लड़ने के लिये भेजूँ। यदि तुम अपनी उन्नति और वृद्धि चाहते हो, तो तुरन्त तैयार हो जाओ। विलम्ब करने से काम बिगड़ जायगा।"

यह व्याख्यान सुनते ही स्वार्थ के मतवाले नेता लोग, धर्माधर्म के विचार को तिलांजलि देकर, समर भूमि में चलने की तैयारी करने लगे। शिमर ने चार हज़ार सवार जमा किये, और वह बिन-साद से जा मिला। रिकाब ने दो हज़ार, हसीन ने चार हज़ार, मसायर ने तीन हज़ार और अन्य एक सरदार ने दो हज़ार योद्धा जमा किये। सब-के-सब दल-बल साज-कर कर्बला को चले। उमर बिन-साद

के पास अब पूरे बाईस हज़ार सैनिक हो गये। कैसी दिल्लगी है कि बहत्तर आदमियों को परास्त करने के लिए इतनी बड़ी सेना खड़ी हो जाय! उन बहत्तर आदमियों में भी कितने ही बालक और कितने ही वृद्ध थे। फिर प्यास ने सभी को अधमरा कर रखा था।

किन्तु शत्रुओं ने अवस्था को भली-भाँति समझकर यह तैयारी की थी। हुसैन की शक्ति न्याय और सत्य की शक्ति थी। यह यज़ीद और हुसैन का संग्राम न था। यह इस्लाम धार्मिक जन-सत्ता का पूर्व कालिक इस्लाम की राज-सत्ता से संघर्ष था। हुसैन उन व्यवस्थाओं के पक्ष में थे, जिनका हज़रत मोहम्मद द्वारा प्रादुर्भाव हुआ था; मगर यज़ीद उन सभी बातों का प्रतिपक्षी था। दैवयोग से इस समय अधर्म ने धर्म को पैरों-तले दबा लिया था; पर यह अवस्था एक क्षण में परिवर्तित हो सकती थी और इसके लक्षण भी प्रकट होने लगे थे। बहुतेरे सैनिक जाने को तो चले जाते थे, परन्तु अधर्म के विचार से सेना से भाग आते थे। जब ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने कई निरीक्षक नियुक्त किये। उनका काम यही थी कि भागने वालों का पता लगाएँ। कई सिपाही इस प्रकार जान से मार डाले गये। यह चाल ठीक पड़ी। भगोड़े भयभीत होकर फिर सेना में जा मिले।

इस संग्राम में सबसे घोर निर्दयता जो शत्रुओं ने हुसैन के साथ की वह पानी का बन्द कर देना था। ओबैदुल्लाह ने उमर को कड़ी ताक़ीद कर दी कि हुसैन के आदमी नदी के समीप न जाने पाएँ। यहाँ तक कि वे कुएँ खोदकर भी पानी न निकालने पाएँ। एक सेना फ़रात-नदी की रक्षा के लिए भेज दी गयी। उसने हुसैन की सेना और नदी के बीच में डेरा जमाया। नदी की ओर जाने का कोई रास्ता न रहा। थोड़े नहीं, छः हज़ार सिपाही नदी का पहरा दे रहे थे। हुसैन ने यह ढंग देखा तो स्वयं इन सिपाहियों के सामने गये, और उन पर प्रभाव डालने की कोशिश की। पर उन पर कुछ असर न हुआ। लाचार होकर वह लौट आये। उस समय प्यास के मारे इनका कंठ सूखा जाता था, स्त्रियों और बच्चे बिलख रहे थे; किन्तु उन पाषाण-हृदय पिशाचों को इन पर दया न आती थी।

शहीद होने के तीन दिन पहले हुसैन और अन्य प्राणी प्यास के मारे बेहोश हो गये। तब हुसैन ने अपने प्रिय बन्धु अब्बास को बुलाकर, उन्हें बीस सवार तथा तीस पैदल देकर, उनसे कहा — "अपने साथ बीस मशकें ले जाओ, और पानी से भर लाओ।" अब्बास ने सहर्ष इस आदेश को स्वीकार किया। वह नदी के किनारे पहुँचे। पहरेदार ने पुकारा — "कौन है?" इधर उस पहरेदार का एक भाई भी था। वह बोला — "मैं हूँ, तेरे चाचा का

बेटा, पानी पीने आया हूँ।” पहरेदार ने कहा — “पी ले।” भाई ने उत्तर दिया — “कैसे पी लूँ?” जब हुसैन और उनके बाल-बच्चे प्यासों मर रहे हैं, तो मैं किस मुँह से पी लूँ?” पहरेदार ने कहा — “यह तो जानता हूँ, पर करूँ क्या, हुक़्म से मजबूर हूँ!” अब्बास के आदमी मशकें लेकर नदी की ओर गये, और पानी भर लिया। रक्षक-दल ने इनको रोकने की चेष्टा की, पर ये लोग पानी लिये हुए बच निकले।

हुसैन ने फिर अन्तिम बार सन्धि करने का प्रयास किया।। उन्होंने उमर बिन-साद को संदेशा भेजा कि “आज तुम मुझसे रात को, दोनों सेनाओं के बीच में, मिलना।” उमर निश्चित समय पर आया। हुसैन से उसकी बहुत देर तक एकान्त में बातें हुई। हुसैन ने सन्धि की तीन शर्तें बतायीं — (1) या तो हम लोगों को मक्के वापस जाने दिया जाय, (2) या सीमा-प्रांत की ओर शान्ति-पूर्वक चले जाने की अनुमति मिले, (3) या मैं यज़ीद के पास भेज दिया जाऊँ। उमर ने ओबैदुल्लाह को यह शुभ सूचना सुनायी, और वह उसे मानने के लिए तैयार भी मालूम होता था; किन्तु शिमर ने ज़ोर दिया कि दुश्मन चंगुल में आ फँसा है, तो उसे निकलने न दो, नहीं तो उसकी शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि तुम उसका सामना न कर सकोगे। उमर मजबूर हो गया।

मोहर्रम की नवीं तारीख़ को, अर्थात् हुसैन की शहादत से एक दिन पहले, कूफ़ा के देहातों से कुछ लोग हुसैन की सहायता करने आये। ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने उन आदमियों का भगा दिया, और उमर को लिखा — "अब तुरन्त हुसैन पर आक्रमण करो, नहीं तो इस टाल-मटोल की तुम्हें सज़ा दी जायगी।" फिर क्या था; प्रातःकाल बाईस हज़ार योद्धाओं की सेना हुसैन से लड़ने चली। जुगुनू का चमक बुझाने के लिए मेघ-मंडल का प्रकोप हुआ।

हुसैन को मालूम हुआ, तो वह घबराये। उन्हें यह अन्याय मालूम हुआ कि अपने साथ अपने साथियों के भी प्राणों का आहुति दे। उन्होंने इन लोगों को इसका एक अवसर देना उचित समझा कि वे चाहें, तो अपनी जान बचायें, क्योंकि यज़ीद को उन लोगों से कोई शत्रुता न थी। इसलिए उन्होंने उमर साद को पैग़ाम भेजा कि हमें एक रात के लिए मोहलत दो। उमर ने अन्य सेनानायकों से परामर्श करके मोहलत दे दी। तब हज़रत हुसैन ने अपने समस्त सहायकों तथा परिवारवालों को बुलाकर कहा — "कल जरूर यह भूमि मेरे खून से लाल हो जायगी। मैं तुम लोगों का हृदय से अनुगृहीत हूँ कि तुमने मेरा साथ दिया। मैं अल्लाहताला से दुआ करता हूँ कि वह तुम्हें इस नेकी का सवाब दे। तुमसे अधिक वीरात्मा और पवित्र हृदय वाले मनुष्य संसार में

न होंगे। मैं तुम लोगों को सहर्ष आज्ञा देता हूँ कि तुमसे से जिसकी जहाँ इच्छा हो, चला जाय, मैं किसी को दबाना नहीं चाहता, न किसी को मजबूर करता हूँ। किन्तु इतना अनुरोध अवश्य करूँगा कि तुममें से प्रत्येक मनुष्य मेरे आत्मीय जनों में से एक-एक को अपने साथ ले ले। संभव है, ख़ुदा तुम्हें तबाही से बचा ले, क्योंकि शत्रु मेरे रुधिर का प्यासा है। मुझे पा जाने पर उसको किसी की तलाश न होगी।"

यह कहकर उन्होंने इसलिए चिराग़ बुझा दिया कि जाननेवालों को संकोचवश वहाँ न रहना पड़े। कितना महान्, पवित्र और निस्स्वार्थ आत्मसमर्पण है!

किन्तु इस वाक्य का समाप्त होना था कि सब लोग चिल्ला उठे — "हम ऐसा नहीं कर सकते। ख़ुदा वह दिन न दिखाये कि हम आपके बाद जीते रहें। हम दूसरों को क्या मुँह दिखायेंगे? उनसे क्या यह कहेंगे कि हम अपने स्वामी, अपने बन्धु तथा अपने इष्ट-मित्र को शत्रुओं के बीच छोड़ आये, उनके साथ एक भाला भी न चलाया, एक तलवार भी न चलायी! हम आपको अकेला छोड़कर कदापि नहीं जा सकते, हम अपने को, अपने धन को और अपने कुल को आपके चरणों पर न्योछावर कर देंगे।"

इस तरह नवीं तारीख़, मोहर्रम की रात, आधी कटी। शेष रात्रि लोगों ने ईश्वर-प्रार्थना में काटी। हुसैन ने एक रात की मोहलत इसलिए नहीं ली थी कि समर की रही-सही तैयारी पूरी कर लें। प्रातःकाल तक सब लोग सिजदे करते और अपनी मुक्ति के लिए दुआएँ माँगते रहे।

4

प्रभात हुआ — वह प्रभात, जिसकी संसार के इतिहास में उपमा नहीं है! किसकी आँखों ने यह अलौकिक दृश्य देखा होगा कि बहत्तर आदमी बाईस हज़ार योद्धाओं से सम्मुख खड़े हुसैन के पीछे सुबह की नमाज़ इसलिए पढ़ रहे हैं कि अपने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का शायद यह अन्तिम सौभाग्य है। वे कैसे रणधीर पुरुष हैं, जो जानते हैं कि एक क्षण में हम सब-के-सब इस आँधी में उड़ जायँगे, लेकिन फिर भी पर्वत की भाँति अचल खड़े हैं; मानो संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो उन्हें भयभीत कर सके। किसी के मुख पर चिन्ता नहीं है, कोई निराश और हताश नहीं है। युद्ध के उन्माद ने, अपने सच्चे स्वामी के प्रति अटल विश्वास ने, उनके मुख को तेजस्वी बना दिया है। किसी

के हृदय में कोई अभिलाषा नहीं है। अगर कोई अभिलाषा है तो यही है कि कैसे अपने स्वामी की रक्षा करें। इसे सेना कौन कहेगा, जिसके दमन को बाईस हज़ार योद्धा एकत्र किये गये थे। इन बहत्तर प्राणियों में एक भी ऐसा न था, जो सर्वथा लड़ाई के योग्य हो। सब-के-सब भूख-प्यास से तड़प रहे थे। कितनों के शरीर पर तो माँस तक नहीं था, और उन्हें बिना ठोकर खाये दो पग चलना भी कठिन था। इस प्राण-पीड़ा के समय ये लोग उस सेना से लड़ने को तैयार थे, जिसमें अरब-देश के वे चुने हुए जवान थे, जिन पर अरब को गर्व हो सकता था।

उन दिनों समर की दो पद्धतियाँ थी — एक तो सम्मिलित, जिसमें समस्त सेना मिलकर लड़ती थी, और दूसरी व्यक्तिगत, जिसमें दोनों दलों के एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे। हुसैन के साथ इतने कम आदमी थे कि सम्मिलित-संग्राम में शायद वह एक क्षण भी न ठहर सकते। अतः उनके लिए दूसरी शैली ही उपयुक्त थी। एक-एक करके योद्धागण समर-क्षेत्र में आने लगे और शहीद होने लगे। लेकिन इसके पहले अन्तिम बार हुसैन ने शत्रुओं से बड़ी ओजस्विनी भाषा में अपनी निर्दोषिता सिद्ध की। उनके अन्तिम शब्द ये थे —

“ख़ुदा की क़सम, मैं पद दलित और अपमानित होकर तुम्हारी शरण न जाऊँगा, और न मैं दासों की भाँति लाचार होकर यज़ीद

की ख़िलाफ़त को स्वीकार करूँगा। ऐ ख़ुदा के बंदो! मैं ख़ुदा से शान्ति का प्रार्थी हूँ। और, उन प्राणियों से, जिन्हें ख़ुदा पर विश्वास नहीं है, जो ग़रूर में अन्धे हो रहे हैं, पनाह माँगता हूँ।"

शेष कथा आत्म-त्याग, प्राण-समर्पण, विशाल धैर्य और अविचल वीरता की अलौकिक और स्मरणीय गाथा है, जिसके कहने और सुनने से आँखों में आँसू उमड़ आते हैं, जिस पर रोते हुए लोगों को तेरह शताब्दियाँ बीत गयीं, और अभी अनन्त शताब्दियाँ रोते बीतेंगी।

हुर का ज़िक्र पहले आ चुका है। यह वही पुरुष है, जो एक हजार सिपाहियों के साथ हुसैन के साथ-साथ आया था, और जिसने उन्हें इस निर्जल मरुभूमि पर ठहरने को मजबूर किया था। उसे अभी तक आशा थी कि शायद ओबैदुल्लाह हुसैन के साथ न्याय करे। किन्तु जब उसने देखा कि लड़ाई छिड़ गयी, और समझौते की कोई आशा नहीं हैं, तो अपने कृत्य पर लज्जित होकर हुसैन की सेना में आ मिला। जब वह अनिश्चित भाव से अपने मोरचे पसे निकलकर हुसैन की सेना की ओर चला, तब उसी की सेना के एक सिपाही ने कहा — "तुमको मैंने किसी लड़ाई में इस तरह काँपते हुए चलते नहीं देखा।"

हुर ने उत्तर दिया — “मैं स्वर्ग और नरक की दुविधा में पड़ा हुआ हूँ, और सच यह है कि स्वर्ग के सामने किसी चीज़ की हस्ती नहीं समझता, चाहे कोई मुझे मार डाले।”

यह कहकर उसने घोड़े के एड़ लगाई, और हुसैन के पास आ पहुँचा। हुसैन ने उसका अपराध क्षमा कर दिया, और उसे गले से लगाया। तब हुर ने अपनी सेना को सम्बोधित करके कहा — “तुम लोग हुसैन की शर्तें क्यों नहीं मानते? कितने खेद की बात है कि तुमने स्वयं उन्हें बुलाया, और जब वह तुम्हारी सहायता करने आये, तो तुम उन्हीं को मारने पर उद्यत हो गये। वह अपनी जान लेकर चले भी जाना चाहते हैं, किन्तु तुम लोग उन्हें कहीं जाने भी नहीं देते? सबसे बड़ा अन्याय यह कर रहे हो कि उन्हें नदी से पानी नहीं लेने देते! जिस पानी को पशु और पक्षी तक पी सकते हैं, वह भी उन्हें मयस्सर नहीं!”

इस पर शत्रुओं ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, और हुर भी लड़ते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए। उन्हीं के साथ उनका पुत्र भी शहीद हुआ।

आश्चर्य होता है और दुःख भी कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी हुसैन को इन नर-पिशाचों से कुछ कल्याण की आशा बनी हुई थी। वह जब अवसर पाते थे, तभी अपनी निर्दोषिता प्रकट करते

हुए उनसे आत्म-रक्षा की प्रार्थना करते थे। दुराशा में भी यह आशा इसलिए होती थी कि वह हज़रत मोहम्मद के नवासे थे, और उन्हें आशा होती थी कि शायद अब भी मैं उनके नाम पर इस संकट से मुक्त हो जाऊँ। उनके इस सभी संभाषणों में आत्म-रक्षा की इतनी विशद चिन्ता व्याप्त है, जो दीन चाहे न हो, पर करुण अवश्य है, और एक आत्मदर्शी पुरुष के लिए, जो स्वर्ग में इससे कहीं उत्तम जीवन का स्वप्न देख रहा हो, जिसको अटल विश्वास हो कि स्वर्ग में हमारे लिए अकथनीय सुख उपस्थित है, शोभा नहीं देती। हुर के शहीद होने के पश्चात् हुसैन ने फिर शत्रु-सेना के सम्मुख खड़े होकर कहा —

"मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि मेरी इन तीन बातों में से एक को मान लो —

(1) "मुझे यज़ीद के पास जाने दो कि उससे बहस करूँ। यदि मुझे निश्चय हो जायगा कि वह सत्य पर है, तो मैं उसकी बैयत कर लूँगा।"

(इस पर किसी पाषाण-हृदय ने कहा — "तुम्हें यज़ीद के पास न जाने देंगे। तुम मधुरभाषी हो, अपनी बातों में उसे फँसा लोगे, और इस समय मुक्त होकर देश में विद्रोह फैला दोगे।")

(2) “जब यह नहीं मानते, तो छोड़ दो कि मैं अपने नाना के रौज़े की मुजाविरी करूँ।”

(इस पर भी किसी ने उपर्युक्त शंका प्रकट की)

(3) “अगर ये दोनों बातें तुम्हें अस्वीकार हैं, तो मुझे और मेरे साथियों को पानी दो; क्योंकि प्राणी-मात्र को पानी लेने का हक़ है।”

(इसका भी वैसा ही कठोर और निराशाजनक उत्तर मिला)

इस प्रश्नोत्तर के बाद हुसैन की ओर से बुरीर मैदान में आये। उधर से मुअक्कल निकला। बुरीर के अपने प्रतिपक्षी को मार लिया, और फिर खुद सेना के हाथों मारे गये। बुरीर के बाद अब्दुल्लाह निकले, और दस-बीस शत्रुओं को मारकर काम आये।

अब्दुल्लाह के बाद उनका पुत्र, जिसका नाम वहब था, मैदान में आया। उसकी वीर-गाथा अत्यन्त मर्मस्पर्शी है, और राजपूताने के अमर वीर-वृत्तान्त की याद दिलाता है। वहब का विवाह हुए अभी केवल सत्रह दिन हुए थे। हाथ की मेहँदी तक न छूटी थी। जब उनके पिता शहीद हो गये, तो उसकी माता उससे बोली — “मी ख़्वाहम कि मरा अज़ ख़ूने ख़ुद शरबते दिही ताशीरे कि अज़पिस्ताने मन ख़रदई बर जो हलाल गरदद।”

कितने सुन्दर शब्द हैं, जो शायद ही किसी वीर-माता के मुँह से निकले होंगे। भावार्थ यह है — "मेरी इच्छा है कि तूम अपने रक्त का एक घूँट मुझे दे, जिसमें कि यह दूध, जो तूने मेरे स्तन से पिया है, तुझ पर हलाल हो जाय।"

वहब के शहीद हो जाने के बाद क्रम से कई योद्धा निकले, और मारे गये। इस्लामी पुस्तकों में तो उनकी वीरता का बड़ा प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है। उनमें से प्रत्येक ने कई-कई सौ शत्रुओं का परास्त किया। ये भक्तों के मानने की बातें हैं। जो लोग प्यास से तड़प रहे थे, भूख से आँखों-तले अँधेरा छा जाता था, उनमें इतना असाधारण शक्ति और वीरता कहाँ से आ गयी? उमर बिन-साद की सेना में 'शिमर' बड़ा क्रूर और दुष्ट आदमी था। इस समर में हुसैन और उनके साथियों के साथ जिस अपमान-मिश्रित निर्दयता का व्यवहार किया गया, उसका दायित्व इसी शिमर के सिर है। यह धार्मिक संग्राम था, और इतिहास साक्षी है कि धार्मिक संग्राम में पाशविक प्रवृत्तियाँ अत्यन्त प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं। पर इस संग्राम में ऐसे प्रतिष्ठित प्राणी के साथ जितनी घोर दुष्टता और दुर्जनता दिखाई गयी, उसकी उपमा संसार के धार्मिक संग्रामों में भी मुश्किल से मिलेगी, हुसैन के जितने साथी शहीद हुआ, प्रायः उन सभी लाशों को पैरों-तले रौंदा गया, उनके सिर काटकर भालों पर उछाले और पैरों से

ठुकराये गये। पर कोई भी अपमान और बड़ी-से-बड़ी निर्दयता उनकी उस कीर्ति को नहीं मिटा सकता, जो इस्लाम के इतिहास का आज भी गौरव बढ़ा रही है। इस्लाम के साहित्य और इतिहास में उन्हें वह स्थान प्राप्त है, जो हिन्दू-साहित्य में अंगद,जामवंत, अर्जुन, भीम आदि को प्राप्त है। सूर्यास्त होते-होते सहायकों में कोई भी नहीं बचा।

अब निज कुटुम्ब के योद्धाओं की बारी आयी। इस वंश के पूर्वज हाशिम नाम के एक पुरुष थे। इसी लिए हज़रत मोहम्मद का वंश हाशिमी कहलाता है। इस संग्राम में पहला हाशिमी जो क्षेत्र में आया, वह अब्दुल्लाह था। यह उसी मुस्लिम नाम के वीर का बालक था, जो पहले शहीद हो चुका था। उसके बाद कुटुम्ब के और वीर निकले। जाफ़र इमाम हसन के तीन बेटे, अब्बास के कई भाई, हज़रत अली के कई बेटे और सब बारी-बारी से लड़कर शहीद हुए। हज़रत अब्बास से हुसैन ने कहा — "मैं बहुत प्यासा हूँ।" सन्ध्या हो गयी थी। अब्बास पानी लाने चले, पर रास्ते में घिर गये। वह असाधारण वीर पुरुष थे। हाशिमी लोगों ने इतनी वीरता से कोई नहीं लड़ा। एक हाथ कट गया, तो दूसरे हाथ से लड़े। जब वह हाथ भी कट गया, तो ज़मीन पर गिर पड़े। उनके मरने का हुसैन को अत्यन्त शोक हुआ। बोले — "अब मेरी कमर टूट गयी।" अब्बास के बाद हुसैन के

नौजवान बेटे अकबर मैदान में उतरे। हुसैन ने अपने हाथों उन्हें शस्त्रों से सुसज्जित किया। आह! कितना हृदय-विदारक दृश्य है। बेटे ने खड़े होकर हुसैन से जाने की आज्ञा माँगी, पिता का वीर हृदय अधीर हो गया। हुसैन ने निराशा और शोक से अली अकबर को देखा, फिर आँखें नीची कर लीं, और रो दिये। जब वह शहीद हो गया, तो शोक-विह्वल पिता ने जाकर लाश के मुँह पर अपना मुँह रख दिया, और कहा — "बेटा, तुम्हारे बाद अब जीवन को धिक्कार है।" पुत्र-प्रेम की इहलोक की ममता के आदर्श पर, धर्म पर, गौरव पर कितनी बड़ी विजया है!

अब हुसैन अकेले रह गये। केवल एक सात वर्ष का भतीजा और हसन का एक दुधमुँहा पोता बाक़ी था। हुसैन घोड़े पर सवार होकर महिलाओं के ख़ेमों की ओर आये, और बोले — "बच्चो को लाओ, क्योंकि अब उसे कोई प्यार करनेवाला न रहेगा।" स्त्रियों ने शिशु को उनकी गोद में रख दिया। वह अभी उसे प्यार कर ही रहे थे कि अकस्मात एक तीर उसकी छाती में लगा, और वह हुसैन की गोद में ही चल बसा! उन्होंने तुरन्त तलवार से गढ़ा खोदा, और बच्चे की लाश वहीं गाड़ दी। फिर अपने भतीजे को शत्रुओं के सामने खड़ा करके बोले — "ऐ अत्याचारियों, तुम्हारी निगाह में मैं पापी हूँ, पर इस बालक ने तो कोई अपराध नहीं किया, इसे क्यों प्यासों मारते हो?" यह सुनकर किसी नर-पिशाच ने

एक तीर चलाया, जो बालक के गले को छेदता हुआ हुसैन की बाँह में गड़ गया। तीर के निकलते ही बालक की क्रीड़ाओं का अन्त हो गया।

हुसैन अब रणक्षेत्र की ओर चले। अब तक रण में जानेवालों को वह अपने ख़ेमे के द्वार तक पहुँचाने आया करते थे। उन्हें पहुँचाने वाला अब कोई मर्द न था। तब आपकी बहन जैनब ने आपको रोकर बिदा किया। हुसैन अपनी पुत्री सकीना को बहुत प्यार करते थे। जब वह रोने लगी, तो आपने उसे छाती से लगाया, और तत्काल शोक के आवेग में कई शेर पढ़े, जिनका एक-एक शब्द करुण रस में डूबा हुआ है। उनके रणक्षेत्र में आते ही शत्रुओं में खलबली पड़ गयी, जैसे गीदड़ों में कोई शेर आ गया। हुसैन तलवार चलाने लगे, और इतनी वीरता से लड़े कि दुश्मनों के छक्के छूट गये। जिधर उनका घोड़ा बिजली की तरह कड़क कर जाता था, लोग काई की भाँति फट जाते थे। कोई सामने आने की हिम्मत न कर सकता था। इस भाँति सिपाहियों के दलों को चीरते-फाड़ते वह फ़रात के किनारे पहुँच गये, और पानी पीना चाहते थे कि किसी ने कपट भाव से कहा — "तुम यहाँ पानी पी रहे हो, उधर सेना स्त्रियों के ख़ेमों में घुसी रही है।" इतना सुनते ही लपककर इधर आये, तो ज्ञात हुआ कि किसी ने छल किया है। फिर मैदान में पहुँचे, और शत्रु-दल का

संहार करने लगे। यहाँ तक कि शिमर ने तीन सेनाओं को मिलाकर उन पर हमला करने की आज्ञा दी। इतना ही नहीं, बग़ल से और पीछे से भी उन पर तीरों की बौछार होने लगी। यहाँ तक कि ज़ख्मों से चूर होकर वह ज़मीन पर गिर पड़े, और शिमर की आज्ञा से एक सैनिक ने उनका सिर काट लिया! कहते हैं, जैनब यह दृश्य देखने के के लिए ख़ेमे से बाहर निकल आयी थी। उस समय उमर बिन-साद से उनका सामना हो गया। तब वह बोलीं — "क्यों उमर, हुसैन इस बेकसी से मारे जायँ, और तुम देखते रहो!" उमर का दिल भर आया, आँखें सजल हो गयी, और कई बूँदें ड़ाढ़ी पर गिर पड़ी।

हुसैन की शहादत के बाद शत्रुओं ने उनकी लाश की जो दुर्गति की, वह इतिहास की अत्यन्त लज्जा-जनक घटना है। उससे यह भली भाँति प्रकट हो जाता है कि मानव-हृदय कितना नीचे गिर सकता है। गुरु गोविन्द सिंह से बच्चे की कथा भी यहाँ मात हो जाती है, क्योंकि ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी धर्म-संचालक के नवासों को अपने नाना के अनुयायियों के हाथों यह बुरा दिन देखना पड़ा हो।

नाटक के पात्र

पुरुष

हुसैन — हज़रत अली के बेटे और हज़रत मोहम्मद के नवासे। इन्हें फ़र्ज़न्दे-रसूल, शब्बीर, भी कहा गया है।

अब्बास — हज़रत हुसैन के चचेरे भाई।

अली अकबर — हज़रत हुसैन के बड़े बेटे।

अली असग़र — हज़रत हुसैन के छोटे बेटे।

मुस्लिम — हज़रत हुसैन के चचेरे भाई।

जुबेर — मक्का का एक रईस।

वलीद — मदीना का नाज़िम।

मरवान — वलीद का सहायक अधिकारी।

हानी - कूफ़ा का एक रईस।

यज़ीद — ख़लीफ़ा।

जुहाक, शम्स, सरजन, रूमी — यज़ीद के मुसाहिब।

ज़ियाद — बसरे और कूफ़े का नाज़िम।

साद — यज़ीद की सेना का सेनापति।

अब्दुल्लाह, वहब, कसीर, मुख्तार, हुर, ज़हीर, हबीब आदि — हुसैन के सहायक।

हज्जाज़, हारिस, अशअस, क़ीस, बलाल आदि — यज़ीद के सहायक।

हरजस, सिंहदत्त, रामसिंह, भीरुदत्त एवं साहसराय — अरब-निवासी हिन्दू।

मुआबिया — यज़ीद का पिता।

स्त्रियाँ

जैनब — हुसैन की बहन।

शहरबानू — हुसैन की स्त्री।

सकीना — हुसैन की बेटी।

क़मर — अब्दुल्लाह की स्त्री।

तौआ — कूफ़ा की एक वृद्धा स्त्री।

हिन्दा — यज़ीद की बेगम।

क़ासिद — सिपाही, जल्लाद आदि।

पहला अंक

पहला दृश्य

(समय — नौ बजे रात्रि, यज़ीद, ज़ुहाक़, शम्स और कई दरबारी बैठे हुए हैं, और शराब की सुराही और प्याला रखा हुआ है)

यज़ीद — नगर में मेरी ख़िलाफ़त का ढिंढोरा पीट दिया गया?

ज़ुहाक़ — कोई गली, कूचा, नाका, सड़क, मस्ज़िद, बाज़ार, ख़ानक़ाह ऐसा नहीं है, जहाँ हमारे ढिंढोरे की आवाज़ न पहुँची हो। यह आवाज़ वायुमंडल को चीरती हुई हिज़ाज़. यमन, इराक़, मक्का-मदीना में गूँज रही है। और उसे सुनकर शत्रुओं के दिल दहल उठे हैं।

यज़ीद — नक्क़ारची को ख़िलअत दिया जाय।

ज़ुहाक़ — बहुत खूब अमीर!

यज़ीद — मेरी बैयत लेने के लिए सबको हुक्म दे दिया गया?

ज़ुहाक़ — अमीर को हुक्म देने की ज़रूरत न थी। कल सूर्योदय से पहले सारा शाम बैयत लेने को हाज़िर हो जायगा।

यज़ीद — (शराब का प्याला पीकर) नबी ने शराब को हराम कहा है। यह इस अमृत-रस के साथ कितना घोर अन्याय है! उस समय के लिए यह निषेध सर्वथा उचित था, क्योंकि उन दिनों किसी को यह आनन्द भोगने का अवकाश न था। पर अब वह हालत नहीं है। तख्त पर बैठे हुए ख़लीफ़ा के लिए ऐसी नियामत हराम समझने से तो यह कहीं अच्छा है कि वह ख़लीफ़ा ही न रहे। क्यों ज़ुहाक़, कोई क़ासिद मदीने भेजा गया?

ज़ुहाक़ — अमीर के हुक्म का इन्तज़ार था।

यज़ीद — ज़ुहाक़, क़सम है अल्लाह की; मैं इस विलम्ब को कभी क्षमा नहीं कर सकता। फ़ौरन क़ासिद भेजो, और वलीद को सख्त ताक़ीद लिखो कि वह हुसैन से मेरे नाम पर बैयत ले। अगर वह इनकार करें, तो उन्हें क़त्ल कर दे। इसमें ज़रा भी देर न होनी चाहिए।

ज़ुहाक़ — या मौला! मेरी तो अर्ज़ है कि हुसैन क़बूल भी कर लें तो भी उसका ज़िन्दा रहना अबूसिफ़ियान के ख़ानदान के लिए उतना ही घातक है, जितना किसी सर्प को मारकर उसके बच्चे को पालना। हुसैन ज़रूर दावा करेंगे।

यज़ीद — ज़ुहाक़, क्या तुम समझते हो कि हुसैन कभी मेरी बैयत क़बूल कर सकता है? यह मुहाल है, असम्भव है। हुसैन कभी मेरी

बैयत न लेगा, चाहे उसकी बोटियाँ काट-काटकर कौवों को खिला दी जायँ। अगर तक़दीर पलट सकती है, अगर दरिया का बहाव पलट सकता है, अगर समय की गति रुक सकती है, तो हुसैन भी मेरे नाम पर बैयत ले सकता है। मगर बैयत ले चुकने के बाद मुमकिन है, तक़दीर पलट जाय, दरिया का बहाव पलट जाय, समय की गति रुक जाय, पर हुसैन दावा नहीं कर सकता। उससे बैयत लेने का मतलब ही यही है कि उसे इस जहान से रुख़सत कर दिया जाय। हुसैन ही मेरा दुश्मन है। मुझे और किसी का खौफ नहीं, मैं सारी दुनिया की फ़ौजों से नहीं डरता, मैं डरता हूँ इसी निहत्थे हुसैन से। (प्याला भरकर पी जाता है) इसी हुसैन ने मेरी नींद, मेरा आराम हराम कर रखा है। अबूसिफ़ियान की सन्तान हाशिम के बेटों के सामने सिर न झुकायेगी। ख़िलाफ़त को मुल्लाओं के हाथों में फिर न जाने देंगे। इन्होंने छोटे-बड़े की तमीज़ उठा दी। हरएक दहक़ान समझता है कि मैं ख़िलाफ़त की मसनद पर बैठने लायक हूँ, और अमीरों के दस्तरख़ान पर खाने का मुझे हक़ है। मेरे मरहूम बाप ने इस भ्रान्ति को बहुत कुछ मिटाया, और ख़लीफा शान व शौकत में दुनिया के किसी ताज़दार से शर्मिन्दा नहीं हो सकता। जूते सीनेवाले और रूखी रोटियाँ खाकर खुदा का शुक्रिया अदा करनेवाले ख़लीफ़ों के दिन गये।

ज़ुहाक़ — ख़ुदा न करे, वह दिन फिर आये।

अब्दुशम्स — इन हाशिमियों से हमें उस्मान के खून का बदला लेना है।

यज़ीद — ख़जाना खोल दो, और रियाया का दिल अपनी मुट्ठी में कर लो। रुपया खुदा के ख़ौफ को दिल से दूर कर देता है। सारे शहर की दावत करो। कोई मुज़ायक़ा नहीं, अगर ख़जाना ख़ाली हो जाय। हर एक सिपाही को निहाल कर दो। और, अगर इतनी रियायतें करने पर भी कोई तुमसे खिंचा रहे, तो उसे क़त्ल कर दो। मुझे इस वक़्त रुपए की ताक़त से धर्म और भक्ति को जीतना है।

(हिन्दा का प्रवेश)

यज़ीद — हिन्दा, तुमने इस वक़्त कैसे तकलीफ़ की?

हिन्दा — या अमीर! मैं आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ इसलिए हाज़िर हुई हूँ कि आपको इस इरादे से बाज़ रखूँ। आपको अमीर मुआबिया की क़सम, अपने दीन को, अपनी नजात को, अपने ईमान को यों न ख़राब कीजिए। जिस नबी से आपने इस्लाम की रोशनी पायी, जिसकी ज़ात से आपको यह रुतबा मिला, जिसने आपकी आत्मा को अपने उपदेशों से जगाया, जिसने आपको अज्ञान

के गढ़े से निकालकर आफ़ताब के पहलू में बिठा दिया, उसी ख़ुदा के भेजे हुए बुज़ुर्ग के नवासे का खून बहाने के लिए आप आमादा हैं!

यज़ीद — हिन्दा, ख़ामोश रहो।

हिन्दा — कैसे ख़ामोश रहूँ। आपको अपनी आँखों से जहन्नुम के ग़ार में गिरते देखकर ख़ामोश नहीं रह सकती। आपको मालूम नहीं कि रसूल की आत्मा स्वर्ग में बैठी हुई आपके इस अन्याय को देखकर आपको लानत दे रही होगी। और, हिसाब के दिन आप अपना मुँह उन्हें न दिखा सकेंगे। क्या आप नहीं जानते, आप अपनी नजात का दरवाजा बन्द कर रहे हैं।

यज़ीद — हिन्दा, ये मज़हब की बातें मज़हब के लिए है, दुनिया के लिए नहीं। मेरे दादा ने इस्लाम इसलिए क़बूल किया था कि इससे उन्हें दौलत और इज़्ज़त हाथ आती थी। नजात के लिए वह इस्लाम पर ईमान नहीं लाये थे, और न मैं ही इस्लाम को नजात का ज़ामिन समझने को तैयार हूँ।

हिन्दा — अमीर, ख़ुदा के लिए यह कुवाक्य मुँह से न निकालो। आपको मालूम है, इस्लाम ने अरब से अधर्म के अँधेरे को कितनी आसानी से दूर कर दिया। अकेले एक आदमी ने काफ़िरों का निशान मिटा दिया। क्या ख़ुदा की मर्ज़ी बिना यह बात हो सकती

थी? कभी नहीं। तुम्हें मालूम है कि रसूल हुसैन को कितना प्यार करते थे? हुसैन को वह कन्धों पर बिठाते और अपनी नूरानी डाढी को उनके हाथों से नुचवाते थे। जिस माथे को तुम अपने पैरों पर झुकाना चाहते हो, उसके रसूल बोसे लेते थे। हुसैन से दुश्मनी करके तुम अपने हक़ में काँटे बो रहे हो। ख़िलाफ़त उसकी है, जिसे पंच दे. यह किसी की मीरास नहीं हैं। तुम खुद मदीने जाओ, और देखो, क़ौम किस पर ख़िलाफ़त का बार रखती है। उसके हाथों पर बैयत लो। अगर क़ौम तुमको इस रुतबे पर बैठा दे, तो मदीने में रहकर शौक़ से इस्लाम की ख़िदमत करो। मगर ख़ुदा के वास्ते यह हंगामा न उठाओ (जाती है)।

यज़ीद — सरजून रूमी को बुला लो।

(सरजून आकर आदाब बजा लाता है)

यज़ीद — आपने वालिद मरहूम की ख़िदमत जितनी वफ़ादारी के साथ की, उसके लिए मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ। मगर इस वक्त मुझे आपकी पहले से कहीं ज्यादा ज़रूरत है। बसरे की सूबेदारी के लिए आप किस तजवीज़ करते हैं।

रूमी — ख़ुदा अमीर को सलामत रखे। मेरे ख़याल में अब्दुल्लाह बिन-ज़ियाद से ज्यादा लायक़ आदमी आपको मुश्किल से मिलेगा। ज़ियाद ने अमीर मुआबिया की जो ख़िदमत की, वह मिटाई नहीं जा सकती। अब्दुल्लाह उसी बाप का बेटा और ख़ानदान का उतना ही सच्चा गुलाम है। उसके पास फ़ौरन क़ासिद भेज दीजिए।

यज़ीद — मुझे ज़ियाद के बेटे से शिकायत है कि उसने बसरेवालों के इरादों की मुझे इत्तिला नहीं दी। और, मुझे यक़ीन है कि बसरेवाले मुझसे बग़ावत कर जायँगे।

रूमी — या अमीर, आपका ज़ियाद पर शक करना बेजा है। आपके मददगार आपके पास खुद बखुद न आयेंगे। वह तलाश करने से, मिन्नत करने से, रियायत करने से आयेंगे। आप-ही-आप वे लोग आयेंगे, जो आपकी ज़ात से खुद फ़ायदा उठाना चाहते हैं। इस मनसब के लिए ज़ियाद से बेहतर आदमी आपको न मिलेगा।

यज़ीद — सोचूँगा (शराब का प्याला हाथ में लेकर) ज़ुहाक़! कोई गीत तो सुनाओ, जिसकी मिठास उस फ़िक्र को मिटा दे, जो इस वक़्त मेरे दिल और जिगर पर पत्थर की चट्टान की तरह रखा हुआ है।

ज़ुहाक़ — जैसा हुक्म, (डफ़ बजाकर गाता है)

(गाना)

सफ़ी थकके बैठे दवा करनेवाले,
उठे हाथ उठाकर दुआ करनेवाले,
वफ़ा पर हैं मरते वफ़ा करनेवाले,
जफ़ा कर रहे हैं जफ़ा करनेवाले।
बचाकर चले ख़ाक से अपना दामन,
लहद पर जो गुज़री हवा करनेवाले।
किसी बात पर भी तो क़ायम नहीं है,
यह ज़ालिम, सितमगर दग़ा करनेवाले।
तअज्जुब नहीं हैं जो अब ज़हर दे दें,
ये ज़िच हो गये हैं दवा करनेवाले।
समझ लें कि दुशवार है राज़दारी,
किसी का किसी से गिला करनेवाले।
अभी है बुतों को ख़ुदाई का दावा,
ख़ुदा जाने, हैं और क्या करनेवाले।

दूसरा दृश्य

(रात का समय — मदीने का गवर्नर वलीद अपने दरबार में बैठा हुआ है)

वलीद — (स्वगत) मरवान कितना ख़ुदग़रज आदमी है। मेरा मातहत होकर भी मुझ पर रोब जमाना चाहता है। उसकी मरज़ी पर चलता, तो आज सारा मदीना मेरा दुश्मन होता। उसने रसूल के ख़ानदान से हमेशा दुश्मनी की है।

(क़ासिद का प्रवेश)

क़ासिद — या अमीर, यह ख़लीफ़ा यज़ीद का ख़त है।

वलीद — (घबराकर) ख़लीफ़ा यज़ीद! अमीर मुआबिया को क्या हुआ?

क़ासिद — आपको पूरी कैफ़ियत इस ख़त से मालूम होगी।

(ख़त वलीद के हाथ में देता है)

वलीद — (ख़त पढ़कर) अमीर मुआबिया की रूह को ख़ुदा जन्नत में दाखिल करे। मगर समझ में नहीं आता कि यज़ीद क्योंकर ख़लीफ़ा हुए। क़ौम के नेताओं की कोई मजलिस नहीं हुई, और किसी ने उनके हाथ पर बैयत नहीं ली। मदीने-भर में यह ख़बर फैलेगी, तो ग़ज़ब हो जायगा। हुसैन यज़ीद को कभी न ख़लीफ़ा मानेंगे।

क़ासिद — (दूसरा ख़त देकर) हुज़ूर, इसे भी देख लें।

(वलीद ख़त लेकर पढ़ता है)

"वलीद, हाकिम मदीना को ताक़ीद की जाती है कि इस ख़त को देखते ही हुसैन से मेरे नाम पर बैयत लें। अगर हुसैन बैयत न लें, तो उन्हें क़त्ल कर दें, और उनका सिर मेरे पास भेज दें।"

(वलीद सर्द साँस लेकर फ़र्श पर लेट जाता हैं)

क़ासिद — मुझे क्या हुक्म होता है?

वलीद — तुम जाकर बाहर ठहरो। (दिल में) ख़ुदा वह दिन न लाये कि मुझे रसूल के नवासे के साथ यह घृणित व्यवहार करना पड़े। वलीद इतना बेदीन नहीं है। ख़ुदा रसूल को इतना नहीं भूला है। मेरे हाथ गिर पड़े इसके पहले कि मेरी तलवार हुसैन की गरदन पर पड़े। काश, मुझे मालूम होता कि अमीर मुआबिया की मौत इतनी नज़दीक है, और उसकी आँखें बन्द होते ही मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, तो पहले ही इस्तीफ़ा देकर चला जाता। मरवान की सूरत देखने को जी नहीं चाहता, मगर इस वक़्त उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ काम करना अपनी मौत को बुलाना है। वह रत्ती-रत्ती ख़बर यज़ीद के पास भेजेगा। उसके सामने मेरी कुछ भी न सुनी जायगी। ऐसा अफ़सर, जो मातहतों से डरे, मातहत से भी बदतर है। जिस वज़ीर का ग़ुलाम बादशाह का विश्वासपात्र हो, उसके लिए जंगल में ऊँट चराना इससे हज़ार दर्जे बेहतर है कि वह वज़ीर की मसनद पर बैठे। (ग़ुलाम को बुलाता है)

ग़ुलाम — अमीर क्या हुक्म फ़रमाते हैं?

वलीद — जाकर मरवान को बुला ला।

ग़ुलाम — जो हुक्म। (जाता है)

वलीद — (दिल में) हुसैन कितना नेक आदमी है। उसकी जबान से कभी किसी की बुराई नहीं सुनी। उसने कभी किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाया। उससे मैं क्योंकर बैयत लूँगा।

(मरवान का प्रवेश)

मरवान — इतनी रात गये मुझे आप न बुलाया करें। मेरी जान इतनी सस्ती नहीं कि बाग़ियों को इस पर छिपकर हमला करने का मौक़ा दिया जाय।

वलीद — तुम्हारा बर्ताव ही क्यों ऐसा हो कि तुम्हारे ऊपर किसी क़ातिल की तलवार उठे। अभी अभी क़ासिद मुआबिया की ख़बर लाया है, और यज़ीद का यह ख़त भी आया है। मुझे तुमसे इसी बाबत सलाह लेनी है।

(ख़त देता है)

मरवान — (ख़त पढ़कर) आह! मुआबिया, तुमने बेवक़्त वफ़ात पायी। तुम्हारा नाम तारीख़ में हमेशा रोशन रहेगा। तुम्हारी नेकियों को याद करके लोग बहुत दिनों तक रोयेंगे। यज़ीद ने

ख़िलाफ़त अपने हाथ में ले ली, यह बहुत ही मुनासिब हुआ। मेरे ख़याल से हुसैन को इसी वक़्त बुलाना चाहिए।

वलीद — तुम्हारे ख़याल से वह बैयत ले लेंगे?

मरवान — ग़ैरमुमकिन। उनसे बैयत लेना उन्हें क़त्ल करने को कहना है। मगर अभी मुआबिया के मरने की ख़बर मशहूर न होनी चाहिए।

वलीद — इस मामले पर ग़ौर करो।

मरवान — ग़ौर की ज़रूरत नहीं, मैं आपकी जगह होता, तो बैयत का ज़िक्र ही न करता। फ़ौरन क़त्ल कर डालता। हुसैन के ज़िन्दा रहते हुए यज़ीद को कभी इतमीनान नहीं हो सकता। याद रखिए कि मुआबिया के मरने की ख़बर फैल गयी, तो न हमारी जान सलामत रहेगी न आपकी। हुसैन से आपका कितना ही दोस्ताना हो, लेकिन वही हुसैन आपका जानी दुश्मन हो जायगा।

वलीद — तुम्हें उम्मीद है कि वह इस वक़्त यहाँ आयेंगे? उन्हें शुबहा हो जायगा।

मरवान — आपके ऊपर हुसैन को इतना भरोसा है, तो इस वक़्त भी चले आयँगे। मगर आपकी तलवार तेज़ और खून गर्म रहना चाहिए। यही कारगुज़ारी का मौक़ा है। अगर हम लोगों ने इस

मौक़े पर यज़ीद की मदद की, तो कोई शक नहीं कि हमारे इक़बाल का सितारा रोशन हो जायगा।

वलीद — मरवान, मैं यज़ीद का ग़ुलाम नहीं, ख़लीफ़ा का नौकर हूँ, और ख़लीफ़ा वही है, जिसे क़ौम चुनकर मसनद पर बिठा दे। मैं अपने दीन और ईमान का ख़ून करने से यह कहीं बेहतर समझता हूँ कि क़ुरान पाक की नक़ल करके ज़िन्दगी बसर करूँ।

मरवान — या अमीर, मैं आपको यज़ीद के ग़ुस्से से होशियार किये देता हूँ। मेरी और आपकी भलाई इसी में है कि यज़ीद का हुक्म बजा लायँ। हमारा काम उनकी बन्दगी करना है, आप दुविधा में न पड़ें। इसी वक़्त हुसैन को बुला भेजें। (ग़ुलाम को पुकारता है)

ग़ुलाम — या अमीर, क्या हुक्म है?

मरवान — जाकर हुसैन बिन अली को बुला ला। दौड़ते हुए जाना, और कहना कि अमीर आपके इन्तज़ार में बैठे हैं।

(ग़ुलाम चला जाता है)

तीसरा दृश्य

(रात का वक़्त — हुसैन और अब्बास मस्जिद में बैठे बातें कर रहे हैं। एक दीपक जल रहा है)

हुसैन — मैं जब ख़याल करता हूँ कि नाना मरहूम ने तनहा बड़े-बड़े सरकश बादशाहों को पस्त कर दिया, और इतनी शानदार ख़िलाफ़त क़ायम कर दी, तो मुझे यक़ीन हो जाता है कि उन पर ख़ुदा का साया था। ख़ुदा की मदद के बग़ैर कोई इन्सान यह काम न कर सकता था। सिकन्दर की बादशाहत उसके मरते ही मिट गयी, क़ैसर की बादशाहत उसकी ज़िन्दगी के बाद बहुत थोड़े दिनों तक क़ायम रही, उन पर ख़ुदा का साया न था, वह अपनी हवस की धुन में क़ौमों को फ़तह करते हैं। नाना ने इस्लाम के लिए झंडा बुलंद किया, इसी से वह कामयाब हुए।

अब्बास — इसमें किसको शक हो सकता है कि वह ख़ुदा के भेजे हुए थे। ख़ुदा की पनाह, जिस वक़्त हज़रत ने इस्लाम की आवाज़ उठाई थी, इस मुल्क में अज्ञान का कितना गहरा अन्धकार छाया हुआ था। ख़ुदा की ही आवाज़ थी, जो उनके दिल में बैठी हुई बोल रही थी, जो कानों में पड़ते ही दिलों में

उतर जाती थी। दूसरे मज़हबवाले कहते हैं, इस्लाम ने तलवार की ताक़त से अपना प्रचार किया। काश, उन्होंने हज़रत की आवाज़ सुनी होती! मेरा तो दावा है कि क़ुरान में एक आयत भी ऐसी नहीं है, जिसकी मंशा तलवार से इस्लाम को फैलाना हो।

हुसैन — मगर कितने अफ़सोस की बात है कि अभी से क़ौम ने उनकी नसीहतों को भूलना शुरू किया, और वह नापाक, जो उनकी मसनद पर बैठा हुआ है, आज खुले बन्दों शराब पीता है।

(ग़ुलाम का प्रवेश)

ग़ुलाम — नबी के बेटे पर खुदा की रहमत हो। अमीर ने आपको किसी बहुत जरूरी काम के लिए तलब किया है।

अब्बास — यह वक़्त वलीद के दरबार का नहीं है।

ग़ुलाम — हुज़ूर, कोई ख़ास काम है।

हुसैन — अच्छा, तू जा। हम घर जाने लगेंगे, तो उधर से होते हुए जायँगे।

(ग़ुलाम चला जाता है)

अब्बास — भाईजान! मुझे तो इस बेवक़्त की तलबी से घबराहट हो गयी है। यह वक़्त वलीद के इजलास का नहीं है। मुझे दाल में कुछ काला नज़र आता है। आप कुछ कयास कर सकते हैं कि किस लिए बुलाया होगा।

हुसैन — मेरा दिल तो गवाही देता है कि मुआबिया ने वफ़ात पायी।

अब्बास — तो वलीद ने आपको इसलिए बुलाया होगा कि आपसे यज़ीद की बैयत ले।

हुसैन — मैं यज़ीद की बैयत क्यों करने लगा। मुआबिया ने भैया इमाम हसन के साथ क़सम खाकर शर्त की थी कि वह अपने मरने के बाद अपनी औलाद में से किसी को ख़लीफ़ा न बनायेगा। हसन के बाद ख़िलाफ़त पर मेरा हक़ है। अगर मुआबिया मर गया है, और यज़ीद ख़लीफ़ा बनाया गया है, तो उसने मेरे साथ और इस्लाम के साथ दग़ा दी है। यज़ीद शराबी है, बदकार है, झूठा है, बेदीन है, कुत्तों को गोद में लेकर बैठता है। मेरी जान भी जाय, तो क्या, पर मैं उसकी बैयत न अख़्तियार करूँगा।

अब्बास — मामला नाज़ुक है। यज़ीद की ज़ात से कोई बात बईद नहीं। काश, हमें मुआबिया की बीमारी और मौत की ख़बर पहले ही मिल गयी होती!

(ग़ुलाम का फिर प्रवेश)

ग़ुलाम — हुज़ूर तशरीफ़ नहीं लाये, अमीर आपके इन्तज़ार में बैठे हुए हैं।

हुसैन — तुफ़ है तुझ पर! तू वहाँ पर गया भी कि रास्ते से ही लौट आया? चल, मैं अभी आता हूँ। तू फिर न आना।

ग़ुलाम — हुज़ूर, अमीर से जाकर जब मैंने कहा कि वह अभी आते हैं, तो वह चुप हो गये, लेकिन मरवान ने कहा कि वह कभी न आयँगे, आपसे दावा कर रहे हैं। इस पर अमीर उनसे बहुत नाराज़ हुए, और कहा — हुसैन क़ौल के पक्के हैं, जो कहते हैं, उसे पूरा करते हैं।

हुसैन — वलीद शरीफ़ आदमी है। तुम जाओ, हम अभी आते हैं।

(ग़ुलाम चला जाता है)

अब्बास — आप जायेंगे?

हुसैन — जब तक कोई सबब न हो, किसी की नीयत पर शुबहा करना मुनासिब नहीं।

अब्बास — भैया, मेरी जान आप पर फ़िदा हो। मुझे डर है कि कहीं वह आपको क़ैद ने कर लें।

हुसैन — वलीद पर मुझे एतवार है। अबूसिफ़ियान की औलाद होने पर भी वह शरीफ़ और दीनदार है।

अब्बास — आप एतबार करें, लेकिन मैं आपको वहाँ जाने की हरगिज़ सलाह न दूँगा। इस सन्नाटे में अगर उसने कोई दग़ा की, तो कोई फ़रियाद भी न सुनेगा। आपको मालूम है कि मरवान कितना कितना दग़ाबाज़ और हरामकार है। मैं उसके साये से भी भागता हूँ। जब तक आप मुझे यह इतमीनान न दिया दीजिएगा कि दुश्मन वहाँ आपका बाल बाँका न कर सकेगा, मैं आपका दामन न छोड़ूँगा।

हुसैन — अब्बास, तुम मेरी तरफ़ से बेफ़िक्र रहो। मुझे हक़ पर इतना यक़ीन है, और मुझमें हक़ की इतनी ताक़त है कि वलीद

तो क्या, यज़ीद की सारी फ़ौज भी मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। यक़ीन है कि मेरी एक आवाज़ पर हज़ारों ख़ुदा के बन्दे और रसूल के नाम पर मिटनेवाले दौड़ पड़ेंगे। और आगर कोई मेरी आवाज़ न सुने, तो भी मेरे बाज़ुओं में इतना बल है कि मैं अकेले उनमें से एक सौ को ज़मीन पर सुला सकता हूँ। हैदर का बेटा ऐसे गीदड़ों से नहीं डर सकता। आओ, ज़रा नाना के क़ब्र की ज़ियारत कर लें।

(दोनों हज़रत मुहम्मद की क़ब्र के सामने खड़े हो जाते हैं, हाथ बाँधकर दुआ पढ़ते है, और मस्जिद से निकलकर घर की तरफ़ चलते हैं)

चौथा दृश्य

(वलीद का दरबार। वलीद और मरवान बैठे हुए हैं। रात का समय)

मरवान — अब तक नहीं आये! मैंने आपसे कहा कि वह हरगिज़ न आयेंगे।

वलीद — आयेंगे, और ज़रूर आयेंगे। मुझे उनके क़ौल पर पूरा भरोसा है।

मरवान — कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि उन्हें अमीर की वफ़ात की ख़बर लग गयी हो, और वह अपने साथियों को जमा करके हमसे जंग करने आ रहे हों।

(हुसैन का प्रवेश। वलीद सम्मान के भाव से खड़ा हो जाता है, और दरवाज़े पर आकर हाथ मिलाता है। मरवान अपनी जगह पर बैठा रहता है)

हुसैन — ख़ुदा की तुम पर रहमत हो। (मरवान को बैठे देखकर) मेल फूट से और प्रेम द्वेष से बहुत अच्छा है। मुझे क्यों याद किया?

वलीद — इस तकलीफ़ के लिए माफ़ कीजिए, आपको यह सुनकर अफ़सोस होगा कि अमीर मुआबिया ने वफ़ात पायी।

मरवान — और ख़लीफ़ा यज़ीद ने हुक्म दिया है कि आपसे उनके नाम की बैयत ली जाय।

हुसैन — मेरे नज़दीक यह मुनासिब नहीं है कि मुझ-जैसा आदमी छुपे-छुपे बैयत ले। यह न मेरे लिए मुनासिब है और न यज़ीद के लिए काफ़ी। बेहतर है, आप एक आम जलसा करें, और शहर के सब रईसों और आलिमों को बुलाकर यज़ीद की बैयत का सवाल पेश करें। मैं भी उन लोगों के साथ रहूँगा, और उस वक़्त सबसे पहले जवाब देनेवाला मैं हूँगा।

वलीद — मुझे आपकी यह सलाह माक़ूल मालूम होती है। बेशक, आपके बैयत लेने से यह नतीजा न निकलेगा, जो यज़ीद की मंशा है। कोई कहेगा कि आपने बैयत ली, और कोई कहेगा कि नहीं। और इसकी तसदीक़ करने में बहुत वक़्त लगेगा। तो जलसा करूँ?

मरवान — अमीर, मैं आपको ख़बरदार किये देता हूँ कि इनकी बातों में न आइए। बगैर बैयत लिये इन्हें यहाँ से न जाने दीजिए, वरना आप इनसे उस वक़्त बैयत न ले सकेंगे, जब तक ख़ून की नदी न बहेगी। यह चिनगारी की तरह उड़कर सारी ख़िलाफ़त में आग लगा देंगे।

वलीद — मरवान, मैं तुमसे मिन्नत करता हूँ, चुप रहो।

मरवान — हुसैन, मैं ख़ुदा को गवाह करके कहता हूँ कि मैं आपका दुश्मन नहीं हूँ। मेरी दोस्ताना सलाह यह है कि आप यज़ीद की बैयत मंजूर कर लीजिए, ताकि आपको कोई नुक़सान न पहुँचे। आपस का फ़साद मिट जाय, और हज़ारों ख़ुदा के बन्दों की जाने बच जायँ। ख़लीफ़ा आपके बैयत की ख़बर सुनकर बेहद ख़ुश होंगे, और आपके साथ ऐसे सलूक करेंगे कि ख़िलाफ़त में कोई आदमी आपकी बराबरी न कर सकेगा। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आपकी जागीरें और वज़ीफ़े दोचंद करा दूँगा, और आप मदीने में इज़्ज़त के साथ रसूल के क़दमों में लगे हुए दीन और दुनिया में सुर्ख़रू होकर जिन्दगी बसर करेंगे।

हुसैन — बस करो मरवान, मैं तुम्हारी दोस्ताना सलाह सुनने के लिए नहीं आया हूँ। तुमने कभी अपनी दोस्ती का सबूत नहीं दिया, और इस मौक़े पर मैं तुम्हारी सलाह को दोस्ताना न समझकर दग़ा समझूँ, तो मेरा दिल और मेरा ख़ुदा मुझे नाखुश न होगा। आज इस्लाम इतना कमज़ोर हो गया है कि रसूल का बेटा यज़ीद की बैयत लेने के लिए मजबूर हो!

मरवान — उनकी बैयत से आपको क्या एतराज़ है?

हुसैन — इसलिए कि वह शराबी, झूठा, दग़ाबाज़, हरामकार और ज़ालिम है। वह दीन के आलिमों की तौहीन करता है। जहाँ

जाता है, एक गधे पर एक बन्दर को आलिमों के कपड़े पहनाकर साथ ले जाता है। मैं ऐसे आदमी की बैयत अख़्तियार नहीं कर सकता।

मरवान — या अमीर, आपने इनसे बैयत लेंगे या नहीं?

हुसैन — मेरी बैयत किसी के अख्तियार में नहीं है।

मरवान — क़सम ख़ुदा की, आप बैयत क़बूल किये बिना नहीं जा सकते। मैं तुम्हें यहीं क़त्ल कर डालूँगा (तलवार खींचकर बढ़ता है)।

हुसैन — (डपटकर) तू मुझे क़त्ल करेगा, तुझमें इतनी हिम्मत नहीं है! दूर रह। एक क़दम भी आगे रखा, तो तेरा नापाक सर ज़मीन पर होगा।

(अब्बास तीस सशस्त्र आदमियों के साथ तलवार खींचे हुए घुस आते हैं)

अब्बास — (मरवान की ओर झपटकर) मलऊन, यह ले; तेरे लिए दोज़ख का दरवाजा खुला हुआ है।

हुसैन — (मरवान के सामने खड़े होकर) अब्बास, तलवार म्यान में करो। मेरी लड़ाई मरवान से नहीं, यज़ीद से है। मैं ख़ुश हूँ कि यह अपने आक़ा का ऐसा वफ़ादार ख़ादिम है।

अब्बास — इस मरदूद की इतनी हिम्मत कि आपके मुबारक जिस्म पर हाथ उठाये! क़सम ख़ुदा की, इसका खून पी जाऊँगा।

हुसैन — मेरे देखते ही नहीं, मुसलमान पर मुसलमान का खून हराम है।

वलीद — (हुसैन से) मैं सख्त नादिम हूँ कि मेरे सामने आपकी तौहीन हुई। ख़ुदा इसका अज़ाब मुझे दे।

हुसैन — वलीद, मेरी तक़दीर में अभी बड़ी-बड़ी सख्तियाँ झेलनी बदी हैं। यह उस मार्के की तमहीद है, जो पेश आनेवाला है। हम और तुम शायद फिर न मिलें, इसलिए। रुख़सत। मैं तुम्हारी मुरौवत और भलमनसी को कभी न भूलूँगा। मेरी सिर्फ़ इतनी अर्ज़ है कि मेरे यहाँ से जाने में ज़रा भी रोक-टोक न करना।

(दोनों गले मिलकर विदा होते हैं। अब्बास और तीस आदमी बाहर चले जाते हैं)

मरवान — वलीद, तुम्हारी बदौलत मुझे यह ज़िल्लत हुई।

वलीद — तुम नाशुक्रे हो। मेरी बदौलत तुम्हारी जान बच गयी; वरना तुम्हारी लाश फ़र्श पर तड़पती हुई नज़र आती।

मरवान — तुमने यज़ीद की ख़िलाफ़त यज़ीद से छीन कर हुसैन को दे दी। तुमने अबूसिफ़ियान की औलाद होकर उसके ख़ानदान से दुश्मनी की। तुम ख़ुदा की दरगाह में उस क़त्ल और ख़ून के ज़िम्मेदार होगे, जो आज की ग़फ़लत या नरमी का नतीजा होगा।

(मरवान चला जाता है)

पाँचवाँ दृश्य

(समय — आधी रात। हुसैन और अब्बास मस्जिद के सहन में बैठे हुए हैं)

अब्बास — बड़ी ख़ैरियत हुई, वरना मलऊन ने दुश्मनों का काम ही तमाम कर दिया था।

हुसैन — तुम लोगों की जतन बड़े मौक़े पर काम आयी। मुझे गुमान न था कि यह सब मेरे साथ इतनी दग़ा करेंगे। मगर यह जो कुछ हुआ, आगे चलकर इससे भी ज्यादा होगा। मुझे ऐसा मालूम होता है कि हमें अब चैन से बैठना नसीब न होगा। मेरा भी वही हाल होनेवाला है, जो भैया इमाम हसन का हुआ।

अब्बास — ख़ुदा न करे, ख़ुदा न करे!

हुसैन — अब मदीने में हम लोगों का रहना काँटे पर पाँव रखना है। भैया, शायद नबियों की औलाद शहीद होने के लिए ही पैदा होती है। शायद नबियों को भी होनहार की ख़बर नहीं होती; नहीं तो क्या नाना के मसनद पर वे लोग बैठते, जो इस्लाम के दुश्मन हैं, और जिन्होंने सिर्फ़ अपनी ग़रज़ पूरी करने के लिए इस्लाम का स्वाँग भरा है। मैं रसूल ही से पूछता हूँ कि वह मुझे क्या हुक्म देते है? मदीने ही में रहूँ या कहीं और चला जाऊँ? (हज़रत मुहम्मद की क़ब्र पर जाकर) ऐ ख़ुदा, यह तेरे रसूल मुहम्मद की ख़ाक है, और मैं उनकी बेटी का बेटा हूँ। तू मेरे दिल का हाल जानता है। मैंने तेरी और तेरे रसूल की मर्ज़ी पर हमेशा चलने की कोशिश की है। मुझ पर रहम कर और उस पाक नबी के नाते, जो इस क़ब्र में सोया हुआ है, मुझे हिदायत कर कि इस वक़्त मैं क्या करूँ? (रोते हैं, और क़ब्र पर सिर रखकर बैठ जाते हैं। एक क्षण में चौंककर उठ बैठते हैं)

अब्बास — भैया, अब यहाँ से चलो। घर के लोग घबरा रहे होंगे।

हुसैन — नहीं अब्बास, अब मैं लौटकर घर न जाऊँगा। अभी मैंने ख़्वाब देखा कि नाना आये हैं, और मुझे छाती से लगाकर कहते हैं — "बहुत थोड़े दिनों में तू ऐसे आदमियों के हाथों शहीद होगा, जो अपने को मुसलमान कहते होंगे, और मुसलमान न होंगे। मैंने तेरी शहादत के लिए कर्बला का मैदान चुना है, उस वक़्त तू प्यासा होगा, पर तेरे दुश्मन तुझे एक बूँद पानी न देंगे। तुम्हारे लिए यहाँ बहुत ऊँचा रुतबा रखा गया है, पर वह रुतबा शहादत के बग़ैर हासिल नहीं हो सकता।" यह कहकर नाना ग़ायब हो गये।

अब्बास — (रोकर) भैया, हाय भैया, यह ख़्वाब है या पेशीनगोई?

(मुहम्मद हंफ़िया का प्रवेश)

मुहम्मद — हुसैन, तुमने क्या फ़ैसला किया?

हुसैन — ख़ुदा की मर्ज़ी है कि मैं क़त्ल किया जाऊँ।

मुहम्मद — ख़ुदा की मर्ज़ी ख़ुदा ही जानता है। मेरी सलाह तो यह है कि तुम किसी दूसरे शहर में चले जाओ और वहाँ से अपने क़ासिदों को उस जवार में भेजो। अगर लोग तुम्हारी बैयत मंजूर कर लें, तो ख़ुदा का शुक्र करना, वरना यों भी तुम्हारी आबरू क़ायम रहेगी। मुझे ख़ौफ़ यही है कि कहीं तुम ऐसी जगह न जा फँसो, जहाँ कुछ लोग तुम्हारे दोस्त हों, और कुछ तुम्हारे दुश्मन। कोई चोट बग़ली घूँसों की तरह नहीं, कोई साँप इतना क़ातिल नहीं होता, जितना आस्तीन का, कोई कान इतना तेज़ नहीं होता, जितना दीवार का, और कोई दुश्मन इतना ख़ौफ़नाक नहीं होता, जितनी दग़ा। इनसे हमेशा बचते रहना।

हुसैन — आप मुझे कहाँ जाने की सलाह देते हैं?

मुहम्मद — मेरे ख़याल में मक्का से बेहतर कोई जगह नहीं है। अगर क़ौम ने तुम्हारी बैयत मंजूर की, तो पूछना ही क्या? वरना पहाड़ियों की घाटियाँ तुम्हारे लिए क़िलों का काम देंगी, और थोड़े-से मददगारों के साथ तुम आज़ादी से ज़िन्दगी बसर करोगे। ख़ुदा चाहेगा, तो लोग बहुत जल्द यज़ीद से बेज़ार होकर तुम्हारी पनाह में आयेंगे।

हुसैन — अज़ीज़ों को यहाँ छोड़ दूँ?

मुहम्मद — हरगिज़ नहीं। सबको अपने साथ ले जाओ।

हुसैन — यहाँ की हालात से मुझे जल्द-जल्द इत्तिला देते रहिएगा।

मुहम्मद — इसका इतमीनान रखो। (मुहम्मद हुसैन से गले मिलकर चले जाते हैं)

अब्बास — भैया, अब तो घर चलिए, क्या सारी रात जागते रहिएगा?

हुसैन — ख़ुदा पाक की क़सम, तुमसे ज़्यादा सच्चा दोस्त दुनिया में नहीं है।

अब्बास — क्यों न आप इस वक़्त यज़ीद की बैयत मंजूर लीजिए? ख़ुदा कारसाज़ है, मुमकिन है, थोड़े दिनों में यज़ीद ख़ुद ही मर जाय, तो आपको ख़िलाफ़त आप-ही-आप मिल जायगी। जिस तरह आपने मुआबिया के ज़माने में सब्र किया, उसी तरह यज़ीद के ज़माने को भी सब्र के साथ काट दीजिए। यह भी मुमकिन है कि थोड़े ही दिनों में यज़ीद के ज़ुल्म से तंग आकर लोग बग़ावत कर बैठें, और आपके लिए मौक़ा निकल आये। सब्र सारी मुश्किलों को आसान कर देता है।

हुसैन — अब्बास, क्या कहते हो? अगर मैं ख़ौफ़ से यज़ीद की बैयत क़बूल कर लूँ, तो इस्लाम का मुझसे बड़ा दुश्मन और कोई न होगा। मैं रसूल को, वालिद को, भैया हसन को क्या मुँह

दिखाऊँगा। अब्बाजान ने शहीद होना क़बूल किया, पर मुआबिया की बैयत न मंजूर की। भैया ने भी मुआबिया की बैयत को हराम समझा, तो मैं क्यों ख़ानदान में दाग़ लगाऊँ। इज़्ज़त की मौत बेइज़्ज़ती की ज़िन्दगी से कहीं अच्छी है।

अब्बास — (विस्मित होकर) ख़ुदा की क़सम, यह हुसैन की आवाज़ नहीं, रसूल की आवाज़ है, और ये बातें हुसैन की नहीं, अली की हैं। भैया! आपको ख़ुदा ने अक़्ल दी है, मैं तो आपका ख़ादिम हूँ, मेरी बातें आपको नागवार हुई हो, माफ़ करना।

हुसैन — (अब्बास को छाती से लगाकर) अब्बास, मेरा ख़ुदा मुझसे नाराज़ हो जाय, अगर मैं तुमसे ज़रा भी मलाल रखूँ। तुमने मुझे जो सलाह दी, वह मेरी भलाई के लिए दी। इसमें मुझे ज़रा भी शक नहीं, मगर तुम इस मुग़ालते में हो कि यज़ीद के दिल की आग मेरे बैयत ही से ठंडी हो जायगी। हालाँकि यज़ीद ने मुझे क़त्ल करने का यह हीला निकाला है। अगर वह जानता कि मैं बैयत ले लूँगा, तो वह कोई और ही तदबीर सोचता।

अब्बास — अगर उसकी यह नीयत है, तो कलाम पाक की क़सम, मैं आपके पसीने की जगह अपना ख़ून बहा दूँगा, और आपसे आगे बढ़कर इतना तलवारें चलाऊँगा कि मेरे दोनों हाथ कटकर गिर जायँ।

(जैनब, शहरबानू और घर के अन्य लोग आते हैं)

जैनब — अब्बास, बातें न करो। (हुसैन से) भैया, मैं आपके पैरों पड़ती हूँ। आप यह इरादा तर्क कर दीजिए, और मदीने में रसूल की क़ब्र से लगे हुए ज़िन्दगी बसर कीजिए, और अपनी गरदन पर इस्लाम की तबाही का इलज़ाम न लीजिए।

हुसैन — जैनब, ऐसी बातों पर तुफ़ है। जब तक ज़मीन और आसमान क़ायम है, मैं यज़ीद की बैयत नहीं मंजूर कर सकता। क्या तुम समझती हो कि मैं ग़लती पर हूँ।

जैनब — नहीं भैया, आप ग़लती पर नहीं है। अल्लाहताला अपने रसूल के बेटे को ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता, मगर आप जानते हैं कि जमाने का रंग बदला हुआ है। ऐसा न हो, लोग आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हों।

हुसैन — बहन, इन्सान सारी दुनिया के ताने बरदाश्त कर सकता है, पर अपने ईमान का नहीं। अगर तुम्हारा यह ख़याल है कि मेरे बैयत न लेने से इस्लाम में तफ़र्क़ा पड़ जायगा, तो यह समझ लो कि इत्तेफ़ाक़ कितनी ही अच्छी चीज़ हो, लेकिन रास्ती उससे कहीं अच्छी है। रास्ती को छोड़कर मेल को क़ायम रखना वैसा

ही है, जैसा जान निकल जाने के बाद जिस्म क़ायम रखना। रास्ती क़ौम की जान है, उसे छोड़कर कोई क़ौम बहुत दिनों तक ज़िन्दा नहीं रह सकती। इस बारे में मैं अपना राय क़ायम कर चुका, अब तुम लोग मुझे रुख़सत करो। जिस तरह मेरी बैयत से इस्लाम का वक़ार मिट जायगा, उसी तरह मेरी शहादत से उसका वक़ार क़ायम रहेगा। मैं इस्लाम की हुरमत पर निसार हो जाऊँगा।

शहरबानू — (रोकर) क्या आप हमें अपने क़दमों से जुदा करना चाहते हैं?

अली अकबर — अब्बाजान, अगर शहीद ही होना है, तो हम भी वह दर्जा क्यों न हासिल करें?

मुस्लिम — या अमीर, हम आपके क़दमों पर निसार होना ही अपनी ज़िन्दगी का हासिल समझते हैं। आप न ले जायँगे, तो हम जबरन आपके साथ चलेंगे।

अली असग़र — अब्बा, मैं आपके पीछे खड़ा होकर नमाज़ पढ़ता हूँ। आप यहाँ छोड़ देंगे, तो मैं नमाज़ कैसे पढ़ूँगा?

जैनब — भैया, क्या कोई उम्मीद नहीं है? क्या मदीने में रसूल के बेटे पर हाथ रखनेवाला, रसूल की बेटियों की हुरमत पर जान देनेवाला, हक़ पर सिर कटाने वाला कोई नहीं है? इसी शहर से

वह नूर फैला, जिससे सारा जहान रोशन हो गया। क्या वह हक़ की रोशनी इतनी जल्द ग़ायब हो गयी? आप यहीं से हिज़ाज़ और यमन की तरफ़ क़ासिदों को क्यों नहीं रवाना फ़रमाते।

हुसैन — अफ़सोस है जैनब, ख़ुदा को कुछ और ही मंजूर है। मदीने में हमारे लिए अब अमन नहीं है। यहाँ अगर हम आज़ादी से खड़े हैं, तो यह वलीद की शराफ़त है। वरना यज़ीद की फ़ौजों ने हमको घेर लिया होता। आज मुझे सुबह होते-होते यहाँ से निकल जाना चाहिए। यज़ीद को मेरे अज़ीज़ों से दुश्मनी नहीं, उसे ख़ौफ़ सिर्फ़ मेरा है। तुम लोग मुझे यहाँ से रुख़सत करो। मुझे यक़ीन है कि यज़ीद तुम लोगों को तंग न करेगा। उसके दिल में चाहे न हो, मगर मुसलमानों के दिल में ग़ैरत बाक़ी है। वह रसूल की बहू-बेटियों का आबरू लुटते देखेंगे, तो उनका खून ज़रूर गर्म हो जायगा।

जैनब — भैया, यह हर्गिज़ न होगा। हम भी आपके साथ चलेंगी। अगर इस्लाम का बेटा अपनी दिलेरी से इस्लाम का वक़ार क़ायम रखेगा, तो हम अपने सब्र से, ज़ब्त से और बरदाश्त से उसकी शान निभायेंगे। हम पर जिहाद हराम है, लेकिन हम मौका पड़ने पर मरना जानती हैं। रसूल पाक की क़सम, आप हमारी आँखों में आँसू न देखेंगे, हमारे लबों से फ़रियाद न सुनेंगे, और हमारे दिलों से आह न निकलेगी। आप हक़ पर जान देकर

इस्लाम की आबरू रखना चाहते हैं, तो हम भी एक बेदीन और बदकार की हिमायत में रहकर इस्लाम के नाम पर दाग़ लगाना नहीं चाहतीं।

(सिपाहियों का एक दस्ता सड़क पर आता दिखाई पड़ता हैं)

हुसैन — अब्बास, यज़ीद के आदमी हैं। वलीद ने भी दग़ा की। आह, हमारे हाथों में तलवार भी नहीं। ऐ ख़ुदा, मदद!

अब्बास — कलाम पाक की क़सम, ये मरदूद आपके क़रीब न आने पायेंगे।

जैनब — भैया, तुम सामने से हट जाओ।

हुसैन — जैनब, घबराओ मत, आज मैं दिखा दूँगा कि अली का बेटा कितनी दिलेरी से जान देता है।

अब्बास — (बाहर निकलकर फ़ौज के सरदार से) ऐ सरदार, किसकी बदनसीबी है कि तू उसके नज़दीक जा रहा है।

सरदार — यह हज़रत, हमें शहर में गश्त लगाने का हुक्म हुआ है कि कहीं बाग़ी तो जमा नहीं हो रहे हैं।

हुसैन — अब देर करने का मौका नहीं। चलूँ, अम्माँजान से रुख़सत हो लूँ। (फ़ातिमा की क़ब्र पर जाकर) ऐ मादरे-जहान, तेरा बदनसीब बेटा, जिसे तूने गोद में प्यार से खिलाया था, जिसे तूने सीने से दूध पिलाया था — आज तुझसे रुख़सत हो रहा है, और फिर शायद उसे तेरी ज़ियारत नसीब न हो (रोते हैं)।

(मदीने के सब नगरवासियों का प्रवेश)

सब — ऐ अमीर, आप हमें अपने क़दमों से क्यों जुदा करते हैं। हम आपका दामन न छोड़ेंगे। आपके क़दमों से लगे हुए ग़ुरबत का ख़ाक छानना इससे कहीं अच्छा है कि एक बदकार और ज़ालिम की सख़्तियाँ झेलें। आप नबी के ख़ानदान के आफ़ताब हैं। उसकी रोशनी से दूर होकर हम इस अँधेरे में ख़ौफ़नाक जानवरों से क्योंकर अपनी जान बचा सकेंगे। कौन हमे हक़ और दीन की राह सुझायेगा? कौन हमें अपनी नसीहतों का अमृत पिलायेगा? हमें अपने कदमों से जुदा न कीजिए। (रोते हैं)

हुसैन — मेरे प्यारे दोस्तों, मैं यहाँ से ख़ुद नहीं जा रहा हूँ। मुझे तक़दीर लिये जा रही है। मुझे वह दर्दनाक नज़ारा देखने की ताब नहीं है कि मदीने की गलियाँ इस्लाम और रसूल के दोस्तों

के ख़ून से रँगी जायें। मैं प्यारे मदीने को उस तबाही और ख़ून से बचाना चाहता हूँ। तुम्हें मेरी यही आख़िरी सलाह है कि इस्लाम की हुरमत क़ायम रखना, माल और ज़र के लिए अपनी क़ौम और अपनी मिल्लत से बेवफ़ाई न करना, ख़ुदा का नज़दीक इससे बड़ा गुनाह नहीं है। शायद हमें फिर मदीने के दर्शन न हों, शायद फिर हम इन सूरतों को न देख सकें; हाँ, शायद फिर हमें उन बुज़ुर्गों की सूरत देखनी नसीब न हो, जो हमारे नाना के शरीक और हमदर्द रहे, जिनमें से कितनों ही ने मुझे गोद में खिलाया है। भाइयों, मेरी ज़बान में इतनी ताक़त नहीं है कि उस रंज और ग़म को ज़ाहिर कर सकूँ, जो मेरे सीने में दरिया की लहरों की तरह उठ रहा है। मदीने की ख़ाक से जुदा होते हुए जिगर के टुकड़े हुए जाते हैं। आपसे जुदा होते आँखों में अँधेरा छा जाता है, मगर मजबूर हूँ। ख़ुदा की और रसूल की यही मंशा है कि इस्लाम का पौधा मेरे ख़ून से सींचा जाय, रसूल की खेती रसूल की औलाद के ख़ून से हरी हो, और मुझे उनके सामने सिर झुकाने के सिवा और कोई चारा नहीं।

नागरिक — या अमीर, हमें अपने क़दमों से जुदा न कीजिए। हाय अमीर, हाय रसूल के बेटे, हम किसका मुँह देखकर जियेंगे? हम क्योंकर सब्र करें, अगर आज न रोयें, तो फिर किस दिन के लिए

आँसुओं को उठा रखें! आज से ज़्यादा मातम का और कौन दिन होगा?

हुसैन — (मुहम्मद की क़ब्र पर जाकर) ऐ रसूल-ख़ुदा, रुख़सत। आपका नवासा मुसीबत में गिरफ़्तार है। उसका बेड़ा पार कीजिए।

सब लोग मुझे छोड़ के पहले ही सिधारे;
मिलता नहीं आराम नवासे को तुम्हारे।
ख़ादिम को कोई अमन की अब जा नहीं मिलता;
राहत कोई साइत मेरे मौला, नहीं मिलती।
दुख कौन-सा और कौन-सी ईज़ा नहीं मिलती;
हैं आप जहाँ, राह वह मुझको नहीं मिलती।
दुनिया में मुझे कोई नहीं और ठिकाना;
बच जाऊँ जो पास अपने बुला लीजिए नाना,
तुरबत में नवासे को छिपा लीजिए नाना!

(भाई की क़ब्र पर जाकर)

सुन लीजिए शब्बीर की रुख़सत है बिरादर;
हज़रत को तो पहलू हुआ अम्मा का मयस्सर।
क़ब्रें भी जुदा होंगी यहाँ अब तो हमारी;
देखें हमें ले जाय कहाँ ख़ाक हमारी।

मैं नहीं चाहता कि मेरे साथ एक चिउँटी की भी जान ख़तरे में पड़े। हमारे अज़ीज़ों से, अपनी मस्तूरात से, अपने दोस्तों से यही सवाल है कि मेरे लिए ज़रा भी ग़म न करो, मैं वहीं जाता हूँ, जहाँ ख़ुदा की मर्जी लिये जाती है।

अब्बास — या हज़रत, ख़ुदा के लिए हमारे ऊपर यह सितम न कीजिए। हम जीते-जी कभी आपसे जुदा न होंगे।

जैनब — भैया, मेरी जान तुम पर फ़िदा हो। अगर औरतों को तुमने छोड़ दिया, तो लौटकर उन्हें जीता न पाओगे। तुम्हारी तीनों फूल-सी बेटियाँ ग़म से मुरझाई जा रही हैं। शहरबानू का हाल देख ही रहे हो। तुम्हारे बग़ैर मदीना सूना हो जायगा, और घर की दीवारें हमें फाड़ खायँगी। हमारे ऊपर इस बदनामी का दाग़ न लगाओ कि मुसीबत में रसूल की बेटियों ने अपने सरदार से बेवफाई की। तुम्हारे साथ के फ़ाके यहाँ के मीठे लुक़्मों से ज्यादा मीठे मालूम होंगे। जिस्म को तकलीफ़ होगी, पर दिल को इतमीनान रहेगा।

अली अकबर — अब्बा, मैं इस मुसीबत का सारा मज़ा आपको अकेले न उठाने दूँगा। इसमें मेरा भी हिस्सा है। कौन हमारे नेज़ों की चमक देखेगा? किसे हम अपनी दिलेरी के जौहर

दिखायेंगे? नहीं, हम यह ग़म की दावत आपको अकेले न खाने देंगे।

अली असग़र — अब्बा, मुझे अपने आगे घोड़ों पर बिठाकर रास मेरे हाथों में दे दीजिएगा। मैं उसे ऐसा दौड़ाऊँगा कि हवा भी हमारी गर्द को न पहुँचेगी।

हुसैन — हाय, अगर मेरी तक़दीर की मंशा है कि मेरे जिगर के टुकड़े मेरी आँखों के सामने तड़पें, तो मेरा क्या बस है। अगर ख़ुदा को यही मंजूर है कि मेरा बाग़ मेरी नज़रों के सामने उजाड़ा जाय, तो मेरा क्या चारा है। ख़ुदा, गवाह रहना कि इस्लाम की इज़्ज़त पर रसूल की औलाद कितनी बेदरदी से क़ुरबान की जा रही है!

छठा दृश्य

(समय — सन्ध्या। कूफ़ा का एक मकान। अब्दुल्लाह, क़मर, वहब बातें कर रहे हैं)

अब्दुल्लाह — बड़ा ग़ज़ब हो रहा है। शामो फ़ौज से सिपाही शहरवालों को पकड़-पकड़ ज़ियाद के पास ले जा रहे हैं, और वहाँ जबरन उनसे बैयत ली जा रही है।

क़मर — तो लोग क्यों उसकी बैयत क़बूल करते हैं?

अब्दुल्लाह — न करें, तो क्या करें। अमीरों और रईसों को तो जागीर और मनसब की हवस ने फोड़ लिया। बेचारे ग़रीब क्या करें। नहीं बैयत लेते, तो मारे जाते हैं, शहरबदर किये जाते हैं। जिन गिने-गिनाये रईसों ने बैयत नहीं ली, उन पर भी सख़्ती करने की तैयारियाँ हो रही हैं। मगर ज़ियाद चाहता है कि कूफ़ा वाले आपस ही में लड़ जायँ। इसी लिए उसने अब तक कोई सखती नहीं की है।

क़मर — यज़ीद को ख़िलाफ़त का कोई हक़ तो है नहीं, महज़ तलवार का ज़ोर है। शरा के मुताबिक़ हमारे ख़लीफ़ा हुसैन हैं।

अब्दुल्लाह — वह तो ज़ाहिर ही है, मगर यहाँ के लोगों को तो जानते हो न। पहले तो ऐसा शोर मचायेंगे, गोया जान देने पर आमादा हैं, पर ज़रा किसी ने लालच दिखलाया, और सारा शोर ठंडा हो गया। गिने हुए आदमियों को छोड़कर सभी बैयत ले रहे हैं।

क़मर — तो फिर हमारे ऊपर भी तो वही मुसीबत आनी है?

अब्दुल्लाह — इसी फ़िक्र में तो पड़ा हुआ हूँ। कुछ सूझता ही नहीं।

क़मर — सूझना ही क्या है। यज़ीद की बैयत हर्गिज़ मत क़बूल करो।

अब्दुल्लाह-- अपनी ख़ुशी की बात नहीं है।

क़मर — क्या होगा?

अब्दुल्लाह — वज़ीफ़ा बन्द हो जायगा।

क़मर — ईमान के सामने वज़ीफ़े की कोई हस्ती नहीं।

अब्दुल्लाह — जागीर ज्यादा नहीं , तो परवरिश तो हो ही जाती है। वह फ़ौरन छिन जायगी। कितनी मेहनत से हमने मेवों का बाग़ लगाया है। यह कब गवारा होगा कि हमारी मेहनत का फल दूसरे खायँ। कलाम पाक की क़सम, मेरे बाग़ पर बड़ों-को रश्क है।

क़मर — बाग़ के लिए ईमान बेचना पड़े, तो बाग़ की तरफ़ आँख उठाकर देखना भी गुनाह है।

अब्दुल्लाह — क़मर, मामला इतना आसान नहीं है, जितना तुमने समझ रखा है। जायदाद के लिए इन्सान अपनी जान देता है, भाई-भाई दुश्मन हो जाते है, बाप-बेटों में, मियाँ-बीबी में तिफ़ाक़

पड़ जाता है। अगर उसे लोग इतनी आसानी से छोड़ सकते, तो दुनिया जन्नत बन जाती।

क़मर — यह सही है, मगर ईमान के मुक़ाबले जायदाद ही की नहीं, ज़िन्दगी की भी कोई हस्ती हीं। दुनिया की चीजें एक दिन छूट जायँगी, मगर ईमान तो हमेशा साथ रहेगा।

अब्दुल्लाह — शहरबदर होना पड़ा, तो यह मकान हाथ से निकल जायगा। अभी पिछले साल बनकर तैयार हुआ है। देहातों में, जंगलों में बद्दुओं की तरह मारे-मारे घूमना पड़ेगा। क्या जलावतनी कोई मामूली चीज़ है?

क़मर — दीन के लिए लोगों ने सल्तनतें तर्क कर दी हैं, सिर कटाये हैं, और हँसते-हँसते सूलियों पर चढ़ गये हैं। दीन की दुनिया पर हमेशा जीत रही है, और रहेगी।

अब्दुल्लाह — वहब, अपनी अम्माँजान की बातें सुन रहे हो?

वहब — जी हाँ, सुन रहा हूँ, और दिल में फ़ख़्र कर रहा हूँ कि मैं ऐसी दीन-परवर माँ का बेटा हूँ। मैं आपसे सच अर्ज़ करता हूँ कि क़ीस, हज्जाज़, हुर, अशअस जैसे रऊसा को बैयत क़बूल करते देखकर मैं भी नीम राज़ी हो गया था, पर आपकी बातों ने हिम्मत मज़बूत कर दी। अब मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ।

अब्दुल्लाह — वहब, दीन हम बूढ़ों के लिए है, जिन्होंने दुनिया के मज़े उठा लिये। जवानों के लिए दुनिया है। तुम अभी शादी करके लौटे हो, बहू की चूड़ियाँ भी मैली नहीं हुई। जानते हो, वह एक रईस की बेटी है, नाज़ों में पली है, क्या उसे भी ख़ानावीरानी की मुसीबतों में डालना चाहते हो? हम और क़मर तो हज करने चले जायँगे। तुम मेरे जायदाद के वारिस हो, मुझे यह तसकीन रहेगा कि मेरी मिहनत रायगाँ नहीं हुई। तुमने माँ की नसीहत पर अमल किया, तो मुझे बेहद सदमा होगा। पहले जाकर नसीमा से पूछो तो?

वहब — मुझे अपने ईमान के मामले में किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं। मुझे यक़ीन है कि ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत हुसैन हैं। यज़ीद की बैयत कभी न क़बूल करूँगा, जायदाद रहे या न रहे, जान रहे या न रहे।

क़मर — बेटा, तेरी माँ तुझ पर फ़िदा हो, तेरी बातों ने दिल ख़ुश कर दिया। आज मेरी-जैसी ख़ुशनसीब माँ दुनिया में न होगी। मगर बेटा, तुम्हारे अब्बाजान ठीक कहते हैं, नसीमा से पूछ लो, देखो, वह क्या कहती है। मैं नहीं चाहती कि हम लोगों की दीन-परवरी के बाइस उसे तकलीफ़ हो, और जंगलों की ख़ाक छाननी पड़े। उसकी दिलजोई करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।

वहब — आप फ़रमाती हैं, तो मैं उससे भी पूछ लूँगा। मगर मैं साफ़ कहे देता हूँ कि मैं उसकी रज़ा का ग़ुलाम न बनूँगा। अगर उसे दीन के मुक़ाबले में ऐश व आराम ज़्यादा पसन्द है, तौ शौक़ से रहे, लेकिन मैं बैयत की जिल्लत न उठाऊँगा।

(दरवाज़ा खोलकर बाहर चला जाता है)

सातवाँ दृश्य

(अरब का एक गाँव — एक विशाल मन्दिर बना हुआ है, तालाब है, जिसके पक्के घाट बने हुए हैं, मनोहर बाग़ीचा, मोर, हरिण, गाय आदि पशु-पक्षी इधर-उधर विचर रहे हैं। साहसराय और उनके बन्धु तालाब के किनारे सन्ध्या-हवन, ईश्वर-प्रार्थना कर रहे हैं)

(गाना — स्तुति)

अखिलेश अनंत विधाता हो, मंगलमय मोदप्रदाता हो;
भय-भंजन शिव जन त्राता हो, अविनाशी अद्‌भुत ज्ञाता हो।
तेरा ही एक सहारा हो,

हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।

बल, वीर्य, पराक्रम, त्वेष रहे, सद्धर्म धरा पर शेष रहे;

श्रुति भानु एकता वेश रहे, धन, ज्ञान, कला-युत देश रहे।

सर्वत्र प्रेम की धारा हो,

हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।

भारत तन-मन-धन सारा हो, उसकी सेवा सब द्वारा हो।

निज मान समान दुलारा हो, सबकी आँखों का तारा हो।

जीवन सर्वस्व हमारा हो,

हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।

(साहसराय प्रार्थना करते हैं)

भगवन् , हमें शक्ति प्रदान कीजिए कि सदैव अपने व्रत का पालन करें। अश्वत्थामा की सन्तान का निरन्तर सेवा-मार्ग का अवलम्बन करें, उनका रक्त सदैव दीनों की रक्षा में बहता रहे, उनके सिर सदैव न्याय और सत्य पर बलिदान होते रहें। और प्रभो! वह दिन आये कि हम प्रायश्चित-संस्कार से मुक्त होकर तपोभूमि भारत को प्रयाण करें, और ऋषियों के सेवा-सत्कार में मग्न होकर अपना जीवन सफल करें। हे नाथ, हमें सद्बुद्धि दीजिए कि निरन्तर कर्म-पथ पर स्थिर रहें, और उस कलंक-कालिमा को, जो हमारे आदि पुरुष ने हमारे मुख पर लगा दी है, अपनी सुकीर्ति से धोकर अपना मुख उज्ज्वल करें। जब हम स्वदेश-यात्रा करें,

तो हमारे मुख पर आत्मगौरव का प्रकाश हो, हमारे स्वदेश-बन्धु सहर्ष हमारा स्वागत करें, और हम वहाँ पतित बनकर नहीं, समाज के प्रतिष्ठित अंग बनकर जीवन व्यतीत करें।

(सेवक का प्रवेश)

सेवक — दीनानाथ, समाचार आया है, अमीर मुआबिया के बेटे यज़ीद ने ख़िलाफ़त पर अधिकार कर लिया।

साहसराय — यज़ीद ने ख़िलाफ़त पर अधिकार कर लिया! यह कैसे? उसका ख़िलाफ़त पर क्या स्वत्व था? ख़िलाफ़त तो हज़रत अली के बेटे इमाम हुसैन को मिलनी चाहिए थी।

हरजसराय — हाँ, हक़ तो हुसैन ही का है। मुआबिया से पहले इसी शर्त पर सन्धि हुई थी।

सिंहदत्त — यज़ीद की शरारत है। मुझे मालूम है, वह अभिमानी, तामसी और विलास-भोगी मनुष्य है। विषय-वासना में मग्न रहता है। हम ऐसे दुर्जन की ख़िलाफ़त कदापि स्वीकार नहीं कर सकते।

पुण्यराय — (सेवक से) कुछ मालूम हुआ हुसैन क्या कर रहे हैं?

सेवक — दीनबन्धु, वह मदीना से भागकर मक्का चले गये हैं।

सिंहदत्त — यह उनकी भूल है, तुरन्त मदीना वासियों को संगठित करके यज़ीद के नाज़िम का वध कर देना चाहिए था, इसके पश्चात् अपनी ख़िलाफ़त की घोषणा कर देनी थी। मदीना को छोड़कर उन्होंने अपनी निर्बलता स्वीकार कर ली।

रामसिंह — हुसैन धर्मनिष्ठ पुरुष हैं। अपने बंधुओं का रक्त नहीं बहाना चाहते।

ध्रुवदत्त — जीव-हिंसा महापाप है। धर्मात्मा पुरुष कितने ही संकट में पड़े, किन्तु अहिंसा-व्रत को नहीं त्याग सकता।

भीरुदत्त — न्याय-रक्षा के लिए हिंसा करना पाप नहीं। जीव-हिंसा न्याय-हिंसा से अच्छी है।

साहसराय — अगर वास्तव में यज़ीद ने ख़िलाफ़त का अपहरण कर लिया है, तो हमें अपने व्रत के अनुसार न्याय-पक्ष ग्रहण करना पड़ेगा। यज़ीद शक्तिशाली है, इसमें सन्देह नहीं, पर हम न्याय-व्रत का उल्लंघन नहीं कर सकते। हमें उसके पास दूत भेजकर इसका निश्चय कर लेना चाहिए कि हमें किस पथ का अनुसरण करना उचित है।

सिंहदत्त — जब यह सिद्ध है कि उसने अन्याय किया, तो उसके पास दूत भेजकर विलम्ब क्यों किया जाय। हमें तुरन्त संग्राम करना चाहिए। अन्याय को भी अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए युक्तियों का अभाव नहीं होता।

हरजसराय — मैं पूछता हूँ, अभी समर की बात ही क्यों की जाए। राजनीति के तीनों सिद्धान्तों की परीक्षा कर लेने के पश्चात् ही शस्त्र ग्रहण करना चाहिए। विशेषकर इस समय हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं कि हम आत्मगौरव की दुहाई देते हुए रणक्षेत्र में कूद पड़ें। शस्त्र-ग्रहण सर्वदा अंतिम उपाय होना चाहिए।

सिंहदत्त — धन आत्मा की रक्षा के लिए ही है।

हरजसराय — आत्मा बहुत ही व्यापक शब्द है। धन केवल धर्म की रक्षा के लिए है।

रामसिंह — धर्म की रक्षा रक्त से नहीं होती; शील, विनय, सदुपदेश, सहानुभूति, सेवा ये सब उसके परीक्षित साधन हैं, और हमें स्वयं इस साधनों की सफलता का अनुभव हो चुका है।

सिंहदत्त — राजनीति के क्षेत्र में ये साधन उसी समय सफल होते हैं, जब शस्त्र उनके सहायक हों, अन्यथा युद्धलाभ से अधिक उनका मूल्य नहीं होता।

साहसराय — हमारा कर्तव्य अपनी वीरता का प्रदर्शन अथवा राज्य-प्रबन्ध की निपुणता दिखाना नहीं है, न हमारा अभीष्ट अहिंसा-व्रत का पालन करना है। हमने केवल अन्याय को दमन करने का व्रत धारण किया है, चाहे उसके लिए किसी उपाय का अवलम्बन करना पड़े। इसलिए सबसे पहले हमें दूतों द्वारा यज़ीद के मनोभाव का परिचय प्राप्त करना चाहिए। उसके पश्चात् हमें निश्चय करना होगा कि हमारा कर्तव्य क्या है। मैं रामसिंह और भीरुदत्त से अनुरोध करता हूँ कि ये आज ही शाम को यात्रा पर अग्रसर हो जायँ।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(हुसैन का क़ाफ़िला मक्का के निकट पहुँचता है। मक्का की पहाड़ियाँ नज़र आ रही हैं। लोग काबा की मसजिद के द्वार पर हुसैन का स्वागत करने के लिए खड़े हैं)

हुसैन — यह लो, मक्का शरीफ़ आ गया। यही वह पाक मुक़ाम है, जहाँ रसूल ने दुनिया में क़दम रखे। ये पहाड़ियाँ रसूल के सिजदों से पाक और उनके आँसुओं से रोशन हो गयी हैं। अब्बास, काबा को देखकर मेरे दिल में अजीब-सी धड़कन हो रही है, जैसे कोई ग़रीब मुसाफ़िर एक मुद्दत के बाद अपने वतन में दाख़िल हो।

(सब लोग घोड़ों से उतर पड़ते है)

जुबेर — आइए, हज़रत हुसैन, हमारे शहर को अपने क़दमों से रोशन कीजिए।

(हुसैन सबसे गले मिलते हैं)

हुसैन — मैं इस मेहमान-नवाजी के लिए आपका मशकूर हूँ।

जुबेर — हमारी जानें आप पर निसार हों। आपको देखकर हमारी आँखों में नूर आ गया है, और हमारे कलेजे ठंडे हो गये हैं। ख़ुदा गवाह है, आपने रसूल पाक ही का हुलिया पाया है। आइए, काबा हाथ फैलाये आपका इन्तज़ार कर रहा है।

(सब लोग मस्जिद में दाख़िल होते हैं। स्त्रियाँ हरम में जाती हैं)

अली असग़र — अब्बा, इन पहाड़ों पर से तो हमारा घर दिखाई देता होगा?

हुसैन — नहीं बेटा, हम लोग घर से बहुत दूर आ गये हैं। तुमने कुछ नाश्ता नहीं किया?

अली असग़र — मुझे भूख नहीं है। पहले मालूम होती थी, लेकिन अब ग़ायब हो गयी है।

हुसैन — तो तुम यहीं रहो कि तुम्हें भूख ही न लगे।

हबीब — या हज़रत, आप भी ज़रा आराम फ़रमा लें। हमारी बहुत दिनों से तमन्ना है कि आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ें।

(जुबेर और अब्बास को छोड़कर सब लोग वज़ू करने चले जाते हैं)

हुसैन — क्यों जुबेर, यहाँ के लोगों के क्या ख़यायात हैं?

जुबेर — कुछ न पूछिए, मुझे यहाँ की कैफ़ियत बयान करते शरम आती है। यों ज़ाहिर में तो सब-के-सब आप पर निसार होने के लिए क़सम खायेंगे, बैयत लेने को भी भी तैयार नज़र आयेंगे, मगर दिल किसी का भी साफ़ नहीं।

हुसैन — क्या दग़ा का अंदेशा है?

जुबेर — यह तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि कोई ऐसी बात देखने में नहीं आयी, लेकिन इधर-उधर की बातों से पता चलता है कि इनकी नीयत साफ़ नहीं है। अजब नहीं कि यज़ीद दौलत और जागीर का लालच देकर इन्हें मिला ले। उस वक़्त यह ज़रूर आपसे साथ दग़ा कर जायँगे। मैं तो आपको यहीं सलाह दूँगा कि आप मदीने वापस जायँ।

हुसैन — मुझे तो इनकी तरफ़ से दग़ा की गुमान नहीं होता। दग़ा में एक झिझक होती है, जो यहाँ किसी के चेहरे पर नज़र नहीं आती। दग़ा उसी तरह शक पैदा कर देती है, जैसे हमदर्दी एतबार पैदा करती है।

जुबेर — मगर आपको यह भी तो मालूम होगा कि दग़ा गिरगिट की तरह कभी अपने असली रंग में नहीं दिखाई देती। वह हाथों का बोसा लेती है, पैरों तले आँखें बिछाती है, और बातों में शकर बरसाती है।

अब्बास — दोस्त बनकर सलाह देती है, ख़ुद किनारे पर रहती है, पर दूसरों को दरिया में ढकेल देती है। आप हँसती है, पर दूसरों को रुलाती है, और अपनी सूरत को हमेशा ज़ाहिद के लिबास में छिपाये रहती है।

जुबेर — ख़ुदा पाक की क़सम, आप मेरी तरफ़ इशारा कर रहे हैं। अगर आप जानते कि मैं हज़रत हुसैन की कितनी इज़्ज़त करता हूँ, तो मुझ पर दग़ा का शक न करते। अगर मैं यज़ीद का दोस्त होता, तो अब तक दौलत से मालामाल हो जाता। अगर ख़ुद बैयत की नीयत रखता, तो अब तक ख़ामोश न बैठा रहता। आप मुझ पर यह शुबहा करके बड़ा सितम कर रहे हैं।

हुसैन — अब्बास, मुझे तुम्हारी बातें सुनकर बड़ी शर्म आती है। जुबेर सबसे अलग-बिलग रहते हैं। किसी के बीच में नहीं पड़ते। एकान्त में बैठनेवाले आदमियों पर अक्सर लोग शुबहा करने लगते हैं। तुम्हें शायद यह नहीं मालूम है कि दग़ा गोशे से सोहबत को कहीं ज़्यादा पसन्द करती है।

(हबीब का प्रवेश)

हबीब — या हज़रत, मुझे अभी मालूम हुआ कि आपके यहाँ तशरीफ़ लाने की ख़बर यज़ीद के पास भेज दी गयी है, और मरवान यहाँ का नाज़िम बनाकर भेजा जा रहा है।

हुसैन — मालूम होता है, मरवान हमारी जान लेकर ही छोड़ेगा। शायद हम ज़मीन के परदे में चले जायँ, तो वहाँ भी हमें आराम न लेने देगा।

अब्बास — यहाँ उसे उसकी शामत ला रही है। कलाम पाक की क़सम, वह यहाँ से जान सलामत न ले जायगा। काबा में ख़ून बहाना हराम ही क्यों न हो, पर ऐसे रूह-स्याह का ख़ून यहाँ भी हलाल है।

हबीब — वलीद के माजूली का मुझे सख़्त अफ़सोस है। वह इस्लाम का सच्चा दोस्त था। मैं पहले ही समझ गया था कि ऐसे नेक और दीनदार आदमी के लिए यज़ीद के दरबार में जगह नहीं है। अब्बास, वलीद की माजूली मेरी शहादत की दलील है।

हबीब — यह भी सुना गया है कि यज़ीद ने अपने बेटे को, जो आपका ख़ैरख़्वाह है, नज़रबन्द कर दिया है। उसने खुल्लमखुल्ला यज़ीद की बेइन्साफ़ी का एतराज़ किया था। यहाँ तक कहा था कि ख़िलाफ़त पर तुम्हारा कोई हक़ नहीं है। यज़ीद यह सुनकर

आग-बबूला हो गया। उसे क़त्ल करना चाहता था, लेकिन रूमी ने बचा लिया।

अब्बास — ऐसे ज़ालिम का क़त्ल कर देना ऐन सबाब है।

हुसैन — अब्बास, यह खुदा की मंशा की दूसरी दलील है। यह उसकी बदनसीबी है कि तक़दीर ने उसे मेरी शहादत का वसीला बनाया है। अपने बेटे को क़ैद करने से किसी को ख़ुशी नहीं हो सकती। जो आदमी अपने बेटे की ज़बान से अपनी तौहीन सुने, उससे ज़्यादा बदनसीब दुनिया में और कौन होगा।

जुबेर — मेरे ख़याल में अगर आप कूफ़े की तरफ़ जायँ, तो वहाँ आपको मददगारों की कमी न रहेगी।

हबीब — या हज़रत, मैं कूफ़ा के क़रीब का रहनेवाला हूँ, और कूफ़ियों की आदत से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। दग़ा उनकी ख़मीर में मिली हुई है। आप उनसे बचे रहिएगा। वह आपके पास अपनी बैयत के पैग़ाम भेजेंगे। उनके क़ासिद-पर-क़ासिद आयेंगे, और आपको चैन न लेने देंगे। उनके ख़तों से ऐसा मालूम होगा कि सारा मुल्क आप पर फ़िदा होने के लिए तैयार है। पर आप उनकी बातों में हर्गिज़ न आइएगा। भूलकर भी कूफ़ा की तरफ़ रुख़ न कीजिएगा। मेरी आपसे यही अर्ज़ है कि काबा से बाहर क़दम न रखिएगा, जब तक आप यहाँ रहेंगे, आप सब बलाओं से

बचे रहेंगे। कूफ़ावाले वफ़ादारी से उतना ही महरूम है, जैसे चिड़िया दूध से।

हुसैन — मैं कूफ़ावालों से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। तुमने और भी ख़बरदार कर दिया, इसके लिए मैं तुम्हारा मशकूर हूँ।

हबीब — मैं यही अर्ज़ करने के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। अगर वे लोग रोते हुए आकर आपके पैरों पर गिर पड़े, तो भी आप उन्हें ठुकरा दीजिएगा। इसमें शक नहीं कि वे दिलेर हैं, दीनदार हैं, मेहमान-नवाज़ हैं, पर दौलत के ग़ुलाम हैं। इस ऐब ने उनकी सारी ख़ूबियों पर परदा डाल दिया है। वज़ीफ़े और जागीर के लालच और वज़ीफ़े तथा जागीर की ज़ब्ती का ख़ौफ़ उनसे ऐसे क़ौल करा सकता है, जिसकी इन्सान से उम्मीद नहीं की जा सकती।

हुसैन — हबीब, मैं तुम्हारी सलाह को हमेशा याद रखूँगा।

जुबेर — हबीब, तुमने कूफ़ियों के बारे में जो कुछ कहा, वह बहुत कुछ दुरुस्त है, लेकिन तुम हज़रत हुसैन के दोस्त हो, तुमसे कहने में कोई ख़ौफ़ नहीं कि मक्कावाले भी इस मामले में कूफ़ावालों ही के भाई-बन्द हैं। इनके क़ौल और फ़ेल का भी कोई एतबार नहीं। कूफ़े की आबादी ज़्यादा है, वे अगर दिल से किसी बात पर आ जायँ, तो यज़ीद के दाँत खट्टे कर सकते हैं। मक्का की

थोड़ी-सी आबादी अगर वफ़ादार भी रहे, तो उससे भलाई की कोई उम्मीद नहीं हो सकती। शाम को दो हज़ार फ़ौज इन्हें घेर लेने को काफ़ी है। भलाई या बुराई किसी ख़ास मुल्क या क़ौम का हिस्सा नहीं होती। वही सिपाह जो एक बार मैदान में दिलेरी के जौहर दिखती है, दूसरी बार दुश्मन को देखते ही भाग खड़ी होती है। इसमें सिपाह की ख़ता नहीं। उसके फ़ेल की ज़िम्मेदारी उसके सरदार पर है। वह अगर दिलेर है, तो सिपाह में दिलेरी का रूह फूँक सकता है; कम-हिम्मत है, तो सिपाह की हिम्मत को भी पस्त कर देगा। आप रसूल के बेटे हैं, आपको भी ख़ुदा ने वही अक़्ल और कमाल अता किया है। यह क्योंकर मुमकिन है कि आपकी सोहबत का उन पर असर न पड़े। कूफ़ा तो क्या, आप हक़ को भी हक़ के रास्ते पर ला सकते है। मेरे ख़याल में आपको किसी से बदगुमान होने की ज़रूरत नहीं।

अब्बास — जुबेर, सलाह कितनी ही माकूल हो, लेकिन उसमें ग़रज़ की बू आते ही उसकी मंशा फ़ौत हो जाती है।

हुसैन — अगर तुम्हारा इरादा यहाँ लोगों से बैयत लेने का हो, तो शौक़ से लो, मैं ज़रा भी दखल न दूँगा।

जुबेर — या हज़रत, मेरा ख़ुदा गवाह है कि मैं आपके मुक़ाबले में अपने को ख़िलाफ़त के लायक़ नहीं समझता। मैं यज़ीद की

बैयत न करूँगा, लेकिन ख़ुदा मुझे नजात न दे, अगर मेरे दिल में आपका मुक़ाबला करने का ख़याल भी आया हो।

हबीब — या इमाम, अगर तकलीफ न हो,तो सहन में तशरीफ़ लाइए। अज़ान हो चुकी। लोग आपकी राह देख रहे हैं।

(सब लोग नमाज पढ़ने जाते हैं)

दूसरा दृश्य

(यज़ीद का दरबार — यज़ीद, ज़ुहाक़ मुआबिया, रूमी, हुर और अन्य सभासद बैठे हुए हैं। दो वेश्याएँ शराब पिला रही हैं)

यज़ीद — तुममें से कोई बता सकता है, जन्नत कहाँ है?

हुर — रसूल ने तो चौथे आसमान पर फ़रमाया है।

शम्स — मैं चौथे-पाँचवें आसमान का क़ायल नहीं। ख़ुदा का फ़ज़ल और करम ही जन्नत है।

रूमी — ख़ुदा की निगाह कोई क़ब्रिस्तान नहीं है कि वहाँ मुर्दे दफ़न हों। जन्नत वहीं होगी, जहाँ लाशें दफ़न की जाती होंगी।

यज़ीद — उस्ताद, तुम भी चूक गये, फिर ज़ोर लगाना। अब भी ज़ुहाक़ की बारी है। कहिए शेख़जी, जन्नत कहाँ है?

ज़ुहाक़ — बतलाऊँ? इस शराब के प्याले में।

यज़ीद — पते पर पहुँचे, पर अभी कुछ कसर है। ज़रा और ज़ोर लगाओ।

ज़ुहाक़ — उस प्याले में जो किसी नाज़नीन के हाथ से मिले।

यज़ीद — लाना हाथ। बस वही जन्नत है। मए-गुलफ़ाम हो, और किसी नाज़नीन का पंजए-मरजान हो। इस एक जन्नत पर रसूल की हज़ारों जन्नतें क़ुरबान हैं। अच्छा, अब बताओ, दोज़ख कहाँ है?

हुर — या ख़लीफ़ा आपको दीन-हक़ की तौहीन मुनासिब नहीं।

यज़ीद — हुर, तुमने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया। आँखों की क़सम है, तुम मेरी मजलिस में बैठने के क़ाबिल नहीं हो। सारा मज़ा ख़ाक में मिला दिया। यज़ीद के सामने दीन का नाम लेना मना है। दीन उन मुल्लाओं के लिए है, जो मस्जिदों में पड़े हुए गोश्त की हड्डियों को तरसते हैं, दीन उनके लिए है, जो मुसीबतों

के सबब से ज़िन्दगी से बेज़ार हैं, जो मुहताज हैं, बेबस हैं, भूखों मरते हैं, जो ग़ुलाम हैं, दुर्रे खाते हैं। दीन बूढ़े मरदों के लिए, राँड औरतों के लिए, दिवालिए सौदागरों के लिए है। इस ख़याल से उनके आँसू पुँछते हैं, दिल को तसकीन होती है। बादशाहों के लिए दीन नहीं है। उनकी नजात रसूल और ख़ुदा के निगाह-करम की मुहताज नहीं। उनकी नजात उनके हाथों में है। दोस्तों, बतलाना हमारा पीर कौन है?

ज़ुहाक़ — पीर मुगाँ (साक़ी)।

यज़ीद — लाना हाथ। हमारा पीर साक़ी है, जिसके दस्ते-करम से हमें यह नियामत मयस्सर हुई है। अच्छा, कौन मेरे सवाल का जवाब देता है, दोज़ख कहाँ है?

सम्स — किसी सूदख़ोर की तोंद में।

यज़ीद — बिल्कुल ग़लत।

रूमी — ख़लीफ़ा के ग़ुस्से में।

यज़ीद — (मुस्करा कर) इनाम के क़ाबिल जवाब है, मगर ग़लत।

कीस — किसी मुल्ला की नमाज़ में, जो ज़मीन पर माथा रगड़ते हुए ताकता रहता है कि कहीं से रोटियाँ आ रही हैं या नहीं।

यज़ीद — वल्ला, खूब जवाब है, मगर ग़लत।

ज़ुहाक़ — किसी नाज़नीन के रूठने में।

यज़ीद — ठीक, ठीक, बिल्कुल ठीक। लाना हाथ। दिल खुश हो गया — (वेश्याओं से) नरगिस, इस जवाब की दाद दो, जुहरा, शेख़जी के हाथों में बोसा दो। वह गीत गाओ, जिसमें शराब की बू हो, शराब का नशा हो, शराब की गर्मी हो।

नरगिस — आज ख़लीफ़ा से कोई बड़ा इनाम लूँगी।

(गाती है)

हाँ खुले साक़ी दरे-मैख़ाना आज,
ख़ैर हो, भर दे मेरा पैमाना आज।
नाज़ करता झूमता मस्ताना वार,
अब आता है, सूए-मैख़ाना आज।
बोसए-लब हुस्न के सदक़े में दे,
और बुते तरसा हमें तरसा न आज।
इश्क़े-चश्मे-मस्त का देखो असर,
पाँव पड़ता है मेरा मस्ताना आज।
मेरे सीरो की इलाही ख़ैर हो,
है बहुत मुज़तर दिले दीवाना आज।
मुहतसिब का डर नहीं 'बिस्मिल' तुम्हें,
सूए-मस्जिद जाते हो रंदाना आज।

(एक क़ासिद का प्रवेश)

क़ासिद — अस्सलामअलेक या इमाम, बिन-ज़ियाद ने मुझे कूफ़ा से आपकी ख़िदमत में भेजा है।

यज़ीद — ख़त लाया है?

क़ासिद — ख़त इस ख़ौफ़ से नहीं लाया कि कहीं रास्ते में बागियों के हाथों गिरफ्तार न हो जाऊँ।

यज़ीद — क्या पैग़ाम लाया है?

क़ासिद — बिन ज़ियाद ने गुज़ारिश की है कि यहाँ के लोग हुज़ूर की बैयत क़बूल नहीं करते, और बग़ावत पर आमादा हैं। हुसैन बिन अली को अपनी बैयत लेने के लिए बुला रहे हैं। तीन क़ासिद जा चुके हैं, मगर अभी तक हुसैन आने पर रज़ामन्द नहीं हुए, अब शहर के कई रऊसा खुद जा रहे हैं।

यज़ीद — बिन ज़ियाद से कहो, जो आदमी मेरी बैयत न मंजूर करे, उसे क़त्ल कर दे। मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं।

रूमी — दुश्मन के साथ मुतलक़ रियायत की ज़रूरत नहीं। ज़ियाद को चाहिए कि तलवार का इस्तेमाल करने में दरेग़ न करे।

हुर — मुझे ख़ौफ़ है कि बग़ावत हो जायगी।

रूमी — सज़ा और सख्ती यही हुकूमत के दो गुर हैं। मेरी उम्र बादशाहत के इन्तज़ाम ही में गुजरी है, इससे बेहतर और कारगर कोई तदबीर न नज़र आयी। ख़ुदा को भी अपना निज़ाम क़ायम रखने के लिए दोज़ख़ की ज़रूरत पड़ी। दोज़ख़ का ख़ौफ़ ही दुनिया को आबाद रखे हुए है। उनका रहम और इन्साफ़ फ़क़ीरों और बेकसों की तसकीन के लिए है। ख़ौफ़ ही सल्तनत की बुनियाद है। नरमी से सल्तनत का वक़ार मिट जाता है, लोग सरकश हो जाते हैं, फ़साद का बाज़ार गर्म हो जाता है। ज़ियाद से कहना, क़त्ल करो और इस तरह क़त्ल करो कि देखनेवालों के दिल थर्रा जायँ। तीरों से छिदवाओ, कुत्तों से नुचवाओ, ज़िन्दा खाल खिंचवाओ, लाल लोहे से दाग़ दो। जो हुसैन का नाम ले, उसकी ज़बान तालू से खींच ली जाय। वह सज़ा सज़ा नहीं, जो सख़्त न हो।

यज़ीद — मैं इस हुक्म की ताईद करता हूँ। जा, और फिर ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए मेरे आराम में बाधा न डालना।

(क़ासिद का प्रस्थान)

हुसैन का कूफ़ा आना मेरे लिए मौत से कम नहीं। क़सम है आँखों की , वह कूफ़ा न आने पायेगा, अगर मेरा बस है।

शम्स — ताज्जुब यही है कि कूफ़ावालों ने तीन क़ासिद भेजे, और हुसैन जाने पर राज़ी नहीं हुए।

यज़ीद — तैयारियाँ कर रहा होगा। वलीद अगर मेरे चचा का बेटा न होता, तो मैं अपने हाथों से उसकी आँखें निकाल लेता। उसने जान-बूझकर हुसैन को मक्का जाने दिया। मदीना ही मे क़त्ल कर देता, तो मुझे आज इतनी परेशानी क्यों होती। कौन जाकर उसे गिरफ़्तार कर सकता है?

हुर — मैं इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ।

यज़ीद —अगर तुम यह काम पूरा कर दिखाओ, तो इसके सिले में मैं तुम्हें एक सूबा दूँगा, जिस पर जन्नत भी फ़िदा हो। मेरी फ़ौज से एक हजार चुने हुए आदमी ले लो, और जब आफताब निकले, तो तुम्हें यहाँ से बीस फ़र्सख़ पर देखें।

हुर — इंशाअल्लाह!

यज़ीद — जैसे शिकारी शिकार की तलाश करता है, उसी तरह हुसैन की तलाश करना। बीहड़ रास्ते, अँधेरी घाटियाँ, घने जंगल,

रेतीले मैदान, सब छान डालना। दिन का फ़िक्र नहीं, पर रात को अपनी आँखों से नींद को यों भगा देना, जैसे कोई दीनदार आदमी अपने दरवाज़े से कुत्ते को भगाता है।

हुर — हुक्म की तामील करूँगा। (स्वगत) यज़ीद बदकार है, बेदीन है, शराबी है; मगर ख़िलाफ़त को संभाले हुए तो है। हुसैन की बैयत मुसलमानों में दुश्मनी पैदा कर देगी, ख़ून का दरिया बहा देगी, और ख़िलाफ़त का निशान मिटा देगी। ख़िलाफ़त क़ायम करना व देखना मेरा पहला फ़र्ज़ है। ख़लीफ़ा कौन और कैसा हो, यह बाद को देखा जायगा।

(हुर का प्रस्थान)

यज़ीद — नरगिस, रंदो में एक ज़ाहिद था, वह खिसका, अब कोई मस्त करनेवाली ग़ज़ल गाओ। काश, सल्तनत की फ़िक्र न होती, तो तुम्हारे हाथों के शराब के प्याले पीता उम्र गुज़ार देता।

नरगिस — ख़ौफ़ से काँपती हुई बुलबुल मस्ताना ग़ज़लें नहीं गा सकती। शाख़ पर है, तो उड़ जायगी. क़फ़स में है तो मर जायगी। मैंने ख़ौफ़ से गुलशन को आबाद होते नहीं, वीरान होते देखा है। मेरा वतन कूफ़ा है, और मैं कूफ़ियों का ख़ूब जानती

हूँ। उन पर सख्तियाँ करके आप हुसैन को बुला रहे हैं। हुसैन कूफ़े में दाख़िल हो गये, तो फिर आप हमेशा के लिए इराक़ से हाथ धो बैठेंगे। कूफ़ावाले रियायतों से, जागीरों से, वज़ीफ़ों से, थपकियों से क़ाबू में आ सकते है, सख़्ती से नहीं। अगर एतबार न हो, तो मुझ पर अपनी ताक़त आजमा लो। अगर तुम्हारी दसों उँगलियाँ दस तलवारें हो जायँ, तो भी आप मेरे मुँह से एक सुर भी नहीं निकलवा सकते। कूफ़ा मुसीबत में मुब्तिला है, मैं यहाँ नहीं रह सकती।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(कूफ़ा की अदालत — क़ाज़ी और अमले बैठे हुए हैं। क़ाज़ी के सिर पर अमामा है, बदन पर कबा, कमर में कमरबन्द, सिपाही नीचे कुरते पहने हुए हैं। अदालत से कुछ दूर पर एक मस्जिद है। मुक़द्दमे पेश हो रहे हैं। कई आदमी एक शरीफ़ आदमी की मुश्कें कसे लाते हैं)

क़ाज़ी — इसने क्या ख़ता की है?

एक आदमी — हुज़ूर, यह आदमी मस्जिद में खड़ा लोगों से कह रहा था कि किसी को फ़ौज में न दाख़िल होना चाहिए।

क़ाज़ी — गवाह है?

एक सिपाही — हुज़ूर, मैंने अपने कानों सुना है।

क़ाज़ी — इसे ले जाकर क़त्ल कर दो।

मुलज़िम. – हुज़ूर, बिल्कुल बेगुनाह हूँ। ये दोनों सिपाही मेरी दूकान से कपड़े उठाये लेते थे मैंने छीन लिया, इस पर इन्होंने मुझे पकड़ लिया। हुज़ूर मेरे पड़ोस के दूकानदारों से पूछ लें। बेगुनाह मारा जा रहा हूँ। मेरे बाल-बच्चे तबाह हो जायँगे।

क़ाज़ी — इस यहाँ से हटाओ।

मुलजिम — (चिल्लाकर) या रसूल, तुम क़यामत के लिए मेरा और इस क़ातिल का फ़ैसला करना।

(दोनों सिपाही उसे ले जाते हैं। मस्जिद की तरफ़ से आवाज़ आती हैं —)

“या ख़ुदा हम बेकस तेरी बारगाह में फ़रियाद करने आये हैं। हमें ज़ालिम के फन्दे से आज़ाद कर।”

(चार सिपाही पंद्रह-बीस आदमियों की मुश्कें कसे, कोड़े मारते हुए लाते हैं)

क़ाज़ी — इन पर क्या इलज़ाम है?

एक सिपाही — हुज़ूर, ये उन आदमियों में है, जिन्होंने हुसैन से पास क़ासिद भेजे थे।

क़ाज़ी — संगीन जुर्म है। कोई गवाह?

एक सिपाही — हुज़ूर, कोई गवाह नहीं मिलता। शहरवालों के डर के मारे कोई गवाही देने पर राज़ी नहीं होता।

क़ाज़ी — इन्हें हिरासत में रखो, और जब गवाह मिल जायँ, तो फिर पेश करो।

(सिपाही उन आदमियों को ले जाते हैं। फिर दो सिपाही एक औरत की दोनों कलाइयाँ बाँधे हुए लाते हैं)

क़ाज़ी — इस पर क्या इलज़ाम है?

एक सिपाही — हुज़ूर, जब हम लोग उन मुलज़िमों को गिरफ्तार कर रहे थे, जो अभी गये हैं, तो इसने ख़लीफ़ा को ज़ालिम कहा था।

क़ाज़ी — गवाह?

एक औरत — हुज़ूर, खुदा इसका मुँह न दिखाए, बड़ी बदज़बान है।

क़ाज़ी — इसका मकान ज़ब्त कर लो, और इसके सर के बाल नोच लो।

मुलज़िम औरत — खुदाबन्द मेरी आँखें फूट जायँ, जो मैंने किसी को कुछ कहा हो। यह औरत मेरी सौत है। इसने डाह से मुझे फँसा दिया है। खुदा गवाह है कि मैं बेक़सूर हूँ।

क़ाज़ी — इसे फ़ौरन ले जाओ।

एक युवक — (रोया हुआ) या क़ाज़ी, मेरी माँ पर इतना ज़ुल्म न कीजिए। आप भी तो किसी माँ के बच्चे हैं। अगर कोई आपकी माँ के बाल नोचवाता, तो आपके दिल पर क्या गुजरती।

क़ाज़ी — इस मलऊन को पकड़कर दो सौ दुर्रे लगाओ।

(कई सिपाही आदमियों के गोल को बाँधे हुए लाते हैं)

क़ाज़ी — इन्होंने ख़ुदा के किस हुक्म को तोड़ा है?

एक सिपाही — हुज़ूर, ये सब आदमी सामने वाली मस्जिद में खड़े होकर रो रहे थे।

क़ाज़ी — रोना कुफ़्र है। इन सबों की आँखें फोड़ डाली जायँ।

(सैकड़ों आदमी मस्जिद की तरफ़ से तलवारें और भाले लिये दौड़े आते हैं और अदालत को घेर लेते हैं)

सुलेमान — क़त्ल कर दो, इस मरदूद मक्कार को, जो अदालत के मसनद पर बैठा हुआ अदालत का ख़ून कर रहा है।

मूसा — नहीं, पकड़ लो। इसे ज़िन्दा जलायेंगे।

(कई आदमी क़ाज़ी पर टूट पड़ते हैं)

क़ाज़ी — शरा के मुताबिक़ मुसलमान पर मुसलमान का ख़ून हराम है।

सुलेमान — तू मुसलमान नहीं है! इन सिपाहियों में से एक भी जाने न पाये।

एक सिपाही — या सुलेमान, हमारी क्या ख़ता है? जिस आक़ा के ग़ुलाम है, उसका हुक्म न मानें, तो रोटियाँ क्योंकर चलें?

मूसा — जिस पेट के लिए तुम्हें ख़ुदा के बन्दों को ईज़ा पहुँचानी पड़े, उसको चाक कर देना चाहिए।

(सिपाहियों और बाग़ियों में लड़ाई होने लगती है)

सुलेमान — भाइयों, आपने इन ज़ालिमों के साथ वही सलूक किया, जो वाजिब था, मगर भूल न जाइए कि ज़ियाद इसकी इत्तिला यज़ीद को ज़रूर देगा, और हमें कुचलने के लिए शाम से फ़ौज आयेगी। आप लोग उसका मुक़ाबला करने को तैयार है?

एक आवाज़ — अगर तैयार नहीं हैं, तो हो जायँगे।

सुलेमान — हमने अभी तक यज़ीद की बैयत नहीं क़बूल की, और न करेंगे। इमाम हुसैन की ख़िदमत में बार-बार क़ासिद भेजे गये, मगर वह तशरीफ़ नहीं लाये। ऐसा हालत में हमें क्या करना चाहिए?

हानी — हममें से चन्द ख़ास आदमी ख़ुद जायँ, और उन्हें साथ लायें।

मुख़्तार — हम लोगों ने रसूल की औलाद के साथ बार-बार ऐसी दग़ा की है कि हमारा एतबार उठ गया। मुझे ख़ौफ़ है कि हज़रत हुसैन यहाँ हर्गिज़ न आयेंगे।

सुलेमान — एक बार आख़िरी कोशिश करना हमारा फ़र्ज़ है। हम लो चलकर उनसे अर्ज़ करें कि हम क़त्ल किये जा रहे हैं, लूटे जा रहे हैं, हमारी औरतों की आबरू भी सलामत नहीं। हमारी मुसीबत की कहानी सुनकर हुसैन को ज़रूर तरस आयेगा, उनका दिल इतना सख़्त नहीं हो सकता।

मुख़्तार — मगर वह तुम्हारी मुसीबतों पर तरस खाकर आये, और तुमने उनकी मदद न की, तो सब-के-सब रूहस्याह कहलाओगे। हमने पहले जो दग़ाएँ की हैं, उनका फल पा रहे हैं, और फिर वही हरकत की, तो हम दुनिया और दीन में कहीं भी मुँह न दिखा सकेंगे। ख़ूब सोच लो, आख़िर तक तुम अपने इरादे पर क़ायम रह सकोगे? अगर तुम्हारा दिल हामी भरे, तो मैं दावे से कह सकता हूँ कि उन्हें खींच लाऊँगा। लेकिन अगर तुम्हारे दिल कच्चे हैं, तुम अपनी जानें निसार करने को तैयार नहीं हो,

अगर तुम्हें ख़ौफ़ है कि तुम लालच के शिकार बन जाओगे, तो तुम उन्हें मक्के में पड़ा रहने दो।

हज्जाज़ — ख़ुदा की क़सम, हम उनके पैरों पर अपनी जानें निछावर कर देंगे।

हारिस — हम अपनी बदनामी के दाग़ मिटा देंगे।

मुख़्तार — ख़ुदा को हाज़िर जानकर वादा करो कि अपने क़ौल पर क़ायम रहोगे।

कई आदमी एक साथ — अल्लाहोअकबर! हम हुसैन पर फ़िदा हो जायँगे।

सुलेमान — तो मैं उनकी ख़िदमत में ख़त लिखता हूँ।

(ख़त लिखता है)

हज्जाज़ --इतना ज़रूर लिख देना कि हम आपके नाना मुहम्मद मुस्तफ़ा वा वास्ता देकर आपसे अर्ज़ करते हैं कि हमारे ऊपर रहम कीजिए।

हारिस — यह और लिख देना कि हम बेशुमार अर्ज़ियाँ आपकी ख़िदमत में भेज चुके, और आप तशरीफ़ न लाये। अगर आप

अब भी न आये, तो हम कल क़यामत के रोज़ रसूल के हज़ूर में आपका दामन पकड़ेंगे।

हज्जाज़ — और कहेंगे, या ख़ुदा, हुसैन ने हम पर ज़ुल्म किया था। क्योंकि हम पर ज़ुल्म होते देखकर वह ख़ामोश बैठे रहे, तो उस वक़्त आप क्या जवाब देंगे, और रसूल को क्या मुँह दिखायेंगे।

कीस — मेरे क़बीले में एक हज़ार जवान हैं, जो हुसैन के इन्तज़ार में बैठे हुए है।

हज्जाज़ — शायद शाम तक ज़ियाद कुछ आदमी जमा कर ले।

हारिस — अभी वह ख़ामोश रहेगा। यज़ीद की फ़ौज आ जायगी, तब हमारे ऊपर हमला करेगा।

शिमर — क्यों न लगे हाथ उसका भी ख़ातमा कर दें, क़िस्सा पाक हो?

हारिस — वाह, अब तक वह यहाँ बैठा होगा।

सुलेमान — मैंने सारी दास्तान लिख दी है। कौन इस ख़त को ले जायगा?

शिमर — मैं हाज़िर हूँ।

सुलेमान — किसके पास ऐसी साँड़नी है, जो थकना न जानती हो, जो इस तरह दौड़ सकती हो, जैसे ज़ियाद लूट के माल की तरफ़?

एक युवक — मेरे पास ऐसी साँड़नी है, जो तीन दिन में इस ख़त का जवाब ला सकती है। यह ख़िदमत बजा लाने का हक़ मेरा है, क्योंकि मुझसे ज़्यादा मज़लूम और कोई न होगा, जिसकी माँ के बाल क़ाज़ी के हुक्म से अभी-अभी नोचे गये हैं।

सुलेमान — बेशक, तुम्हारा हक़ सबसे ज़्यादा है। यह ख़त लो, और इसके पहले कि हमारा पसीना ठंडा हो, मक्का की तरफ़ रवाना हो जाओ।

(युवक चला जाता है)

आइए, हम लोग मस्जिद में नमाज़ अदा कर लें। ख़त का जवाब तीन दिन में आयेगा। हज़रत हुसैन के आने में अभी एक महीने की देर है। ज़ियाद भी शायद उसके पहले नहीं लौट सकता। ये दिन हमें अपनी तैयारियों से सर्फ़ करने चाहिए, क्योंकि यज़ीद की ख़िलाफ़त का फ़ैसला कूफ़ा में होगा। या तो वह ख़िलाफ़त के मसनद पर बैठेगा. या जाहिलों की इबादत का मज़ार बनेगा। अगर कूफ़ा ने ख़िलाफ़त को नबी के ख़ानदान में वापस कर दिया, तो उसका नाम हमेशा रोशन रहेगा।

(सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

(स्थान — काबा, मरदाना बैठक। हुसैन, जुबेर, अब्बास, मुस्लिम, अली असग़र आदि बैठे दिखाई देते हैं।

हुसैन — यह पाँचवीं सफ़ारत है। एक हज़ार से ज़्यादा ख़तूत आ चुके हैं। उन पर दस्तख़त करनेवालों की तादाद पन्द्रह हज़ार से कम नहीं हैं।

मुस्लिम — और सभी बड़े-बड़े क़बीलों के सरदार हैं। सुलेमान, हारिस, हज्जाज़, शिमर, मुख़्तार, हानी, ये मामूली आदमी नहीं हैं।

जुबेर — मैं तो अर्ज़ कर चुका कि मुसल्लम इराक़ आपकी बैयत क़बूल करने के लिए बेक़रार है।

हुसैन — मुझे अभी तक उनकी बातों पर एतबार नहीं होता। ख़ुदा जाने, क्यों मेरे दिल में उनकी तरफ़ से दग़ा का शुबहा घुसा

हुआ है। मुझे हबीब की बातें नहीं भूलती, जो उसने चलते-चलते कही थीं।

मुस्लिम — गुस्ताख़ी तो है, पर आपका उन पर शक करना बेजा है। आख़िर आप उनकी वफ़ादारी का और क्या सबूत चाहते हैं? वे क़सम खाते हैं, वादे करते हैं, साफ़ लिखते हैं कि आपकी मदद के लिए बीस हज़ार सूरमा तैयार बैठे हुए हैं। अब और क्या चाहिए?

जुबेर — कम-से-कम मैं तो ऐसे सबूत पाकर पल की भी देर न करता।

अब्बास — मुझे तो इन कूफ़ियों पर उस वक़्त भी एतबार न आयेगा, अगर उनके बीसों हज़ार आदमी यहाँ आकर आपको बैयत की क़सम खा लें। अगर वह क़ुरान शरीफ़ हाथ में लेकर क़समें खायें, तो भी मैं उनसे दूर भागूँ।

(तारिक आता है)

तारिक — अस्सलामअलेक या हुसैन।

हुसैन — ख़ुदा तुम पर रहमत करे। कहाँ से आ रहे हो?

तारिक — कूफ़ा के मज़लूमों ने अपनी फ़रियाद सुनाने के लिए आपकी ख़िदमत में भेजा है। आफ़ताब डूबते चला था, और आफ़ताब डूबते आया हूँ, और आफ़ताब निकलने के पहले यहाँ से जाना है।

मुस्लिम — हवा पर आये या तख़्तए-सुलेमान पर? क़सम है पाक रसूल की कि मैं उस घोड़े के लिए पाँच हज़ार दीनार पेश कर सकता हूँ।

तारिक — हुज़ूर. घोड़ी नहीं, साँड़नी है, जो सफ़र में खाना और थकना नहीं जानती।

(हुसैन के हाथ में ख़त देता है)

हुसैन — (ख़त पढ़कर) आह, कितना दर्द-भरा हुआ ख़त है। जालिमों ने दिल निकालकर रख दिया। यह कितना ग़ज़ब का जुमला है कि अगर आप न आयेंगे तो हम आक़बत में आपसे इन्साफ़ का दावा करेंगे। आह! उन्होंने नाना का वास्ता दिया है। मैं नाना के नाम पर अपनी जान को यों फ़िदा कर सकता हूँ, जैसे कोई हरीस अपना ईमान फ़िदा कर देता है। इतना ज़ुल्म! इतनी सख़्ती! दिन दहाड़े लूट!! दिन दहाड़े औरतों की बेआबरूई! ज़रा-

ज़रा-सी बातों पर लोगों का क़त्ल किया जाना! अब्बास, अब मुझे सब्र की ताब नहीं है। मैं अपने बैयत के लिए हर्गिज़ न जाता, पर मुसीबतज़दों की हिमायत के लिए न जाऊँ, यह मेरी ग़ैरत गवारा नहीं करती।

मुस्लिम — या बिरादर, आप इसका कुछ ग़म न करें, मैं इसी क़ासिद के साथ वहाँ जाऊँगा, और वहाँ की कैफ़ियत की इत्तिला दूँगा। मेरा ख़त देखकर आप मुनासिब फ़ैसला कीजिएगा।

हुसैन — तब तक यज़ीद उन ग़रीबों पर ख़ुदा जाने क्या-क्या सितम ढाये। उसका अज़ाब मेरी गर्दन पर होगा। सोचो, जब क़यामत के दिन वे लोग फ़रियादी होंगे, तो मैं नाना को क्या मुँह दिखाऊँगा। वह जब मुझसे पूछेंगे कि तुझे जान इतनी प्यारी थी कि तूने मेरे बन्दों पर ज़ुल्म होते देखे, और ख़ामोश बैठा रहा, उस वक़्त मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा। मुस्लिम, मेरा जी चाहता है कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ।

मुस्लिम — मुझे तो इसकी यक़ीन है कि सुलेमान-जैसा आदमी कभी दग़ा नहीं कर सकता।

ज़ुबेर — हर्गिज़ नहीं।

मुस्लिम — पर मैं यही मुनासिब समझता हूँ कि पहले वहाँ जाकर अपना इतमीनान कर लूँ।

हुसैन — बच्चों को ग़ैब का इल्म होता है। इसका फ़ैसला अली असग़र पर छोड़ दिया जाय। क्यों बेटा, मैं भी मुस्लिम के साथ जाऊँ, या उनके ख़त का इन्तज़ार करूँ?

अली असग़र — नहीं अब्बाजान, अभी मुस्लिम चचा ही को जाने दीजिए। आप चलेंगे, तो कई दिन तैयारियों में लग जायेंगे। ऐसा न हो, इतने दिनों में वे बेचारे निराश हो जायँ।

अब्बास — बेटा, तेरी उम्र दराज़ हो। तूने ख़ूब फ़ैसला किया। ख़ुदा तुझे बुरी नज़र से बचाये।

हुसैन — अच्छी बात है, मुस्लिम, तुम सवेरे रवाना हो जाओ। अपने साथ पाँच ग़ुलाम लेते जाओ। रास्ते में शायद इनकी ज़रूरत पड़े। मैं कूफ़ावालों के नाम यह ख़त लिख देता हूँ, उन्हें दिखा देना। इंशा अल्लाह, हम तुमसे जल्दी ही मिलेंगे। वहाँ बड़ी एहतियात से काम लेना, अपने को छिपाये रखना, और किसी ऐसे आदमी के घर उतरना, जो सबके ज्यादा एतबार के लायक़ हो। मेरे पास एक ख़त रोज़ाना भेजना।

मुस्लिम — ख़ुदा से दुआ कीजिए कि वह मेरी हिदायत करे। मैं बड़ी भारी ज़िम्मेदारी लेकर जा रहा हूँ। सुबह की नमाज़ पढ़कर मैं रवाना हो जाऊँगा। तब तक तारिक की साँड़नी भी आराम कर लेगी।

(हुसैन ख़त लिखकर मुस्लिम को देते हैं। मुस्लिम दरवाजे की तरफ़ चलते हैं)

हुसैन — (मुस्लिम के साथ दरवाज़े तक आकर) रात तो अँधेरी है।

मुस्लिम — उम्मीद की रोशनी तो दिल में है।

हुसैन — (मुस्लिम से बग़लगीर होकर) अच्छा भैया, जाओ। मेरा दिल तुम्हारे साथ रहेगा। जो कुछ होनेवाला है, जानता हूँ। इसकी ख़बर मिल चुकी है। तक़दीर से कोई चारा नहीं, नहीं जानता. यह तक़दीर क्या है! अगर खुदा का हुक्म है, तो छुपकर, सूरत बदलकर, दग़ाबाज़ों की तरह क्यों आती है। ख़ुदा क्या साफ़ और खुले हुए अल्फ़ाज़ में अपना हुक्म नहीं भेजता। अपने बेकस बच्चों का शिकार टट्टी की आड़ से क्यों करता है? जाओ, कहता हूँ, पर जी चाहता है, न जाने दूँ। काश, तुम कह देते कि मैं न जाऊँगा। मगर तक़दीर ने तुम्हारी ज़बान बन्द कर रखी है। अच्छा, रुख़सत। उम्मीद है कि अल्लाह हम दोनों को एक साथ शहादत का दर्ज़ा देगा।

(मुस्लिम बाहर चला जाता है। हुसैन आँखें पोंछते हुए हरम में दाखिल होते हैं)

जैनब — भैया, आज फिर कोई क़ासिद आया था क्या?

हुसैन — हाँ जैनब, आया था। यज़ीद कूफ़ावालों पर बड़ा ज़ुल्म कर रहा है। मेरा वहाँ जाना लाज़िमी है। अभी तो मैंने मुस्लिम को वहाँ भेज दिया है, पर ख़ुद भी बहुत जल्द जाना चाहता हूँ।

जैनब — आपने एकाएक क्यों अपनी राय बदल दी! कम-से-कम मुस्लिम के ख़त के आने का तो इन्तज़ार कीजिए। मैं तो आपको हर्गिज़ न जाने दूँगी। आपका वह ख़्वाब याद है, जो आपने रसूल की क़ब्र पर देखा था?

हुसैन — हाँ जैनब, खूब याद है, और इसी वजह से मैं जाने की जल्दी कर रहा हूँ। उस ख़्वाब ने मेरी तक़दीर को मेरे सामने खोलकर रख दिया। तकदीर से बचने की भी कोई तक़दीर है? ख़ुदा का हुक्म भी टल सकता है? ख़िलाफ़त की तमन्ना को दिल से मिटा सकता हूँ, पर ग़ैरत को तो नहीं मिटा सकता, बेकसों की इमदाद से तो मुँह नहीं मोड़ सकता।

शहरबानू — आप जो कुछ करते हैं, उसमें ख़ुदा और तक़दीर को क्यों खींच लाते हैं। जब आपको मालूम है कि कूफ़ा के लोग

आपके साथ दग़ा करेंगे, तो वहाँ जाइए ही क्यों। तक़दीर आपको खींच तो न ले जायगी? बेकसों की इमदाद ज़रूर आपका और आप ही का नहीं, हर एक इन्सान का फ़र्ज़ है, लेकिन आपके कुनबे की भी तो कोई ख़बर लेनेवाला हो? इन्सान पर दुनिया से पहले ख़ानदान का हक़ होता है।

हुसैन — ज़रा इस ख़त को पढ़ लो, और तब कहो कि मैंने जो फ़ैसला किया है, वह मुनासिब है या नहीं। (शहरबानू के हाथ में ख़त देकर) देखा! इससे क्या साबित होता है? लेकिन जितने आदमियों ने इस पर दस्तख़त किये हैं, उसके आधे भी मेरे साथ हो जायँगे, तो मैं यज़ीद का क़ाफ़िया तंग कर दूँगा। इस्लाम की ख़िलाफ़त इतना आला रुतबा है कि उसकी कोशिश में जान दे देना भी ज़िल्लत नहीं। जब मेरे हाथों में एक स्याहकार बेदीन आदमी को सज़ा देने का मौक़ा आया है, तो उससे फ़ायदा न उठाना परले सिरे की पस्तहिम्मती है। घर में आग लगते देखकर उसमें कूद पड़ना नादानी है, लेकिन पानी मिल रहा हो, तो उससे आग को न बुझाना उससे भी बड़ी नादानी है।

सकीना — मगर अब्बाजान, अब तो मुहर्रम का महीना आ रहा है। फूफीजान की बहुत दिनों से आरज़ू थी कि इस महीने में यहाँ रहती।

हुसैन — तुम लोगों को ले जाने का मेरा इरादा नहीं है।

जैनब — भैया, ऐसा भी हो सकता है कि आप वहाँ जायँ, और हम यहाँ रहें! ख़ुदा जाने, कैसी पड़े, कैसी न पड़े।

सकीना — अब्बाजान दिल्लगी करते हैं, और आप लोग सच समझ गयीं।

कुलसूम — और कोई चले, चाहे न चले, मैं तो ज़रूर ही जाऊँगी। मेरे दिल से लगी हुई है कि एक बार यज़ीद को ख़ूब आड़े हाथों लेती।

सकीना — मैं अपनी फ़तह का कसीदा लिखने के लिए बेताब हूँ।

शहरबानू — आप समझते हैं कि हमारे साथ रहने से आपको तरद्दुद होगा, पर मैं पूछती हूँ, आपको वहाँ फँसाकर दुश्मनों ने इधर हमला कर दिया, तो हमारी हिफ़ाज़त की फ़िक्र आपको चैन लेने देगी?

जैनब — असग़र हुड़क-हुड़ककर जान दे देगा।

सकीना — हम अपने ऊपर इस बदनामी का दाग़ नहीं लगा सकतीं कि रसूल के बेटों ने तो इस्लाम की हिमायत में जान दी, और बेटियाँ हरम में बैठी रहीं।

हुसैन — (स्वगत) शहरबानू ने मार्के की बात कही, अगर दुश्मनों ने हरम पर हमला कर दिया, तो हम वहाँ बैठे-बैठे क्या करेंगे। इन्हें यहाँ छोड़ देना अपने क़िले की दीवार में शिग़ाफ़ कर देने से कम ख़तरनाक नहीं। (प्रकट) नहीं, मैं तुम लोगों पर ज़ब्र नहीं करता, अगर चलना चाहती हो, शौक से चलो।

पाँचवाँ दृश्य

(यज़ीद का दरबार। मुआबिया बेड़ियाँ पहने हुए बैठा हुआ है। चार ग़ुलाम नंगी तलवारें लिये उसके चारों तरफ़ खड़े है। यज़ीद के तख़्त के क़रीब सरजून रूमी बैठा हुआ है)

मुआबिया — (दिल में) नबी की औलाद पर यह ज़ुल्म? मुझी से तो इसका बदला लिया जायगा। बाप का क़र्ज़ बेटे ही को तो अदा करना पड़ता है! मगर मेरे ख़ून से इस ज़ुल्म का दाग़ न मिटेगा। हर्गिज़ नहीं, इस ख़ानदान का निशान मिट जायगा। कोई फ़ातिहा पढ़नेवाला भी न रहेगा। आह! नबी की औलाद पर यह ज़ुल्म! जिनके क़दमों की ख़ाक आँखों में लगानी चाहिए थी, उनके तबाही

के सामान है। ऐ रसूल पाक, मैं बेगुनाह हूँ! (प्रकट) आप जानते है, मौलाना रूमी, कि वालिद का मुझे कब तक इन्तज़ार करना पड़ेगा?

रूमी — आते ही होंगे। ज़ियाद से कुछ बातें हो रही हैं।

मुआबिया — वालिद मुझसे चाहते कि मैं इस मार्के में शरीक हो जाऊँ, लेकिन अगर ज़ालिमों के हाथ से अख्तियार छीनने के लिए, हक़ की हिमायत के लिए यह पहलू अख्तियार किया जाता, तो सबसे पहले मेरी तलवार म्यान से निकलती, सबसे पहले मैं ज़ियाद का झंडा उठाता, पर हक़ का ख़ून करने के लिए मेरी तलवार कभी बाहर न निकलेगी, और मेरी ज़बान उस वक़्त तक मलामत करती रहेगी, जब तक वह तालू से खींच न ली जाय। नबी की मसनद पर, जिसने दुनिया को हिदायत का चिराग़ दिखलाया, जिसने इस्लामी क़ौम की बुनियाद डाली, उस शख़्स को बैठने का मजाज़ नहीं है, जो दीन को पैरों-तले कुचलता हो, जो इन्सानियत के नाम को दाग़ लगाता हो, चाहे वह मेरा बाप ही क्यों न हो। इस्लाम का ख़लीफ़ा उसे होना चाहिए, जिस पर इन्सानियत को ग़रूर हो, जो दीनदार दो, हक़परस्त हो, बेदार हो, बेलौस हो, दूसरों के लिए नमूना हो, जो ताक़त से नहीं, फ़ौज से नहीं, अपने कमाल से, अपने सिफ़ात से दूसरों पर अपना वक़ार जमाए।

(यज़ीद, ज़ुहाक़, ज़ियाद, शरीक, शम्स आदि आते हैं)

यज़ीद — आप लोग देखिए, यह मेरा सपूत बेटा है, जो अपने बाप को कुत्ते से भी ज़्यादा नापाक समझता है। मेरी फूलों को सेज में यही एक काँटा है, मेरे नियामतों के थाल में यही एक मक्खी है। आप लोग इसे समझाएँ, इसे क़ायल करें; इसी लिए मैंने इसे यहाँ बुलाया है। इसको समझाइए कि ख़लीफ़ा के लिए दीनदारी से ज़्यादा मुल्कदारी की ज़रूरत है। दीन मुल्लाओं के लिए है, बादशाहों के लिए नहीं। दीनदारी और मुल्कदारी दो अलग-अलग चीज़ें हैं, और एक ही ज़ात में दोनों का मेल मुमकिन नहीं।

मुआबिया — अगर हुकूमत करने के लिए दीन और हक़ का ख़ून करना ज़रूरी है, तो मैं गदागरी करने के लिए उससे बेहतर समझता हूँ। मुल्कदारी की मंशा इन्साफ़ और सच्चाई की हिफ़ाज़त करना है, उसका ख़ून करना नहीं।

यज़ीद — आप लोग सुनते हैं, इसकी बातें। यह मुझे मुल्कदारी का सबक़ सिखा रहा है। इसके सिर से अभी सौदा नहीं उतरा। इसे फिर वहीं ले जाओ। ऐसे आदमी को आज़ाद रखना ख़तरनाक है, चाहे वह तख़्त का वारिस ही क्यों न हो। बाज़

हालतें ऐसी होती है, जब इन्सान को अपने ही से बचाना ज़रूरी होता है। दीवाने को न रोको, तो वह अपना गोश्त काट खाता है। (ग़ुलाम मुआबिया को ले जाते हैं) ज़ियाद, अब तुम अपनी दास्तान कहो। जब तक तुम मुझे इसका यक़ीन न दिला दोगे कि तुम कूफ़ा से अपनी जान के ख़ौफ़ से नहीं, मेरे फ़ायदे के ख़याल से आये हो, मैं तुम्हें मुआफ़ न करूँगा। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर जब शहर में बग़ावत का हंगामा गर्म हो, सल्तनत के हर एक मुलाज़िम का — चाहे वह सूबे का आमिल हो या शाही महल का दरबान — यहीं फ़र्ज़ है कि वह अपनी जगह पर आख़िर तक खड़ा रहे, चाहे उसका जिस्म तीरों से छलनी क्यों न हो जाय।

ज़ियाद — या ख़लीफ़ा, मैं अपने फ़र्ज़ से वाक़िफ़ हूँ, पर मैं सिर्फ़ यह अर्ज़ करने के लिए हाज़िर हुआ हूँ कि इस वक़्त रियाया पर सख़्ती करने से हालत और भी नाज़ुक हो जायगी। जब सल्तनत को किसी दूसरे मुद्दई का ख़ौफ़ हो, तो बादशाह को रियाया के साथ नरमी का बर्ताव करके उसे अपना दोस्त बना लेना मुनासिब है। बिगड़ी हुई रियाया तिनके की तरह है, जो एक चिनगारी से जल उठती है। मेरी अर्ज़ है कि हमें इस वक़्त रियाया का दिल अपने हाथ में कर लेना चाहिए, उसकी गरदनें एहसानों से दबा देनी चाहिए, ताकि वह सिर न उठा सके।

यज़ीद — मेरी फ़ौज बाग़ियों का सिर कुचलने के लिए काफ़ी है।

रूमी — नाज़ुक मौक़े पर अगर कोई चीज़ सल्तनत को बचा सकती है, तो वह सख़्ती है। शायद और किसी हालत में सख़्ती की इतनी ज़्यादा ज़रूरत नहीं होती।

ज़ुहाक़ — बादशाह की रियाया उसकी ज़ौजा की तरह है। ज़ौजा पर हम निसार होते है, उसके तलवे सुहलाते हैं, उसकी बलाएँ लेते हैं, लेकिन जब उसे किसी रक़ीब से मुख़ातिब होते देखते हैं, तो उस वक़्त उसकी बलाएँ नहीं लेते। हमारी तलवारें म्यान से निकल आती है, और या तो रक़ीब की गरदन पर गिरती है या बीवी की गरदन पर, या दोनों की गरदनों पर।

रूमी — बेशक, कूफ़ा को कुचल दो, कूफ़ा को कोफ़्त कर दो।

यज़ीद — कूफ़ा को कोफ़्त में डाल दो। यहाँ से जाते-ही-जाते फ़ौजी क़ानून जारी कर दो। एक हज़ार आदमियों को तैयार रखो। जो आदमी ज़रा भी गर्म हो, उसे फ़ौरन क़त्ल कर दो। सरदारों को एकबारगी गिरफ़्तार कर लो, फ़ौज को रोज़ाना शहर में गश्त करने का हुक्म हो, सबकी ज़बान बन्द कर दो, यहाँ तक कि कोई शायर शेर न पढ़ने पाये, मस्जिदों में ख़ुतबे न होने पायें, मक़तबों में कोई लड़का न जाने पाये। रईसों को ख़ूब ज़लील करो। ज़िल्लत सबसे बड़ी सज़ा है!

(एक क़ासिद आता है)

शम्स — कहाँ से आते हो?

क़ासिद — ख़लीफ़ा पर मेरा सलाम हो, मुझे मक्का के अमीर ने आपकी ख़िदमत में यह अर्ज़ करने को भेजा है कि हुसैन का चचेरा भाई मुस्लिम कूफ़ा की तरफ़ रवाना हो गया है।

यज़ीद — कोई ख़त भी लाया है?

क़ासिद — आमिल ने ख़त इसलिए नहीं दिया की कहीं मुझे दुश्मन गिरफ़्तार न कर लें।

यज़ीद — ज़ियाद, तुम इसी वक़्त कूफ़ा चले जाओ। तुम्हें मेरे सबसे तेज़ घोड़े को ले जाने का अख़्तियार है। अगर मेरा क़ाबू होता, तो तुम्हें हवा के घोड़े पर सवार करता।

ज़ियाद — ख़लीफ़ा पर मेरी जान निसार हो, मुझे इस मुहिम पर जाने से मुआफ रखिए। ज़ुहाक़ या शम्स को तैनात फ़रमाएँ।

यज़ीद — इसके मानी यह है कि मैं अपनी एक आँख फोड़ लूँ।

रूमी — आख़िर तुम क्या चाहते हो?

ज़ियाद — मेरा सवाल सिर्फ़ इतना है कि इस मौक़े पर रियाया के साथ मुलायमियत का बर्ताव किया जाय, सरदारों को जागीरें दी

जायँ, उनके वज़ीफ़े बढ़ाये जायँ, यतीमों और बेवाओं की परवरिश का इन्तज़ाम किया जाय। मैंने कूफ़ावालों की ख़सलत का ग़ौर से मुताला किया है, वे हयादार नहीं हैं, दिलेर नहीं हैं, दीनदार नहीं हैं। चंद ख़ास आदमियों को छोड़कर सब-के-सब लोभी और खुदग़रज़ हैं, बात पर अड़ना नहीं जानते, शान पर मरना नहीं जानते, थोड़े से फ़ायदे से लिए भाई-भाई का गला काटने पर आमादा हो जाते हैं। कुत्तों को भगाने के लाठी से ज़्यादा आसान हड्डी का एक टुकड़ा होता है। सब-के-सब उस पर टूट पड़ते और एक-दूसरे को भंभोड़ खाते हैं। ख़लीफ़ा का ख़जाना दस-बीस हज़ार दीनारों के निकल जाने से खाली न हो जायगा, पर एक क़ौम हमारे आ जायगी। सख़्ती कमज़ोरों के हक़ में वही काम करती है, जो ऐंठन तिनकों के साथ। हम ऐंठन के बदले हवा के झोंके से तिनकों को बिखेर सकते हैं। फ़ौज से फ़ौज कुचली जा सकती है, एक क़ौम नहीं।

रूमी — मैं तो हमेशा सख़्ती का हामी रहा, और रहूँगा।

शरीक — कामिल हकीम वह है, जो मरीज़ के मिज़ाज के मुताबिक दवा में तबदीली करता रहे। आपने उस हकीम का क़िस्सा नहीं सुना, जो हमेशा फ़स्द खोलने की तजवीज़ किया करता था। एक बार एक दीवाने का फ़स्द खोलने गया। दीवाने ने हकीम की गरदन इतने ज़ोर से दबायी कि हकीम साहब की

जबान बाहर निकल आयी। मुल्कदारी के आईन मौक़े और ज़रूरत के मुताबिक बदलते रहते हैं।

यज़ीद — ज़ियाद, मैं इस मुआमले में तुम्हें मुख्तार बनाता हूँ। मुझे भी कुछ-कुछ अंदेशा हो रहा है कि कहीं हुसैन के वादे कूफ़ावालों को लुभा न लें। तुम तो मुनासिब समझो, करो, लेकिन याद रक्खों, अगर कूफ़ा गया, तो तुम्हारी जान उसके साथ जायगी। यह शर्त मंजूर है?

ज़ियाद — मंजूर है।

यज़ीद — हुर को ताक़ीद कर दो कि बहुत नमाज़ न पढ़े, और मुस्लिम को इस तरह तलाश करे, जैसे कोई बख़ील अपनी खोयी मुर्गी को तलाश करता है। तुम्हारी नरमी कमजोरी की नरमी नहीं होनी चाहिए, जिसे खुशामद कहते हैं। उसमें हुकूमत की शान क़ायम रहनी चाहिए। बस, जाओ।

(ज़ियाद शरीक और क़ासिद चले जाते हैं)

ज़ुहाक़ — नरगिस को बुलाओ, ज़रा ग़म ग़लत करे। (गुलाब के हाथ से शराब का प्याला लेकर) यह मेरी फ़तह का जाम है।

रूमी — मुबारक हो, (दिल में) ज़ियाद तुम्हें डूबा देगा। तब नरमी का मज़ा मालूम होगा।

(नरगिस ज़ुहाक़ की पीठ पर बैठी हुई आती है)

यज़ीद — शाबाश नरगिस, शाबाश, क्या ख़ूब खच्चर है। इसकी कोई तशबीह (उपमा) देना शम्स।

शम्स — मुर्गे के सिर पर ताज है।

रूमी — लीद पर मक्खी बैठी हुई है।

नरगिस — (गर्दन पर से कूदकर) लाहौल-विला-कूवत।

यज़ीद — वल्लाह, इस तशबीह से दिल ख़ुश हो गया। नरगिस, बस इसी बात पर एक मस्ताना ग़ज़ल सुनाओ। ख़ुदा तुम्हारे दीवानों को तुम पर निसार करे।

नरगिस गाती है —

शबे-वस्ल वह रूठ जाना किसी का,
वह रूठे को अपने मनाना किसी का।
कोई दिल को देखे न तिरछी नज़र से,
ख़ता कर न जाये निशाना किसी का।

अभी थाम लोगे तुम अपने जिगर को,
सुनो तो सुनाएँ फ़साना किसी का।
ज़रा देख ले चल के सैयाद तू भी,
कि उठता है अब आब-दाना किसी का।
वह कुछ सोचकर हो लिये उसके पीछे,
जनाज़ा हुआ जब रवाना किसी का।
बुरा वक़्त जिस वक़्त आता है 'बिस्मिल',
नहीं साथ देता ज़माना किसी का।

(परदा गिरता है)

छठा दृश्य

(संध्या का समय। सूर्यास्त हो चुका है। कूफ़ा का शहर — कई सारवान ऊँट का ग़ल्ला लिये दाख़िल हो रहे हैं)

पहला — यार, गलियों से चलना, नहीं तो सिपाही की नज़र पड़ जाय, तो महीनों बेगार झेलनी पड़े।

दूसरा — हाँ-हाँ, वे बला के मूज़ी है। कुछ लादने को नहीं होता, तो यों ही बैठ जाते हैं, और दस-बीस कोस का चक्कर लगाकर लौट आते हैं। ऐसा अंधेर पहले कभी न होता था। मजूरी को भाड़ में गयी, ऊपर से लात और गालियाँ खाओ।

तीसरा — यह सब महज़ पैसे आँटने के हथकंडे हैं। न जाने कहाँ के कुत्ते आके सिपाह में दाख़िल हो गये। छोटे-बड़े एक ही रंग में रँगे हुए है।

चौथा — अमीर के पास फ़रियाद लेकर जाओ, तो उलटे और बौछार पड़ती है। अजीब मुसीबत का सामना है। हज़रत हुसैन जब तक न आयेंगे, हमारे सिर से यह बला न टलेगी।

(मुस्लिम पीछे से आते हैं)

मुस्लिम — क्यों यारों, इस शहर में कोई ख़ुदा का बंदा ऐसा है, जिसके यहाँ मुसाफिरों को ठहरने की जगह मिल जाय?

पहला — यहाँ के रईसों की कुछ न पूछो। कहने को दो-चार बड़े आदमी हैं, मगर किसी के यहाँ पूरी मजूरी नहीं मिलती। हाँ, ज़रा गालियाँ कम देते हैं।

मुस्लिम — सारे शहर में एक भी सच्चा मुसलमान नहीं है?

दूसरा — जनाब, यहाँ कोई शहर के क़ाज़ी तो हैं नहीं, हाँ, मुख़्तार की निस्बत सुनते हैं कि बड़े दीनदार आदमी हैं। हैसियत को ऐसी नहीं, मगर ख़ुदा ने हिम्मत दी है। कोई ग़रीब चला जाय, तो भूखों न लौटेगा।

तीसरी — सुना है, उनकी जागीर जब्त कर ली गयी है।

मुस्लिम — यह क्यों?

चौथा — इसी लिए की उन्होंने अब तक यज़ीद की बैयत नहीं ली।

मुस्लिम — तुमसे से मुझे कोई उनके घर तक पहुँचा सकता है?

चौथा — जनाब, यह ऊँटनियों के दुहने का वक़्त है; हमें फ़ुरसत नहीं। सीधे चले जाइए, आगे लाल मस्जिद मिलेगी, वहीं उनका मकान है।

मुस्लिम — ख़ुदा तुम पर रहमत करे। अब चला जाऊँगा।

(परदा बदलता है। मस्जिद के क़रीब मुख़्तार का मकान)

मुस्लिम — (एक बुड्ढे से) यह मुख़्तार का मकान है न?

बुड्ढा — जी हाँ, ग़रीब ही का नाम मुख़्तार है। आइए, कहाँ से तशरीफ़ ला रहे हैं?

मुस्लिम — मक्केशरीफ़ से।

मुख़्तार — (मुस्लिम के गले से लिपटकर) मुआफ़ कीजिएगा। बुढ़ापे की बीनाई शराबी की तौबा की तरह कमज़ोर होती है। आज बड़ा मुबारक दिन है। बारे हज़रत ने हमारी फ़रियाद सुन ली ख़ैरियत से हैं न?

मुस्लिम — (घोड़े से उतरकर) जी हाँ, सब ख़ुदा का फ़ज़ल है।

मुख़्तार — ख़ुदा जानता है, आपको देखकर आँखें शाद हो गयीं। हज़रत का इरादा कब तक आने का है?

मुस्लिम — (ख़त निकालकर मुख़्तार को देते हैं) इसमें उन्होंने सब कुछ मुफ़स्सल लिख दिया है।

मुख़्तार — (ख़त को छाती और आँख से लगाकर पढ़ता है) ख़ुशनसीब कि हज़रत के क़दमों से यह शहर पाक होगा। मेरी बैयत हाज़िर है, और मेरे दोस्तों की तरफ़ से भी कोई अंदेशा नहीं।

(ग़ुलाम को बुलाता है)

मुख़्तार — देखो, इस वक़्त हारिस, हज्जाज़, सुलेमान, शिमर, क़ीस, शैस और हानी के मकान पर जाओ, और मेरा यह रुक़्क़ा दिखाकर जवाब लाओ।

(ग़ुलाम रुक़्क़ा लेकर चला जाता है)

पहले मुझे ऐसा मालूम होता कि हज़रत का कोई क़ासिद आयेगा तो मैं शायद दीवाना हो जाऊँगा, पर इस वक़्त आपको सामने देखकर भी ख़ामोश बैठा हुआ हूँ। किसी शायर न सच कहा हैं — 'जो मज़ा इन्तज़ार में देखा, वह नहीं वस्ले-यार में देखा।' जन्नत का ख़याल कितना दिलफ़ेरब है, पर शायद उसमें दाख़िल होने पर इतनी ख़ुशी न रहे। आइए, नमाज़ अदा कर लें। इसके बाद कुछ आराम फ़रमा लीजिए। फिर दम मारने की फ़ुसरत न मिलेगी।

(दोनों मकान के अन्दर चले जाते हैं। परदा बदलता है। मुस्लिम और मुख़्तार बैठे हुए हैं)

मुस्लिम — कितने आदमी बैयत लेने के लिए तैयार हैं?

मुख़्तार — देखिए, सब अभी आ जाते हैं। अगर यज़ीद की जानिब से ज़ुल्म और सख़्ती इसी तरह होती रही, तो हमारे मददगारों की तादाद दिन-दिन बढ़ती जायगी। लेकिन कहीं उसने दिलजोई शुरू कर दी, तो हमें इतनी आसानी से कामयाबी न होगी।

(सुलेमान का प्रवेश)

सुलेमान — अस्सलामअलेक हज़रत मुस्लिम, आपको देखकर आँखें रोशन हो गयीं, मेरे क़बीले के सौ आदमी बैयत लेने को हाज़िर है। और सब-के-सा अपनी बात पर मिटनेवाले आदमी हैं।

मुस्लिम — आपको ख़ुदा नजात दे। इन आदमियों से कहिए, कल जामा मस्जिद में जमा हो। आपका ख़त पढ़कर भैया को बहुत रंज हुआ। उन्होंने तो फैसला कर लिया था कि रसूल के मज़ार पर बैठे हुए ज़िन्दगी गुज़ार दें, पर आपके आख़िरी ख़त ने उन्हें बेक़रार कर दिया। सायल की हिमायत से वह कभी मुँह नहीं मोड़ सकते।

(शैस, क़ीस, शिमर, साद और हज्जाज़ का प्रवेश)

शैस — अस्सलामअलेक हज़रत, आपको देखकर जिगर ठंडा हो गया।

क़ीस — अस्सलामअलेक, आपको देखकर हमारे मुर्दा तन में जान आ गयी।

मुस्लिम — (सबसे गले मिलकर) हज़रत इमाम ने मुझे यह ख़त देकर आपकी ख़िदमत में भेजा है।

(शिमर ख़त लेकर ऊँची आवाज़ में पढ़ता है, और सब लोग सिर झुकाये सुनते हैं)

शैस — हमारे ज़हे-नसीब, मैं तो अभी दस्तरख़्वान पर था। ख़बर पाते ही आपकी ज़ियारत करने दौड़ा।

हज्जाज़ — मैं तो अभी-अभी बसरे से लौटा हूँ, दम भी न मारने पाया था कि आपके तशरीफ़ लाने की ख़बर पायी। मेरे क़बीले के बहुत-से आदमी बैयत लेने को बाहर खड़े हैं।

मुस्लिम — उन्हें कल जामा मस्जिद में बुलाइए।

शिमर — वह कौन-सा दिन होगा कि मलऊन यज़ीद के ज़ुल्म से नजात होगी।

शैस —हज़रत हुसैन ने हम ग़रीबों का आवाज सुन ली। अब हमारे बुरे दिन न रहेंगे।

क़ीस — हमारी क़िस्मत के सितारे अब रोशन होंगे। मेरी दिली तमन्ना है कि ज़ियाद का सिर अपने पैरों के नीचे देखूँ।

शिमर — मैंने तो मिन्नत मानी है कि मलऊन ज़ियाद के मुँह में कालिख लगाकर सारे शहर में फिराऊँ।

क़ीस — मैं तो यज़ीद की नाक काटकर उसकी हथेली पर रख देना चाहता हूँ।

(हानी, कसीर और अशअस का प्रवेश)

हानी — या बिरादर हुसैन, आप पर ख़ुदा की रहमत हो।

क़ीस — अल्लाहताला आप पर साया रखे। हम सब आपकी राह देख रहे थे।

मुस्लिम — भाई साहब ने मुझे यह ख़त देकर आपकी तस्कीन के लिए भेजा है।

(हानी ख़त लेकर आँखों से लगाता है, और आँखों में ऐनक लगाकर पढ़ता हैं)

शिमर — अब ज़ियाद की ख़बर लूँगा।

क़ीस — मैं तो यज़ीद की आँखों में मिर्च डालकर उसका तड़पना देखूँगा।

मुस्लिम — आप लोग भी कल अपने क़बीले वालों को जामा मस्जिद में बुलायें। कल तीन-चार हज़ार आदमी आ जायँगे?

शैस — खुदा झूठ न बुलवाये, तो इसके दस गुने हो जायँगे।

हानी — नबी की औलाद की शान ही और है। वह हुस्न, वह इख़लाक़, वह शराफ़त कहीं नज़र ही नहीं आती।

क़ीस — यज़ीद तो देखो, ख़ासा हब्शी मालूम होता है।

हज्जाज़ — ज़ियाद तो ख़ासा सारवान है।

मुस्लिम — तो कम शाम को जामा मस्जिद में आने की ठहरी।

शिमर — तो हम लोग चलकर अपने क़बीलों को तैयार करें, ताकि जो लोग इस वक़्त यहाँ न हो, वे भी आ जायँ।

(सब लोग चले जाते हैं)

मुस्लिम — (दिल में) ये सब कूफ़ा के नामी सरदार हैं। हमारी फ़तह ज़रूर होगी; और एक बार तक़दीर को जक उठानी पड़ेगी। बीस हज़ार आदमियों की बैयत मिल गयी, तो फिर हुसैन को ख़िलाफ़त की मसनद पर बैठने से कौन रोक सकता है, जरूर बैठेंगे।

सातवाँ दृश्य

(कूफ़ा के चौक में कई दूकानदार बातें कर रहे हैं)

पहला — सुना, आज हजरत हुसैन तशरीफ़ लानेवाले हैं।

दूसरा — हाँ, कल मुख़तार के मकान पर बड़ा जमघट था। मक्का से कोई साहब उनके आने की ख़बर लाये हैं।

तीसरा — ख़ुदा कर, जल्द आवें। किसी तरह इन ज़ालिमों से पीछा छूटे। मैंने बैयत तो यज़ीद की ले ली है, लेकिन हज़रत आयँगे, तो फ़ौरन फिर जाऊँगा।

चौथा — लोग कहते थे, बड़े धूमधाम से आ रहे हैं। पैदल और सवार फ़ौजें है। ख़ेमे वग़ैरह ऊँटों पर लदे हुए हैं।

पहला — दूकान बढ़ाओ, हम लोग भी चलें। तक़दीर में जो कुछ बिकना था, बिक चुका। आक़बत की भी तो कुछ फ़िक्र करनी चाहिए। (चौंककर) अरे! ये बाजे की आवाज़ें कहाँ से आ रही है?

दूसरा — आ गये शायद।

(सब दौड़ते है। ज़ियाद का जलूस सामने से आता है। ज़ियाद मिंबर पर खड़ा हो जाता है)

कई आवाज़ें — मुबारक हो, मुबारक हो, या हज़रत हुसैन!

ज़ियाद — दोस्तों मैं हुसैन नहीं हूँ। हुसैन का अदना गुलाम रसूल पाक के क़दमों पर निसार होनेवाला आपका नाचीज़ ख़ादिम बिन-ज़ियाद हूँ।

एक आवाज़ — ज़ियाद है, मलऊन ज़ियाद है।

दूसरा — गिरा दो मिंबर पर से; उतार दो मरदूद को।

तीसरा — लगा दो तीर का निशाना। ज़ालिम की ज़बान बन्द हो जाय।

चौथा — खामोश, खामोश। सुनो, क्या कहता है?

ज़ियाद — अगर आप समझते हैं कि मैं ज़ालिम हूँ, तो बेशक, मुझे तीर का निशाना बनाइए, पत्थरों से मारिए, क़त्ल कीजिए, हाजिर हूँ। ज़ालिम गर्दनज़दनी हैं, और जो ज़ुल्म बर्दाश्त करे, वह बेग़ैरत है। मुझे गरूर है कि आप में ग़ैरत है, जोश है।

कई आवाज़ें — सुनो-सुनो, खामोश।

ज़ियाद — हाँ, मैं ग़ैरत से, ग़ुरूर से नहीं डरता, क्योंकि यही वह ताक़त है, जो किसी क़ौम को ज़ालिम के हाथ से बचा सकती है। खुदा के लिए उस ज़ुल्म की नाक़दरी न कीजिए, जिसने आपकी ग़ैरत को जगाया। यही मेरी मंशा थी, यही यज़ीद की मंशा थी, और खुदा का शुक्र कि हमारी तमन्ना पूरी हुई। अब हमें यक़ीन हो गया कि हम आपके ऊपर भरोसा कर सकते हैं। ज़ालिम उस्ताद की भी कभी-कभी ज़रूरत होती है। हज़रत हुसैन जैसा पाक-नीयत, दीनदार, बुज़ुर्ग आपको यह सबक़ न दे सकता था। यह हम जैसे कमीना, खुदग़रज आदमियों ही का काम था। लेकिन अगर हमारी नीयत ख़राब होती, तो आप आज मुझे यहाँ

खड़े होकर उन रियायतों का ऐलान करते न देखते, जो मैं अभी-अभी करनेवाला हूँ। इन ऐलानों से आप पर मेरे क़ौल की सच्चाई रोशन हो जायगी।

कई आवाज़ें — ख़ामोश-ख़ामोश, सुनो-सुनो।

ज़ियाद — ख़लीफ़ा यज़ीद का हुक्म है कि कूफ़ा और बसरा का हर एक बालिग़ मर्द पाँच सौ दिरहम सालाना ख़ज़ाने से पाये।

बहुत-सी आवाज़ें — सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद — और कूफ़ा व बसरे की हर एक बालिग़ औरत को दो सौ दिरहम पाये, जब तक उसका निकाह न हो।

बहुत-सी आवाज़ें — सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद — और हर एक बेवा को सौ दिरहम सालाना मिलें, जब तक उसकी आँखें बन्द न हो जायँ, या वह दूसरा निकाह न कर ले।

बहुत-सी आवाज़ें — सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद — यह मेरा हाथ में ख़लीफ़ा का फ़रमान है। देखिए, जिसे यक़ीन न हो। हर एक यतीम को बालिग़ होने तक सौ दिरहम सालाना मुक़र्रर किया गया है। हर एक जवान मर्द और औरत

को शादी के वक़्त एक हज़ार दिरहम एकमुश्त ख़र्च के लिए दिया जायगा।

बहुत-सी आवाज़े — ख़ुदा ख़लीफ़ा यज़ीद को सलामत रखे। कितनी फ़ैयाज़ी की है।

ज़ियाद — अभी और सुनिए, तब फ़ैसला कीजिए कि यज़ीद ज़ालिम है या रियाया-परवर? उसका हुक्म है कि हर एक क़बीले के सरदार को दरिया के किनारे की उतनी ज़मीन अता की जाय, जितनी दूर उसका तीर जा सके।

बहुत-सी आवाज़े — हम यज़ीद की बैयत मंजूर करते हैं। यज़ीद हमारा ख़लीफ़ा है।

ज़ियाद — नहीं, यज़ीद, बैयत के लिए आपको रिश्वत नहीं देता। बैयत आपके अख़्तियार में है, जिसे जी चाहे, दीजिए। यज़ीद हुसैन से दुश्मनी करना नहीं चाहता। उसका हुक्म है कि नदियों के घाट काम हसूल मुआफ़ कर दिया जाय।

बहुत-सी आवाज़ें — हम यज़ीद को अपना ख़लीफ़ा तसलीम करते हैं।

ज़ियाद — नहीं-नहीं, यज़ीद कभी हुसैन के हक़ को जायल न करेगा। हुसैन मालिक हैं, फ़ाजिल हैं, आबिद हैं, ज़ाहिद हैं, यज़ीद

को इसमें से कोई सिफ़त रखने का दावा नहीं। यज़ीद में अगर कोई सिफ़त है, तो यह कि वह ज़ुल्म करना जानता है, खासकर नाजुक वक़्त पर, जब माल और जान की हिफ़ाजत करनेवाला कोई न हो, जब सब अपने हक़ और दावे पेश करने में मसरूफ़ हों।

बहुत-सी आवाजें — ज़ालिम यज़ीद ही हमारा अमीर है। हम दिल से उसकी बैयत क़बूल करते हैं।

ज़ियाद — सोचिए, और ग़ौर से सोचिए। अगर ख़िलाफ़त के दूसरे दावेदारों की तरह यज़ीद भी किसी गोशे में बैठे हुए बैयत की फ़िक्र करते, तो आज मुल्क की क्या हालत होती? आपकी जान व माल की हिफ़ाज़त कौन करता? कौन मुल्क को बाहर के हमलों से और अन्दर की लड़ाइयों से बचाता? कौन सड़को और बन्दरगाहों को डाकुओं से महफ़ूज रखता? कौन क़ौम की बहू-बेटियों की हुरमत का ज़िम्मेदार होता? जिस एक आदमी की ज़ात से क़ौम और मुल्क को नाजुक मौक़े पर इतने फ़ायदे पहुँचे हों, और जिसने ख़लीफ़ा चुने जाने का इन्तज़ार न करके ये बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियाँ सिर पर ले ली हों, क्या वह इसी क़ाबिल है कि उसे मलऊन और मरदूद कहा जाय, उस सरे बाज़ार गालियाँ दी जायँ?

एक आवाज़ — हम बहुत नादिम हैं। ख़ुदा हमारा गुनाह मुआफ़ करे।

शिमर — हमने ख़लीफ़ा यज़ीद के साथ बड़ी बेइन्साफी की है।

ज़ियाद — हाँ, आपने ज़रूर बेइन्साफ़ी की है। मैं यह बिला ख़ौफ़ कहता हूँ, ऐसा आदमी इससे कहीं अच्छे बर्ताव के लायक़ था। हुसैन की इज़्ज़त यज़ीद के और मेरे दिल में उससे ज़रा भी कम नहीं है, जितनी और किसी के दिल में होगी। अगर आप उन्हें अपना ख़लीफ़ा तसलीम करते हैं, तो मुबारक हो। हम ख़ुश , हमारा ख़ुदा ख़ुश। यज़ीद सबसे पहले उनकी बैयत मंजूर करेगा, उसके बाद मैं हूँगा। रसूल पाक ने ख़िलाफ़त के लिए इन्तख़ाब की शर्त लगा दी है। मगर हुसैन के लिए इसकी क़ैद नहीं।

क़ीस — है। यह क़ैद सबके लिए एक-सा है।

ज़ियाद — अगर है, तो इन्तख़ाब का इससे बेहतर और कौन मौक़ा होगा। आप अपनी रजा और रग़बत से किसी का लिहाज़ और मुरौवत किये बग़ैर जिसे चाहे ख़लीफ़ा तसलीम कर लें। मैं कसरत राय को मानकर यज़ीद को इसकी इत्तिला दे दूँगा।

एक तरफ़ से — हम यज़ीद को ख़लीफ़ा मानते हैं।

दूसरी तरफ़ से — हम यज़ीद की बैयत क़बूल करते हैं।

तीसरी तरफ़ से — यज़ीद, यज़ीद, यज़ीद।

ज़ियाद — ख़ामोश, हुसैन को कौन ख़लीफ़ा मानता है!

(कोई आवाज़ नहीं आती)

ज़ियाद — आप जानते हैं, यज़ीद आबिद नहीं।

कई आवाज़ें — हमें आबिद की ज़रूरत नहीं।

ज़ियाद — यज़ीद आलिम नहीं, फ़ाज़िल नहीं, हाफिज़ नहीं।

कई आवाज़ें — हमें आलिम-फ़ाज़िल की ज़रूरत नहीं।

हज्जाज़ — कितना फ़ैयाज है।

शिमर — किसी ख़लीफ़ा ने इतनी फ़ैयाज़ी नहीं की।

शैस — आबिद कभी फ़ैयाज़ नहीं होता।

अशअस — अजी, कुछ न पूछो, मस्जिदों के मुल्लाओं को देखो, रोटियों पर जान देते हैं।

ज़ियाद — अच्छा, यज़ीद को आपने अपना ख़लीफ़ा तो मान लिया, लेकिन हेजाज, मिस्र, यमन के लोग किसी और को ख़लीफ़ा मान लें तो?

बहुत आदमी — हम ख़लीफ़ा यज़ीद के लिए जान दे देंगे।

ज़ियाद — बहुत मुमकिन है कि हज़रत हुसैन ही को वे लोग अपना ख़लीफ़ा बनायें, तो आप अपना क़ौल निभायेंगे?

बहुत आदमी. – निभायेंगे। यज़ीद के सिवा और कोई ख़लीफ़ा नहीं हो सकता।

ज़ियाद — मैंने सुना है, हज़रत हुसैन ने अपने चचेरे भाई मुस्लिम को आपकी बैयत लेने के लिए भेजा है। और, शायद ख़ुद भी आ रहे हैं। यज़ीद को गोशे में बैठकर ख़ुदा की याद करना इससे कहीं अच्छा मालूम होगा कि वह इस्लाम में निफ़ाक़ की आग भड़कायें। अभी मौक़ा है, आप लोग ख़ूब ग़ौर कर लें।

शिमर — हमने ख़ूब गौर कर लिया है।

हज्जाज़ — हुसैन को न जाने क्यों ख़िलाफ़त की हवस है। बैठे हुए ख़ुदा की इबादत क्यों नहीं करते?

क़ीस — हुसैन मदीना वालों के साथ जो सलूक करेंगे, वह कभी हमारे साथ नहीं कर सकते।

शैस — उनका आना बला का आना है।

ज़ियाद — अगर आप चाहते हैं कि मुल्क में अमन रहे, तो ख़बरदार, इस वक़्त एक आदमी भी जामा मस्जिद में न जाय।

हुसैन आयें हमारे सिर-आँखों पर। हम उनकी ताज़ीम करेंगे, उनकी ख़िदमत करेंगे, लेकिन उन्हें ख़िलाफ़त का दावा पेश करते देखेंगे, तो मुल्क में अमन रखने के लिए हमें आपका मदद की जरूरत होगी। यही आपकी आज़माइश का वक़्त होगा, और इसी में पूरा उतरने पर इस्लाम की ज़िन्दगी का दार-मदार है।

(मिंबर पर से उतर आता है)

शैस — बड़ी ग़लती हुई कि हुसैन को ख़त लिखा।

शिमर — मैं तो अब जामा मस्जिद न जाऊँगा।

क़ीस — यहाँ कौन जाता है।

शैस — काश, इन्हीं रियायतों को चंद रोज़ पहले एलान कर दिया गया होता, तो ख़त लिखने की नौबत ही क्यों आती?

शिमर — दीन की फ़िक्र मोटे आदमी करें, यहाँ दुनिया की फ़िक्र का वक़्त है।

(सब जाते हैं)

आठवाँ दृश्य

(नौ बजे रात का समय। कूफ़ा की जामा मस्जिद। मुस्लिम, मुख़्तार, सुलेमान और हानी बैठे हुए हैं। कुछ आदमी द्वार पर बैठे हुए हैं)

सुलेमान — अब तक लोग नहीं आयें?

हानी — अब आने की कम उम्मीद है।

मुख़्तार — आज ज़ियाद का लौटना सितम हो गया। उसने लोगों को वादों के सब्ज़ बाग़ दिखाये होंगे।

सुलेमान — इसी को तो सियासत का आईन कहते हैं।

मुस्लिम — इन ज़ालिमों ने सियासत को ईमान से बिलकुल जुदा कर दिया है। दूसरे ख़लीफ़ों ने इन दिनों को मिलाया था। सियासत को दग़ा से पाक कर दिया था।

मुख़्तार — हज़रत मुस्लिम, अब आप अपनी तक़रीर शुरू कीजिए, शायद लोग जमा हो जायँ।

(मुस्लिम मिंबर पर चढ़कर व्याख्यान देते हैं)

“शुक्र है उस पाक ख़ुदा का, जिसने हमें आज दीन इस्लाम के लिए एक ऐसे बुज़ुर्ग को ख़लीफ़ा चुनने का मौक़ा दिया है,जो इस्लाम का सच्चा दोस्त...”

(बहुत से आदमी मस्जिद में घुस पड़ते हैं)

पहला —बस हज़रत मुस्लिम, ज़बान बन्द कीजिए।

दूसरा — जनाब, आप चुपके से मदीने की राह लें। यज़ीद हमारे ख़लीफ़ा हैं, और ज़ियाद हमारा इमाम है।

सुलेमान — मुझे मालूम है कि ज़ियाद ने आज तुम्हारी पीठ पर ख़ूब हाथ फेरे हैं, और हरी-हरी घास दिखायी है,. पर याद रखो, घास के नीचे जाल बिछा हुआ है।

(बाहर से ईंट और पत्थर की वर्षा होने लगती है)

एक आदमी — मारो-मारो, यह क़ौम का दुश्मन है।

सुलेमान — ज़ालिमों, यह ख़ुदा का घर है। इसकी हुरमत को तो ख़याल रखो।

दूसरा आदमी — ख़ुदा का घर नहीं, इस्लाम के दुश्मनों का अड्डा है।

तीसरा आदमी — मारो-मारो, अभी तक इसकी ज़बान बन्द नहीं हुई है।

(सुलेमान ज़ख़्मी होकर गिर पड़ते हैं। मुस्लिम बाहर आकर कहते हैं)

“ऐ बदनसीब क़ौम, अगर तू इतनी जल्द रसूल की नसीहतों को भूल सकती है, और तुझ से नेक व बद की तमीज़ नहीं रहीं अगर तू इतनी जल्द जुल्म और ज़िल्लत को भूल सकती है, तो तू दुनिया में कभी सुर्ख़रू न होगी।

एक आदमी — इस्लाम का दुश्मन है।

दूसरा आदमी — नहीं-नहीं, हज़रत हुसैन के चचेरे भाई हैं। इनकी तौहीन मत करो।

तीसरा आदमी — इन्हें पकड़कर शहर की किसी अंधेरी गली में छोड़ दो। हम इनके ख़ून से हाथ न रँगेंगे।

(कई आदमी मुस्लिम पर टूट पड़ते हैं, और उन्हें खींचते हुए ले जाते हैं, और साथ ही परदा भी बदलता है)

मुस्लिम —(दिल में) ज़ालिमों ने कहाँ लाकर छोड़ दिया। कुछ नहीं सूझता। रास्ता नहीं मालूम। कहाँ जाऊँ? कोई आदमी नज़र नहीं आता कि उससे रास्ता पूछूँ!

(हानी आता हुआ दिखायी देता हैं)

मुस्लिम — ऐ ख़ुदा के नेक बन्दे, मुझे यहाँ से निकलने का रास्ता बता दो।

हानी — हज़रत मुस्लिम! क्या अभी आप यहीं खड़े हैं?

मुस्लिम — आप हैं हानी? रसूल पाक की क़सम, इस वक़्त तन में जान पड़ गयी। मुझे तो कई आदमियों ने पकड़ लिया, और यहाँ छोड़कर चल दिये।

हानी — वे मेरे ही आदमी थे। मैंने वहाँ की हालत देखी, तो आपको वहाँ से हटा देना मुनासिब समझा। मैंने उन्हें ताक़ीद की थी कि आपको मेरे घर पहुँचा दें।

मुस्लिम — पहले आपके आदमी होंगे, अब नहीं हैं। ज़ियाद की तक़रीर ने उन पर भी असर किया है।

हानी — ख़ैर, कोई मुज़ायक़ा नहीं, मेरा मकान क़रीब है; आइए। हम सियासत के मैदान में ज़ियाद से नीचा खा गये। उसने यह ख़बर मशहूर कर दी है कि हुसैन आ रहे हैं। इस हीले से लोग जमा हो गये, और उसे उनको फ़रेब देने का मौक़ा मिल गया।

मुस्लिम — मुझे तो अब चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता है।

हानी — ज़ियाद की तक़रीर ने सूरत बदल दी। जिन आदमियों ने हज़रत के पास ख़त भेजने पर ज़ोर दिया था, वे भी फ़रेब में आ गये।

(सुलेमान और मुख़्तार आते हैं। सुलेमान के सिर पर पट्टी बँधी हुई हैं)

मुख़्तार — शुक्र है, आप ख़ैरियत से पहुँच गये। ज़ियाद के आदमी आपको तलाश करते फिरते है।

मुस्लिम — हानी, ऐसी हालत में यहाँ रहकर मैं आपको खतरे में नहीं डालना चाहता। मुझे रुख़सत कीजिए। रात को किसी मस्जिद में पड़ रहूँगा।

हानी — मुआज़अल्लाह, यह आप क्या फ़रमाते हैं! यह आपका घर है। मैं और मेरा सब कुछ हज़रत हुसैन के क़दमों पर निसार है।

(शरीक का प्रवेश)

शरीक — अस्सलामअलेक या हज़रत, मैं भी हुसैन के ग़ुलामों में हूँ।

हानी — हज़रत मुस्लिम, आपने शरीक का नाम सुना होगा। आप हज़रत अली के पुराने ख़ादिम हैं, और उनकी शाम में कई क़सीदे लिख चुके हैं।

मुस्लिम — (शरीक के गले मिलकर) ऐसा कौन बदनसीब होगा, जिससे आपका क़लाम न देखा गया होगा।

शरीक — मैं हज़रत का ख़ादिम और नबी का ग़ुलाम हूँ। बसरे वालों की फ़रियाद लेकर यज़ीद के पास गया था। वहाँ मालूम हुआ कि आप मक्का रे रवाना हो गये हैं। मैं ज़ियाद के साथ ही इधर चल पड़ा कि शायद आपकी कुछ ख़िदमत कर सकूँ। यज़ीद ने अब सख़्ती की जगह नरमी और रियायत से काम लेना शुरू किया है। और आज ज़ियाद की तक़रीर का असर देखकर मुझे यक़ीन हो गया है कि यहाँ के लोग हज़रत हुसैन से ज़रूर दग़ा कर जायँगे। हमे भी फ़रेब का जवाब फ़रेब ही से देना लाज़िम है।

मुस्लिम — क्योंकर?

शरीक — इसकी आसान तरकीब है। मैं ज़ियाद को अपनी बीमारी की ख़बर दूँगा। वह यहाँ मेरी मिज़ाज-पुरसी करने ज़रूर आवेगा, आप उसे क़त्ल कर दीजिए।

मुस्लिम — अल्लाहताला ने फ़रमाया है कि मुसलमान को मुसलमान का ख़ून करना जायज़ नहीं।

शरीक — मगर अल्लाहताला ने यह भी को फ़रमाया है कि बेदीन को अमन देना साँप पालना है।

मुस्लिम — पर मेरी इन्सानियत इसकी इजाज़त नहीं देती।

शरीक — बेदीन को क़त्ल करना ऐन सबाब है। ज़िहाद में इन्सानियत को दख़ल नहीं, हक़ का रास्ता डाकुओं और लुटेरों से ख़ाली नहीं हैं। और उनका ख़ौफ़ है, तो इस रास्ते पर क़दम ही न रखना चाहिए। आप इस मसले को सोचिए।

(बाहर से आदमियों का एक गिरोह हानी का दरवाज़ा तोड़कर अन्दर घुस आता है)

एक आदमी — इन्हीं ने हुसैन को ख़त लिखा था। पकड़ लो इन्हें।

मुस्लिम — (सामने आकर) यहाँ से चले जाओ।

दूसरा आदमी — यही हज़रत मुस्लिम है। इन्हें गिरफ़्तार कर लो।

मुस्लिम — हाँ, मैं ही मुस्लिम हूँ। मैं ही तुम्हारा ख़तावार हूँ। अगर चाहते हो, तो मुझे क़त्ल करो। (कमर से तलवार फेंककर) यह लो, अब तुम्हें मुझसे कोई ख़ौफ़ नहीं है। अगर तुम्हारा ख़लीफ़ा मेरे ख़ून से ख़ुश हो, तो उसे ख़ुश करो। मगर ख़ुदा के लिए हुसैन को लिख दो कि आप यहाँ न आयें। उन्हें ख़िलाफ़त की हवस नहीं है। उनका मंशा सिर्फ़ आपकी हिमायत करना

था। वह आप ही अपनी निसार करना चाहते थे। उनके पास फ़ौज नहीं थी, हथियार नहीं थे, महज़ आपके लिए अपनी जान दे देने का जोश था, इसी लिए उन्होंने अपने गोशे को छोड़ना मंजूर किया। अब आपको उनकी ज़रूरत नहीं है, तो उन्हें मना कर दीजिए कि यहाँ मत आओ। उन्हें बुलाकर शहीद कर देने से आपको नदामत और अफ़सोस के सिवा और कुछ हाथ न आयेगा। उनकी जान लेनी मुश्किल नहीं; यहाँ की कैफ़ियत देखकर वह इस सदमे से ख़ुद ही मर जायँगे। वह इसे आपका क़सूर नहीं, अपना क़सूर समझेंगे कि वही उम्मत, जो मेरे नाना पर जान देती थी, अगर आज मेरे ख़ून की प्यासी हो रही है, तो यह मेरी ख़ता है। यह ग़म उनका काम तमाम कर देगा। आपका और आपके अमीर का मंशा ख़ुद-ब-ख़ुद पूरा हो जायगा। बोलो, मंजूर है? उन्हें लिख दूँ कि आपने जिनकी हिमायत के लिए शहीद होना क़बूल किया था, वह अब आपको शहीद करने की फ़िक्र में है। आप इधर रुख़ न कीजिए। (कोई नहीं बोलता)

–ख़ामोशी नीम रज़ा है। आप कहते है कि यह कैफ़ियत उन्हें लिख दी जाय।

कई आवाज़ें — नहीं, नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं।

मुस्लिम — तो क्या आप यहीं उनकी लाश को अपनी आँखों के सामने तड़पती देखना चाहते हैं।

एक आदमी — मुआज़अल्लाह, हम हज़रत हुसैन के क़ातिल न होंगे।

मुस्लिम — ऐसा न कहिए, वरना रसूल को जन्नत में भी तकलीफ़ होगी। आप अपनी ख़रज़ के ग़ुलाम हैं, दौलत के ग़ुलाम हैं। रसूल ने आपको हमेशा सब्र और सन्तोष की हिदायत की। आप जानते हैं, वह ख़ुद कितनी सादगी से ज़िन्दगी बसर करते थे। आपको पहले ख़लीफ़ा का हाल मालूम है, हज़रत फ़ारूक़ के हालत से भी आप वाक़िफ़ हैं। अफ़सोस! आप उस उसूल को भूल गये, जो तवहीद के बाद इस्लाम का सबसे पाक उसूल है, वरना आप वसीक़ों और जागीरों के जाल में न फँस जाते। आपने एक पल के लिए भी ख़याल नहीं किया कि वे जागीरें और वसीक़े किसके घर से आयेंगे। दूसरों से, जो कई पुश्तों से अपनी ज़मीन पर क़ाबिज़ हैं, वे ज़मीनें छीनकर आपको दी जायँगी। दूसरों से जबरन रुपए वसूल करके आपको वसीक़े दिये जायँगे। आपको ख़ुश करने के लिए दूसरों का तबाह करने का बहाना हाथ आ जायगा। आप अपने भाइयों के हक़ छीनकर अपनी हवस की प्यास बुझाना चाहते हैं? यह दीन-परवरी नहीं है, वह भाई-बंदी नहीं है, इसका कुछ और ही नाम है।

कई आवाजें — नहीं-नहीं, हम हराम का माल नहीं चाहते।

मुस्लिम — मैं यज़ीद का दुश्मन नहीं है, मैं ज़ियाद का दुश्मन नहीं हूँ; मैं इस्लाम का दोस्त हूँ। जो आदमी इस्लाम को पैरों से कुचलता है, चाहे वह यज़ीद हो, ज़ियाद हो, या ख़ुद हुसैन हो, उसका दुश्मन हूँ। जो शख़्स क़ुरान की और रसूल की तौहीन करता है, वह मेरा दुश्मन है।

कई आदमी — हम भी उसके दुश्मन हैं। वह मुसलमान नहीं, काफ़िर है।

मुस्लिम — बेशक, और कोई मुसलमान — अगर वह मुसलमान है, काफ़िर को ख़लीफ़ा न तस्लीम करेगा, चाहे वह उसका दामन हीरे व जवाहिर से भर दे।

कई आदमी — बेशक, बेशक।

मुस्लिम — तो आप तस्लीम करते हैं कि ख़लीफ़ा उसे होना चाहिए, जो इस्लाम का सच्चा पैरो है। वह नहीं, जो एक का घर लूटकर दूसरे का दिल भरता हो।

कई आदमी — बेशक, बेशक।

मुस्लिम — किसी मुसलमान के लिए इससे बड़ी शरम की बात नहीं हो सकती कि वह किसी को महज़ दौलत या हुकूमत की

बदौलत अपना इमाम समझे। इमाम के लिए सबसे बड़ी शर्त क्या है? इस्लाम का सच्चा पैरो होना। इस्लाम ने दौलत को हमेशा हक़ीर समझा है। वह इस्लाम की मौत का दिन होगा, जब वह दौलत के सामने सिर झुकायेगा। ख़ुदा हमको और आपको वह दिन देखने के लिए ज़िन्दा न रखे। हमारा दुनिया से मिट जाना इससे कहीं अच्छा है। तुम्हारा फ़र्ज़ है कि बैयत लेने से पहले तहक़ीक़ कर लो, जिसे तुम ख़लीफ़ा बना रहे हो, वह रसूल की हिदायतों पर अमल करता है या नहीं। तहक़ीक़ करो, वह शराब तो नहीं पीता।

कई आदमी — क्या ख़लीफ़ा यज़ीद शराब पीते हैं?

मुस्लिम — यह जाँच करना तुम्हारा काम है। जाँच करो कि तुम्हारा ख़लीफ़ा ज़नाकार तो नहीं।

मुस्लिम — क्या यज़ीद ज़नाकार है?

मुस्लिम — यह जाँच करना तुम्हारा काम है। दर्याफ्त करो कि वह नमाज़ पढ़ता है, रोज़े रखता है, आलिमों की इज़्ज़त करता है, खज़ाने का बेजा इस्तेमाल तो नहीं करता? अगर इन बातों की जाँच किये बगैर तुम महज़ जागीरों और वसीकों की उम्मीद पर किसी की बैयत क़बूल करते हो, तो तुम क़यामत के रोज़ ख़ुदा के सामने शर्मिन्दा होगे। जब वह पूछेगा कि तुमने इन्तख़ाब के

हक़ का क्यों बेजा इस्तेमाल किया, तो तुम उसे क्या जवाब दोगे? जब रसूल तुम्हारा दामन पकड़कर पूछेंगे कि तुमने उसी अमानत को, जो मैंने तुम्हें दी थी, क्यों मिटा दिया, तो तुम उन्हें कौन-सा मुँह दिखाओगे?

कई आदमी — हमें ज़ियाद ने धोखा दिया। हम यज़ीद की बैयत से इनकार करते हैं।

मुस्लिम — पहले खूब जाँच लो। मैं किसी पर इलज़ाम नहीं लगाता। कौन खड़ा होकर कह सकता है कि यज़ीद इन बुराइयों से पाक है।

कई आदमी — हम जाँच कर चुके।

मुस्लिम — तो तुम्हें किसकी बैयत मंजूर है?

शोर — हुसैन की! रसूल के नवासे की।

मुस्लिम — उनके बारे में तुमने उन बातों की जाँच कर ली? तुम्हें यक़ीन है कि हुसैन उन बुराइयों से पाक हैं?

एक आदमी — हमने जाँच कर ली। हुसैन में कोई बुराई नहीं। हम हुसैन को अपना ख़लीफ़ा तसलीम करते हैं। ज़ियाद ने हमें गुमराह कर दिया था।

एक आदमी — पहले ज़ियाद को क़त्ल कर दो।

दूसरा आदमी — बेशक, उसी ने हमें गुमराह किया था।

मुस्लिम — नहीं तुम्हें रसूल का वास्ता है। मोमिन पर मोमिन का ख़ून हराम है।

(सब आदमी वहीं बैठ जाते हैं; और मुस्लिम के हाथों पर हुसैन की बैयत करते हैं)

नवाँ दृश्य

(दोपहर का समय। हानी का मकान। शरीक एक चारपाई पर पड़े हुए हैं। सामने ताक़ पर शीशियाँ और दवा के प्याले रखे हुए हैं। मुस्लिम और हानी फ़र्श पर बैठे हुए हैं)

शरीक — ज़ियाद अब आता ही होगा। मुस्लिम, तलवार को तेज़ रखना।

हानी — मैं ख़ुद उसे क़त्ल करता, पर जईफ़ी ने हाथों में क़ूबत बाक़ी नहीं रखी।

शरीक — इसमें पसोपेश की मुतलक़ ज़रुरत नहीं। हक़ की हिमायत के लिए, इस्लाम की हिमायत के लिए, क़ौम की हिमायत के लिए, अगर ख़ून का दरिया बहा दिया जाय, तो उसमें फरिश्ते वज़ू करेंगे, औलिया की रूहें उसमें नहायेंगी। जो हाथ हक़ की हिमायत में न उठ, वह अन्धी आँखों से, बुझे हुए चिराग़ से दिन, के चाँद से भी ज़्यादा बेकार है। इस्लाम की ख़िदमत का इससे बेहतर मौक़ा आपको फिर न मिलेगा। शायद फिर कभी किसी को न मिलेगा। कूफ़ा और बसरा पर कब्जा करके आप यज़ीद को बड़ी-से-बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला कर सकते है। यज़ीद की ख़िलाफ़त इस्लाम को दुनियादारी और ग़ुलामी की तरफ़ ले जायगी और हुसैन की ख़िलाफ़त हक़ और सच्चाई की तरफ़। क्या यह आपको मंजूर है कि यज़ीद के हाथों इस्लाम तबाह हो जाय?

(ज़ियाद आता है, और मुस्लिम बग़ल की कोठरी में छिप जाते हैं)

ज़ियाद — अस्सलामअलेक, या शरीक, तुम्हारी हालत तो बहुत ख़राब नज़र आती है।

हानी —कल से आँखें नहीं खोलीं। सारी रात कराहते गुज़री है।

शरीफ़ — ख़ुदा फ़रमाता है — हक़ के वास्ते जो तलवार उठाता है, उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खुला है।

ज़ियाद — शरीक, शरीक! कैसी तबियत है?

शरीक —

शौक़ कहता था कि हाँ, हसरत यह करती थी, नहीं,
मैं इधर मुश्किल में था, क़ातिल उधर मुश्किल में था।

हानी — आँखें खोलो। अमीर तुम्हारी मुलाक़ात को आये हैं।

शरीक —

सल्ब की क़ूबत तड़पने की, तड़पता किस तरह,
एक दिल में, दूसरा ख़ंजर क़फ़े क़ातिल में था।

ज़ियाद — क्या रात भी यही इनकी हालत थी?

हानी — जी हाँ, यों ही बकते रहे।

शरीक —

गले पर छुरी क्यों नहीं फेर देते,
हक़ीक़त पर अपनी नज़र करनेवाले।

ज़ियाद — किसी हकीम को बुलाना चाहिए।

शरीक — कौन आया है, ज़ियाद!

हुजूमे-आरज़ू से बढ़ गई बेताबियाँ दिल की,
अरे ओ छिपनेवाले, यह हिजाबे जाँ सिताँ कब तक।

ज़ियाद — तुम्हारे घरवालों को ख़बर दी जाय?

शरीक — मैं यहीं मरूँगा, मैं यहीं मरूँगा।

मेरी ख़ुशी पर आसमाँ हँसता है, और हँसे न क्यों,
बैठा है जाके चैन से दोस्त की बज़्मे-नाज़ में।

ज़ियाद — ख़ुदा किसी ग़रीब को बेवतनी में मरीज़ न बनाये। हानी, मैंने सुना है, मुस्लिम मक्के से यहाँ आये हैं। ख़लीफ़ा ने मुझे सख़्त ताक़ीद की है कि उन्हें गिरफ़्तार कर लूँ। आप शहर के रईस है, उनका कुछ सुराग़ मिले, तो मुझे इत्तिला दीजिएगा। मुझे आपके ऊपर पूरा भरोसा है। आप समझ सकते हैं कि उनके आने से मुल्क में कितना शोर-शर पैदा होगा। क़सम है कलाम पाक की, इस वक़्त जो उनका सुराग़ लगा दे, उसका दामन जवाहरात से भर दूँ। मैं इसी फ़िक्र में जाता हूँ। आप भी तलाश में रहिए। (चला जाता है)

शरीक — हज़रत मुस्लिम, आपसे आज जो ग़लती हुई है, उस पर आप मरते दम तक पछतायँगें, और आपके बाद मुसलमान क़ौम इसका ख़मियाज़ा उठायेगी। तुम क़यास नहीं कर सकते कि तुमने इस्लाम को आज कितना बड़ा नुक़सान पहुँचाया है। शायद

ख़ुदा को यही मंजूर है कि रसूल का लगाया हुआ बाग़ यज़ीद के हाथों बरबाद हो जाय।

मुस्लिम — शरीक, मैंने कभी दग़ा नहीं की, और मुझे यक़ीन है कि हज़रत हुसैन मेरी इस हरकत को कभी पसन्द न करते। इस्लाम का दरख़्त हक़ के बीज से उगा है। दग़ा से उसकी आबपाशी करने में अन्देशा है कि कहीं दरख़्त सूख न जाय। हक़ पर क़ायम रहते हुए अगर इस्लाम का नामोनिशान दुनिया से मिट जाय, तो भी इससे कहीं बेहतर है कि उसे ज़िन्दा रहने के लिए दग़ा का सहारा लेना पड़े। (हानी से) भाई साहब को इत्तिला दे दूँ कि यहाँ 18 हज़ार आदमियों ने आपकी बैयत क़बूल कर ली है!

हानी — ज़रूर। मेरा ग़ुलाम इस ख़िदमत के लिए हाज़िर है।

मुस्लिम — (दिल में) यह ग़ैरमुमकिन है कि इतने आदमी बैयत लेकर फिर उसे तोड़ दें। कल मुझे चारों तरफ़ अंधेरा-ही-अंधेरा नज़र आता था। आज चारों तरफ़ रोशनी नज़र आती है। मेरी ही तहरीक पर हुसैन यहाँ आने के लिए राज़ी हुए। ख़ुदा का हज़ार शुक्र है कि मेरा दावा सही निकला और मेरी उम्मीद पूरी हुई।

दसवाँ दृश्य

(सन्ध्या का समय। ज़ियाद का दरबार)

ज़ियाद — तुम लोगों में ऐसा एक आदमी भी नहीं है, जो मुस्लिम का सुराग़ लगा सके। मैं वादा करता हूँ कि पाँच हज़ार दीनार उसकी नज़र करूँगा।

एक दरबारी — हुज़ूर, कहीं सुराग़ नहीं मिलता। इतना पता तो मिलता है कि कई हज़ार आदमियों ने उनके हाथ पर हुसैन की बैयत की है। पर वह कहाँ ठहरे हैं, इसका पता नहीं चलता।

(मुअक्किल का प्रवेश)

मुअक्किल — हुज़ूर की ख़ुदा सलामत रखे, एक ख़ुशख़बरी लाया हूँ। अपना ऊँट लेकर शहर के बाहर चारा काटने गया था कि एक आदमी को बड़ी तेज़ी से साँड़नी पर जाते देखा। मैंने पहचान लिया, वह साँड़नी हानी की थी। उनकी ख़िदमत में कई साल रह

चुका हूँ। शक हुआ कि यह आदमी उधर कहाँ जा रहा है। उसे एक हीले से रोककर पकड़ लिया। जब मारने की धमकी दी, तो उसने क़बूल किया कि मुस्लिम का ख़त लेकर मक्के जा रहा हूँ। मैंने वह ख़त उससे छीन लिया, यह हाज़िर है। हुक्म हो, तो क़ासिद को पेश करूँ।

ज़ियाद — (ख़त पढ़कर) क़सम खुदा की, मैं मुस्लिम को ज़िन्दा न छोड़ूँगा। मैं यहाँ मौजूद रहूँ , और अठारह हज़ार आदमी हुसैन की बैयत क़बूल कर लें। (क़ासिद से) तू किसका नौकर है?

क़ासिद — अपने आक़ा का।

ज़ियाद — तेरा आका कौन है?

क़ासिद — जिसने मुझे मिस्रियों के हाथ से ख़रीदा था।

ज़ियाद — किसने तुझे ख़रीदा?

क़ासिद — जिसने रुपए दिये?

ज़ियाद — किसने रुपये दिये?

क़ासिद — मेरे आक़ा ने।

ज़ियाद — तेरा आक़ा कहाँ रहता है?

क़ासिद — अपने घर में।

ज़ियाद — उसका घर कहाँ है?

ज़ियाद — जहाँ उसके बुज़ुर्गों ने बनवाया है।

ज़ियाद — क़सम ख़ुदा की, तू एक ही शैतान है। मैं जानता हूँ कि तुझ जैसे आदमी के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए। (जल्लाद से) इसे ले जाकर क़त्ल कर दो।

मुअक्किल — हुज़ूर, मैं ख़ूब पहचानता हूँ कि यह साँड़नी हानी की है।

ज़ियाद — अगर तू मुस्लिम का सुराग़ लगा दे, तो तुझे आज़ाद कर दूँ, और पाँच हज़ार दीनार इनाम दूँ।

मुअक्किल — (दिल में) ये बड़े-बड़े हाकिम बड़ी-बड़ी थैलियाँ हड़प करने ही के लिये हैं. अक़्ल ख़ाक नहीं होती। जब साँड़नी मौजूद है, तो उसके मालिक का पता लगाना क्या मुश्किल है? आज किसी भले आदमी का मुँह देखा था। चलकर साँड़नी पर बैठ जाता हूँ, और उसकी नकेल छोड़ देता हूँ। आप ही अपने घर पहुँच जायगी। वहीं मुस्लिम का पता चल जायगा। (चला जाता है।

ज़ियाद — (दिल में) अगर यह साँड़नी हानी की है, तो साफ़ ज़ाहिर है कि वह भी इस साज़िश में शरीक है। मैं अब तक उसे अपना

दोस्त समझता था। ख़ुदा, कुछ नहीं मालूम होता कि कौन मेरा दोस्त है, और कौन दुश्मन। मैं अभी उसके घर गया था। अगर शरीक भी हानी का मददगार है, तो यही कहना पड़ेगा कि दुनिया में किसी पर एतबार नहीं किया जा सकता।

ग्यारहवाँ दृश्य

(दस बजे रात का समय। ज़ियाद के महल के सामने सड़क पर सुलेमान, मुख़्तार और हानी चले आ रहे हैं)

सुलेमान — ज़ियाद के बर्ताव में अब कितना फ़र्क़ नज़र आता है।

मुख़्तार — मुझे तो ख़ौफ़ है कि उसे मुस्लिम का बैयत लेने की ख़बर मिल गयी है। कहीं उसकी नीयत ख़राब न हो।

हानी — उस वक़्त भी शायद भेद लेने ही के इरादे से गया हो। मुझसे ग़लती हुई कि अपने क़बीले के कुछ आदमियों का साथ न लाया, तलवार भी नहीं ली।

सुलेमान — यह आपका वहम है।

(ज़ियाद के मकान में वे सब दाख़िल होते हैं। वहाँ क़ीस, शिमर, हज्जाज़ आदि बैठे हुए हैं)

ज़ियाद — अस्सलामअलेक। आइए, आप लोगों से एक ख़ास मुआमले में सलाह लेनी है। क्यों शेख़ हानी, आपके ख़लीफ़ा यज़ीद ने जो रियायतें कीं, क्या उनका यह बदला होना चाहिए था कि आप मुस्लिम को अपने घर में ठहरायें, और लोगों को हुसैन की बैयत करने पर आमादा करें? हम आपका रुतबा और इज़्ज़त बढ़ाते हैं, और आप हमारी जड़ खोदने कि फ़िक्र में हैं?

हानी — या अमीर, ख़ुदा जानता हैं, मैंने मुस्लिम को ख़ुद नहीं बुलाया, वह रात को मेरे घर आये, और मेरी पनाह चाही। यह इन्सानियत के ख़िलाफ़ था कि मैं उन्हें घर से निकाल देता। आप ख़ुद सोच सकते हैं कि इसमें मेरी क्या ख़ता थी।

ज़ियाद — तुम्हें मालूम था कि हुसैन ख़लीफ़ा यज़ीद के दुश्मन हैं।

हानी — अगर मेरा दुश्मन भी मेरा पनाह मैं आता, तो मैं दरवाज़ा न बन्द करना।

ज़ियाद — अगर तुम अपनी ख़ैरियत चाहता हो, तो मुस्लिम को मेरे हवाले कर दो। वरना कलाम पाक की क़सम, तुम फिर आफ़ताब की रोशनी न देखोगे।

हानी — या अमीर, अगर आप मेरे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर डालें, और उन टुकड़ो को आग में जला डालें तो भी मैं मुस्लिम को आपके हवाले न करूँगा। मुरौवत इसे कभी क़बूल नहीं करती कि अपना पनाह में आनेवाले आदमी को दुश्मन के हवाले किया जाय। यह शराफ़त के ख़िलाफ़ है। अरब की शान के ख़िलाफ़ है। अगर मैं ऐसा करूँ, तो अपनी ही निगाह में गिर जाऊँगा। मेरे मुँह पर हमेशा के लिए स्याही का दाग़ लग जायगा। और, आनेवाली नस्लें मेरे नाम पर लानत करेंगी।

क़ीस — (हानी को किनारे ले जाकर) हानी, सोचो, इसका अंजाम क्या होगा? तुम पर, तुम्हारे ख़ानदान पर, तुम्हारे क़बीले पर आफ़त आ जायगी। इतने आदमियों को क़ुरबान करके एक आदमी की जान बचाना कहाँ की दानाई है?

हानी — क़ीस, तुम्हारे मुँह से ये बातें ज़ेबा नहीं। मैं हुसैन के चचेरे भाई के साथ कभी दग़ा न करूँगा, चाहे मेरा सारा ख़ानदान क़त्ल कर दिया जाय।

ज़ियाद — शायद तुम अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार हो गये हो।

हानी — आप मुझे अपने मकान पर बुलाकर मुझे क़त्ल की धमकी दे रहें हैं। मैं कहता हूँ कि मेरा एक क़तरा ख़ून इस आलीशान इमारत को हिला देगा। हानी बेकस, बेज़ार और बेमददगार नहीं है।

ज़ियाद — (हानी के मुँह पर सोंटे से मार कर) ख़लीफ़ा का नायब किसी के मुँह से अपनी तौहीन न सुनेगा, चाहे वह दस हज़ार क़बीले का सरदार क्यों न हो।

हानी — (नाक से ख़ून पोंछते हुए) ज़ालिम! तुझे शर्म नहीं आती कि तू एक निहत्थे आदमी पर वार कर रहा है। काश मैं जानता कि तू दग़ा करेगा, तो तू यों न बैठा रहता।

सुलेमान — ज़ियाद! मैं तुम्हें ख़बरदार किये देता हूँ कि अगर हानी को क़ैद किया, तो तू भी सलामत न बचेगा।

(ज़ियाद सुलेमान को मारने उठता है, लेकिन हज्जाज़ उसे रोक लेता है)

ज़ियाद — तुम लोग बैठे मुँह क्या ताक रहे हो, पकड़ लो इस बुड्ढे को। (बाहर की तरफ़ से शोर मचता है)

यह शोर कैसा है?

क़ीस — (खिड़की से बाहर की तरफ़ झाँककर) बाग़ियों की एक फ़ौज इस तरफ़ बढ़ती चली आ रही है।

ज़ियाद — कितने आदमी होंगे?

क़ीस — क़सम ख़ुदा की, दस हजार से कम नहीं हैं।

ज़ियाद — (सिपाही को बुलाकर) हानी को ले जाओ और उस कोठरी में बन्द कर दो, जहाँ कभी आफ़ताब की किरणें नहीं पहुँचती।

सुलेमान — ज़ियाद, मैं तुझे खबरदार किये देता हूँ, कि तुझे ख़ुद न उसकी कोठरी में क़ैद होना पड़े।

(सुलेमान और मुख़्तार बाहर चले जाते हैं)

क़ीस — बाग़ियों की एक फ़ौज बड़ी तेज़ी से बढ़ती चली आ रही है। बीस हज़ार से कम न होगी। मुस्लिम झंडा लिये हुए सबके आगे हैं।

ज़ियाद — दरवाज़े बन्द कर लो। अपनी-अपनी तलवारें लेकर तैयार हो जाओ। क़सम ख़ुदा की, मैं इस बग़ावत का मुक़ाबला

ज़बान से करूँगा। (छत पर चढ़कर बाग़ियों से पूछता है) तुम लोग क्यों शोर मचाते हो?

एक आदमी — हम तुझसे हानी के ख़ून का बदला लेने आये है।

ज़ियाद — क़लाम पाक की क़सम, जीते-जागते आदमी के ख़ून का बदला आज तक कभी किसी ने न लिया। अगर मैं झूठा हूँ, तो तुम्हारे शहर की क़ाज़ी तो झूठ न बोलेगा। (क़ाज़ी को नीचे से बुलाकर) बाग़ियों से कह दो, हानी ज़िन्दा है।

क़ाज़ी — या अमीर! मैं हानी को जब तक अपनी आँखों से न देख लूँ, मेरी ज़बान से यह तसदीक़ न होगी।

ज़ियाद — क़लाम पाक की क़सम, मैं तमाम मुल्लाओं को वासिल जहन्नुम कर दूँगा। जा देख आ, जल्दी कर।

(क़ाज़ी नीचे जाता है, और क्षण भर में लौट आता है)

क़ाज़ी — ऐ कूफ़ा के बाशिन्दों! मैं ईमान की रू से तसदीक़ करता हूँ कि शेख़ हानी ज़िन्दा हैं। हाँ, उनकी नाक से ख़ून जारी है।

मुस्लिम — बढ़े चलो। महल पर चढ़ जाओ। क्या कहा, ज़ीने नहीं हैं? जवाँमरदों को कभी ज़ीने का मुहताज नहीं देखा। तुम आप ज़ीने बन जाओ।

ज़ियाद — (दिल में) ज़ालिम एक-दूसरों के कन्धों पर चढ़ रहे हैं। (प्रकट) दोस्तों, यह हंगामा किस लिए है? मैं हुसैन का दुश्मन नहीं हूँ, मुस्लिम का दुश्मन नहीं हूँ। अगर तुमने हुसैन की बैयत क़बूल की है, तो मुबारक हो। वह शौक़ से आयें। मैं यज़ीद का ग़ुलाम नहीं, जिसे क़ौम ख़लीफ़ा बनाये, उसका ग़ुलाम हूँ, लेकिन इसका तसफ़िया हंगामे से न होगा, इस मकान को पस्त करने से न होगा, अगर ऐसा हो, तो सबसे पहले इस पर मेरा हाथ उठेगा। मुझे क़त्ल करने से भी फ़ैसला न होगा, अगर ऐसा हो तो मैं अपने हाथों अपना सिर क़लम करने को तैयार हूँ। इसका फ़ैसला आपस में सलाह से होगा।

मुस्लिम — ठहरो, बस थोड़ी कसर और है। ऊपर पहुँचे कि तुम्हारी फ़तह है।

सुलेमान — ऐं! ये लोग भागे कहाँ जाते हैं? ठहरो-ठहरो, क्या बात है?

एक सिपाही — देखिए, क़ीस कुछ कह रहा है।

क़ीस — (खिड़की से सिर निकालकर) भाइयों, हम और तुम एक शहर के रहनेवाले है। क्या तुम हमारे ख़ून से अपनी तलवारों की प्यास बुझाओगे? तुम में से कितने ही मेरे साथ खेले हुए हैं। क्या यह मुनासिब है कि हम एक दूसरे का ख़ून बहाये? हम लोगों ने दौलत के लालच से, रुतबे के लालच से और हुकूमत के लालच से यज़ीद की बैयत नहीं क़बूल की है, बल्कि महज़ इसलिए की कूफ़ा की गलियों में ख़ून के नाले न बहें।

कई आदमी — हम ज़ियाद से लड़ना चाहते हैं, अपने भाइयों से नहीं।

मुस्लिम — ठहरो-ठहरो। इस दग़ाबाज़ की बातों में न आओ।

सुलेमान — अफ़सोस, कोई सुनता नहीं। सब भागे चले जाते हैं। वह कौन बदनसीब है, जिसके आदमी इतनी आसानी से बहकाये जा सकते हैं।

मुख़्तार — मेरी नादानी थी कि इन पर एतबार किया।

सुलेमान — मैं हज़रत हुसैन को कौन नहीं मुँह दिखाऊँगा। ऐसे लोग दग़ा देते जा रहे हैं, जिनको मैं तक़दीर से ज़्यादा अटल समझता था। क़ीस गया, हज्जाज़ गया, हारिस गया, शीस ने दग़ा दी, अशअस ने दग़ा दी। जितने अपने थे, सब बेगाने हो गये।

मुख़्तार — अब हमारे साथ कुल तीस आदमी और रह गये।

(यज़ीद के सिपाही महल से निकलते है)

ख़ुदा, इन मूज़ियों से बचाओ। हज़रत मुस्लिम, मुझे अब कोई ऐसा मकान नज़र नहीं आता, जहाँ आपकी हिफ़ाज़त कर सकूँ। मुझे यहाँ की मिट्टी से भी दग़ा की बू आ रही है।

कसीर — ग़रीब का मकान हाज़िर है।

मुख़्तार — अच्छी बात है। हज़रत मुस्लिम, आप इनके साथ जायँ। हमें रुख़सत कीजिए। हम दो-चार आदमियों का रहना ज़रूरी है, जो हज़रत हुसैन पर अपनी जान निसार कर सकें। हमें अपनी जान प्यारी नहीं, लेकिन हुसैन की ख़ातिर उसकी हिफ़ाज़त करनी पड़ेगी।

(वे दोनों एक गली में ग़ायब हो जाते हैं)

बारहवाँ दृश्य

(रात नौ बजे का समय। मुस्लिम एक अंधेरी गली में खड़े हैं। थोड़ी दूर पर एक चिराग़ जल रहा है तौआ अपने मकान के दरवाज़े पर बैठी हुई है)

मुस्लिम — (स्वगत) उफ़! इतनी गरमी मालूम होती है कि बदन का ख़ून आग हो गया। दिन-भर गुज़र गया, कहीं पानी का एक बूँद भी न नसीब हुआ। एक दिन पहले बीस हज़ार आदमियों ने मेरे हाथों पर हुसैन की बैयत ली थी। आज किसी से एक बूँद पानी माँगते हुए ख़ौफ़ होता है कि कहीं गिरफ़्तार न हो जाऊँ। साए पर दुश्मन का गुमान होता है। खुदा से अब मेरी यही दुआ है कि हुसैन मक्के से चले हों। आह कसीर! खुदा तुम्हें जन्नत में जगह दे। कितना दिलेर, कितना जाँबाज! दोस्त की हिमायत का पाक फ़र्ज़ इतनी जवाँमरदी से किसने पूरा किया होगा! तुम दोनों बाप और बेटे इस दग़ा और फ़रेब की दुनिया में रहने के लायक न थे। तुम्हारी मज़ार पर हूरें फ़ातिहा पढ़ने आयेंगी। आह! अब प्यास के मारे नहीं रहा जाता। दुश्मन की तलवार से मरना इतना ख़ौफ़नाक नहीं है, जितना प्यास से तड़प-तड़पकर मरना। चिराग़ नज़र आता है। वहाँ चलकर पानी माँगू, शायद मिल जाय। (प्रकट) ऐ नेक बीबी, मेरा प्यास के मारे बुरा हाल है, थोड़ा पानी पिला दो।

तौआ — आओ, बैठो, पानी लाती हूँ।

(वह पानी लाती है, और मुस्लिम पीकर दीवार से लगकर बैठते हैं)

तौआ — ऐ ख़ुदा के बन्दे, क्या तूने पानी नहीं पिया?

मुस्लिम — पी चुका।

तौआ — तो अब घर जाओ? यहाँ अकेले खड़ा रहना मुनासिब नहीं। ज़ियाद के सिपाही चक्कर लगा रहे हैं, ऐसा न हो, तुम्हें शुबहे में पकड़ लें।

मुस्लिम — चला जाऊँगा।

तौआ — हाँ बेटा, ज़माना ख़राब है, अपने घर चले जाओ।

मुस्लिम — चला जाऊँगा।

तौआ — रात गुज़रती जाती है। तुम चले जाओ, तो मैं दरवाज़ा बन्द कर लूँ।

मुस्लिम — चला जाऊँगा।

तौआ — सुभानअल्लाह! तुम भी अजीब आदमी हो। मैं तुमसे बार-बार घर जाने को कहती हूँ, और तुम उठते ही नहीं। मुझे

तुम्हारा यहाँ पड़ा रहना पसन्द नहीं। कहीं कोई वारदात हो जाय, तो मैं ख़ुदा के दरगाह में गुनहगार बनूँ।

मुस्लिम — ऐ नेक बीबी, जिसका यहाँ घर ही न हो, वह किसके घर चला जाय। जिसके लिए घरों के दरवाज़े नहीं, सड़कें बन्द हो गयी हों, उसका कहाँ ठिकाना है। अगर तुम्हारे घर में जगह और दिल में दर्द हो, तो मुझे पनाह दो। शायद मैं कभी इस नेकी का बदला दे सकूँ।

तौआ — तुम कौन हो?

मुस्लिम — मैं वही बदनसीब आदमी हूँ, जिसकी आज घर-घर तलाश हो रही है। मेरा नाम मुस्लिम है।

तौआ — या हज़रत, तुम पर मेरी जान फ़िदा हो। जब तक तौआ ज़िन्दा है, आपको किसी दूसरे घर जाने की ज़रूरत नहीं है। ख़ुशनसीब कि मरने के वक्त आपकी ज़ियारत हुई। मैं ज़ियाद से क्यों डरूँ? जिसके लिए मौत के सिवा और कोई आरज़ू नहीं। आइए, आपको अपने मकान के दूसरे हिस्से में ठहरा दूँ, जहाँ किसी का गुज़र नहीं हो सकता। (मुस्लिम तौआ को साथ जाते हैं) यहाँ आराम कीजिए, मैं खाना लाती हूँ।

(बलाल का प्रवेश)

बलाल — अम्मा, आज ज़ियाद ने लोगों की ख़ताएँ माफ़ कर दीं, सबको तसल्ली दी, और इतमीनान दिलाया कि तुम्हारे साथ कोई सख़्ती न की जायगी। हज़रत मुस्लिम का न जाने क्या हाल हुआ।

तौआ — जो हुसैन का दुश्मन है, उसके क़ौल का क्या एतबार।

बलाल — नहीं अम्मा, छोटे-बड़े ख़ातिर से पेश आये। उसकी बातें ऐसी होती हैं कि एक-एक लफ़्ज़ दिल में चुभ जाता है। हज़रत मुस्लिम का बचना अब मुझे भी मुश्किल जान पड़ता है। अब ख़याल होता है, उनके यहाँ आने से हम लोगों में निफ़ाक़ पैदा हो गया। ज़ियाद ने वादा किया है कि जो उन्हें गिरफ़्तार करा देगा, उसके बहुत कुछ इनाम-एकराम मिलेगा।

तौआ — बेटा, कहीं तेरी नीयत तो नहीं बदल गयी। ख़ुदा की क़सम, मैं तुझे कभी दूध न बख़्शूँगी।

बलाल — अम्मा, ख़ुदा न करे, मेरी नीयत में फ़र्क आये। मैं तो सिर्फ़ बात कह रहा था। आज सारा शहर ज़ियाद को दुआएँ दे रहा है।

(तौआ प्याले में खाना लेकर मुस्लिम को दे आती है)

बलाल — हज़रत हुसैन तशरीफ़ न लायें, तो अच्छा है। मुझे ख़ौफ़ है कि लोग उनके साथ दग़ा करेंगे।

तौआ — ऐसी बातें मुँह से न निकाल। मुँह-हाथ धो ले। क्या तुझे भूख नहीं लगी, या ज़ियाद ने दावत कर दी?

बलाल — ख़ुदा मुझे उसकी दावत से बचाये। खाना ला।

(तौआ उसके सामने खाना रख देती है, और फिर प्याले में कुछ लेकर मुस्लिम को दे आती है)

बलाल — यह पिछवाड़े की तरफ़ बार-बार क्यों जा रही हो अम्मा?

तौआ — कुछ नहीं बेटा! यों ही एक ज़रूरत से चली गयी थी।

बलाल — हज़रत मुस्लिम पर न जाने क्या गुज़री।

(खाना खाकर चारपाई पर लेटता है, तौआ बिस्तर लेकर मुस्लिम की चारपाई पर बिछा आती है)

बलाल — अम्मा, फिर तुम उधर गयीं, और कुछ लेकर गयीं। आख़िर माजरा क्या है? कोई मेहमान तो नहीं आया है?

तौआ — बेटा मेहमान आता, तो क्या उसके लिए यहाँ जगह न थी?

बलाल — मगर कोई-न-कोई बात है ज़रूर। क्या मुझसे भी छिपाने की ज़रूरत है?

तौआ — तू सो जा, तुझसे क्या।

बलाल — जब तक बतला न दोगी, तब तक मैं न सोऊँगा।

तौआ — किसी से कहेगा तो नहीं?

बलाल — तुम्हें मुझ पर भी एतबार नहीं?

तौआ — क़सम खा।

बलाल — ख़ुदा की क़सम है, जो किसी से कहूँ।

तौआ — (बलाल के कान में) हज़रत मुस्लिम हैं।

बलाल — अम्मा, ज़ियाद को ख़बर मिल गयी, तो हम तबाह हो जायेंगे।

तौआ — ख़बर कैसे हु जायगी। मैं तो कहूँगी नहीं। हाँ, तेरे दिल की नहीं जानती। करती क्या, एक तो मुसाफ़िर, दूसरे हुसैन के भाई। घर में जगह न होती, तो दिल में बैठा लेती।

बलाल — (दिल में) अम्मा ने मुझे यह राज़ बता दिया, बड़ी ग़लती की। मैंने ज़िद करके पूछा, मुझसे ग़लती हुई। दिल पर क्योंकर क़ाबू रख सकता हूँ। एक बार से बादशाहत मिलती हो, तो ऐसा कौन हाथ है, जो न उठ जायगा। एक बात से दौलत मिलती हो, ज़िन्दगी के सारे हौसले पूरे होते हों, तो वह कौन ज़ुबान है, जो चुप रह जायगी। ऐ दिल, गुमराह न हो, तूने सख़्त क़समें खायी है। लानत का तौंक़ गले में न डाल। लेकिन होगा तो वही, जो मुक़द्दर में है। अगर मुस्लिम की तक़दीर में बचना लिखा है, तो बचेंगे, चाहे सारी दुनिया दुश्मन हो जाय। मरना लिखा है, तो मरेंगे चाहें दुनिया उन्हें बचाये।

(उठकर तौआ की चारपाई की तरफ़ देखता है, और चुपके से दरवाज़ा खोलकर चला जाता है)

तौआ — (चौंककर उठ बैठती है) आह! ज़ालिम, माँ से भी भी दग़ा की। तुझे यह भी शर्म न आयी कि हुसैन का भाई मेरे मकान में

गिरफ़्तार हो। आक़बत के दिन खुदा को कौन-सा मुँह दिखायेगा। एक कसीर था कि अपनी और अपने बेटे की जान अपने मेहमान पर निसार कर दी, और एक बदनसीब मैं हूँ कि मेरा बेटा उसी मेहमान को दुश्मनों के हवाले करने जा रहा है!

(बाहर शोर सुनायी देता है। मुस्लिम तौआ के कमरे में आते हैं)

मुस्लिम — तौआ, यह शोर कैसा है?

तौआ — या हज़रत! क्या बताऊँ, मेरा बेटा मुझसे दग़ा कर गया। वह बुरी सायत थी कि मैंने अपने घर में आपको पनाह दी काश अगर मैंने उस वक़्त बेमुरौवती की होती, तो आप इस खतरे में न पड़ते। अगर कभी किसी माँ को बेटा जनने पर अफ़सोस हुआ है, तो वह बदनसीब माँ मैं हूँ। अगर जानती कि यह यों दग़ा करेगा, तो ज़च्चेख़ाने में ही में उसका गला घोंट देती।

मुस्लिम — नेक बीबी, शरमिन्दा न हो। तेरे बेटे की ख़ता नहीं, सब कुछ वही हो रहा है, जो तक़दीर में था, और जिसकी मुझे ख़बर थी। लेकिन दुनिया में रहकर इन्साफ़ , इज़्ज़त और ईमान के लिए प्राण देना हर एक सच्चे मुसलमान का फ़र्ज़ है। खुदा नबियों के हाथों हिदायत के बीज बोता है, और शहीदों के ख़ून से

उसे सींचता है। शहादत वह आला-से-आला रुतबा है, जो ख़ुदा इन्सान के दो सकता है। मुझे अफ़सोस सिर्फ़ यह है कि जो बात एक दिन पहले होनी चाहिए थी, वह आज दो ख़ुदा के बन्दों का ख़ून बहाने के बाद हो रही है।

(ज़ियाद के आदमी बाहर से तौआ के घर में आग लगा देते हैं, और मुस्लिम बाहर निकलकर दुश्मनों पर टूट पड़ते हैं)

एक सिपाही — तलवार क्या है, बिजली है। ख़ुदा बचाये।

(मुस्लिम का हाथ पकड़ता है, और वहीं गिर पड़ता है)

दूसरा सिपाही — अब इधर चला, जैसे कोई मस्त शेर डकारता हुआ चला आता हो। बन्दा तो घर की राह लेता है, कौन जान दे। (भागता है)

तीसरा सिपाही — अर– र.. र.. या हज़रत मैं ग़रीब मुसाफ़िर हूँ, देखने आया था कि यहाँ क्या हो रहा है। (मुस्लिम का हाथ पकड़ता है, और वहीं गिर पड़ता है)

चौथा आदमी — जहन्नुम में जाय ऐसी नौकरी। आदमी आदमी से लड़ता है कि देव से। या हज़रत, मैं सिपाही नहीं हूँ, मैं तो हुज़ूर के हाथों पर बैयत करने आया था। (मुस्लिम का हाथ पकड़ता है, और वही गिर पड़ता है)

पाँचवाँ सिपाही — किधर से भागें, कहीं जगह नहीं मिलती। यह हज़रत, अपनी बूढ़ी माँ का अकेला लड़का हूँ। जान बख्श दें, तो हुज़ूर की जूतियाँ सीधी करूँगा। (तलवार पड़ते ही गिर पड़ता है। सिपाहियों में भगदड़ पड़ जाती है)

क़ीस — जवानों, हिम्मत न हारो। तुम तीन सौ हो। कितने शर्म की बात है कि एक आदमी से इतना डर रहे हो।

एक सिपाही — बड़े बहादुर हो, तो तुम्हीं क्यों नहीं उससे लड़ आते? दुम दबाये पीछे क्यों खड़े हो? क्या तुम्हीं को अपनी जान प्यारी है?

क़ीस — हज़रत मुस्लिम, अमीर ज़ियाद का हुक्म है कि अगर आप हथियार रख दें, तो आपको पनाह दी जाय। (सिपाहियों से) तुम सब छतों पर चढ़ जाओ, और ऊपर से पत्थर फेंको।

मुस्लिम — ऐ ख़ुदा और रसूल के दुश्मन, मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं है। मैं यहाँ तुझसे पनाह माँगने नहीं आया हूँ, तुझे सच्चाई के रास्ते पर लाने आया हूँ। (एक पत्थर सिर पर आता

है) ऐ गुमराहों!क्या तुमने इस्लाम से मुँह फेंककर शराफ़त और इन्सानियत से भी मुँह फेर लिया। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम अपने रसूल पाक के अज़ीज़ पर पत्थर फेंक रहे हो। हमारे साथ तुम्हारा यह कमीनापन! (तलवार लेकर टूट पड़ते हैं)

कूचे में रास्ती के हम अब गदा हुए हैं,
क्या ख़ौफ़ मौत का है, हक़ पर फ़िदा हुए हैं।
ईमाँ है अपना मुस्लिम मकरोदग़ा से नफ़रत,
दुनिया से फेरकर मुँह नक़शे-वफ़ा हुए हैं।
क्या उन पर हाथ उठाऊँ जो मौत से हैं ख़ायफ़,
जो राहे-हक़ से फिरकर सरफ़े-दग़ा हुए हैं।
दुनिया में आके इक दिन हर शख़्स को है मरना,
जन्नत है उनकी, जो याँ वकफ़े-ज़फ़ा हुए है।

क़ीस — कलामे पाक की क़सम, हम आपसे फ़रेब न करेंगे। अगर हम आपसे झूठ बोलें, तो हमारी नजात न हो।

मुस्लिम — वल्लाह! मुझे ज़िन्दा गिरफ़्तार करके ज़ियाद के तानों का निशाना न बना सकेगा।

क़ीस — (आहिस्ते से) यह शेर इस तरह क़ाबू में न आयगा। इसका सामना करना मौत का लुक़मा बनना है। यहाँ गहरा गड्ढा खोदो। जब तक वह औरों को गिराता हुआ आये, तब तक गड्ढा

तैयार हो जाना चाहिए। यहाँ अंधेरा है, वह जोश में इधर आते ही गिर जायगा।

एक सिपाही — ज़ियाद पर लानत हो, जिसने हमें शेर से लड़ने के लिए भेजा। या हज़रत, रहम, रहम!

दूसरा सिपाही — ख़ुदा ख़ैर करे। क्या जानता था, यहाँ मौत का सामना करना पड़ेगा। बाल-बच्चों की खबर लेनेवाला कोई नहीं।

(मुस्लिम गड्ढे में गिर पड़ते हैं)

मुस्लिम — जालिमों, आख़िर तुमने दग़ा की!

क़ीस — पकड़ लो, पकड़ लो, निकलने न पाये। ख़बरदार, क़त्ल न करना; ज़िन्दा पकड़ लो।

अशअस — तलवार का हक़दार मैं हूँ।

क़ीस — जिर्रह मेरा हिस्सा है।

अशअस — ख़ोद उतार लो, साद को देंगे।

मुस्लिम — प्यास! बड़े ज़ोरों की प्यास है ख़ुदा के लिए एक घूँट पानी पिला दो।

क़ीस — अब जहन्नुम के सिवा यहाँ पानी का एक क़तरा भी न मिलेगा।

मुस्लिम — तुफ़ है तुझ पर ज़ालिम, तुझे शरीफ़ों की तरह ज़बह करने की भी तमीज़ नहीं। मरनेवालों से ऐसी दिल-ख़राश बातें की जाती है? अफ़सोस।

अशअस — अब अफ़सोस करने से क्या फ़ायदा। तुम्हारे फ़ेल का नतीजा है।

मुस्लिम — आह! मैं अपने लिए अफ़सोस नहीं करता। रोता हूँ हुसैन के लिए, जिसे मैंने तुम्हारी मदद के लिए आमादा किया। जो मेरी ही मिन्नतों से अपने गोशे पर निकलने को राज़ी हुआ। जब कि ख़ानदान के सभी आदमी तुम्हारी दग़ाबाज़ी का ख़ौफ़ दिला रहे थे, मैंने ही उन्हें यहाँ आने पर मजबूर किया। रोता हूँ कि जिस दग़ा ने मुझे तबाह किया, वह उन्हें और उनके साथ उनके ख़ानदान को भी तबाह कर देगी। क्या तुम्हारे ख़याल में यह रोने की बात नहीं है? तुमसे कुछ सवाल करूँ?

अशअस — हुसैन की बैयत के सिवा और जो सवाल चाहे कर सकते हो।

मुस्लिम — हुसैन को मेरी मौत की इत्तिला दे देना।

अशअस — मंजूर है।

(कई सिपाही मुस्लिम को रस्सियों से बाँधकर ले जाते हैं)

तेरहवाँ दृश्य

(प्रातःकाल का समय। ज़ियाद का दरबार। मुस्लिम को कई आदमी मुश्क कसे लाते हैं)

मुस्लिम — मेरा उस पर सलाम है, जो हिदायत पर चलता है, आक़बत से डरता है, और सच्चे बादशाह की बन्दगी करता हूँ।

चोबदार — मुस्लिम! अमीर को सलाम करो।

मुस्लिम --- चुप रह! अमीर मेरा मालिक, मेरा आक़ा, मेरा इमाम हुसैन है।

ज़ियाद — तुमने कूफ़ा में आकर क़ानून के मुताबिक क़ायम की हुई बादशाहत को उखाड़ने की कोशिश की, बाग़ियों को भड़काया, और रियासत में निफ़ाक़ पैदा किया।

मुस्लिम — कूफ़ा क़ानून के मुताबिक़ न कोई सल्तनत क़ायम थी, न है। मैं उस शख़्स की क़ासिद हूँ, जो चुनाव के क़ानून से, विरासत के क़ानून से और लियाक़त से अमीर है। कूफ़ावालों ने ख़ुद उसे अमीर बनाया। अगर तुमने लोगों के साथ इन्साफ किया होता, तो बेशक, तुम्हारा हुक्म जायज़ था। रियाया की मर्ज़ी और सब हक़ों को मिटा देती है। मगर तुमने लोगों पर वे ज़ुल्म किये कि क़ैसर ने भी किये थे। बेगुनाहों को सजाएँ दी, ज़ुरमाने के हीले से उनकी दौलत लूटी, अमन रखने के हीले से उनके सरदारों को क़त्ल किया। ऐसे ज़ालिम हाकिम का, चाहे किसी हक़ के बिना पर हुकूमत करता हो, हुकूमत करने का कोई हक़ नहीं रहता, क्योंकि हैवानी ताक़त कोई हक़ नहीं हैं। ऐसी हुकूमत को मिटाना हर सच्चे आदमी का फ़र्ज़ है। और, जो इस फ़र्ज़ से ख़ौफ़ या लालच के कारण मुँह मोड़ता है, वह इन्सान और ख़ुदा, दोनों ही की निगाहों में गुनहगार है। मैंने अपने मक़दूर-भर रियाया को तेरे पंजे से छुड़ाने की कोशिश की, और मौक़ा पाऊँगा, तो फिर करूँगा।

ज़ियाद — वल्लाह, तू फिर इसका मौक़ा न पायेगा। तूने बग़ावत की है। बग़ावत की सज़ा क़त्ल है। और, दूसरे बाग़ियों की इबरत के लिए मैं तुझे इस तरह क़त्ल कराऊँगा, जैसे कोई अब तक न किया गया होगा।

मुस्लिम — बेशक। यह लियाक़त तुझी में है।

ज़ियाद — इस गुस्ताख को ले जाओ, और सबके ऊँची छत पर क़त्ल करो।

मुस्लिम — साद, तुमको मालूम है कि तुम मेरे क़राबतमन्द हो?

साद — मालूम है।

मुस्लिम — मैं तुमसे कुछ वसीयत करना चाहता हूँ।

साद — शौक़ से करो।

मुस्लिम — मैंने यहाँ कई आदमियों से कर्ज़ लेकर अपनी ज़रूरतों पर ख़र्च किया था। इस काग़ज़ पर उनके नाम और रक़में दर्ज हैं। तुम मेरा घोड़ा और मेरे हथियार बेचकर यह क़र्ज़ अदा कर देना, वरना हिसाब के दिन मुझे इ आदमियों से शर्मिन्दा होना होगा।

साद — इसका इतमीनान रखिए।

मुस्लिम — मेरी लाश को दफ़न करा देना।

साद — यह मेरे इमकान में नहीं है।

(जल्लाद आकर मुस्लिम को ले जाता है)

अशअस — या अमीर, मुस्लिम क़त्ल हुए। अब बग़ावत का कोई अन्देशा नहीं। अब आप हानी की जानबख़्शी कीजिए।

ज़ियाद — कलामे पाक की क़सम, अगर मेरी नजात होती हो, तो हानी को नहीं छोड़ सकता।

अशअस — लोग बिगड़ खड़े हों, तो?

ज़ियाद — जब क़ौम के सरदार मेरे तरफ़दार हैं, तो रियाया की तरफ़ से कोई अन्देशा नहीं। (जल्लाद को बुलाकर) तूने मुस्लिम को क़त्ल किया?

जल्लाद — अमीर के हुक्म की तामील हो गयी। ख़ुदाबन्द किसी को इतनी दिलेरी से जान देते नहीं देखा। पहले नमाज़ पढ़ी, तब मुझसे मुस्कराकर कहा — 'तू अपना काम कर'।

ज़ियाद — तूने उसे नमाज़ पढ़ने दिया? किसके हुक्म से?

जल्लाद — ग़रीबपरवर, आख़िर नमाज़ के रोकने का अज़ाब जल्लादों के लिए भी भारी है, जिस्म को सिर से अलग कर देना इतना बड़ा गुनाह नहीं है, जितनी किसी को ख़ुदा की इबादत से रोकना।

ज़ियाद — चुप रह नामाक़ूल। तू क्या जानता है, किसको क्या सज़ा देनी चाहिए। ग़ैरतमन्दों के लिए रूहानी ज़िल्लत क़त्ल से कहीं ज्यादा तकलीफ़ देती है। ख़ैर, अब हानी को ले जा, और चौराहे पर क़त्ल कर डाल।

एक आदमी — ख़ुदाबन्द, यह ख़िदमत मुझे सुपुर्द हो।

ज़ियाद — तू कौन है?

आदमी — हानी का ग़ुलाम हूँ। मुझ पर उसने इतने ज़ुल्म किये हैं कि मैं उसके ख़ून का प्यासा हो गया हूँ। आपकी निगाह हो जाय, तो मेरी पुरानी आरज़ू पूरी हो। मैं इस तरह क़त्ल करूँगा कि देखनेवाले आँखें बन्द कर लेंगे।

ज़ियाद — कलाम पाक की क़सम, तेरा सवाल ज़रूर पूरा करूँगा।

(ग़ुलाम हानी को पकड़े हुए ले जाता है। कई सिपाही तलवारें लिये साथ-साथ जाते हैं)

ग़ुलाम — (हानी से) मेरे प्यारे आक़ा, मैंने ज़िन्दगी-भर आपका नमक खाया, कितनी ही ख़ताएँ की, पर आपने कभी कड़ी निगाहों

से नहीं देखा। अब आपके जिस्म पर किसी बेदर्द क़ातिल का हाथ पड़े, यह मैं नहीं देख सकता। मैं इस हालात में भी आपकी ख़िदमत करना चाहता हूँ। मैं आपकी रूह को इस जिस्म की क़ैद से इस तरह आज़ाद करूँगा कि ज़रा भी तकलीफ़ न हो। ख़ुदा आपको जन्नत दे, और ख़ता माफ़ करे।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(दोपहर का समय। रेगिस्तान में हुसैन का क़ाफ़िले का पड़ाव। बगूले उड़ रहे हैं। हुसैन असग़र को गोद में लिये अपने ख़ेमे के द्वार पर खड़े हैं)

हुसैन — (मन में) उफ्, यह गर्मी! निगाहें जलती हैं। पत्थर की चट्टानों से चिनगारियाँ निकल रही हैं। झीलें, कुएँ, सब सूखे पड़े हुए हैं, गोया इन्हें गर्मी ने जला दिया हो। हवा से बदन झुलसा

जाता है। बच्चों के चेहरे कैसे सँवला गये हैं। यह सफ़ेदी, यह रेगिस्तान, इसकी कहीं हद भी है या नहीं! जिन लोगों ने प्यास के मारे हौक-हौककर पानी पी लिया है, उनके कलेजे में दर्द हो रहा है। अब तक कूफ़ा से कोई क़ासिद नहीं आया। ख़ुदा जाने, मुस्लिम का क्या हाल हुआ। करीने से ऐसा मालूम होता है कि इराक़ वालों ने उनसे दग़ा की, और उनको शहीद कर दिया, वरना यह ख़ामोशी क्यों? अगर वह जन्नत को सिधारे हैं, तो मेरे लिए भी दूसरा रास्ता नहीं है। शहादत मेरा इन्तजार कर रही है। कोई मुझसे मिलने आ रहा है।

(फ़र्ज़ूक़ का प्रवेश)

फ़र्ज़ूक़ — अस्सलामअलेक। या हज़रत हुसैन, मैंने बहुत चाहा कि मक्के ही में आपकी ज़ियारत करूँ, लेकिन अफ़सोस, मेरी कोशिश बेकार हुई।

हुसैन — अगर इराक़ से आये हो, तो वहाँ क्या ख़बर है?

फ़र्ज़ूक़ — या हज़रत! वहाँ की खबरें वे ही हैं, जो आपको मालूम हैं। लोगों के दिल आपके साथ हैं, क्योंकि आप हक़ पर हैं।

और उनकी तलवारें यज़ीद के साथ हैं, क्योंकि उसके पास दौलत है।

हुसैन — और मेरे भाई मुस्लिम की भी कुछ ख़बर लाये हो?

फ़र्ज़ूक़ — उनकी रूह जन्नत में है, और सिर क़िले की दीवार पर।

मातम है कई दिन से मुसलमानों के घर में,
ख़न्दक़ में है लाश उनकी व सिर क़िले की दर में।

हुसैन — (सीने पर हाथ रखकर)आह! मुस्लिम, वही हुआ, जिसका मुझे ख़ौफ़ था। अब तक तुम्हें कफ़न भी नसीब नहीं हुआ। क्या तुम्हारी नेकनीयती का यही सिला था? आह! तुम इतने दिनों तक मेरे साथ रहे, पर मैंने तुम्हारी क़द्र न जानी। मैंने तुम्हारे ऊपर जुल्म किया, मैंने जान-बूझकर तुम्हारी जान ली। मेरे अज़ीज़ और दोस्त सब-के-सब मुझे कूफ़ावालों से होशियार कर रहे थे, पर मैंने किसी की न सुनी, और तुम्हें हाथ से खोया। मैं उनके बेटों को और उनकी बीबी को कौन मुँह दिखाऊँगा।

(मुस्लिम की लड़की फ़ातिमा आती है)

आओ बेटी, मेरी गोद में चली आओ। कुछ खाया कि नहीं?

फ़ातिमा — बुआ ने शहद और रोटी तो दी थी। चचाजान, अब हम लोग कै दिन में अब्बा के पास पहुँचेंगे? पाँच-छह दिन तो हो गये?

हुसैन — (दिल में) आह! कलेजा मुँह को आता है। इस सवाल का क्या जवाब दूँ। कैसे कह दूँ कि अब तेरे अब्बा जन्नत में मिलेंगे। (प्रकट) बेटी, ख़ुदा की जब मरज़ी होगी।

अली असग़र — अहा! तुम अब्बाजान की गोद में बैठ गयी। उतरिए चटपट।

फ़ातिमा — तुम मेरे अब्बाजान की गोद में बैठोगे, तो मैं भी उतार दूँगी।

हुसैन — बेटी, मैं ही तुम्हारा अब्बाजान हूँ। तुम बैठी रहो। इसे बकने दो।

फ़ातिमा — आप मेरी तरफ़ देखकर आँखों में आँसू क्यों भरे हुए हैं? आप मेरा इतना प्यार क्यों कर रहे हैं? आप यह क्यों कहते हैं कि मैं ही अब्बाजान हूँ? ऐसी बातें तो यतीमों से की जाती हैं।

हुसैन — (रोकर) बेटी, तेरे अब्बा को ख़ुदा ने बुला लिया।

(फ़ातिमा रोती हुई अपनी माँ के पास जाती है। औरतें रोने लगती हैं)

जैनब — (बाहर आकर) भैया, यह क्या ग़ज़ब हो गया?

हुसैन — बहन, क्या कहूँ, सितम टूट पड़ा। मुस्लिम तो शहीद हो गये। कूफ़ावालों ने दग़ा की।

जैनब — तो ऐसे दग़ाबाज़ों से मदद की क्या उम्मीद हो सकती है? मैं तुमसे मिन्नत करती हूँ कि यहीं से वापस चलो। कूफ़ावालों ने कभी वफ़ा नहीं की।

(मुस्लिम के बेटे अब्दुल्ला का प्रवेश)

अब्दुल्ला — फूफीजान, अब तो अगर तक़दीर भी रास्ते में खड़ी हो जाय, तो भी मेरे क़दम पीछे न हटेंगे। तुफ़ है मुझ पर, अगर अपने बाप का बदला न लूँ! हाय वह इन्सान, जिसने कभी किसी से बदी नहीं की, जो रहम और मुरौवत का पुतला था, जो दिल का इतना साफ़ था कि उसे किसी पर शुबहा न होता था, इतनी बेदरदी से क़त्ल किया जाय!

(अब्बास का प्रवेश)

अब्बास — बेशक, अब कूफ़ावालों को उनकी दग़ा की सज़ा दिये बग़ैर लौट जाना ऐसी ज़िल्लत है, जिससे हमारी गर्दन हमेशा झुकी रहेगी। ख़ुदा को जो कुछ मंजूर है, वह होगा। हम सब शहीद हो जायँ, रसूल के खानदान का निशान मिट जाय, पर यहाँ से लौटकर हम दुनिया को अपने ऊपर हँसने का मौक़ा न देंगे। मुझे यक़ीन है कि यह शरारत कूफ़ा के रईसों और सरदारों की है, जिन्हें ज़ियाद के वादों ने दीवाना बना रखा है। आप जिस वक़्त कूफ़ा में क़दम रखेंगे, रियाया अपने सरदारों से मुँह फेरकर आपके क़दमों पर झुकेगी। और, वह दिन दूर नहीं, जब यज़ीद का नापाक सिर उसके तन से जुदा होगा। आप ख़ुदा का नाम लेकर ख़ेमे उखड़वाइए। अब देर करने का मौक़ा नहीं है। हक़ के लिए शहीद होना वह मौत है, जिसके लिए फ़रिश्तों की रूहें तड़पती हैं।

जैनब — भैया, मैं तुझ पर सदक़े। घर वापस चलो।

हुसैन — आह! अब यहाँ से वापस होना मेरे अख़्तियार की बात नहीं है। मुझे दूर से दुश्मन की फ़ौज का ग़ुबार नजर आ रहा है। पुश्त की तरफ़ भी दुश्मन ने रास्ता रोक रखा है। दाहिने-

बायें कोसों तक बस्ती का निशान नहीं। हम अब कूफ़ा के सिवा कहीं नहीं जा सकते। कूफ़ा में हमें तख़्त नसीब हो या तख़्ता, हमारे लिए कोई दूसरा मुक़ाम नहीं है। अब्बास, जाकर मेरे साथियों से कह दो, मैं उन्हें ख़ुशी से इजाज़त देता हूँ जहाँ जिसका जी चाहे, चला जाय। मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। चलो, हम लोग ख़ेमे उखाड़ें।

दूसरा दृश्य

(सन्ध्या का समय। हुसैन का क़ाफ़िला रेगिस्तान में चला जा रहा है)

अब्बास — अल्लाहोअकबर! वह कूफ़ा के दरख़्त नज़र आने लगे।

हवीब — अभी कूफ़ा दूर है। कोई दूसरा गाँव होगा।

अब्बास — रसूल पाक की क़सम, फ़ौज है। भालों की नोकें साफ़ नज़र आ रही हैं।

हुसैन — हाँ, फ़ौज ही है। दुश्मनों ने कूफ़े से हमारी दावत का यह सामान भेजा है। यहीं, उस टीले के क़रीब, ख़ेमे लगा दो। अजब नहीं कि इसी मैदान मे क़िस्मतों का फ़ैसला हो।

(क़ाफ़िला रुक जाता है। ख़ेमे गड़ने लगने हैं। बेगमें ऊँटों से उतरती हैं। दुश्मन की फ़ौज क़रीब आ जाती है)

अब्बास — खबरदार, कोई एक क़दम आगे न रखे। यहाँ हज़रत हुसैन के ख़ेमे हैं।

अली अकबर — अभी जाकर इन बेअदबों की तम्बीह करता हूँ।

हुसैन — अब्बास, पूछो, ये लोग कौन हैं, और क्या चाहते हैं?

अब्बास — (फ़ौज से) तुम्हारे सरदार कौन है?

हुर — (सामने आकर) मेरा नाम हुर है। हज़रत हुसैन का गुलाम हूँ।

अब्बास — दोस्त दुश्मन बनकर आये, तो वह भी दुश्मन है।

हुर — या हज़रत, हाकिम के हुक्म से मजबूर हूँ, बैयत से मजबूर हूँ, नमक की क़ैद से मजबूर हूँ, लेकिन दिल हुसैन ही का ग़ुलाम है।

हुसैन — (अब्बास से) भाई, आने दो, इसकी बातों में सच्चाई की बू आती है।

हुर — या हज़रत, आपको कूफ़ावालों ने दग़ा दी है! ज़ियाद और यज़ीद दोनों आपको क़त्ल करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चारों तरफ़ से फ़ौजें जमा की जा रही हैं। कूफ़ा के सरदार आपसे जंग करने लिए तैयार बैठे हैं।

हुसैन — पहले यह बतलाओ कि तुम्हारे सिपाही क्यों इतने निढाल और परेशान हो रहे हैं?

हुर — या हज़रत, क्या अर्ज़ करूँ। तीन पहर से पानी का एक बूँद न मिला। प्यास के मारे सबों के दम लबों पर आ रहे हैं।

हुसैन — (अब्बास से) भैया, प्यासों की प्यास बुझानी एक सौ नमाज़ों से ज़्यादा सबाब का काम है। तुम्हारे पास पानी हो, तो इन्हें पिला दो। क्या हुआ, अगर मेरे ये दुश्मन हैं, हैं तो मुसलमान — मेरे नाना के नाम पर मरने वाले!

अब्बास — यह हज़रत, आपके साथ बच्चे हैं, औरतें हैं, और पानी यहाँ उनका है।

हुसैन — इन्हें पानी पिला दो, मेरे बच्चों का ख़ुदा है।

(अब्बास, अली अकबर, हबीब पानी की मशकें लाकर सिपाहियों को पानी पिलाते हैं)

अब्बास — हुर, अब यह बतलाओ कि तुम हमसे सुलह करना चाहते हो या जंग?

हुर — हज़रत, मुझे आपसे न जंग का हुक्म दिया गया है, न सुलह का। मैं सिर्फ़ इसलिए भेजा गया हूँ कि हज़रत को ज़ियाद के पास ले जाऊँ, और किसी दूसरी तरफ़ न जाने दूँ।

अब्बास — इसके मानी यह हैं कि तुम जंग करना चाहते हो। हम किसी ख़लीफ़ा या आमिल के हुक्म के पाबन्द नहीं हैं कि किसी ख़ास तरफ़ जायँ। मुल्क ख़ुदा का है। हम आज़ादी से जहाँ चाहेंगे, जायँगे। अगर हमको कोई रोकेगा, तो उसे काँटों की तरह रास्ते से हटा देंगे।

हुसैन — नमाज़ का वक़्त आ गया। पहले नमाज़ अदा कर लें, उसके बाद और बातें होंगी। हुर, तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अपना फ़ौज के साथ?

हुर — या हज़रत, आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ अदा करने का सबाब न छोड़ूँगा, चाहे मेरी फ़ौज मुझसे जुदा क्यों न हो जाय।

तीसरा दृश्य

(सन्ध्या का समय — नसीमा बग़ीचे में बैठी आहिस्ता-आहिस्ता गा रही है)

दफ़न करने ले चले थे जब मेरे घर से मुझे,
काश तुम भी झाँक देते रौज़ने घर से मुझे।
साँस पूरी हो चुकी दुनिया से रुख़सत हो चुका,
तुम अब आये हो उठाने मेरे बिस्तर से मुझे!
क्यों उठाता है मुझे मेरी तमन्ना को निकाल,
तेरे दर तक खींच लायी थी यही घर से मुझे।
हिज्र की शब कुछ यही मूनिस था मेरा ऐ क़ज़ा —
एक ज़रा रो लेने दे मिल-मिल के बिस्तर से मुझे।
याद है तस्कीन अब तक वह ज़माना याद है,
जब छुड़ाया था फ़लक ने मेरे दिलवर से मुझे।

(वहब का प्रवेश — नसीमा चुप हो जाती है)

वहब — ख़ामोश क्यों हो गयी? यही सुनकर मैं आया था।

नसीमा — मेरा गाना मेरा ख़याल है, तनहाई का मूनिस। अपना दर्द क्यों सुनाऊँ, जब कोई सुनना न चाहे।

वहब — नसीमा, शिक़वे करने का हक़ मेरा है, तुम इसे ज़बरदस्ती छीन लेती हो।

नसीमा — तुम मेरे हो, तुम्हारा सब-कुछ मेरा है, पर मुझे इसका यक़ीन नहीं आता। मुझे हरदम यही अन्देशा रहता है कि तुम मुझे भूल जाओगे, तुम्हारा दिल मुझसे बेज़ार हो जायगा, मुझसे बेएतनाई करने लगोगे। यह ख़याल दिल से नहीं निकलता। बहुत चाहती हूँ कि निकल जाय, पर वह किसी तरह से भीगी हुई बिल्ली की तरह नहीं निकलता। तब मैं रोने लगती हूँ, और ग़मनाक ख़याल मुझे चारों तरफ से घेर लेते हैं। तुमने न जाने मुझ पर कौन-सा जादू कर दिया है कि मैं अपनी नहीं रही। मुझे ऐसा गुमान होता है कि हमारी बहार थोड़ी ही दिनों की मेहमान है। मैं तुमसे इल्तिजा करती हूँ कि मेरी तरफ़ से निगाहें न मोटी करना, वरना मेरा दिल पाश-पाश हो जायगा। मुझे यहाँ आने के पहले कभी न मालूम हुआ था कि मेरा दिल इतना नाज़ुक है।

वहब — मेरी कैफ़ियत इससे ठीक उल्टी है। मेरे दिल में एक नयी क़ूबत आ गयी है, मुझे ख़याल होता है कि अब दुनिया की

कोई फ़िक्र, कोई तर्ग़ीब, कोई आरज़ू मेरे दिल पर फ़तह नहीं पा सकती। ऐसी कोई ताक़त नहीं है, जिसका मैं मुक़ाबला न कर सकूँ। तुमने मेरे दिल की क़ूबत सौगुनी कर दी। यहाँ तक कि अब मुझे मौत का भी ग़म नहीं है। मुहब्बत ने मुझे दिलेर, बेख़ौफ़, मज़बूत बना दिया है, मुझे तो ऐसा गुमान होता है कि मुहब्बत क़ूबते-दिल की कीमिया है।

नसीमा — वहब, इन बातों से वहशत हो रही है, शायद हमारी तबाही के सामान हो रहे हैं। वहब, मैं तुम्हें न जाने दूँगी, कलाम पाक की क़सम कहीं न जाने दूँगी। मुझे इसकी फ़िक्र नहीं कि कौन ख़लीफ़ा होता है और कौन अमीर। मुझे माल व ज़र की, इलाक़े व जागीर की मुतलक़ परवा नहीं। मैं तुम्हें चाहती हूँ, सिर्फ़ तुम्हें।

(क़मर का प्रवेश)

क़मर — वहब, देख, दरवाज़े पर ज़ालिम ज़ियाद के सिपाही क्या ग़ज़ब कर रहे हैं। तेरे वालिद को गिरफ्तार कर लिया है, और जामा मस्जिद की तरफ़ खींचे लिये जाते हैं।

नसीमा — हाय सितम, इसी लिए तो मुझे वहशत हो रही थी।

(वहब उठ खड़ा होता है। नसीमा उसका हाथ पकड़ लेती हैं)

वहब — नसीमा, मैं अभी लौटा आता हूँ, तुम घबराओ नहीं।

नसीमा — नहीं-नहीं, तुम यहाँ मुझे ज़िन्दा छोड़कर नहीं जा सकते। मैं ज़ियाद को जानती हूँ, तुमको भी जानती हूँ। ज़ियाद के सामने जाकर फिर तुम नहीं लौट सकते।

क़मर — बेटा, अगर नसीमा तुझे नहीं जाने देती, तो मत जा। मगर याद रख, तेरे चेहरे पर हमेशा के लिए स्याही का दाग़ लग जायगा। ख़ुद जाती हूँ। नसीमा, शायद हमारी-तुम्हारी फिर मुलाक़ात न हो, यह आख़िरी मुलाक़ात है। रुख़सत। वहब, घर-बार तुझे सौंपा, ख़ुदा तुझे नेकी की तौफ़ीक़ दे, तेरी उम्र दराज़ हो।

वहब — अम्मा, मैं भी चलता हूँ।

क़मर — नहीं,तुझ पर अपनी बीबी का हक़ सबसे ज्यादा है।

वहब — नसीमा, ख़ुदा के लिए...।

नसीमा — नहीं। मेरे आक़ा, मुझे ज़िन्दा छोड़कर नहीं!

(क़मर चली जाती है। वहब सिर थामकर बैठ जाता है)

नसीमा — प्यारे, तुम्हारी मुहब्बत की ख़तावार हूँ, जो सज़ा चाहे दो। मुहब्बत खुदग़रज़ होती है। मैं अपने चमन को हवा के झोंकों से बचाना चाहती हूँ। काश तक़दीर ने मुझे इस गुलज़ार में न बिठाया होता, काश मैंने इस चमन में अपना घोंसला न बनाया होता, तो आज बर्क और सैयाद का इतना ख़ौफ़ क्यों होता! मेरी बदौलत तुम्हें यह नदामत उठानी पड़ी, काश मैं मर जाती!

(नसीमा वहब के पैरों पर सिर रख देती है)

चौथा दृश्य

(आधी रात का समय। अब्बास हुसैन के ख़ेमे के सामने खड़े पहरा दे रहे हैं। हुर आहिस्ता से आकर ख़ेमे के क़रीब खड़ा हो जाता है)

हुर — (दिल में) ख़ुदा को क्या मुँह दिखाऊँगा? किस मुँह से रसूल के सामने जाऊँगा? आह ग़ुलामी, तेरा बुरा हो। जिस बुज़ुर्ग ने हमें ईमान की रोशनी दी, ख़ुदा की इबादत सिखायी, इन्सान बनाया, उसी के बेटे से जंग करना मेरे लिए कितनी शर्म की बात है। यह मुझसे न होगा। मैं जानता हूँ, यज़ीद मेरे ख़ून का प्यासा हो जायगा, मेरी जागीरें छीन ली जायँगी, मेरे लड़के रोटियों के मुहताज़ हो जायँगे, मगर दुनिया खोकर रसूल की निगाह का हक़दार हो जाऊँगा। मुझे न मालूम था कि यज़ीद की बैयत लेकर मैं अपनी आक़बत बिगाड़ने पर मजबूर किया जाऊँगा। अब यह जान हज़रत हुसैन पर निसार है। जो होना है, हो। यज़ीद की ख़िलाफ़त पर कोई हक़ नहीं। मैंने उसकी बैयत लेने में ख़ास ग़लती की। उसके हुक्म की पाबन्दी मुझ पर फ़र्ज़ नहीं। ख़ुदा के दरबार में मैं इसके लिए गुनहगार न ठहरूँगा। (आगे बढ़ता है)

अब्बास — कौन है? ख़बरदार, एक क़दम आगे न बढ़े, वरना लाश ज़मीन पर होगी।

हुर — या हज़रत, आपका ग़ुलाम हुर हूँ। हज़रत हुसैन की ख़िदमत में कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ।

अब्बास — इस वक़्त वह आराम फ़रमा रहे हैं।

हुर — मेरा उनसे इसी वक़्त मिलना जरूरी है।

अब्बास — (दिल में) दग़ा की अन्देशा तो नहीं मालूम होता। मैं भी इसके साथ चलता हूँ। ज़रा भी हाथ-पाँव हिलाया तो सिर उड़ा दूँगा। (प्रकट) अच्छा, आओ।

(अब्बास ख़ेमे से बाहर हुसैन को बुला लाते हैं)

हुर — या हज़रत, मुआफ़ कीजिएगा। मैंने आपके नावक़्त तकलीफ़ दी। मैं यह अर्ज़ करने आया हूँ कि आप कूफ़ा की तरफ़ न जायँ। रात का वक़्त है, मेरी फ़ौज सो रही है, आप किसी दूसरी तरफ़ चले जायँ। मेरी यह अर्ज़ क़बूल कीजिए।

हुसैन — हुर, यह अपनी जान बचाने का मौक़ा नहीं है, इस्लाम की आबरू को क़ायम रखने का सवाल है।

हुसैन — आप यमन की तरफ़ चले जायँ, तो वहाँ आपको काफ़ी मदद मिलेगी। मैंने सुना है, सुलेमान और मुख़्तार वहाँ आपकी मदद के लिए फ़ौज जमा कर रहे हैं।

हुसैन — हुर, जिस लालच ने कूफ़ा के रईसों को मुझसे फेर दिया, क्या वह यमन में अपना असर न दिखाएगा? इन्सान की ग़फ़लत

सब जगह एक-सी होती है। मेरे लिए कूफ़ा के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। अगर तुम न जाने दोगे, तो ज़बरदस्ती जाऊँगा। यह जानता हूँ कि वहीं मुझे शहादत नसीब होगी। इसकी ख़बर मुझे नाना की ज़बान मुबारक से मिल चुकी है। क्या ख़ौफ से शहादत के रुतबे को छोड़ दूँ?

हुर — अगर आप जाना ही चाहते हैं, तो मस्तूरात को वापस कर दीजिए।

हुसैन — हाय, ऐसा मुमकिन होता तो मुझसे ज़्यादा ख़ुश कोई न होता। मगर इनमें से कोई मेरा साथ छोड़ने पर तैयार नहीं हैं।

(किसी तरफ़ से ॐ ॐ की आवाज़े आ रही है)

हुर — या हज़रत, यह आवाज़े कहाँ से आ रही है? इसे सुनकर दिल पर रोब तारी हो रहा है।

(एक योगी भभूत रमाये, जटा बढ़ाये, मृग-चर्म कंधे पर रखे हुए आते हैं)

योगी — भगवन्! मैं उस स्थान को जाना चाहता हूँ, जहाँ महर्षि मुहम्मद की समाधि है।

हुसैन — तुम कौन हो? यह कैसी शक्ल बना रक्खी है?

योगी — साधु हूँ। उस देश से आ रहा हूँ, जहाँ प्रथम ओंकार-ध्वनि की सृष्टि हुई थी। महर्षि मुहम्मद ने उसी ध्वनि से संपूर्ण जगत् को निनादित कर दिया है। उनके अद्वैतवाद ने भारत के समाधि-मग्न ऋषियों को भी जागृति प्रदान कर दी है। उसी महात्मा की समाधि का दर्शन करने के लिए मैं भारत से आया हूँ, कृपा कर मुझे मार्ग बता दीजिए।

हुसैन — आइए, खुशनसीब कि आपकी ज़ियारत हुई। रात का वक़्त है, अंधेरा छाया हुआ है। इस वक़्त यहीं आराम कीजिए। सुबह मैं आपके साथ एक आदमी भेज दूँगा।

योगी — (ग़ौर से हुसैन के चेहरे को देखकर) नहीं महात्मन्, मेरा व्रत है कि उस पावन भूमि का दर्शन किये बिना कहीं विश्राम न करूँगा। प्रभो, आपके मुखारबिंद पर भी मुझे उसी महर्षि के तेज का प्रतिबिंब दिखायी देता है। आप उनके आत्मीय हैं?

हुसैन — जी हाँ, उनका नवासा हूँ। मगर आपने नाना को तो देखा ही नहीं, फिर आपको कैसे मालूम हुआ कि मेरी सूरत उनसे मिलती है?

योगी — (हँसकर) भगवन्! मैंने उनका स्थूल शरीर नहीं देखा, पर उनके आत्मशरीर का दर्शन किया है। आत्मा द्वारा उनकी पवित्र वार्ता सुनी है। मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि आप में वही पवित्र आत्मा अवतरित हुई है। आज्ञा दीजिए, आपके चरण रज से अपने मस्तिष्क को पवित्र करूँ।

हुसैन — (पैरों को हटाकर) नहीं-नहीं, मैं इन्सान हूँ, और रसूल पाक की हिदायत है कि इन्सान को इन्सान की इबारत वाजिब नहीं।

योगी — धन्य है! मनुष्य के ब्रह्मत्व का कितना उच्च आदर्श है! वह ज्ञान-ज्योति, जो इस देश से उद्भासित हुई है, एक दिन समस्त भूमंडल को आलोकित करेगी, और देश-देशान्तरों में सत्य और न्याय का मुख उज्जवल करेगी। हाँ, इस महर्षि की सन्तान न्याय-गौरव का पालन करेगी। अब मुझे आज्ञा दीजिए, आपके दर्शनों से कृतार्थ हो गया।

(योगी चला जाता है)

हुसैन — अब मुझे अपने मरने का ग़म नहीं रहा। मेरे नाना की उम्मत हक़ और इन्साफ़ की हिमायत करेगी। शायद इसीलिए

रसूल ने अपनी औलाद को हक़ पर क़ुरबान करने का फ़ैसला किया है। हुर, तुमने इस फ़क़ीर की पेशगोई सुनी?

हुर — या हज़रत, आपका रुतबा आज जैसा समझा है, ऐसा कभी न समझा था। हुज़ूर रसूल पाक से मेरे हक़ में दुआ करें कि मुझ रूहस्याह के गुनाह मुआफ़ करे। (चला जाता है)

हुसैन — अब्बास, अब हमें कूफ़ावालों को अपने पहुँचने की इत्तिला देनी चाहिए।

अब्बास — बजा है।

हुसैन — कौन जा सकता है?

अब्बास — सैदावी को भेज दूँ?

हुसैन — बहुत अच्छी बात है।

(अब्बास सैदावी को बुला लाते हैं)

अब्बास — सैदावी, तुम्हें हमारे पहुँचने की ख़बर लेकर कूफ़ा जाना पड़ेगा। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि यह बड़े खतरे का काम है।

सैदावी — या हज़रत, जब आपकी मुझ पर निगाह है, तो फिर ख़ौफ़ किस बात की।

हुसैन — शाबाश, यह ख़त लो, और वहाँ किसी ऐसे सरदार को देना जो रसूल का सच्चा बंदा हो। जाओ, ख़ुदा तुम्हें ख़ैरियत से ले जाय।

(सैदावी जाता हैं)

हुसैन — (दिल में) सैदावी, जाते हो, मगर मुझे शक है कि तुम ज़िन्दा लौटोगे! तुमने, जिसे न दीन की हिफ़ाज़त का ख़याल है, न हक़ का, जिसे दुश्मनों ने चारों तरफ़ से घेर नहीं रखा है, जिसको शहीद करने के लिए फ़ौजें नहीं जमा की जा रही हैं, जो दुनिया में आराम से ज़िन्दगी बसर कर सकता है, महज़ वफ़ादारी का हक़ अदा करने के लिए जान-बूझकर मौत के मुँह में क़दम रक्खा है, तो मैं मौत से क्यों डरूँ। (गाते हैं)

मौत का क्या उसको ग़म है, जो मुसलमाँ हो गया;
जिसकी नीयत नेक है, जो सिदक़ इमाँ हो गया।
कब दिलेरों को सताए फ़िक्र ज़र और ख़ौफ़ का;
अज़्म सादिक़ उसका है, जो पाक दामाँ हो गया।

क्यों नदामत हो मुझे, दुनिया में गर ज़िन्दा रहा;
जाय ग़म क्या है, जो नज़रे-तेग़ बुर्रा हो गया।
हो अदू दुनिया में रुसवा, आख़िरत में ग़म नसीब;
मुसहरिफ़ दीं से हुआ, औ' नंग-दौराँ हो गया।

पाँचवाँ दृश्य

(रात का समय। हुसैन अपने ख़ेमे में सोये हुए है। वह चौंक पड़ते हैं, और लेटे हुए चौकसी आँखों से इधर-उधर ताकते हैं)

हुसैन — (दिल में) यहाँ तो कोई नज़र नहीं आता। मैं हूँ, शमा है, और मेरा धड़कता हुआ दिल है। फिर मैंने आवाज़ किसकी सुनी! सिर में कैसा चक्कर आ रहा है। ज़रूर कोई था। ख़्वाब पर हक़ीक़त का धोखा नहीं हो सकता। ख़्वाब के आदमी शबनम के परदे में ढकी हुई तसवीरों की तरह मालूम होते हैं। ख़्वाब की आवाज़े ज़मीन के नीचे से निकलनेवाली आवाज़ों की तरह मालूम होती है। उनमें यह बात कहाँ! देखूँ, कोई बाहर तो खड़ा नहीं है। (ख़ेमे से बाहर निकलकर) उफ़, कितनी गहरी तारीकी है, गोया

मेरी आँखों ने कभी रौशनी देखी ही नहीं। कैसा गहरा सन्नाटा है, गोया सुनने की ताक़त ही से महरूम हूँ। गोया यह दुनिया अभी-अभी अदम के ग़ार से निकली है (प्रकट) कोई है!

(अली अकबर का प्रवेश)

अली अकबर — हाज़िर हूँ अब्बाजान, क्या इरशाद है?

हुसैन — यहाँ से अभी कोई सवार तो नहीं गुज़रा?

अली अकबर — अगर मेरे होश-हवास बजा है, तो इधर कोई जानदार नहीं गुज़रा।

हुसैन — ताज्जुब है, अभी लेटा हुआ था, और जहाँ तक मुझे याद है, मेरी पलकें तक नहीं झपकीं, पर मैंने देखा, एक आदमी मुश्की घोड़े पर सवार होकर मुझसे कह रहा है कि 'ऐ हुसैन! इराक़ जाने की जल्दी कर रहे हो, और मौत तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ी जा रही है।' बेटा, मालूम होता है, मेरी मौत क़रीब है

अली अकबर — बाबा, क्या हम हक़ पर नही हैं!

हुसैन — बेशक, हम हक़ पर हैं, और हक़ हमारे साथ है।

अली अकबर — अगर हम हक़ पर हैं, तो मौत का क्या डर। क्या परवा, अगर हम मौत की तरफ़ जायँ या मौत हमारी तरफ़ आये।

हुसैन — बेटा, तुमने दिल ख़ुश कर दिया। ख़ुदा तुमको वह सबसे बड़ा इनाम दे, जो बाप बेटे को दे सकता है।

(ज़हीर, हबीब, अब्दुल्ला, कलबी और उसकी स्त्री का प्रवेश)

अली अकबर — कौन इधर से आ रहा है?

ज़हीर — हम मुसाफ़िर है। ये ख़ेमे क्या हज़रत हुसैन के हैं?

अली अकबर — हाँ।

ज़हीर — ख़ुदा का शुक्र है कि हम मंज़िल मक़सूद पर पहुँच गये। हम उन्हीं की ज़ियारत के लिए कूफ़ा से आ रहे हैं।

हुसैन — जिसके लिए आप कूफ़ा से आ रहे है, वह ख़ुद आपसे मिलने के लिए कूफ़ा जा रहा है। मैं ही हुसैन बिन अली हूँ।

ज़हीर — हमारे ज़हे-नसीब कि आपकी ज़ियारत हुई। हम सब-के-सब आपके ग़ुलाम हैं। कूफ़ा में इस वक़्त दर व दीवार आपके दुश्मन हो रहे हैं। आप उधर क़स्द न फ़रमायें। हम

इसी के लिये हैं कि वहाँ रहकर आपकी कुछ ख़िदमत नहीं कर सकते। हमने हज़रत मुस्लिम के क़त्ल का ख़ूनी नज़ारा देखा है, हानी को क़त्ल होते देखा है, और ग़रीब तौआ की बोटियाँ कटते देखी हैं। जो लोग आपकी दोस्ती का दम भरते थे, वे आज ज़ियाद के दाहिने बाज़ू बने हुए हैं।

हुसैन — ख़ुदा उन्हें नेक रास्ते पर लाये। तक़दीर मुझे कूफ़ा लिये जाती है, और अब कोई ताक़त मुझे वहाँ जाने से रोक नहीं सकती। आप लोग चलकर आराम फ़रमायें। कल का दिन मुबारक होगा, क्योंकि मैं उस मुक़ाम पर पहुँच जाऊँगा, जहाँ शहादत मेरे इन्तज़ार में खड़ी है।

(सब जाते है)

छठा दृश्य

(कर्बला का मैदान। एक तरफ़ केरात नदी लहरें मार रही है। हुसैन मैदान में खड़े हैं। अब्बास और अली अकबर भी उनके साथ हैं)

अली अकबर — दरिया के किनारे ख़ेमे लगाये जायँ, वहाँ ठंड़ी हवा आयेगी।

अब्बास — बड़ी फ़िज़ा की जगह है।

हुसैन — (आँखों में आँसू भरे हुए) भाई, लहराते हुए दरिया को देखकर खुद-ब-खुद दिल भरा आता है। मुझे ख़ूब याद है कि इसी जगह एक बार वालिद मरहूम की फ़ौज उतरी थी। बाबा बहुत ग़मग़ीन थे। उनकी आँखों से आँसू न थमते थे। न खाना खाते थे, न सोते थे। मैंने पूछा — या हज़रत, आप क्यों इस क़दर बेताब हैं? मुझे छाती से लिपटाकर बोले — बेटा, तू मेरे बाद एक दिन यहाँ आयेगी, उस दिन तुझे मेरे रोने का सबब मालूम होगा। आज मुझे उनकी वह बात याद आती है। उनकी रोना बेसबब नहीं था। इसी जगह हमारे ख़ून बहाये जायँगे, इसी जगह हमारी बहनें और बेटियाँ क़ैद की जायँगी, इसी जगह हमारे आदमी क़त्ल होंगे और हम ज़िल्लत उठायेंगे। खुदा की क़सम, इसी जगह मेरी गरदन की रगें कटेंगी, और मेरी दाढ़ी ख़ून में रंगी जायँगी। इसी जगह का वादा मेरे नाना ने अल्लाहताला से किया है, और उसका वादा तक़दीर की तहरीर है। (गाते हैं)

देगा जगह कोई मेरे मुश्ते-ग़ुबार को,

बैठेगा कौन लेके किसी बेक़रार को।
दर सैंकड़ों कफ़स में हैं, फिर भी असीर हूँ,
कैसा मकाँ मिला है ग़रीबे-दयार को।
दिल-सोज़ कौन है, जो ज़माने के जुल्म से
देखे मेरी बुझी हुई शमए-मज़ार को।
आख़िर है दास्तान शबे-ग़म कि याद मर्ग
करता है बंद दीदए-अख़्तर शुमार को।
आवाज़ए-चमन की उम्मीद और मेरे बाद —
चुप कर दिया फ़लक ने ज़बाने-बहार को।
राहत कहाँ नसीब कि सहराए-ग़म की धूप —
देती है आग हर शजरे सायादार को।
ख़ुद आसमाँ को नक़्शे-वफ़ा से है दुश्मनी,
तुम क्यों मिटा रहे हो निशाने-मज़ार को।
इस हादिसे से क़ब्ल कि मैं फिर कुछ न कह सकूँ,
सुन लो बयान हाले दिल-बेकरार का।

(जैनब ख़ेमे से बाहर निकल आती है)

जैनब — भैया, यह कौन सा सहरा है कि इसे देखकर ख़ौफ़ से कलेजा मुँह को आ रहा है। बानू बहुत घबराई हुई है, और असग़र छाती से मुँह नहीं लगाता।

हुसैन — बहन! यहीं कर्बला का मैदान है।

जैनब — (दोनों हाथ से सिर पीटकर) भैया, मेरी आँखों के तारे, तुम पर मेरी जान निसार हो। हमें तक़दीर ने यहाँ कहाँ लाके छोड़ा, क्यों कहीं और नहीं चलते?

हुसैन — बहन, कहाँ जाऊँ? चारों तरफ़ से नाके बन्द है। ज़ियाद का हुक्म है कि मेरा लश्कर यहीं उतरे। मजबूर हूँ, लड़ाई में बहस नहीं करना चाहता।

जैनब — हाय भैया! यह बड़ी मनहूस जगह है। मुझे लड़कपन से यहाँ की ख़बर है। हाय भैया, इस जगह तुम मुझसे बिछुड़ जाओगे। मैं बैठी देखूँगी, और तुम बर्छियाँ खाओगे। मुझे मदीने भी न पहुँचा सकोगे? रसूल की औलाद यहीं तबाह होगी, उनकी नामूस यहीं लुटेगी। हाय तक़दीर!

इस दश्त में तुम मुझसे बिछुड़ जाओगे भाई,
गर खाक भी छानूँ, तो न हाथ आवेगा भाई।
बहनों को मदीने में न पहुँचाओगे भाई,
मैं देखूँगी, और बरछियाँ तुम खाओगे भाई।

औलाद से बानू की यह छूटने की जगह है,
नामूसे-नबी की यही लुटने की जगह है।

(बेहोश हो जाती है। लोग पानी के छींटे देते हैं)

अली अकबर — या हज़रत, ख़ेमे कहाँ लगाये जायँ?

अब्बास — मेरी सलाह तो है कि दरिया के किनारे लगें।

हुसैन — नहीं भैया, दुश्मन हमें दरिया के किनारे न उतरने देंगे। इसी मैदान में ख़ेमे लगाओ, ख़ुदा यहाँ भी है, और वहाँ भी। उसकी मर्ज़ी पूरी होकर रहेगी।

(जैनब को औरतें उठाकर ख़ेमे में ले जाती है)

बानू — हाय-हाय! बाज़ीजान को क्या हो गया। या ख़ुदा, हम मुसीबत के मारे हुए हैं, हमारे हाल पर रहम कर!

हुसैन — बानू, यह मेरी बहन नहीं, माँ है। अगर इस्लाम में बुतपरस्ती हराम न होती, तो मैं इसकी इबादत करता। यह मेरे

ख़ानदान का रोशन सितारा है। मुझ-सा ख़ुशनसीब भाई दुनिया में और कौन होगा, जिसे ख़ुदा ने ऐसी बहन अता की।

(जैनब के मुँह पर पानी के छींटे देते हैं)

सातवाँ दृश्य

(नसीमा अपने कमरे में अकेली बैठी हुई हैं। समय बारह बजे रात का)

नसीमा — (दिल में) वह अब तक नहीं आये। ग़ुलाम को उन्हें साथ लाने के लिए भेजा था, वह भी वहीं का हो रहा। ख़ुदा करे, वह आते हों। दुनिया में होते हुए हमारे ऊपर मुल्क की हालत का असर न पड़े। मुहल्ले में आग लगी हो, तो अपना दरवाज़ा बन्द करके बैठ रहना खतरे से नहीं बचा सकता। मैंने अपने तईं इन झगड़ों से कितना बचाया था, यहाँ तक कि अब्बाजान और अम्मा जब यज़ीद की बैयत न क़बूल करने के ज़ुर्म में जलावतन कर दिये गये, तब भी मैं अपना दरवाज़ा बन्द किये बैठी रही, पर

कोई तदबीर कारगर न हुई। बैयत की बला फिर गले पड़ी। वहब मेरे लिए सब कुछ करने को तैयार है। वह यज़ीद की बैयत भी क़बूल कर लेता, चाहे उसके दिल को कितना ही सदमा हो। पर जो कुछ हो रहा है, उसे देखकर अब मेरा दिल भी यज़ीद की बैयत की तरफ़ मायल नहीं होता, उससे नफ़रत होती है। मुस्लिम कितनी बेदरदी से क़त्ल किये गये, हानी को ज़ालिम ने किस बुरी तरह क़त्ल कराया। यह सब देखकर, अगर यज़ीद की बैयत क़बूल कर लूँ, तो शायद मेरा ज़मीर मुझे कभी मुआफ़ न करेगा। पहलू में ख़लिश होती रहेगी। आह! इस ख़लिश को भी सह सकती हूँ, पर वहब की रूहानी कोफ़्त अब नहीं सही जाती। मैंने उन पर बहुत ज़ुल्म किये। अब उनकी मुहब्बत की जंजीर को और न खींचूँगी। जिस दिन से अब्बा और अम्मा निकाले गये है, मैंने वहब को कभी दिल से खुश नहीं देखा। उनकी वह ज़िन्दादिली ग़ायब हो गयी। यों वह अब भी मेरे साथ हँसते हैं, गाते हैं, पर मैं जानता हूँ यह मेरी दिलजोई है। मैं उन्हें जब अकेले बैठे देखती हूँ, तो वह उदास और बेचैन नज़र आते हैं – वह आ गये, चलूँ, दरवाज़ा खोल दूँ। (जाकर दरवाज़ा खोल देती है। वहब अन्दर दाखिल होता है)

नसीमा — तुम आ गये, वरना मैं खुद आती। तबियत बहुत घबरा रही थी। ग़ुलाम कहाँ रह गया?

वहब — क़त्ल कर दिया गया। नसीमा, मैंने किसी को इतनी दिलेरी से जान देते नहीं देखा। इतनी लापरवाही से कोई कुत्ते के सामने लुक़मा भी न फेंकता होगा। मैं तो समझता हूँ, वह कोई औलिया था।

नसीमा — हाय, मेरे वफ़ादार और ग़रीब सालिम! ख़ुदा तुझे जन्नत नसीब करे। जालिमों ने उसे क्यों क़त्ल किया?

वहब — आह! मेरे ही कारण उस ग़रीब की जान गयी। जामा मस्जिद में हज़ारों आदमी जमा थे ख़बर है, और तहक़ीक़ ख़बर है कि हज़रत हुसैन मक्के से बैयत लेने आ रहे हैं। ज़ालिमों के होश उड़े हुए हैं। जो पहले बच रहे थे, उनसे अब यज़ीद की ख़िलाफ़त का हलफ़ लिया जा रहा है। ज़ियाद ने जब मुझसे हलफ़ लेने को कहा, तो मैं राज़ी हो गया। इनकार करता तो उसी वक़्त क़ैदख़ाने में डाल दिया जाता। ज़ियाद ने ख़ुश होकर मेरी तारीफ़ की, और यज़ीद के हामियों की सफ़ में ऊँचे दरजे पर बिठाया, जागीर में इज़ाफा किया, और कोई मनसब भी देना चाहते हैं। उसकी मंशा यह भी है कि सब हामियों को एक सफ़ में बिठाकर एकबारगी सबसे हलफ़ ले लिया जाय। इसी लिए मुझे देर हो रही थी। इसी असना मे सालिम पहुँचा, और मुझे यज़ीदवालों की सफ़ में बैठे देखकर मुझसे बदजबानी करने लगा। मुझे दग़ाबाज़, ज़मानासाज़, बेशर्म, ख़ुदा जाने, क्या-क्या कहा,

और उसी जोश में यज़ीद और ज़ियाद, दोनों की शान में बेअदबी की। मुझे ताना देता हुआ बोला, मैं आज तुम्हारे नमक की क़ैद से आज़ाद हो गया। मुझे क़त्ल होना मंजूर है, मगर ऐसे आदमी की ग़ुलामी मंजूर नहीं, जो ख़ुद दूसरों का ग़ुलाम है। ज़ियाद ने हुक्म दिया — इस बदमाश की गर्दन मार दो। और जल्लादों ने वहीं सहन में उसको क़त्ल कर डाला। हाय! मेरी आँखों के सामने उसकी जान ली गयी, और मैं उसके हक़ में ज़बान तक न खोल सका, उसकी तड़पती हुई लाश मेरी आँखों के सामने घसीटकर कुत्तों के आगे डाल दी गयी, और मेरे ख़ून में जोश न आया। आफ़ियत बड़े महँगे दामों मिलती है।

नसीमा — बेशक, महँगे दाम हैं। तुमने अभी बैयत तो नहीं ली?

वहब — अभी नहीं, बहुत देर हो गयी, लोगों की तादाद बढ़ती जाती थी। आख़िर आज हलफ़ लेना मुल्तवी किया गया। कल फिर सबकी तलबी ह।

नसीमा — तुम इन जालिमों की बैयत हर्गिज न लेगा।

वहब — नहीं नसीमा, अब उसका मौक़ा निकल गया।

नसीमा — मैं तुमसे मिन्नत करती हूँ, हर्गिज न लेना।

वहब — तुम मेरी दिलजोई के लिए अपने ऊपर जब्र कर रही हो।

नसीमा — नहीं वहब, अगर तुम दिल से भी बैयत क़बूल करनी चाहो, तो मैं ख़ुश न हूँगी। मैं भी इन्सान हूँ वहब, निरी भेड़ नहीं हूँ। मेरे दिल के जज़बात मुर्दा नहीं हुए हैं। मैं तुम्हें इन जालिमों के सामने सिर न झुकाने दूँगी।

वहब — जानती हो, नतीजा क्या होगा?

नसीमा — जानती हूँ। जागीर जब्त हो जायगी, वज़ीफ़ा बन्द हो जायगा, जलावतन कर दिये जायँगे। मैं तुम्हारे साथ ये सारी आफ़तें झेल लूँगी।

वहब — और अगर जालिमों ने इतने ही पर बस न की?

नसीमा — आह वहब, अगर यह होना है, तो ख़ुदा के लिए इसी वक़्त यहाँ से चले चलो। किसी सामान की ज़रुरत नहीं। इसी तरह, इन्हीं पाँवों चलो। यहाँ से दूर, किसी दरख़्त के साए में बैठकर दिन काट दूँगी, पर इन जालिमों की ख़ुशामद न करूँगी।

वहब — (नसीमा को गले लगाकर) नसीमा, मेरी जान तुझ पर फ़िदा हो। जालिमों की सख्ती मेरे हक़ में अकसीर हो गयी। अब उस जुल्म से मुझे कोई शिकायत नहीं। हमारे जिस्म बारहा

गले मिल चुके हैं। आज हमारी रूहें गले मिली हैं, मगर इस वक़्त नाके बन्द होंगे।

नसीमा — जालिमों के नौकर बहुत ईमानदार नहीं होते। मैं उसे पचास दीनार दूँगी, और वहीं हमें अपने घोड़े पर सवार कराके शहर के बाहर पहुँचा देगा।

वहब — सोच लो, बाग़ियों के साथ किसी क़िस्म की रू-रियायत नहीं हो सकती। उनकी एक ही सजा है, और वह है क़त्ल।

नसीमा — वहब, इन्सान के दिल की कैफ़ियत हमेशा एक-सी नहीं रहती। केंचुए से डरने वाला आदमी साँप की गर्दन पकड़ लेता है। ऐश के बन्दे गुदड़ियों में मस्त हो जाते हैं। मैंने समझा था, जो खतरा है, घोंसले से बाहर निकलने में है, अन्दर बैठे रहने में आराम-ही-आराम है। पर अब मालूम हुआ कि सैयाद के हाथ घोंसले के अन्दर भी पहुँच जाते हैं। हमारी नजात जमाने से भागने में नहीं, उसका मुक़ाबला करने में है। तुम्हारी सोहबत ने, मुल्क की हालत ने, क़ौम के रईसों और अमीरों की पस्ती ने, मुझ पर रोशन कर दिया कि यहाँ इतमीनान के मानी ईमान-फ़रोशी और आफ़ियत मे मानी हक़कुशी हैं। ईमान और हक़ की हिफ़ाजत असली आफ़ियत और इतमीनान है। शायर ने ख़ूब कहा है —

लुत्फ़ मरने में है बाक़ी न मज़ा जीने में,
कुछ अगर है तो यही ख़ूने-जिगर पीने में।

वहब — मुआफ़ करो नसीमा, मैंने तुम्हें पहचानने में ग़लती की। चलो, सफ़र का सामान करें।

चौथा अंक

पहला दृश्य

(प्रातःकाल काल का समय — ज़ियाद फ़र्श पर बैठा हुआ सोच रहा है)

ज़ियाद — (स्वगत) उस वफ़ादारी की क्या क़ीमत है, जो महज़ ज़बान तक महदूद रहे? कूफ़ा के सभी सरदार, जो मुस्लिम बिन अकील से जंग करते वक़्त ख़म ठोक रहे थे, अब हुसैन बिन अली से जंग करते वक़्त बग़लें झाँक रहे हैं। कोई इस मुहिम को अंजाम देने का बीड़ा नहीं उठाता। आक़बत और नजात की आड़

में सब-के-सब पनाह ले रहे हैं। क्या अक़्ल है, जो दुनिया को अक़बा की ख़याली नियामतों पर क़ुरबान कर देती है। मज़हब तेरे नाम पर कितनी हिमाकतें सबाब समझी जाती हैं, तूने इन्सान को कितना बातिलपरस्त, कितना कमहिम्मत बना दिया है!

(उमर साद का प्रवेश)

साद — अस्सलामअलेक। या अमीर, आपने क्यों याद फ़रमाया?

ज़ियाद — तुमसे एक ख़ास मामले में सलाह लेनी है। तुम्हें मालूम है, 'रै' कितना ज़रखेज़, आबाद और सेहतपरवर सूबा है?

साद — ख़ूब जानता हूँ हुज़ूर, वहाँ कुछ दिनों रहा हूँ, सारा सूबा मेवे के बाग़ों और पहाड़ी चश्मों से गुलजार बना हुआ है। बाशिन्दे निहायत ख़लीक़ और मिलनसार। बीमार आदमी वहाँ जाकर तवाना हो जाता है।

ज़ियाद — मेरी तजवीज़ है कि तुम्हें उस सूबे का आमिल बनाऊँ। मंजूर करोगे?

साद — (बन्दगी कर) सिर और आँखों से। इस क़द्रदानी के लिए क़यामत तक शुक्रगुज़ार रहूँगा।

ज़ियाद — माक़ूल सालाना मुशाहरे के अलावा तुम्हें घोड़े, नौकर, ग़ुलाम सरकार की तरफ़ से मिलेंगे।

साद — ऐन बन्दानवाजी है। ख़ुदा आपके हमेशा ख़ुशखुर्रम रखे।

ज़ियाद — मैं तो मुंशी हो हुक्म देता हूँ कि तुम्हारे नाम फ़रमान जारी कर दे, और तुम वहाँ जाकर काम सँभालो।

,साद — ग़ुलाम हमेशा आपका मशकूर रहेगा।

ज़ियाद — मुझे यक़ीन है, तुम उतने ही कारगुज़ार और वफ़ादार साबित होगे, जैसी मुझे तुम्हारी ज़ात से उम्मीद है।

(मीर मुंशी को बुलाता है, वह साद के नाम का फ़रमान लिखता है)

साद — (फ़रमान लेकर) तो मैं कल चला जाऊँ?

ज़ियाद — नहीं-नहीं, इतनी जल्द नहीं। वहाँ जाने के पहले तुम्हें अपनी वफ़ादारी का सबूत देना पड़ेगा। इतना ऊँचा मनसब उसी को दिया जा सकता है, जो हमारा एतबार हासिल कर सके। यह किसी बड़ी ख़िदमत का सिला होगा।

साद — मैं हर एक ख़िदमत के लिए दिलोजान से हाजिर हूँ। जिस मुहिम को और कोई अंजाम न दे सकता हो, उस पर मुझे भेज दीजिए। ख़ुदा ने चाहा, तो कामयाब होकर आऊँगा।

ज़ियाद — बेशक-बेशक, मुझे तुम्हारी ज़ात से ऐसी ही उम्मीद है। तुम्हें मालूम है, हुसैन बिन अली कूफ़े की तरफ़ आ रहे हैं। हमको उनकी तरफ़ से बहुत अंदेशा है। तुमको उनसे जंग करने के लिए जाना होगा। उधर से हमें बेफ़िक्र करके फिर 'रै' की हुकूमत पर जाना।

साद — या अमीर, आप मुझे इस मुहिम पर जाने से मुआफ़ रखें, इसके सिवा आप जो हुक्म देंगे, उसकी तामील में मुझे ज़रा भी उज़्र न हो होगा।

ज़ियाद — क्यों, हुसैन से जंग करने में तुम्हें क्या उज़्र है?

साद — आपका ग़ुलाम हूँ, लेकिन हुसैन के मुकाबले से मुझे मुआफ़ रखें, तो आपका हमेशा एहसान मानूँगा।

ज़ियाद — बेहतर है, तुम्हारी जगह किसी और को भेजूँगा। फ़रमान वापस देकर घर बैठ जाओ। 'रै' का इलाक़ा उसी आदमी का हक़ है, जो इस मुहिम को अंजाम दे। मौत के बग़ैर जन्नत नसीब नहीं हो सकती। जो आदमी एक पैर दीन की

किश्ती में रखता है, दूसरा पैर दुनिया की किश्ती में, उसे कभी साहिल पर पहुँचना नसीब न होगा।

साद — (दिल में) एक तरफ़ 'रै' का इलाक़ा है, दूसरी तरफ़ नजात; एक तरफ़ दौलत और हुकूमत है, दूसरी तरफ़ लानत और अज़ाब! ख़ुदा! मेरी तक़दीर में क्या लिखा है। (प्रकट) या अमीर, मुझे एक की मुहलत दीजिए। मैं कल इस मामले पर ग़ौर करके आपको जवाब दूँगा।

ज़ियाद — अच्छी बात है। सोच लो।

(दोनों चले जाते हैं)

दूसरा दृश्य

(प्रातःकाल का समय। साद का मकान। साद बैठा हुआ है)

साद — (मन में) यार-दोस्त, अपने-बेगाने, अज़ीज, सब मुझे हुसैन के मुक़ाबले पर जाने से मना करते हैं। बीबी कहती है, अगर तेरे पास दुनिया में कुछ भी बाक़ी न रहे, तो इससे बेहतर है कि तू

हुसैन का ख़ून अपनी गर्दन पर ले। आज मैंने ज़ियाद को जवाब देने का वादा किया है। सारी रात सोचते गुज़र गयी, और अभी तक कुछ फ़ैसला न कर सका। अजीब दोफ़स्ले में पड़ा हूँ। अपना दिल भी हुसैन के क़त्ल पर अमादा नहीं होता। गो मैंने यज़ीद के हाथों पर बैयत की, पर हुसैन से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। कितना दीनदार, कितना बेलौस आदमी है। हमीं ने उन्हें यहाँ बुलाया, बार-बार ख़त और क़ासिद भेजे, और आज जब वह यहाँ हमारी मदद करने आ रहे हैं, तो हम उनकी जान लेने पर तैयार हैं। हाय ख़ुदग़रज़ी! तेरा बुरा हो,तेरे सामने दीन-ईमान, नेक-बद की तरफ़ से आँखें बन्द हो जाती हैं। कितना गुनाहे-अज़ीम है। अपने रसूल के नवासे की गर्दन पर तलवार चलाना! ख़ुदा न करे, मैं इतना गुमराह हो जाऊँ। 'रै' का सूबा कितना ज़रख़ेज़ है। वहाँ थोड़े दिन भी रह गया, तो माला-माल हो जाऊँगा। कितनी शान से बसर होगी। तुफ़्र है मुझ पर, जो अपनी शान और हुकूमत के लिए बड़े-से-बड़े गुनाह करने का इरादा कर रहा हूँ। नहीं, मुझसे यह फेल न होगा। 'रै' जन्नत ही सही, पर फ़र्ज़न्दे-रसूल का ख़ून करके मुझे जन्नत में जाना भी मंजूर नहीं।

(ज़ियाद का प्रवेश)

साद — अस्सलामअलेक। अमीर ज़ियाद, मैं तो ख़ुद ही हाज़िर होनेवाला था। आपने नाहक तक़लीफ़ की।

ज़ियाद — शहर का दौरा करने निकला था। बाग़ियों पर इस वक़्त बहुत सख़्त निगाह रखने की ज़रूरत है। मुझे मालूम हुआ है कि हबीब, ज़हीर, अब्दुल्लाह वग़ैरह छिपकर हुसैन के लश्कर में दाख़िल हो गये हैं। इसकी रोक-थाम न की गयी, तो बागी शेर हो जायँगे। हुसैन के साथ आदमी थोड़े हैं, पर मुझे ताज्जुब न होगा, अगर यहाँ आते-आते उसके साथ आधा शहर हो जाय। शेर पिंजरे में भी हो, तो भी उससे डरना चाहिए। रसूल का नाती फ़ौज का मुहताज नहीं रह सकता। कहो, तुमने क्या फ़ैसला किया? मैं अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं कर सकता।

साद — या अमीर, हुसैन के मुक़ाबले के लिए न तो अपना दिल ही गवाही देता है, और न घर वालों की सलाह होती है। आपने मुझे 'रै' की निजामत अता की है, इसके लिए आपको अपना मुरब्बी समझता हूँ। मगर क़त्ले-हुसैन के वास्ते मुझे न भेजिए।

ज़ियाद — साद, दुनिया में कोई खुशी बग़ैर तकलीफ़ के नहीं हासिल होती। शहद से साथ मक्खी का डंक का ज़हर भी है। तुम शहद का मज़ा उठाना चाहते हो, मगर डंक की तकलीफ़ नहीं उठाना चाहते। बिला मौत की तकलीफ़ उठाये जन्नत में जाना चाहते हो। तुम्हें मजबूर नहीं करता। इस इनाम पर हुसैन से जंग करने के लिए आदमियों की कमी नहीं है। मुझे फ़रमान

वापस दे दो, और आराम से घर बैठकर रसूल और ख़ुदा की इबादत करो।

साद — या अमीर! सोचिए, इस हालत में मेरी कितनी बदनामी होगी। सारे शहर में ख़बर फैल गई कि मैं 'रै' का नाज़िम बनाया गया हूँ। मेरे यार-दोस्त मुझे मुबारकबाद दे चुके है। अब फ़रमान ले लिया जायगा, तो लोग दिल में क्या कहेंगे?

ज़ियाद — यह सवाल तो तुम्हें अपने दिल से पूछना चाहिए।

साद — या अमीर, मुझे कुछ और मुहलत दीजिए।

ज़ियाद — तुम इस तरह टाल-मटोल करके देर करना चाहते हो। कलाम पाक की क़सम है, अब मैं तुम्हारे साथ ज्यादा सख्ती से पेश आऊँगा। अगर शाम को हुसैन से जंग करने के लिए तैयार होकर न आये, तो तेरी जायदाद ज़ब्त कर लूँगा, तेरा घर लुटवा दूँगा, यह मकान पामाल हो जायगा, और तेरी जान की भी ख़ैरियत नहीं। (ज़ियाद का प्रस्थान)

साद — (दिल में) मालूम होता है, मेरी तक़दीर में रूहस्याह होना ही लिखा है। अब महज़ 'रै' की निज़ामत का सवाल नहीं है। अब अपनी जायदाद और जान का सवाल है। इस ज़ालिम ने हानी को कितनी बेरहमी से क़त्ल किया। कसीर को भी अपनी अईनपरवरी की गिराँ क़ीमत देनी पड़ी। शहरवालों ने ज़बान तक

न हिलायी। वह तो महज़ हुसैन के अजीज़ थे। यह मामला उससे कहीं नाजुक है। ज़ियाद बेरहम हो जायगा, तो जो कुछ न कर गुजरे, वह थोड़ा है। मैं 'रै' को ईमान पर क़ुरबान कर सकता हूँ, पर जान और जायदाद को नहीं क़ुरबान कर सकता। काश मुझमें हानी और कसीर की-सी हिम्मत होती।

(शिमर का प्रवेश)

शिमर — अस्सलामअलेक। साद, किस फ़िक्र में बैठे हो, ज़ियाद को तुमने क्या जवाब दिया?

साद — दिल हुसैन के मुक़ाबले पर राजी नहीं होता।

शिमर — सरवत और दौलत हासिल करने का ऐसा सुनहरा मौक़ा फिर हाथ न आयेगा। ऐसे मौक़े ज़िन्दगी में बार-बार नहीं आते।

साद — नजात कैसे होगी?

शिमर — ख़ुदा रहीम है, करीम है, उसकी ज़ात से कुछ वईद नहीं। गुनाहों को माफ़ न करता, तो रहीम क्यों कहलाता? हम गुनाह न करें, तो वह माफ़ क्या करेगा?

साद — ख़ुदा ऐसे बड़े गुनाह को माफ़ न करेगा।

शिमर — अगर ख़ुदा को ज़ात से यह एतक़ाद उठ जाय, तो मैं आज मुसलमान न रहूँ। यह रोज़ा और नमाज़ या ज़कात और ख़ैरात, किस मर्ज़ की दवा है, अगर हमारे गुनाहों को भी माफ़ न करा सके।

साद — रसूले ख़ुदा को क्या मुँह दिखाऊँगा?

शिमर — साद, तुम समझते हो, हम अपनी मरज़ी से मुख़्तार हैं, यह यक़ीदा बातिल है। सब-के-सब हुक्म के बन्दे हैं। उसकी मरज़ी के बग़ैर हम अपनी उँगली को भी नहीं हिला सकते। सबाब और अज़ाब का यहाँ सवाल ही नहीं रहता। अक़्लमंद आदमी उधार के लिए नक़द को नहीं छोड़ता। ताख़ीर मत करो, वरना फिर हाथ मलोगे। (शिमर चला जाता हैं)

साद — (दिल में) शिमर ने बहुत माक़ूल बातें कहीं। बेशक ख़ुदा अपने बन्दों के गुनाहों का माफ़ करेगा, वरना हिसाब के दिन दोज़ख़ में गुनहगारों के खड़े होने की जगह भी न मिलेगी। मैं ज़ाहिद न सही, लेकिन मुझे तो ख़ुदा के सामने नदामत से गर्दन झुकाने की कोई वजह नहीं है। बेशक ख़ुदा की यही मरज़ी है कि हुसैन के मुक़ाबले पर मैं जाऊँ, वरना ज़ियाद यह तजवीज़ ही क्यों करता। जब ख़ुदा की यही मरज़ी है, तो मुझे सिर झुकाने के

सिवा और क्या चारा है। अब जो होना हो, सो हो — आग में कूद पड़ा, जलूँ या बचूँ।

(ग़ुलाम को बुलाकर ज़ियाद के नाम अपनी मंजूरी का ख़त लिखता है)

ग़ुलाम — शायद हुज़ूर ने 'रै' की निज़ामत क़बूल कर ली?

साद — जा, तुझे इन बातों से क्या मतलब।

ग़ुलाम — मैं पहले ही से जानता था कि आप यही फ़ैसला करेंगे।

साद — तुझे क्योंकर इसका इल्म था?

ग़ुलाम — मैं ख़ुद इस मनसब को न छोड़ता, चाहे इसके लिये कितना ही ज़ुल्म करना पड़ता।

साद — (दिल में) ज़ालिम कैसी पते की बात कहता है।

(ग़ुलाम चला जाता है, और साद गाने लगता है)

कोई तुमसे जुदा दर्दे-जुदाई लेके बैठा है,
वह अपने घर में अब अपनी कमाई लेके बैठा है।
जिगर, दिल, जान, ईमाँ अब कहाँ तक नाम ले कोई,

वह ज़ालिम सैकड़ों चीज़ें पराई लेके बैठा है।
ख़ुदा ही है मेरी तौबा का, जब साक़ी कहे मुझसे —
अरे, पी भी, कहाँ की पारसाई लेके बैठा है।
तेरे काटे शबे-ग़म मेरी बरसों से नहीं कटती,
तो फिर तू ऐ ख़ुदा नाहक ख़ुदाई लेके बैठा है।
कहूँ कुछ मैं, तो वह मुँह फेरकर कहता है औरों से —
ख़ुदा जाने, यह कब की आशनाई लेके बैठा है।
अमल कुछ चल गया है शौक़ पर ज़ाहिद का ऐ यारों,
कि मस्जिद में पुरानी एक चटाई लेके बैठा है।

तीसरा दृश्य

(केरात-नदी के किनारे साद का लश्कर पड़ा हुआ है। केरात से दो मील के फ़ासले पर कर्बला के मैदान में हुसैन का लश्कर है। केरात और हुसैन के लश्कर के बीच में साद ने एक लश्कर को नदी के पानी को रोकने के लिए पहरा बैठा दिया है। प्रातःकाल का समय। शिमर और साद ख़ेमे में बैठे हुए हैं।

साद — मेरा दिल अभी तक हुसैन से जंग करने को तैयार नहीं होता। चाहता हूँ, किसी तरीक़े से सुलह हो जाय, मगर तीन क़ासिदों में से एक भी मेरे ख़त का जवाब न ला सका। एक तो हज़रत हुसैन के पास जी ही न सका, शर्म के मारे रास्ते ही से किसी तरफ़ खिसक गया, और तीसरे ने जाकर हुसैन की बैयत अख़्तियार कर ली। अब और क़ासिदों को भेजते हुए डरता हूँ कि इनका भी वही हाल न हो।

शिमर — ज़ियाद को ये बातें मालूम होंगी, तो आपसे सख़्त नाराज़ होगा।

साद — मुझे बार-बार यही ख़याल आता है कि हुसैन यहाँ जंग के इरादे से नहीं, महज़ हम लोगों के बुलाने से आये हैं। उन्हें बुलाकर उनसे दग़ा करना इन्सानियत के ख़िलाफ़ मालूम होता है।

शिमर — मुझे ख़ौफ़ है कि आपके ताखीर से नाराज़ होकर ज़ियाद आपको वापस न बुला ले। फिर उसके ग़ुस्से से ख़ुदा ही बचाये। ज़ियाद ने कितनी सख़्त ताकीद की थी कि हुसैन के लश्कर को पानी का एक बूँद भी न मिले। वहाँ उनके आदमी दरिया से पानी ले जाते हैं, कुएँ खोदते हैं। इधर से कोई रोक-

टोक नहीं होती। क्या आप समझते है कि ज़ियाद से ये बातें छिपी होंगी?

साद — मालूम नहीं, कौन उसके पास ये सब ख़बरें भेजता रहता है?

शिमर — उसने यहाँ अपने कितने ही गोइंदे बिठा रखे हैं जो दम-दम की ख़बरें भेज देते हैं।

(एक क़ासिद का प्रवेश)

क़ासिद — अस्सलामअलेक बिन साद। अमीर का हुक्मनामा लाया हूँ।

(साद को ज़ियाद का ख़त देता है)

साद — (ख़त पढ़कर) तुम बाहर बैठो, इसका जवाब दिया जायगा। (क़ासिद चला जाता है) इसमें भी वही ताक़ीद है कि हुसैन को पानी मत लेने दो, जंग करने में एक लमहे की देर न करो। देखिए, लिखते हैं —

"हुसैन से जंग करने के लिए अब कोई बहाना नहीं रहा। फ़ौज की कमी की शिकायत थी, सो वह भी नहीं रही। अब मेरे पास बाईस हज़ार सवार और पैदल मौजूद हैं।"

शिमर — बेशक उनका लिखना वाजिब है। मैं जाकर सख़्त हुक्म देता हूँ कि हुसैन के लश्कर की एक चिड़िया भी दरिया के किनारे न आने पाये। आप जंग का हुक्म दे दें।

साद — आपको मालूम है, बाईस हज़ार आदमियों में कितने अज़ाब के ख़ौफ़ से भाग गये, और रोज़ भागते जाते हैं।

शिमर — इसी लिए तो और भी ज़रूरी है कि जंग शुरू कर दी जाय, वरना रफ्ता-रफ्ता यह सारी फ़ौज बादलों की तरह ग़ायब हो जायगी। पर मैंने सुना है, ज़ियाद ने उन सब आदमियों को गिरफ्तार कर लिया है, और बहुत जल्द वे सब फ़ौज में आ जायँगे। यह हुक्म भी जारी कर दिया है कि जो आदमी फ़ौज से भागेगा, उसकी जायदाद छीन ली जायगी, और उसे खानदान के साथ जलावतन कर दिया जायगा। इस हुक्म का लोगों पर अच्छा असर पड़ा है। अब उम्मीद नहीं कि भागने की कोई हिम्मत करे। मुझे यह भी ख़बर मिली है कि ज़ियाद ने कई आदमियों को क़त्ल करा दिया है।

(एक और क़ासिद का प्रवेश)

क़ासिद — अस्सलामअलेक बिन साद। हज़रत हुसैन ने यह ख़त भेजा है, और उसका जवाब तलब किया है। (साद को ख़त देता हैं)।

साद — (ख़त पढ़कर) बाहर जाकर बैठो। अभी जवाब मिलेगा।

शिमर — (ख़त पर झुककर) इसमें क्या लिखा है?

साद — (ख़त को बन्द करके) कुछ नहीं, यही लिखा है कि मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।

शिमर — यह उनकी नयी चाल है। कलाम पाक की क़सम, आप उनकी दरख़्वास्त मानकर पछ्तायेंगे। आपको फ़ौज में फिर आना नसीब न होगा!

साद — क्या तुम्हारा यह मतलब है कि हुसैन मुझसे दग़ा करेंगे? अली का बेटा दग़ा नहीं कर सकता।

शिमर — यह मेरा मतलब नहीं। यहाँ से बच निकलने की कोई तजवीज़ पेश करना चाहते होंगे। उनकी ज़बान में जादू का असर है, ऐसा न हो कि वह आपको चकमा दें। क्या हर्ज है अगर मैं भी आपके साथ चलूँ?

साद — मैं समझता हूँ कि मैं अपने दीन और दुनिया की हिफ़ाजत ख़ुद कर सकता हूँ। मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं।

शिमर — आपको अख़्तियार है। कम-से-कम मेरी इतनी सलाह तो मान ही लीजिएगा कि अपने साथ थोड़े-से चुने हुए आदमी लेते जाइएगा।

साद — यह मेरा जाती मामला है, जैसा मुनासिब समझूँगा, करूँगा।

(क़ासिद को बुलाकर ख़त का जवाब देता है)

शिमर — रात का वक़्त लिखा है न?

साद — इतना तो तुम्हें ख़ुद समझ लेना चाहिए था।

शिमर — (जाने के लिए ख़ड़ा होकर) मेरी बात का ज़रूर ख़याल रखिएगा। (दिन में) इसके अंदाज़ से मालूम होता है कि हुसैन की बातों में आ जायगा। ज़ियाद के पास ख़ुद जाकर यह क़िस्सा कहूँ।

साद — (दिल में) ख़ुदा तुझसे समझे ज़ालिम! तू ज़ियाद से भी दो अंगुल बढ़ा हुआ है। शायद मेरा यह क़यास ग़लत नहीं है कि तू ही ज़ियाद को यहाँ के हालात की इत्तिला देता है। हुसैन दग़ा नहीं करेंगे! हुसैन दग़ा करनेवालों में नहीं, दग़ा का शिकार होनेवालों में हैं।

(उठकर अन्दर चला जाता है)

चौथा दृश्य

(हुसैन के हरम की औरतें बैठी हुई बातें कर रही हैं। शाम का वक़्त)

सुगरा — अम्मा, बड़ी प्यास लगी है।

अली असग़र — पानी, बुआ पानी।

हंफ़ा — क़ुरबान गयी, बेटे, कितना पानी पियोगे? अभी लायी।

(मशकों को जाकर देखती है, और छाती पीटती लौटती है)

हे क़ुरबान गयी बीबी, कहीं एक बूँद पानी नहीं। बच्चों को क्या पिलाऊँ!

जैनब — क्या बिल्कुल पानी ग़ायब हो गया?

हंफ़ा — ऐ क़ुरबान गयी बीबी, सारे मटके और मशकें खाली पड़ी हुई हैं।

जैनब — ग़ज़ब हो गया। नदी तो बन्द ही थी, अब ज़ालिम कुएँ भी नहीं खोदने देते।

असग़र — पानी, बुआ, पानी।

शहरबानू — या खुदा! किस अज़ाब में फँसे। इन नन्हों को कैसे समझाऊँ।

हंफ़ा — बीबी, क़ुरबान जाऊँ! मैं जाकर दरिया से पानी लाती हूँ। कौन मुआ रोकेगा, मुँह झुलस दूँ उसका। क्या मेरे लाल प्यासों तड़पेंगे, जब दरिया में पानी भरा हुआ है?

जैनब — तू नहीं जानती, साढ़े छह हज़ार जवान दरिया का पानी रोकने के लिए तैनात है?

हंफ़ा — ऐ क़ुरबान जाऊँ बीबी, कौन मुझसे बोलेगा, झाड़ू न मारूँगी। रसूल के बेटे प्यासे रहेंगे?

(हंफ़ा एक मशक लेकर दरिया की तरफ़ जाती है, और थोड़ी देर बाद लौट आती है, सिर के बाल चुने हुए, कपड़े फटे हुए, मशक नदारद। रोती हुई ज़मीन पर बैठ जाती है)

जैनब — क्या हुआ हंफा? यह तेरी क्या हालत है?

हंफ़ा — बीबी, ख़ुदा का अज़ाब इन रूहस्याहों पर नाज़िल हो। ज़ालिम ने मुझे रोक लिया, मेरी मशक छीन ली, और एक कुत्ते को मुझ पर छोड़ दिया। भागते-भागते किसी तरह यहाँ तक पहुँची। हाय!इन मूज़ियों पर आसमान भी नहीं फट पड़ता। इतनी दुर्गति कभी न हुई थी। (रोती है)

हुसैन — (अन्दर आकर) हंफ़ा, क्यों रोती है? अरे, यह तेरे कपड़े किसने फाड़े?

जैनब — बेचारी शामत की मारी पानी लाने गयी थी। बच्चे प्यास से तड़प रहे थे। ज़ालिमों ने नीमजान कर दिया।

हुसैन — हंफ़ा मत रोओ। रसूल के क़दमों की क़सम, अभी उन ज़ालिमों का सिर तेरे पैरों पर होगा, जिनके बेरहम हाथों ने तेरी बेहुरमती की, चाहे मेरे सारे रफ़ीक़, मेरे सारे अज़ीज़ और मैं ख़ुद क्यों न मर जाऊँ। औरत की बेहुरमती का बदला ख़ून है, चाहं वह ग़ुलाम और बेकस ही क्यों न हो। उन मलऊनों को दिखा

दूँगा, कि मुझे अपनी लौंड़ी की आबरू अपनी हरम से कम प्यारी नहीं है।

(तलवार हाथ में लेकर बाहर आते है, पर हंफ़ा उनके पैरों को पकड़ लेती है)

हंफ़ा — मेरे आक़ा, मेरी जान आप पर फ़िदा हो। मैं अपना बदला दुनिया में नहीं, अक़बे में लेना चाहती हूँ, जहाँ की आग कहीं ज़्यादा तेज़, जहाँ की सज़ाएँ यहाँ से कहीं ज्यादा दिल दहलाने वाली होंगी। मैं नहीं चाहती कि आपकी तलवार से क़त्ल होकर वह अज़ाब से छूट जाय।

हुसैन — हंफ़ा, यह सब उसके लिए है, जो दुनिया में अपना बदला न ले सके। अगर मेरे पास एक लाख आदमी होते, तो तेरी बेइज़्ज़ती का बदला लेने के लिए मैं उन्हें क़ुरबान कर देता, उन बहत्तर आदमियों की हक़ीकत ही क्या है। मेरे पैरों को छोड़ दे, ऐसा न हो कि मेरा गुस्सा आग बनकर मुझको जलाकर खाक़ कर दे।

हंफ़ा — (दिल में) काश इस वक़्त वे ज़ालिम यहाँ होते और देखते कि जिसे उन्होंने कुत्तों से नुचवाया था, उसकी अली के बेटे की

निगाहों में कितनी इज़्ज़त है। नहीं, मेरे मौला, मैं दुश्मनों को इतनी अच्छी मौत नहीं देना चाहता। मैं उन्हें जहन्नुम का आग में जलाना चाहती –

(अली अकबर का प्रवेश)

अली अकबर — अब्बाजान, साद अपनी फ़ौज से निकलकर आया है, और आपसे मिलना चाहता है।

हुसैन — हाँ, मैंने इसी वक़्त उसे बुलाया था। पहले उससे हंफा को सताने वालों के ख़ून का मुआविज़ा लेना है।

(हुसैन और अली अकबर बाहर आते हैं)

अली अकबर — या हज़रत, मैं भी आपके साथ रहूँगा।

अब्बास — मैं भी।

हुसैन — नहीं, मैंने उनसे तनहा मिलने का वादा किया है। तुम्हारे साथ रहने से मेरी बात में फ़र्क़ आयेगा।

अली अकबर — वह तो अपने साथ एक सौ जवानों से ज़्यादा लाया है, जो चन्द क़दमों के फ़ासले पर खड़े हैं। हम आपको तनहा न जाने देंगे।

अब्बास — साद की शराफ़त पर मुझे भरोसा नहीं है।

हुसैन — मैं उसे इतना कमीना नहीं समझता कि मेरे साथ दग़ा करे। ख़ैर, चलो अगर उसे कोई एतराज़ न होगा, तो वहाँ मौजूद रहना। उसे भी अपने दो आदमियों को रखने की आज़ादी होगी।

(तीनों आदमी शस्त्र से सुसज्जित होकर चलते हैं। परदा बदलता है। दोनों फ़ौजों के बीच हुसैन और साद खड़े हैं। हुसैन के साथ अकबर और अब्बास हैं, साद के साथ उसका बेटा और ग़ुलाम)

साद — अस्सलामअलेक। या फ़र्ज़न्दे-रसूल, आपने मुझे अपनी ख़िदमत में हाज़िर होने का मौक़ा दिया, इसके लिए आपका मशकूर हूँ। मुझे क्या इरशाद है?

हुसैन — मैंने तुम्हें यह तसफ़िया करने के लिए तकलीफ़ दी है कि आख़िर तुम मुझसे क्या चाहते हो? तुम्हारे वालिद रसूल पाक के रफ़ीक़ों में थे, और अगर बाप की तबीयत का असर कुछ बेटे पर पड़ता है, तो मुझे उम्मीद है कि तुममें इन्सानियत का जौहर

मौजूद है। क्या नहीं जानते कि मैं कौन हूँ? मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ।

साद — आप रसूल पाक के नवासे हैं।

हुसैन — और यह जानकर भी तुम मुझसे जंग करने आये हो, क्या तुम्हें ख़ुदा का ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं है? तुमसे ज़रा भी इन्साफ़ नहीं है कि तुम मुझसे जंग करने आये हो, जो तुम्हारे ही भाइयों की दग़ा का शिकार बनकर यहाँ आ फँसा है, और अब यहाँ से वापस जाना चाहता है। क्यों ऐसा काम करते हो, जिसके लिए तुम्हें दुनिया में रुसवाई और अक़बा में रूहस्याही हासिल हो?

साद — या हज़रत, मैं क्या करूँ। ख़ुदा जानता है कि मैं कितनी मजबूरी की हालत में यहाँ आया हूँ।

हुसैन — साद, कोई इन्सान आज तक वह काम करने पर मजबूर नहीं हुआ, जो उसे पसन्द न आया हो। तुमको यक़ीन है कि मेरे क़त्ल के सिले में तुम्हारी जागीरें बढ़ेगी, 'रै' की हुकूमत हाथ आयेगी, दौलत हासिल होगी। लेकिन साद, हराम की दौलत ने बहुत दिनों तक किसी के साथ दोस्ती नहीं की, और न वह तुम्हारे लिए अपनी पुरानी आदत छोड़ेगी। हविस को छोड़ो, और मुझे अपने घर जाने दो।

साद — फिर तो मेरी ज़िन्दगी के दिन उँगलियों पर गिने जा सकते हैं।

हुसैन — अगर यह ख़ौफ़ है, तो मैं तुम्हें अपने साथ ले जा सकता हूँ।

साद — या हज़रत, ज़ालिम मेरे मकान बरबाद करे देंगे, जो शहर में अपना सानी नहीं रखते।

हुसैन — सुभानअल्लाह! तुमने वह बात मुँह से निकाली, जो तुम्हारी शान से बईद है। अगर हक़ पर क़ायम रहने की सज़ा में तुम्हारा मकान बरबाद किया जाय, तो ऐसा बड़ा नुकसान नहीं। हक़ के लिए लोगों ने इससे कहीं बड़े नुक़सान उठाये है, यहाँ तक कि जान से भी दरेग़ नहीं किया। मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें उससे अच्छा मकान बनवा दूँगा।

साद — या हज़रत, मेरे पास बड़ी ज़रख़ेज़ और आबाद जागीरें हैं, जो ज़ब्त कर ली जायँगी, और मेरी औलाद उनसे महरूम रह जायगी।

हुसैन — मैं हिज़ाज़ में तुम्हें उनसे ज़्यादा ज़रख़ेज़ और आबाद जागीरें दूँगा। इसका इतमीनान रखो कि मेरी ज़ात से तुम्हें कोई नुक़सान न पहुँचेगा।

साद — यह हज़रत, आप पर मेरी जान निसार हो, मेरे साथ बाईस हज़ार सवार और पैदल हैं। ज़ियाद ने उनके सरदारों से बड़े-बड़े वादे कर रखें हैं, अगर में आपकी तरफ़ आ भी जाऊँ, तो वे आपसे ज़रूर जंग करेंगे। इसी लिए मुनासिब यही है कि आप जो शर्तें पसन्द फ़रमायें, मैं ज़ियाद को लिख भेजूँ। मैं अपने ख़त में सुलह पर ज़ोर दूँगा, और मुझे यक़ीन है कि ज़ियाद मेरी तजवीज़ मंज़ूर कर लेगा।

हुसैन — ख़ुदा तुम्हें इसका सबाब आक़बत में देगा। मेरी पहली शर्त यह है कि मुझे मक्का लौटने दिया जाय, अगर यह न मंजूर हो, तो सरहदों की तरफ़ जाकर अमन से ज़िन्दगी बसर करने को राज़ी हूँ, अगर यह भी मंजूर न हो तो मुझे यज़ीद ही के पास जाने दिया जाय, और सबसे बड़ी शर्त यह है कि जब तक मैं यहाँ हूँ मुझे दरिया से पानी लेने की पूरी आज़ादी हासिल हो। मैं यज़ीद की बैयत किसी हालत में न क़बूल करूँगा, और अगर तुमने मेरी वापसी की यह शर्त क़ायम न की, तो हम यहाँ शहीद हो जाना ही पसन्द करेंगे। लेकिन अगर यह मंशा है कि मुझे क़त्ल ही कर दिया जाय, तो मैं अपनी जान को गिराँ-से-गिराँ क़ीमत पर बेचूँगा।

साद — हज़रत आपकी शर्तें बहुत माक़ूल हैं।

हुसैन — मैं तुम्हारे जवाब का कब इन्तज़ार करूँ?

साद — सुबह आफ़ताब की रोशनी के साथ मेरा क़ासिद आपकी ख़िदमत में हाज़िर होगा।

(दोनों आदमी अपनी-अपनी फ़ौज की तरफ़ लौटते हैं)

पाँचवा दृश्य

(आठ बजे रात का समय। ज़ियाद का ख़ास बैठक। शिमर और ज़ियाद बातें कर रहे हैं)

ज़ियाद — क्या कहते हो। मैंने सख़्त ताक़ीद कर दी थी दरिया पर हुसैन को कोई आदमी न आने पाये।

शिमर — बजा है। मगर मैं तो हुसैन के आदमियों को दरिया से पानी लाते बराबर देखता रहा हूँ ; और शायद मेरा दरिया की हिफ़ाज़त के लिए अपनी ज़िम्मेदारी पर हुक्म जारी करना साद को बुरा लगा।

ज़ियाद — साद पर मुझे इतमीनान है। मुमकिन है, उसे लोगों के प्यासों मरते देखकर रहम आ गया हो, और हक़ तो यह है कि

शायद मैं भी मौक़े पर इतना बेरहम नहीं हो सकता। इससे यह नहीं साबित होता कि साद की नीयत डाँवाडोल हो रही है।

शिमर — मैं साद की शिकायतें करने के लिए आपकी ख़िदमत में नहीं हाज़िर हुआ हूँ, सिर्फ़ वहाँ की हालत अर्ज़ करनी थी। हुसैन ने आज साद को मुलाक़ात करने को भी तो बुलाया है। देखिए, क्या बातें होती हैं।

ज़ियाद — क्या? हुसैन से मुलाक़ातें भी कर रहा है? तुम साबित कर सकते हो?

शिमर — हुज़ूर, मेरे सबूत की ज़रूरत नहीं। उसका क़ासिद आता ही होगा।

साद — क्या कई बार मुलाक़ातें हुई हैं?

शिमर — आज की मुलाक़ात का तो मुझे इल्म है, पर शायद और भी मुलाक़ातें तनहाई में हुई हैं।

ज़ियाद — कोई और आदमी साथ नहीं रहा?

शिमर — मैंने ख़ुद साथ चलना चाहा था, पर मेरी अर्ज़ क़बूल न हुई।

ज़ियाद — कलाम पाक की क़सम, मैं इसे बर्दाश्त न कर सकता। मैंने उसे हुसैन से जंग करने को भेजा है, मसालहत करने के लिए नहीं। मैं उससे इसका जवाब तलब करूँगा।

शिमर — हुज़ूर ने उनके साथ जो सलूक किये हैं, और इस काम के लिए जो सिला तजवीज़ किया है, वह तो किसी दुश्मन को भी आपका दोस्त बना देता। मगर अपना-अपना मिज़ाज ही तो है।

(एक क़ासिद का प्रवेश)

क़ासिद — अस्सलामअलेक। या अमीर, उमर बिन साद का ख़त लाया हूँ।

(ज़ियाद को ख़त देता है, और ज़ियाद उसे पढ़ने लगता है। क़ासिद बाहर चला जाता है)

ज़ियाद — इस मसलहत का नतीजा तो अच्छा निकला। हुसैन वापस जाने को रज़ामन्द हैं, और साद ने इसकी ताईद करते हुए लिखा है कि उनकी जानिब से किसी खतरे का अंदेशा नहीं।

ख़लीफ़ा यज़ीद की मंशा भी यही है। साद ने ख़ूब किया कि बग़ैर जंग के फ़तह हासिल कर ली।

शिमर — बेशक, बड़ी शानदार फ़तह है!

ज़ियाद — क्यों, यह फ़तह नहीं है? तंग क्यों करते हो?

शिमर — जिसे आप फ़तह समझ रहे हैं, वह फ़तह नहीं, आपकी शिकस्त है। ऐसी शिकस्त, जो आपको फिर पनपने न देगी। आग फूस में पड़कर उतनी ख़ौफ़नाक नहीं हो सकती, जितने इस मुहासिरे से निकलकर हुसैन हो जायँगे। शेर किसी शिकार के पीछे दौड़ता हुआ बस्ती में आ गया है। उसे आप घेरकर मार सकते है, लेकिन एक बार वह फिर जंगल में पहुँच जाय, तो कौन है, जो उसके पंजों के सामने जाने की हिम्मत कर सके। कर्बला से निकलकर हुसैन वह दरिया होंगे, जो बाँध को तोड़कर बाहर निकल आया हो, और आपकी हालत उसी टूटे हुए बाँध की-सी होगी।

ज़ियाद — हाँ, इसमें तो कोई शक नहीं कि अगर वह निकलकर हिज़ाज़ और यमन चले जायँ, तो शायद ख़लीफ़ा यज़ीद की ख़िलाफ़त डगमगा जाय। मगर एक शर्त को यह भी है कि उन्हें यज़ीद के पास जाने दिया जाय। इसमें हमें क्या उज्र हो सकता है?

शिमर — अगर बाज़ कबूतर के क़रीब पहुँच जाय, तो दुनिया की कोई फ़ौज उसे बाज़ के चुंगल से नहीं बचा सकती। हुसैन अपने बाप के बेटे हैं। ख़लीफ़ा उनकी दलीलों से पेश नहीं पा सकते। कोई अजब नहीं कि अपनी अक़्ल के ज़ोर से आज का क़ैदी कल का ख़लीफ़ा हो और ख़लीफ़ा को उलटे उसकी बैयत क़बूल करनी पड़े।

ज़ियाद — तुम्हारा यह ख़याल भी बहुत सही है। काश मुझे तुम्हारी वफ़ादारी का इतना इल्म पहले होता, तो तुम्हीं फ़ौज से सिपहसालार होते।

शिमर — काश साद ने मेरी बातें इतनी क़द्रदानी से सुनी होती, तो मुझे यहाँ आने और आपको तकलीफ़ देने की ज़रूरत ही न पड़ती।

ज़ियाद — तुम सुबह चले जाओ, और साद से कहो कि फ़ौरन जंग शुरू करे।

शिमर — हुज़ूर को जो हुक्म देना हो, ख़त के जरिए दें। मातहत के ज़रिए उसके अफ़सर को हुक्म देना अफ़सर को मातहत के ख़ून का प्यासा बनाना है।

ज़ियाद — बेहतर, मैं ख़त ही लिख देता हूँ।

(ज़ियाद ख़त लिखकर शिमर को देता है)

शिमर — इसमें हुज़ूर ने ऐसा कोई कलमा तो नहीं लिखा, जिससे साद को शुबहा हो कि मेरे इशारे से लिखा गया है?

ज़ियाद — मुतलक़ नहीं। हाँ, यह अलबत्ता लिख दिया है कि अगर तूने सिरताबी की, जो तेरी जगह शिमर लश्कर का सरदार होगा।

शिमर — हुज़ूर की क़द्रदानी की कहाँ तक तारीफ़ करूँ।

ज़ियाद — इसकी ज़रूरत नहीं। अगर साद मेरे हुक्म की तामील करे, तो बेहतर, नहीं तो वा माज़ूल होगा, और तुम लश्कर के सरदार होंगे। पहला काम जो तुम करोगे, वह साद का सिर क़लम करके मेरे पास भेजना होगा। यही तुम्हारी बहाली की बिस्मिल्लाह होगी।

शिमर — (उठकर) आदाब बजा लाता हूँ।

(शिमर बाहर चला जाता है, और ज़ियाद मकान में आराम करने जाता है)

छठा दृश्य

(प्रातःकाल। शाम का लश्कर। हुर और साद घोड़ों पर सवार फ़ौज का मुआयना कर रहे हैं)

हुर — अभी तक ज़ियाद ने आपके ख़त का जवाब नहीं दिया?

साद — उसके इन्तज़ार में रात-भर आँखें नहीं लगी। जब किसी की आहट मिलती थी, तो गुमान होता था कि क़ासिद है। मुझे तो यक़ीन है कि अमीर ज़ियाद मेरी तजवीज़ मंजूर कर लेंगे।

हुर — काश ऐसा होता! अगर जंग की नौबत आयी, तो फ़ौज के कितने ही सिपाही लड़ने से इनकार कर देंगे।

साद — लो, क़ासिद भी आ गया। ख़ुदा करे, अच्छी ख़बर लाया हो। अरे, यह तो शिमर है।

हुर — हाँ, शिमर ही है। ख़ुदा ख़ैर करे, जब यह ख़ुद ज़ियाद के पास गया था, तो मुझे आपकी तजवीज़ के मंजूर होने में बहुत शक है।

शिमर — (क़रीब आकर) अस्सलामअलेक। मैं कल एक ज़रूरत से मकान चला गया अमीर ज़ियाद को ख़बर हो गयी, उसने मुझे बुलाया और आपको यह ख़त दिया।

(ख़त साद को देता है। साद ख़त पढ़कर जेब में रख लेता है, और एक लम्बी साँस लेता है)

साद — शिमर, मैंने समझा था, तुम सुलह की ख़बर लाते होंगे।

शिमर — आपकी समझ की ग़लती थी। आपको मालूम है कि अमीर ज़ियाद एक बार फ़ैसला करके फिर उसे नहीं बदलते। आपकी क्या मंशा है?

साद — मजबूरन, हुक्म की तामील करूँगा।

शिमर — तो मैं फ़ौजों को तैयार होने का हुक्म देता हूँ?

साद — जैसा मुनासिब समझो।

(शिमर फ़ौज की तरफ़ चला जाता है)

हुर — ख़ुदा सब कुछ करे, इन्सान का बातिन स्याह न बनाये।

साद — यह सब इन्हीं हज़रत की कारगुजारी है। ज़ियाद मेरी तरफ़ से कभी इतने बदग़ुमान न थे।

हुर — मुझे तो फ़र्ज़न्दे-रसूल से लड़ने के ख़याल ही से वहशत होती है।

साद — हुर, तुम सच कहते हो। मुझे यक़ीन है कि उनसे जो लड़ेगा, उसकी जगह जहन्नुम में है। मगर मजबूर हूँ, 'रै' की परवा न करूँ तो भी घर की तरफ़ से बेफ़िक्र तो नहीं हो सकता। अफ़सोस, मैं हविस के हाथों तबाह हुआ। काश मेरा दिल इतना मजबूत होता कि 'रै' की निज़ामत पर लट्टू न हो जाता, तो आज मैं फ़र्ज़न्दे-रसूल के मुक़ाबले पर न खड़ा न होता। हुर, क्या इस जंग के बाद किसी तरह मग़फ़िरत हो सकती है?

हुर — फ़र्ज़न्दे रसूल के ख़ून का दाग़ कैसे धुलेगा?

साद — हुर, मैं इतने रोजे रक्खूँगा कि मेरा जिस्म घुल जाय, इतनी नमाज़ें अदा करूँगा कि आज तक किसी ने न की होंगी। 'रै' की सारी आमदनी खैरात कर दूँगा। पियादा पा हज़ करूँगा, और रसूल पाक की कब्र पर बैठकर रोऊँगा, गुनहगारों की खताएँ मुआफ़ करूँगा, और एक चींटी को भी ईज़ा न पहुँचाऊँगा। हाय! ज़ालिम शिमर सोचने का मौक़ा भी नहीं देना चाहता। फ़ौजे तैयार हो रही है। क़ीस, हज्जाज़, शैस, अशअस अपने-अपने आदमियों को

सफ़ों में खड़े करने लगे है। वह लो, नक्क़ारे पर चोट भी पड़ गयी।

हुर — मैं भी जाता हूँ, अपने आदमियों को सँभालूँ।

(आहिस्ता-आहिस्ता जाता है)

साद — ऐ ख़ुदा! बहुत बेहतर होता कि तूने मुझे शिमर की तरह स्याह बातिन बनाया होता कि अज़ाब और सबाब की कशमकश से आज़ाद हो जाता, या हानी और कसीर का-सा दिल दिया होता कि अपने को ग़ैर पर क़ुरबान कर देता। कमज़ोर इन्सान भी जानता है कि मुझे क्या करना चाहिए, और क्या नहीं कर सकता। वह ग़ुलाम से भी बदतर है, जिसका अपनी मर्ज़ी पर कोई अधिकार नहीं। मेरे क़बीलेवालों ने भी सफ़बंदी शुरु कर दी। मुझे भी अब जाकर अपनी जगह पर सबसे आगे चलना चाहिए, और वही करना चाहिए, जो शिमर कराये, क्योंकि अब मैं फ़ौज का सरदार नहीं हूँ, शिमर है।

(आहिस्ता-आहिस्ता जाकर फ़ौज के सामने खड़ा हो जाता है)

शिमर — (उच्च स्वर में) ऐ ख़िलाफ़त को ज़िन्दा रखने के लिए अपने तईं क़ुरबान करनेवाले बहादुरी, ख़ुदा का नाम लेकर क़दम आगे बढ़ाओ। दुश्मन तुम्हारे सामने है। वह हमारे रसूल पाक का नवासा है, और उस रिश्ते से हम सब ताजीम से उसके आगे सिर झुकाते हैं। लेकिन जो आदमी हिर्स का इतना बन्दा है कि रसूल पाक के हुक्म का, जो उन्होंने ख़िलाफ़त को अब तक क़ायम रखने के लिए दिया था, पैरों-तले कुचलता है, और जो क़ौम की बैयत की परवा न करके अपने विरासत के हक़ के लिए ख़िलाफ़त को ख़ाक में मिला देना चाहे, वह रसूल का नवासा होते हुए भी मुसलमान नहीं है। हमारी निगाहों में रसूल के हुक्म की इज़्ज़त उसके नवासे की इज़्ज़त से कहीं ज़्यादा है। हमारा फ़र्ज़ है कि हमने जिस ख़लीफ़ा की बैयत क़बूल की है, उसे ऐसे हमलों से बचायें, जो हिर्स को पूरा करने के लिए दाद के नाम पर किये जाते हैं। चलो, फ़र्ज़ के मैदान में क़दम बढ़ाओ।

(नक्क़ारे पर चोट पड़ती है, और पूरा लश्कर हुसैन के पड़ाव की तरफ़ बढ़ता है। साद आगे क़दम बढ़ाता हुआ हुसैन के ख़ेमे के क़रीब पहुँच जाता है)

अब्बास — (हुसैन के ख़ेमे से निकल कर) साद! यह दग़ा! हम तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहे हैं, और तुम हमारे ऊपर हमला कर रहे हो? क्या यही आईने-ज़ंग है?

साद — हज़रत, कलाम पाक को क़सम, मैं दग़ा के इरादे से नहीं आया। (ज़ियाद का ख़त अब्बास के हाथ में देकर) यह देखिए, और मेरे साथ इन्साफ़ कीजिए। मैं इस वक्त नाम के लिए फ़ौज का सरदार हूँ। अख़्तियार शिमर के हाथों में है।

अब्बास — (ख़त पढ़कर) आख़िर तुम दुनिया की तरफ़ झुके। याद रक्खो, ख़ुदा की दरगाह में शिमर नहीं, तुम ख़तावार समझे जाओगे।

साद — यह हज़रत, यह जानता हूँ, पर ज़ियाद के गुस्से का मुक़ाबला नहीं कर सकता। वह बिल्ली है, मैं चूहा हूँ; वह बाज़ है, मैं कबूतर हूँ। वह एक इशारे से मेरे ख़ानदान का निशान मिटा सकता है। अपनी हिफ़ाज़त की फिक्र ने मुझे मजबूर कर दिया है, मेरे दीन और ईमान को फ़ना कर दिया है।

अब्बास — खुलासा यह है कि तुम हमारा मुहासिरा करना चाहते हो। ठहरो, मैं जाकर भाई साहब को इत्तिला दे दूँ।

(अब्बास हुसैन के ख़ेमे की तरफ़ जाते हैं)

शिमर — (साद के पास आकर) क्या अब कोई दूसरी चाल चलने की सोच रहे हैं?

साद — नहीं, हज़रत हुसैन को हमारी आमद और मंशा की इत्तिला देने गये है।

शिमर — यह मौक़े को हमारे हाथों से छीनने का हीला है। शायद क़बीलों से इमदाद तलब करने का क़स्द कर रहे हैं। एक दिन की देर भी उन्हें मौक़े का बादशाह बना सकती है।

(अब्बास ख़ेमे से वापस आते हैं)

अब्बास — मैंने हज़रत हुसैन को तुम्हारा पैग़ाम दिया। हज़रत को इसका बेहद सदमा है कि उनकी कोई शर्त मंजूर नहीं की गयी। सुलह की इससे ज़्यादा कोशिश उनके इमकान में न थी। गोकि हम सब जंग के लिए तैयार है, लेकिन उन्होंने एक दिन की मुहलत माँगी है कि दुआ और नमाज़ में गुज़ारें। सुबह को हमें खुदा का जो हुक्म होगा, उसकी तामील करेंगे।

साद — इसका जवाब मैं अपनी फ़ौज के दूसरे सरदारों से मशविरा करके दूँगा।

(अब्बास अपने ख़ेमों की तरफ़ जाते हैं, और हुर, हज्जाज़, अशअस, क़ीस सब साद के पास आकर खड़े हो जाते हैं)

साद — शिमर, तुम्हारी इस मामले में क्या सलाह है?

शिमर — यह उनकी हीलेबाज़ी है। आइन्दा आप अमीर हैं, जो जी चाहे, करें।

साद — (दूसरे सरदारों से मुख़ातिब होकर) हज़रत हुसैन ने एक दिन की मुहलत की दरख़्वास्त की है, आप लोगों की क्या सलाह है?

शिमर — इसका आप लोग ख़याल रखिएगा कि यह मुहलत आफ़त के मीज़ान को पलट सकती है।

हुर — मुहलत के मंजूर करने में पसोपेश का कोई मौक़ा नहीं।

हज्जाज़ — हुसैन अगर काफ़िर होते, और मुहलत की दरख़्वास्त करते, तो भी उसको क़बूल करना लाज़िम था।

क़ीस — बहुत मुमकिन है, वह कल तक आपस में सलाह करके यज़ीद की बैयत क़बूल कर लें, तो नाहक़ खूँरेजी क्यों हो।

शिमर — और अगर शाम तक बनी, असद और दूसरे क़बीले उनकी मदद के लिए आ जायँ, तो?

शीस — हज़रत हुसैन ने अभी तक किसी क़बीले से इमदाद नहीं तलब की है, वरना हम इतने इतमीनान से यहाँ न खड़े होते।

साद — बनी और असद ही नहीं, अगर इराक़ के सारे क़बीले आ जायँ तब भी हम उन्हें जंग के लिए मजबूर नहीं कर सकते। यह इन्सानियत के खिलाफ़ है। मेरा यही फ़ैसला है। आइन्दा आप लोगों को अख़्तियार है।

(साद गुस्से में भरा हुआ वहाँ से चला जाता है)

शिमर — क्या आप लोगों की यही मर्ज़ी है कि आज जंग मुल्तवी की जाय?

हुर — यहाँ जितने असहाब मौजूद हैं, सब अपनी रायें दे चुके, अमीरे-लश्कर भी चला गया। ऐसी हालत में मुहलत के सिवा और हो ही क्या सकता है। अगर आप अपनी जिम्मेदारी पर जंग करना चाहते हैं, तो शौक़ से कीजिए।

(हुर, हज्जाज़ वग़ैरह भी चले जाते हैं)

शिमर — (दिल में) कौन कहता है कि हुसैन के साथ दग़ा की गयी? यहाँ सब-के-सब हुसैन के दोस्त हैं। इस फ़ौज में रहने से कहीं यह बेहतर था कि सब-के-सब हुसैन की फ़ौज में होते। तब भी उनकी इतनी मदद न कर सकते। मुझे जरा भी ताज्जुब न होगा, अगर कल सब लोग हथियार रखकर हुसैन के क़दमों पर गिर पड़े। ज़ियाद को इस मुहलत की भी इत्तिला तो दे ही दूँ।

(साद का क़ासिद मुहलत का पैग़ाम लेकर हुसैन के लश्कर की तरफ़ आता है। शिमर अपने ख़ेमे की तरफ़ जाता है)

सातवाँ दृश्य

(समय आठ बजे रात। हुसैन एक कुर्सी पर मैदान में बैठे हुए हैं। उनके दोस्त और अज़ीज़ सब फ़र्श पर बैठे हुए हैं। शमा जल रही है)

हुसैन — शुक्र है ख़ुदाए-पाक का, जिसने हमें ईमान की रोशनी अता की, ताकि हम नेक को क़बूल करें, और बद से बचें। मेरे सामने इस वक़्त मेरे बेटे और भतीजे, भाई और भांजे, दोस्त और रफ़ीक़, सब जमा हैं। मैं सबके लिए ख़ुदा से दुआ करता हूँ। मुझे इसका फ़ख्र है कि उसने मुझे ऐसे सआदतमंद अज़ीज़ और ऐसे जाँनिसार दोस्त अता किये। आपने दोस्ती की हक़ पूरी तरह अदा कर दिया, आपने साबित कर दिया कि हक़ के सामने आप जान और माल की कोई हक़ीक़त नहीं समझते। इस्लाम की तारीख़ में आपका नाम हमेशा रोशन रहेगा। मेरा दिल इस ख़याल से पाश-पाश हुआ जाता है कि कल मेरे बायस वे लोग, जिन्हें ज़िन्दा हिम्मत चाहिए, जिनका हक़ है ज़िन्दा रहना, जिनको अभी ज़िन्दगी में बहुत कुछ करना बाक़ी है, शहीद हो जायँगे। मुझे सच्ची ख़ुशी होगी, अगर तुम लोग मेरे दिल का यह बोझ हल्का कर दोगे। मैं बड़ी ख़ुशी से हर एक को इजाज़त देता हूँ कि उसका जहाँ जी चाहे, चला जाय। मेरा किसी पर कोई हक़ नहीं है। नहीं, मैं तुमसे इल्तमास करता हूँ, इसे क़बूल करो। तुमसे किसी की दुश्मनी नहीं हुई है, जहाँ जाओगे, लोग तुम्हारी इज़्ज़त करेंगे। तुम ज़िन्दा शहीद हो जाओगे, जो मरकर शहादत का दर्जा पाने से इज़्ज़त की बात नहीं। दुश्मन को सिर्फ़ मेरे ख़ून की प्यास है, मैं ही उसके रास्ते का पत्थर हूँ। अगर हक़

और इन्साफ़ को सिर्फ़ मेरे ख़ून से आसूदगी हो जाय, तो उसके लिए और ख़ून क्यों बहाया जाय? साद से एक शब की मुहलत माँगने में यही मेरा ख़याल था। यह देखो, मैं यह शमा ठंड़ी किये देता हूँ, जिसमें किसी को हिजाब न हो।

(सब लोग रोने लगते हैं, और कोई अपनी जगह से नहीं हिलता)

अब्बास — या हज़रत, अगर आप हमें मारकर भगायें तो भी हम नहीं जा सकते। ख़ुदा वह दिन न दिखाये कि हम आपसे जुदा हों। आपकी शफ़क़त के साये में पल कर अब हम सोच ही नहीं सकते कि आपके बग़ैर हम क्या करेंगे, कैसे रहेंगे।

अली अकबर — अब्बाजान, यह आप क्या फ़रमाते हैं? हम आपके क़दमों पर निसार होने के लिए आयें हैं। आपको यहाँ तनहा छोड़कर जाना तो क्या, महज उसके ख़याल से रूह को नफ़रत होती है।

हबीब — ख़ुदा की क़सम, आपको उस वक़्त नहीं छोड़ सकते, जब दुश्मनों के सीने में अपनी तेज बर्छियाँ न चुभा लें। अगर मेरे पास तलवार भी न होती, तो मैं आपकी हिमायत पत्थरों से करता।

अब्दुल्लाह कलवी — अगर मुझे इसका यक़ीन हो जाय कि मैं आपकी हिमायत में ज़िन्दा जलाया जाऊँगा, और फिर ज़िन्दा होकर जलाया जाऊँगा। और यह अमल सत्तर बार होता रहेगा, तो भी मैं आपसे जुदा नहीं हो सकता। आपके क़दमों पर निसार होने से जो रुतबा हासिल होगा, वह ऐसी-ऐसी बेशुमार ज़िन्दगियों से भी नहीं हासिल हो सकता।

ज़हीर — हज़रत, आपने ज़बाने-मुबारक से ये बातें निकालकर मेरी जितनी दिलशिकनी की है, उसका काफ़ी इज़हार नहीं कर सकता। अगर हमारे दिल दुनिया की हविस से मग़लूब भी हो जायँ, तो हमारे क़दम किसी दूसरी तरफ़ जाने से गुरेज़ करेंगे। क्या आप हमें दुनिया में रूहस्याह और बेग़ैरत बनाकर ज़िन्दा रखना चाहते हैं?

अली असग़र — आप तो मुझे शरीक किये बग़ैर कभी कोई चीज़ न खाते थे, क्या जन्नत के मजे अकेले उठाइएगा? शमा जलवा दीजिए हमें इस तारीकी में आप नज़र नहीं आते।

हुसैन — आह! काश रसूले-पाक आज ज़िन्दा होते और देखते कि उनकी औलाद और उनकी उम्मत हक़ पर कितने शौक़ से फ़िदा होती है! खुदा से मेरी यही इल्तिजा है कि इस्लाम में हक़ पर शहीद होनेवालो की कभी कमी न रहे। असग़र, बेटा आओ,

तुम्हारे बाप की जान पर फ़िदा हो, हम-तुम साथ-साथ जन्नत के मेवे खायेंगे। दोस्तों, आओ, नमाज़ पढ़ लें। शायद यह हमारी आख़िरी नमाज़ हो।

(सब लोग नमाज़ पढ़ने लगते हैं)

आठवाँ दृश्य

(प्रातःकाल हुसैन के लश्कर में जंग की तैयारियाँ हो रही हैं)

अब्बास — ख़ेमे एक दूसरे से मिला दिये गये, और उनके चारों तरफ़ खन्दक़ें खोद डाली गयी, उनमें लकड़ियाँ भर दी गयीं, नक़्क़ारा बजवा दूँ?

हुसैन — नहीं, अभी नहीं। मैं जंग में पहले क़दम नहीं बढ़ाना चाहता। मैं एक बार फिर सुलह की तहरीक करूँगा। अभी तक मैंने शाम के लश्कर से कोई तक़रीर नहीं की, सरदारों ही से काम निकालने की कोशिश करता रहा। अब मैं जवानों से रूबरू बातें करना चाहता हूँ। कह दो, साँडनी तैयार करे।

अब्बास — जैसा इरशाद।

हुसैन — (दुआ करते हुए) ऐ ख़ुदा! तू ही डूबती हुई किश्तियों को पार लगानेवाला है। मुझे तेरी ही पनाह है, तेरा ही भरोसा है; जिस रंज से दिल कमज़ोर हो, उसमे तेरी ही मदद माँगता हूँ; जो आफ़त किसी तरह सिर से न टले, जिसमें दोस्तों से काम न निकलें, जहाँ कोई हीला न हो, वहाँ तू ही मेरा मददगार है।

(ख़ेमे से बाहर निकलते हैं। हबीब और ज़हीर आपस में नेज़ेबाज़ी का अभ्यास कर रहे हैं)

हबीब — या हज़रत, ख़ुदा से मेरी यही दुआ है कि यह नेज़ा साद के जिगर में चुभ जाय, और 'रै' की सूबेदारी का अरमान उसके ख़ून के रास्ते निकल जाय।

ज़हीर — उसे सूबेदारी ज़रूर मिलेगी। जहन्नुम की या 'रै' की, इसका फ़ैसला मेरी तलवार करेगी।

हबीब — वाह! वह मेरा शिकार है, उधर निगाहें न उठाइएगा। आपके लिए मैंने शिमर को छोड़ दिया।

ज़हीर — बख़ुदा, वह मेरे मुक़ाबिले आये, तो मैं उसकी नाक काटकर छोड़ दूँ। ऐसे बदनीयत आदमी के लिए जहन्नुम से ज़्यादा तकलीफ़ दुनिया ही में है।

अब्बास — और मेरे लिए कौन-सा शिकार तजवीज़ किया?

हबीब — आपके लिए ज़ियाद हाज़िर है।

हुसैन — और मेरे लिए? क्या मैं ताकता ही रहूँगा?

ज़हीर — आपको कोई शिकार न मिलेगा।

हुसैन — मेरे साथ यह ज़्यादती क्यों?

ज़हीर — इसलिए कि आप भी शिकारियों को ज़ैल में आ जायँगे, तो जन्नत की नियामतों में भी साझा बँटायेंगे। आपके लिए रसूले-पाक की क़ुर्बत काफ़ी है। जन्नत की नियामतों में हम आपको शरीक नहीं करना चाहते।

हुसैन — मैं जरा साद के लश्कर से बातें करके आ जाऊँ, तो इसका फ़ैसला हो।

हबीब — उन गुमराहों की फ़रमाइश करना बेकार है। उनके दिल इतने सख़्त हो गये हैं कि उन पर कोई तक़रीर असर नहीं कर सकती।

हुसैन — ताहम कोशिश करना मेरा फ़र्ज़ है।

(परदा बदलता है। हुसैन अपनी साँडनी पर साद की फ़ौज के सामने खड़े हैं)

हुसैन — ऐ लोगों, कूफ़ा और शाम के दिलेर जवानों और सरदारों! मेरी बात सुनो, जल्दी न करो। मुसलमान अपने भाई की गर्दन पर तलवार चलाने में जितनी देर करे, ऐन सवाब है। मैं उस वक़्त तक खूँरेजी नहीं करना चाहता, जब तक तुम्हें इतना न समझा लूँ, जितना मुझ पर वाजिब है। मैं खुदा और इन्सान, दोनों ही के नज़दीक इस ज़ंग की जिम्मेदारी पाक रहना चाहता हूँ, जहाँ भाई की तलवार भाई की गर्दन पर होगी। तुम्हें मालूम है, मैं यहाँ क्यों आया? क्या मैंने इराक़ या शाम पर फ़ौजकशी की? मेरे अज़ीज़ दोस्त और अहलेबैत अगर फ़ौज कहे जा सकते हों, तो बेशक मैंने फ़ौजकशी की। सुनो, और इन्साफ़ करो, अगर तुम्हें खुदा का ख़ौफ़ और ईमान का लिहाज़ है कि मैं यहाँ तुम्हारे ही सरदारों के बुलाने से आया। मैंने अहद कर लिया था कि मैं दुनिया के झगड़ों से अलग रहकर खुदा की इबादत में अपनी ज़िन्दगी के बचे हुए दिन गुजारूँगा। मगर तुम्हारी ही फ़रियाद ने मुझे अपने गोशे से निकाला, रसूल की उम्मत की फ़रियाद सुनकर मैं कानों में उँगली न डाल सका। अगर इस हिमायत की

सजा क़त्ल है, तो यह सिर हाजिर है; शौक़ से क़त्ल करो। मैं हज्जाज़ से पूछता हूँ — क्या तुमने मुझे ख़त नहीं लिखे थे?

हज्जाज़ — मैंने आपको कोई ख़त नहीं लिखा।

हुसैन — क़ीस, तुम्हें भी ख़त लिखने से इनकार है?

क़ीस — मैंने कब आपने फ़रियाद की थी?

हुसैन — और शिमर, तुमने तो दस्तखत किया था?

शिमर — सरासर ग़लत है, झूठ है।

हुसैन — ख़ुदा गवाह है कि मैं अपनी ज़िन्दगी में कभी झूठ नहीं बोला, लेकिन आज यह दाग़ भी लगा।

क़ीस — आप यज़ीद की बैयत क्यों नहीं लेते कि इस्लाम हमेशा के लिए फ़ितना और फ़साद से पाक हो जाय।

हुसैन — क्या इसके सिवा मसालहत की और कोई सूरत नहीं है?

शिमर — नहीं, और कोई दूसरी सूरत नहीं है।

हुसैन — तो इस शर्त पर सुलह करना मेरे लिए ग़ैरमुमकिन है। ख़ुदा की क़सम मैं ज़लील होकर तुम्हारे सामने सिर न झुकाऊँगा, और न ख़ौफ़ मुझे यज़ीद की बैयत क़बूल करने पर

मजबूर कर सकता है। अब तुम्हें अख़्तियार है। हम भी जंग के लिए तैयार हैं।

शिमर — पहला तीर चलाने का सवाब मेरा है।

(हुसैन पर तीर चलाता है)

किसी तरफ़ से आवाज़ आती है — जहन्नुम में जाने का फ़ख्र भी पहले तुझी को होगा।

(हुसैन ऊँटनी को अपनी फ़ौज की तरफ़ फेर देते हैं। हुर अपनी फ़ौज से निकलकर आहिस्ता-आहिस्ता हुसैन के पीछे चलते हैं)

शिमर — वल्लाह, हुर, तुम्हारा इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता अपने तईं तौल-तौलकर चलना मेरे दिल में शुबहा पैदा कर रहा है। मैंने तुमको कभी लड़ाई में इस तरह काँपते हुए चलते नहीं देखा।

हुर — अपने को जन्नत और जहन्नुम के लिए तौल रहा हूँ, और हक़ यह है कि मैं जन्नत के मुक़ाबले में किसी चीज़ को नहीं

समझता, चाहे कोई मार ही क्यों न डाले। (घोड़े की एक एँड लगाकर हुसैन के पास पहुँच जाते हैं) ऐ फ़र्ज़न्दे-रसूल! मैं भी आपका हमराह हूँ। खुदाबन्द मुझे आप पर फ़िदा करे, मैं वहीं हूँ, जिसने आपको रास्ते से वापस करने की कोशिश की थी। खुदा की क़सम, मुझे उम्मीद न थी कि ये लोग आपके साथ यह बर्ताव करेंगे, और सुलह की कोई शर्त न क़बूल करेंगे, वरना मैं आपको इधर आने ही न देता, जब तक आप मेरे सिर पर न आते। अब इधर से मायूस होकर आपकी ख़िदमत में हाजिर हुआ हूँ कि आपकी मदद करते हुए अपने तईं आपके क़दमों पर निसार कर दूँ। क्या आपके नज़दीक मेरी तौबा क़बूल होगी।

हुसैन — खुदा से मेरी दुआ है कि वह तुम्हारी तौबा क़बूल करे।

हुर — अब मुझे मालूम हो गया कि मैं यज़ीद से अपनी बैयत वापस लेने में कोई गुनाह नहीं कर रहा हूँ।

(दोनों चले जाते है। तीरों की वर्षा होने लगती है)

नवाँ दृश्य

(शाम का वक़्त। कूफ़ा का एक गाँव। नसीमा ख़जूर के बाग़ में ज़मीन पर बैठी हुई गाती हैं)

दबे हुओं को दबाती है ऐ ज़मीने-लहद,
यह जानती हूँ कि दम जिस्म नातवाँ में नहीं।
कफ़स में जी नहीं लगता है आह फिर भी मेरा,
यह जानती हूँ कि तिनका भी आशियाँ में नहीं।
उजाड़ दे कोई या फूँक दे उसे बिजली,
यह जानती हूँ कि रहना अब आशियाँ में नहीं।
ख़ुद अपने दिल से मेरा हाल पूछ लो सारा,
मेरी ज़बाँ से मज़ा मेरी दास्ताँ में नहीं।
करेंगे आज से हम ज़ब्त, चाहे जो कुछ हो,
यह क्या कि लब पे फ़ुग़ाँ और असर फ़ग़ाँ में नहीं।
ख़याल करके ख़ुद अपने किये को रोता हूँ,
तबाहियों के सिवा कुछ मेरे मकाँ में नहीं।

(वहब का प्रवेश)

नसीमा — बड़ी देर की। अकेले बैठे-बैठे जी उकता गया। कुछ उन लोगों की ख़बर मिली?

वहब — हाँ नसीमा, मिली। तभी तो देर हुई। तुम्हारा ख़याल सही निकला। हज़रत हुसैन के साथ है।

नसीमा — क्या हज़रत हुसैन की फ़ौज आ गयी?

वहब — कैसी फ़ौज? कुल बूढ़े, जवान और बच्चे मिलाकर बहत्तर आदमी हैं। दस-पाँच आदमी कूफ़ा से भी आ गये हैं। कर्बला के बेपनाह मैदान में उनके ख़ेमे पड़े हुए हैं। ज़ालिम ज़ियाद ने बीस-पच्चीस हज़ार आदमियों से उन्हें घेर रखा है। न कहीं जाने देता है, न कोई बात मानता है, यहाँ तक कि दरिया से पानी भी नहीं लाने देता। पाँच हज़ार जवान दरिया की हिफ़ाज़त के लिए तैनात कर दिये हैं। शायद कल तक जंग शुरू हो जाय।

नसीमा — मुट्ठी भर आदमियों के लिए बीस-पच्चीस हज़ार सिपाही! कितना ग़ज़ब है! ऐसा गुस्सा आता है, ज़ियाद को पाऊँ, तो सिर कुचल दूँ।

वहब — बस, उसकी यही ज़िद है कि यज़ीद की बैयत क़बूल करो। हज़रत हुसैन कहते हैं, यह मुझसे न होगा।

नसीमा — हज़रत हुसैन नबी के बेटे हैं, क़ौल पर जान देते हैं। मैं होती, तो ज़ियाद को ऐसा जुल देती कि वह भी याद करता। कहती — हाँ, मुझे बैयत क़बूल है। वहाँ से जाकर बड़ी फ़ौज जमा करती, और यज़ीद के दाँत खट्टे कर देती। रसूल पाक को शरा में ऐसा आफ़तों के लिए कुछ रियायत रखनी चाहिए। तो क्या हज़रत की फ़ौज में बड़ी घबराहट है?

वहब — मुतलक नहीं, नसीमा। सब लोग शहादत के शौक़ से मतवाले हो रहे हैं। सबसे ज़्यादा तक़लीफ़ पानी की है। ज़रा-ज़रा से बच्चे प्यासे तड़प रहे हैं।

नसीमा — आह ज़ालिम! तुझ से ख़ुदा समझे।

वहब — नसीमा, मुझे रुख़सत करो। अब दिल नहीं मानता। मैं भी हज़रत हुसैन के क़दमों पर निसार होने जाता हूँ। आओ, गले मिल लो, शायद फिर मुलाक़ात न हो।

नसीमा — हाय वहब! क्या मुझे छोड़ जाओगे? मैं भी चलूँगी।

वहब — नहीं नसीमा, उस लू के झोंकों से यह फूल मुरझा जायगा (नसीमा को गले लगाकर) फिर दिल कमज़ोर हुआ जाता है। सारी राह कमबख़्त को समझाता आया था। नसीमा, तुम मुझे दुत्कार दो, हाँ दुत्कार दो। ख़ुदा, तूने मुहब्बत को नाहक़ पैदा किया।

नसीमा — (रोकर) वहब, यह फूल किस काम आयेगा? कौन इसको सूँघेगा, कौन इसे दिल से लगायेगा! मैं भी हज़रत जैनब के कदमों पर निसार हूँगी।

वहब — वह प्यास की शिद्दत, वह गरमी की तकलीफ़, वह हंगामे, कैसे ले जाऊँ?

नसीमा — जिन तकलीफ़ों को सैदानियाँ झेल सकती हैं, क्या मैं न झेल सकूँगी? हीले मत करो वहब, मैं तुम्हें तनहा न जाने दूँगी।

वहब — नसीमा, तुम्हें निगाहों से देखते हुए मेरे क़दम मैदान की तरफ़ न उठेंगे।

नसीमा — (वहब के कन्धे पर सिर रखकर) प्यार! क्यों किसी ऐसी जगह नहीं चलते,जहाँ एक गोशे में बैठकर इस ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठायें। तुम चले जाओगे, ख़ुदा न ख़्वास्ता दुश्मनों को कुछ हो गया, तो मेरी ज़िन्दगी रोते ही गुज़रेगी। क्या हमारी ज़िन्दगी रोने ही के लिए है? मेरा दिल अभी दुनिया की लज़्ज़तों का भूखा है। जन्नत की खुशियों की उम्मीद पर इस ज़िन्दगी को क़ुर्बान नहीं करते बनता। हज़रत हुसैन की फ़तह तो होने से रही। पच्चीस हज़ार के सामने जैसे सौ, वैसे ही एक सौ एक।

वहब — आह नसीमा! तुमने दिल के सबसे नाज़ुक हिस्से पर निशाना मारा। मेरी भी यही दिली तमन्ना है कि किसी आफ़ियत

के गोशे में बैठकर ज़िन्दगी की बहार लूटें। पर ज़ालिम की यह बेदर्दी देखकर ख़ून में जोश आ जाता है, और दिल बेअख्तियार यही चाहता है कि चलकर हज़रत हुसैन की हिमायत में शहीद हो जाऊँ। जो आदमी अपनी आँखों से जुल्म होते देखकर ज़ालिम का हाथ नहीं रोकता, वह भी ख़ुदा की निगाहों में ज़ालिम का शरीक है।

नसीमा — मैं अपनी आँखें तुम पर सदक़े करूँ, मुझे अजाब और सबाब के मुख़मसों में मत डालो। सोचो, क्या यह सितम नहीं है कि हमारी ज़िन्दगी की बहार इतनी जल्दी रुखसत हो जाय? अभी मेरे उरूसी कपड़े भी नहीं मैले हुए, हिना का रंग भी नहीं फीका पड़ा, तुम्हें मुझ पर ज़रा भी तरस नहीं आता? क्या ये आँखें रोने के लिए बनायी गयी हैं? क्या ये हाथ दिल को दबाने के लिए बनाये गये हैं? यही मेरी ज़िन्दगी का अंजाम है?

(वहब के गले में हाथ डाल देती है)

वहब — (स्वगत) ख़ुदा, सँभालियो, अब तेरा ही भरोसा है। यह आशिक़ की दिल बहलाने वाली इल्तिजा नहीं, माशूक़ का ईमान ग़ारत करनेवाला तक़ाज़ा है।

(साहबराय की सेना सामने से चली आ रही है)

नसीमा — अरे! यह फ़ौज कहाँ से आ रही है? सिपाहियों का ऐसा अनोखा लिबास तो कहीं नहीं देखा। इनके माथों पर ये लाल-लाल बेल-बूटे कैसे बने हैं! क़सम है इन आँखों की, ऐसे सजीले, ऐसे हसीन जवान आज तक मेरी नज़र से नहीं गुजरे।

वहब — मैं जाकर पूछता हूँ, कौन लोग हैं। (आगे बढ़कर एक सिपाही से पूछता है) ऐ जवानों! तुम फ़रिश्ते हो या इन्सान? अरब में तो हमने ऐसे आदमी नहीं देखे। तुम्हारे चेहरों से जलाल बरस रहा है। इधर कहाँ जा रहे हो?

सिपाही — तुमने सुल्तान साहसराय का नाम सुना है? हम उन्हीं के सेवक हैं, और हज़रत हुसैन की सहायता करने जा रहे हैं, जो इस वक़्त कर्बला के मैदान में घिरे हुए हैं। तुमने यज़ीद की बैयत ली है या नहीं।

वहब — मैं उस ज़ालिम की बैयत क्यों क़बूल करने लगा था।

सिपाही — तो आश्चर्य है तुम हज़रत की फ़ौज में क्यों नहीं हो। तुम सूरत से मनचले जवान मालूम होते हो, फिर यह कायरता कैसी?

वहब — (शरमाते हुए) हम वहीं जा रहे हैं।

सिपाही — तो फिर आओ, साथ चलें।

वहब — मेरे साथ मस्तूरात भी हैं। तुम लोग बढ़ो, हम भी आते हैं।

(फ़ौज चली जाती है)

नसीमा — यह साहसराय कौन है?

वहब — यह तो नहीं कह सकता, पर इतना कह सकता हूँ कि ऐसा हक़-परस्त, दिलेर, इन्साफ़ पर निसार होनेवाला आदमी दुनिया में न होगा। बेकसों की हिमायत में कभी उसे पीछे क़दम हटाते नहीं देखा। मालूम नहीं, किस मज़हब का आदमी है, पर जिस मज़हब और जिस क़ौम में ऐसी पाक रूहें पैदा हों, वह दुनिया के लिए बरकत है।

नसीमा — इनके भी बाल-बच्चे होंगे?

वहब — बहुत बड़ा ख़ानदान है। सात तो भाई ही हैं।

नसीमा — और मुसलमान न होते हुए भी ये लोग हज़रत हुसैन को इमदाद के लिए जा रहे हैं?

वहब — हाँ, और क्या!

नसीमा — तो हमारे लिए कितनी शर्म की बात है कि हम यों पहलूतिहीं करें।

वहब — प्यारी नसीमा, चले चलेंगे। दो-चार तो ज़िन्दगी की बहार लूट लें।

नसीमा — नहीं वहब, एक लम्हे की भी देर न करो। ख़ुदा हमें जन्नत में फिर मिलायेगा, और तब हम अब्द तक ज़िन्दगी की बहार लूटेंगे।

वहब — नसीमा, आज और सब्र करो।

नसीमा — एक लम्हा भी नहीं। वहब, मुझे अब इम्तहान में न डालो। साँडनी लाओ, फ़ौरन चलो।

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

(समय ९ बजे दिन। दोनों फ़ौजें लड़ाई के लिए तैयार हैं)

हुर — या हज़रत, मुझे मैदान में जाने की इजाज़त मिले। अब शहादत का शौक़ रोके नहीं रुकता।

हुसैन — वाह, अभी आये हो, और अभी चले जाओगे। यह मेहमान-नवाज़ी का दस्तूर नहीं कि हम तुम्हें आते-ही आते रुखसत कर दें।

हुर — या फ़र्ज़न्दे-रसूल, मैं आपका मेहमान नहीं, ग़ुलाम हूँ। आपके क़दमों पर निसार होने के लिए आया हूँ।

हुसैन — (हुर के गले मिलकर आँखों में आँसू भरे हुए) आगर तुम्हारी इसी में ख़ुशी है, तो जाओ, ख़ुदा को सौंपा।

दुनिया में शहीदों मे तेरा नाम हो भाई,
उक़बा में तुझे राहतोआराम हो भाई।

(हुर मैदान की तरफ़ चलते हैं, हुसैन ख़ेमे की दरवाज़े तक उन्हें पहुँचाने आते हैं। ख़ेमे से निकलते हुए हुर हुसैन के क़दमों को बोसा देते हैं, और चले जाते हैं)

हुर — (मैदान में जाकर)

ग़ुलाम हज़रते शब्बीर रन में आता है,
वही जो दीं का ही बंदा, वह मेरा आक़ा है।
वह आये ठोंक के ख़म, जिसकी मौत आयी है,
उसी का पीने को ख़ूँ मेरी तेग़ आयी है।

(सफ़वान उधर से झूमता हुआ आता है)

हुर — सफ़वान, कितनी शर्म की बात है कि तुम फ़र्ज़न्दे-रसूल से जंग करने आये है?

सफ़वान — हम सिपाहियों को माल, दौलत, जागीर और रुतबा चाहिए, हमें दीन और आक़बत से क्या काम? सँभल जाओ।

(दोनों पहलवानों में चोटें चलने लगती हैं)

अब्बास — वह मारा। सफ़वान का सीना टूट गया, ज़मीन पर तड़पने लगा।

हबीब — सफ़वान के तीन भाई दौड़े चले आते हैं।

अब्बास — वाह मेरे शेर! एक को तलवार से लिया, दूसरा भी गिरा, और तीसरा भागा जाता है।

हबीब — या ख़ुदा, ख़ैर कर, हुर का घोड़ा गिर गया।

हुसैन — फ़ौरन एक घोड़ा भेजो।

(एक आदमी हुर के पास घोड़ा लेकर जाता है)

अब्बास — यह पीरानासाली और यह दिलेरी! ऐसा बहादुर आज तक नज़र से नहीं गुज़रा। तलवार बिजली की तरह कौंध रही है।

हुसैन — देखो, दुश्मन का लश्कर कैसा पीछे हटा जाता है। मरनेवाले के सामने खड़ा होना इतना आसान नहीं। दिलेरी की इन्तहा है।

अब्बास — अफ़सोस, अब हाथ नहीं उठते। तीरों से सारा बदन चलनी हो गया।

शिमर — तीरों की बारिश करो, मार लो। हैफ़ है तुम पर कि एक आदमी से इतने ख़ायफ़ हो। वह गिरा, काट लो सिर और हुसैन की फ़ौज में फेंक दो।

(कई आदमी हुर के सिर को काटने को चलते है कि हुसैन मैदान की तरफ़ दौड़ते हैं)

एक — वह हुसैन दौड़े चले आते हैं। भागो, नहीं तो जान न बचेगी।

हुसैन — (हुर की लाश से लिपटकर)

टुकड़े हैं बदन, ज़ख़्म बहुत खाये हैं भाई,
हो होश में आ लाश पे हम आये हैं भाई।

(हुर आँखें खोलकर देखते है, और अपना सिर उनकी गोद में रख देते हैं)

हुर — या हज़रत, आपके क़दमों पर निसार हो गया। ज़िन्दगी ठिकाने लगी।

तकिया तेरे जानू का मयस्सर हुआ आक़ा,
ज़र्रा था यह अब महरे-मुनौवर हुआ आक़ा।

हुसैन — हाय! मेरा जाँबाज रफ़ीक़ दुनिया से रुख़सत हो गया। यह वह दिलावर था, जिसने हक़ पर अपने रुतबा और दौलत को

निसार कर दिया, जिसने दीन के लिए दुनिया को लात मार दी। ये हक़ पर जान देनेवाले हैं, जिन्होंने इस्लाम के नाम को रोशन किया है, और हमेशा रोशन रक्खेंगे। जा मुहम्मद के प्यारे, जन्नत तेरे लिए हाथ फैलाये हुए है। जा, और हयात अब्दी के लुत्फ़ उठा। मेरे नाना से कह दीजियो कि हुसैन भी जल्द ही तुम्हारी ख़िदमत में हाजिर होनेवाला है, और तुम्हारे सारे कुनबे को साथ लिये हुए। क़ाबिल ताज़ीम हैं वे माताएँ, जो ऐसे बेटे पैदा करती है!

दूसरा दृश्य

(समर-भूमि। साद की तरफ़ से दो पहलवान आते हैं — यसार और सालिम)

यसार — (ललकार कर) कौन निकलता है, हुर का साथ देने के लिए? चला आये, जिसे मौत का मज़ा चखना हो। हम वह हैं, जिनकी तलवार से क़ज़ा की रूह भी क़ज़ा होती है।

(अब्दुल्लाह कलवी हुसैन के लश्कर से निकलते हैं)

यसार — तू कौन है?

अब्दुल्लाह — मैं अब्दुल्लाह बिन कमीर कलवी हूँ, जिसकी तलवार हमेशा बेदीनों के ख़ून की प्यासी रहती है।

यसार — तेरे मुक़ाबले में तलवार उठाते हमें शर्म आती है। जाकर हबीब या ज़हीर को भेज।

अब्दुल्लाह — तू उन सरदाराने-फ़ौज से क्या लड़ेगा, जिनकी ज़िन्दगी ज़ियाद की ग़ुलामी में गुजरी। तुझे उन रईसों को ललकारते हुए शर्म भी नहीं आती। तुझ-जैसों के लिए मैं ही काफ़ी हूँ।

(यसार तलवार लेकर झपटता है। अब्दुल्लाह एक ही वार में उसका काम तमाम कर देते हैं। तब सालिम उन पर टूट पड़ता है। अब्दुल्लाह की पाँचों उँगलियाँ कट जाती हैं, तलवार ज़मीन पर गिर पड़ती है। वह बायें हाथ में नेज़ा ले लेते हैं, और सालिम के सीने में नेज़ा चुभा देते हैं। वह भी गिर पड़ता है। ज़ियाद की

फ़ौज निकलकर लोग अब्दुल्लाह को घेर लेते हैं। इधर क़मर लकड़ी लेकर दौड़ती है)

क़मर — मेरी जान तुम पर फ़िदा हो, रसूल के नवासे के लिए लड़ते-लड़ते जान दे दी। मैं भी तुम्हारी मदद को आयी।

अब्दुल्लाह — नहीं-नहीं, क़मर, मेरे लिए तुम्हारी दुआ काफ़ी है; इधर मत आओ।

क़मर — मैं इन शैतानों को लकड़ी से मारकर गिरा दूँगी। एक के लिए दो भेजे, जब दोनों जहन्नुम पहुँच गये, तो सारी फ़ौज निकल पड़ी। कह कौन-सी ज़ंग है?

अब्दुल्लाह — मैं एक ही हाथ से इन सबको मार गिराऊँगा। तुम खेमे में जाकर बैठो।

क़मर — मैं जब तक ज़िन्दा हूँ, तुम्हारा साथ न छोड़ूँगी। तुम्हारे साथ ही रसूल पाक की ख़िदमत में हाजिर हूँगी।

हुसैन — (क़मर से) ऐ नेक ख़ातून, तुझ पर अल्लाह ताला रहम करे। तुम वहाँ जाओगी, तो यहाँ मस्तूरात की खबर कौन लेगा? औरतों को ज़िहाद करना मना है। लौट आओ, और देखो तुम्हारा जाँबाज शौहर एक हाथ से कितने आदमियों का मुकाबला कर

रहा है। आफ़रीं है तुम पर, मेरे शेर! तुमने अपने रसूल की जो ख़िदमत की है, उसे हम कभी नहीं भूलेंगे। ख़ुदा तुम्हें जज़ा देगा। आह! ज़ालिमों ने तीर मार कर ग़रीब को गिरा दिया! ख़ुदा उसे जन्नत दे।

क़मर — या हज़रत, इसका ग़म नहीं। वह आप पर निसार हो गये, इससे बेहतर और कौन-सी मौत हो सकती थी। काश मैं भी उनके साथ चली जाती। मेरे जाँबाज! सच्चे दिलावर, जा, और जन्नत में आराम कर। तू वह था, जिसने कभी सायल को नहीं फेरा, जिसकी नीयत कभी ख़राब और निगाह कभी बुरी नहीं हुई। जा, और जन्नत में आराम कर।

हुसैन — क़मर सब्र करो कि इसके सिवा कोई चारा नहीं है।

क़मर — मुझे उनके मरने का ग़म नहीं है। मैं खुश हूँ कि उन्होंने हक़ पर जान दी। इस वक़्त मेरे सौ बेटे होते, तो मैं इसी तरह उन्हें भी आपके क़दमों पर निसार कर देती। काश वहब इतना ज़नपरस्त न होता,,,

(वहब का प्रवेश)

वहब — अस्सलामअलेक या हज़रत हुसैन।

क़मर — (वहब को गले लगाकर) ज़रा देर पहले ही क्यों न आ गये बेटा कि अपने बाप की आखिरी दीदार कर लेते। नसीमा कहाँ है?

वहब — यहीं खेमों के पीछे खड़ी है।

क़मर — मैं अभी तुम्हारा ही ज़िक्र कर रही थी। क्यों बेटा, अपने बाप का नाम रोशन न करोगे? मेरा तुम्हारे ऊपर बड़ा हक़ है। तुम मेरे जिगर का खून पीकर पले हो। मेरा दूध हलाल न करोगे? मेरी तमन्ना है कि हुसैन पर अपनी जान निसार करो, ताकि दुनिया में क़मर का नाम क़मर की तरह चमके, जिसका शौहर और बेटा, दोनों ही हक़ पर शहीद हुए।

वहब — अम्माजान, मेरी भी दिली तमन्ना यह थी और है। मैं अपने बाप के नाम को दाग़ नहीं लगाना चाहता, मगर नसीमा को क्या करूँ? उसकी मुसीबतों का ख़याल हिम्मत को पस्त कर देता है। जाता हूँ, अगर उसने इजाज़त दे दी, तो मेरे लिए इससे बढ़कर ख़ुशी नहीं हो सकती।

क़मर — बेटा, तुम उसकी आदत से वाक़िफ़ होकर फिर उसी से पूछने जाते हो। इसके मानी इसके सिवा और कुछ नहीं है कि तुम ख़ुद मैदान में जाते हुए डरते हो।

(वहब नसीमा के पास जाता है)

नसीमा — काश ज़रा देर क़ब्ल आ जाते, तो अब्बाजान की आख़िरी दुआएँ मिल जाती।

वहब — हमारी बदनसीबी!

नसीमा — मैं जानती हूँ, तुम हमेशा के लिए ख़ैरबाद कहने आये हो। जाओ प्यारे, और एक सपूत बेटे की तरह अपनी वालिद का नाम रोशन करो। काश औरतों पर ज़िहाद हराम न होता, तो मैं भी तुम्हारे ही साथ अपने को हक़ की हिमायत में निसार कर देती। जब से मैंने फ़र्ज़न्दे-रसूल की पाक सूरत देखी है, मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मेरा दिल रोशन हो गया है, और उस रोशनी में ज़िन्दगी की तमन्नाएँ और ख़्वाहिशें नज़र से मिटती जाती है। जाओ, प्यारे, जाओ, और हक़ पर क़ुरबान हो जाओ। नसीमा जब तक जियेगी, तुम्हारे मज़ार पर फ़ातिहा और दरूद पढ़ेगी। जाओ, जन्नत में मुझे भूल न जाता। मैंने हवस के दाम में फँसकर तुम्हें फ़र्ज़ के रास्ते से हटा दिया था। रसूल पाक से कहना, मेरा गुनाह मुआफ़ करें। जाओ, इन आँसुओं का ख़याल न करो, वरना ये आँसू तुम्हारे जोश को बुझा देंगे। मैं अभी बहुत

दिन तक रोऊँगी, तुम इसका ग़म न करना। जाओ, तुम्हें ख़ुदा को सौंपा — आह! दिल फटा जाता है। कैसे सब्र करूँ?

(वहब आँसू पोंछता हुआ बाहर आता है)

क़मर — (अन्दर आकर) बेटी, तुझे गले से लगा लूँ, और तुझ पर अपनी जान फ़िदा, तूने ख़ानदान की आबरू रख ली।

नसीमा — अम्माजान, रसूल पाक ने अगर कोई बेइन्साफ़ी की, तो वह यही है कि औरतों पर ज़िहाद हराम कर दिया, वरना इस वक़्त मैं वहब के पहलू में होती। देखिए, दुश्मन उन पर चारों तरफ़ से कितनी बेदर्दी से नेज़े और तीर फेंक रहे हैं। किसी की हिम्मत नहीं है कि उनके सामने ख़म ठोककर आये। आह! देखिए, उनके हाथ कितनी तेजी से चल रहे हैं। जिस पर उनका एक हाथ पड़ जाता है, वह फिर नहीं उठता, दुश्मन भागे जाते हैं। हा बुज़दिलों, नामर्दो! वह इधर चले आ रहे हैं, बदन ख़ून से तर है, सिर पर भी ज़ख़्म लगे हैं।

(वहब आकर ख़ेमे के सामने खड़ा हो जाता हैं)

वहब — अम्माजान, मुझे राज़ी हुई?

क़मर — बेटा, तुझ पर हज़ार जान से निसार हूँ। तुमने बाप का नाम रोशन कर दिया, लेकिन मैं चाहती हूँ कि जब तक तेरे हाथों में ताक़त है, तब तक दुश्मनों को आराम न लेने दे।

वहब — (स्वगत) आह! हक़ पर जान देना भी उतना आसान नहीं है, जितना लोग ख़याल करते हैं। (प्रकट) अम्मा, यही मेरा भी इरादा है, लेकिन नसीमा के आँसुओं की याद मुझे खींच लायी।

(क़मर चली जाती है)

नसीमा, तुम्हें आख़िरी बार देखने की तमन्ना मैदान से खींच लायी। सनम का पुजारी सनम ही पर क़ुर्बान हो सकता है, दीन और ईमान, हक़ और इन्साफ़, ये सब उसकी नज़रों में खिलौने की तरह लगते हैं। मुहब्बत दुनिया की सबसे मज़बूत बेड़ी है, सबसे सख़्त ज़ंजीर। (चौंककर) कोई पहलवान मैदान में आकर ललकार रहा है। हाय! लानत हो उन पर, जो हक़ को पामाल करके हज़ारों को नामुराद मरने पर मज़बूर करते हैं। नसीमा, हमेशा के लिए रुख़सत! मेरी तरफ़ एक बार मुहब्बत की निगाहों से देख लो, उनमें मुहब्बत का ऐसा जाम हो कि उसका नशा मेरे सिर से क़यामत तक न उतरे।

नसीमा — मेरी जान, आह! दिल निकला जाता है...।

(वहब मैदान की तरफ़ चला जाता है)

ख़ुदा!काश मुझे मौत आ जाती कि यह दिलख़राश नज़ारा आँखो से न देखना पड़ता। मैरा जवान दिलेर जाँबाज़ शौहर मौत के मुँह में चला जा रहा है, और मैं बैठी देख रही हूँ। ज़मीन, तू क्यों नहीं फट जाती कि मैं उसमे समा जाऊँ! बिजली, आसमान से गिरकर क्यों मेरा ख़ातमा नहीं कर देती! वह देव उन पर तलवार लिये झपटा, या ख़ुदा, मुझ नामुराद पर रहम कर। दूर हो ज़ालिम, सीधा जहन्नुम को चला जा। अब कोई आगे नहीं आता। वह मलऊन शिमर अपनी जमैयत लिये उनकी तरफ़ दौड़ा आता है। हाय! ज़ालिमों ने घेर लिया। ख़ुदा, तू यह बेइन्साफ़ी देख रहा है, और इन मूज़ियों पर अपना क़हर नहीं नाज़िल करता। एक के लिए एक काफ़ी है, फ़ौज भेज देना कौन-सा आईने-जंग है। हाय! हाय ख़ुदा, गज़ब हो गया। अब नहीं देखा जाता —

(छाती पीटकर रोने लगती है। शिमर वहब का सिर काट कर फेंक देता है, क़मर दौड़कर सिर को गोद में उठा लेती है, और उसे आँखों से लगाती है)

क़मर — मेरे सपूत बेटे, मुबारक है यह घड़ी कि मैं तुझे अपनी आँखों से हक़ पर शहीद होते देख रही हूँ। आज तू मेरे कर्ज़ से अदा हो गया, आज मेरी मुराद पूरी हुई, आज मेरी ज़िन्दगी सफल हो गयी, मैं अपनी सारी तकलीफ़ का सिला पा गयी। ख़ुदा तुझे शहीदों के पहले में जगह दे। नसीमा, मेरी जान, आज तूने सच्चा सोहाग पाया है, जो क़यामत तक तुझे सुहागिन बनाये रखेगा। अब हूरें तेरे तलुओं तले आँखें बिछायेंगी, और फ़रिश्ते तेरे क़दमों की ख़ाक का सुरमा बनायेंगे।

(वहब का सिर नसीमा की गोद में रख देती है, नसीमा सिर को गोद में रखे हुए बैठ कर रोती है)

काजल बना-बनाके तेरी ख़ाके-दर को मैं,
रोशन करूँगी अपनी सवादे-नज़र को मैं।
आँसू भी ख़ुश्क हो गये, अल्लाह रे सोज़े-ग़म,
क्योंकर बुझाऊँ आतिशे-दाग़े-ज़िगर को मैं।
तेरे सिवा है कौन, जो बेकस की ले ख़बर,
आती न तेरे दर पर, जो जाती किधर को मैं?
बाज़ आयी मैं दुआ ही से, यारब कि कब तलक,
करती फिरूँ तलाश जहाँ में अगर को मैं।
गर तेरी ख़ाके-दर से न मिलता यह इफ़्तख़ार,

करती न यों बुलन्द कभी अपने सिर को मैं।

हाय प्यारे! तुम कितने बेवफ़ा हो, मुझे अकेले छोड़कर चले जाते हो! लो, मैं भी आती हूँ! इतनी जल्दी नहीं, ज़रा ठहरो।

(साहसराय का प्रवेश)

साहसराय — सती, तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

नसीमा — साहब, आप ख़ूब आये। आपका शुक्रिया तहे-दिल से शुक्रिया! आपने ही मुझे आज इस दरजे पर पहुँचाया। आपके वतन में औरतें अपने शौहरों के बाद ज़िन्दा नहीं रहती। वे बड़ी खुशनसीब होती है।

साहसराय — सती, हम लोगों को आशीर्वाद दो।

नसीमा — (हँसकर) यह दरजा! अल्लाह रे मैं, यह वहब की बदौलत, उसकी शहादत के तुफ़ैल, खुदा, तुझसे मेरी दुआ है, मेरी क़ौम में कभी शहीदों की कमी न रहे, कभी वह दिन न आये कि हक़ को जाँबाज़ों की ज़रूरत हो, और उस पर सिर कटानेवाले न मिलें। इस्लाम, मेरा प्यारा इस्लाम शहीदों से सदा मालामाल रहे! (अपने दामन से एक सलाई निकालकर वहब के ख़ून में डुबाती

है) क्यों साहसराय, तुम्हारे यहाँ सती के जिस्म से आग निकलती है, और वह उसमें जल जाती है। क्या बिला आग के जान नहीं निकलती?

साहसराय — नसीमा, तू देवी है। ऐसी देवियों के दर्शन दुर्लभ होते हैं। आकाश के देवता तुझ पर पुष्प-वर्षा कर रहें है।

(नसीमा आँखों में सलाई फेर लेती है, और एक आह के साथ उसकी जान निकल जाती है)

तीसरा दृश्य

(दोपहर का समय। हज़रत हुसैन अब्बास के साथ ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़े मैदाने-जंग की तरफ़ ताक रहे है)

हुसैन — कैसे-कैसे जाँबाज़ दोस्त रुख़सत हो गये, और होते जा रहे हैं। प्यास से कलेजे मुँह का आ रहे हैं, और ये ज़ालिम नमाज़ तक की मुहलत नहीं देते। आह! ज़हिर का-सा दीनदार

उठ गया, मुस्लिम बिन ऊसजा इस आलमेतईफ़ी में भी कितने जोश से लड़े। किस-किसका नाम गिनाऊँ?

अब्बास — या हज़रत, मुझे अंदेशा हो रहा है कि शिमर कोई नया सितम ढाने की तैयारियाँ कर रहा है। यह देखिए, वह सिपाहियों की एक बड़ी जमैयत लिए इधर चला आता है।

हबीब — (ज़ोर से) शिमर! ख़बरदार, अगर इधर एक क़दम बढ़ाया, तो तेरी लाश पर कुत्ते रोवेंगे। तुझे शर्म नहीं आती ज़ालिम कि अहलेबैत के ख़ेमों पर हमला करना चाहता है।

शिमर — हम इस हमले से जंग का फ़ैसला कर देना चाहते हैं। जवानों, तीर बरसाओ।

हुसैन — अफ़सोस, घोड़े मरे जा रहे हैं! घुटने टेककर बैठ जाओ, और तीरों का जवाब दो। ख़ुदा ही हमारी वली और हाफ़िज है।

शिमर — बढ़ो-बढ़ो, एक आन में फ़ैसला हुआ जाता है।

सिपाही — देखते नहीं हो, हमारी सफें ख़ाली होती जाती है? यह तीर है, या ख़ुदा का ग़जब। हम आदमियों से लड़ने आये हैं, देवों से नहीं।

शिमर — लकड़ियाँ जलाओ, फ़ौरन इन ख़ेमों पर आग के अंगारे फेंको, जलते हुए कुंदे फेंको, जलाकर ख़ाक स्याह कर दो।

(आग की बारिश होने लगती है। औरतें ख़ेमे से चिल्लाती हुई बाहर निकल आती हैं)

जैनब — तुफ़ है तुझ पर ज़ालिम, मर्दों से नहीं, औरतों पर अपनी दिलेरी दिखाता है।

हुसैन — साद! यह क्या सितम है? तुम लोगों का दुश्मन मैं हूँ। मुझसे लड़ो, ख़ेमों में औरतों और बच्चों के सिवा कोई मर्द नहीं है। वे ग़रीब निकलकर भाग न सकीं, तो हम उधर चले जायँगे, तुमसे लड़ न सकेंगे। अफ़सोस है कि इतनी जमैयत के होते हुए भी तुम यह विदअतें कर रहे हो।

शिमर — फेंको अँगारे। मुझे दोज़ख़ में जलना नसीब हो, अगर मैं इन सब ख़ेमों को जला न डालूँ।

शीस — शिमर, यह तुम्हारी हरकत आईने-जंग के खिलाफ़ है। हिसाब के दिन तुम्हीं इसके ज़िम्मेदार होगे।

कीस — रोको अपने आदमियों को।

शिमर — मैं अपने फ़ैल का मुख़्तार हूँ। आग बरसाओ, लगा दो लगा।

शीस — साद, ख़ुदा को क्या मुँह दिखाओगे।

हबीब — दोस्त, टूट पड़ो शिमर पर, बाज की तरह टूट पड़ो। नामूसे-हुसैन पर निसार हो जाओ। एकबारगी नेज़ों का वार करो।

(हबीब और उनके साथ दस आदमी नेज़े लेकर शिमर पर टूट पड़ते हैं। शिमर भागता है, और उसकी फ़ौज भी भाग जाती है)

हुसैन — हबीब, तुमने आज अहलेबैत की आबरू रख ली। ख़ुदा तुम्हें इसकी जज़ा दे।

हबीब — या मौला, दुश्मन दो-चार लमहों के लिए हट गया है, नमाज़ का वक़्त आ गया है, हमारी तमन्ना है कि आपके आख़िरी नमाज़ पढ़ लें। शायद फिर यह मौक़ा न मिले।

हुसैन — ख़ुदा तुम पर रहम करे, अजान दो। ऐ साद, क्या तू इस्लाम की शरियत को भी भूल गया? क्या इतनी मुहलत न देगा कि नमाज़ पढ़ कर जंग की जाय?

शिमर — ख़ुदा पाक की क़सम, हर्गिज़ नहीं। तुम बेनमाज़ क़त्ल किये जाओगे। शरियत बाग़ियों के लिए नहीं है।

हबीब — या मौला, आप नमाज़ अदा फ़रमायें, इस मूज़ी को बकने दें। इसकी इतनी मजाल नहीं है कि नमाज़ में मुख़िल हो।

(लोग नमाज़ पढ़ने लगते हैं। साहसराय और उनके सातों भाई हुसैन की पुश्त पर खड़े शिमर के तीरों से उनको बचाते रहते हैं। नमाज़ ख़त्म हो जाती है)

हुसैन — दोस्तों, मेरे प्यारे ग़मगुसारो, यह नमाज़ इस्लाम की तारीख़ में यादगार रहेगी। अगर ख़ुदा के इन दिलेर बन्दों ने, हमारे पुश्त पर खड़े होकर, हमें दुश्मनों के तीरों से न बचाया होता, तो हमारी नमाज़ हर्गिज़ न पूरी होती। ऐ हक़परस्तों, हम तुम्हें सलाम करते हैं। अगर्चे तुम मोमिन नहीं हो, लेकिन जिस मज़हब के पैरों ऐसे हक़परवर, ऐसे इन्साफ़ पर जान देनेवाले, ज़िन्दगी को इस तरह नाचीज़ समझनेवाले, मजलूमों की हिमायत में सिर कटानेवाले हों, वह सच्चा और मिनजानिब ख़ुदा है। वह मज़हब दुनिया में हमेशा क़ायम रहे, और नूरे-इस्लाम के साथ उसकी रोशनी भी चारों तरफ़ फैले।

साहसराय — भगवन्, आपने हमारे प्रति जो शुभेच्छाएँ प्रकट की हैं, उनके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। मेरी भी ईश्वर से यही

प्रार्थना है कि जब कभी इस्लाम को हमारे रक्त का आवश्यकता हो, तो हमारी जाति में अपना वक्ष खोल देनेवालों की कमी न रहे। अब मुझे आज्ञा हो कि चलकर अपने प्रायश्चित की क्रिया पूरी करूँ।

हुसैन — नहीं, मेरे दोस्तों, जब तक हम बाक़ी हैं, अपने मेहमानों को मैदान में न जाने देंगे।

साहसराय — हज़रत, हम आपके मेहमान नहीं, सेवक हैं। सत्य और न्याय पर मरना ही हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य है। यह हमारा कर्तव्य-मात्र है, किसी पर एहसान नहीं।

हुसैन — आह! किस मुँह से कहूँ कि जाइए। ख़ुदा करे, इस मैदान में हमारे और आपके ख़ून से जिस इमारत की बुनियाद पड़ी है, वह जमाने की नज़र से हमेशा महफ़ूज रहे, वह कभी वीरान न हो, उसमें से हमेशा नग़मे की सदाएँ बुलन्द हों, और आफ़ताब की किरणें हमेशा उस पर चमकती रहें।

(सातों भाई गाते हुए मैदान में जाते हैं)

जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!
भाल विशाल चमत्कृत सित हिमगिरि राजे,
परसत बाल प्रभाकर हेम-प्रभा बाजे।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!

ऋषि-मुनि पुण्य तपोनिधि तेज-पुंजधारी,
सब विधि अधम अविद्या भव-भय-तमहारी।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!
जय जय वेद चतुर्मुख अखिल भेद-ज्ञाता,
सुविमल शांति सुधा-निधि मुद-मंगलदाता।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!
जय जय विश्व-विदांवर जय विश्रुतनामी,
जय जय धर्म-धुरंधर जय श्रुति-पथगामी।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!
अजित अजेय अलौकिक अतुलित बलधामा.
पूरन प्रेम-पयोनिधि शुभ गुन-गन-ग्रामा।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!
हे प्रिय पूज्य परम मन नमो-नमो देवा,
बिनवत अधम पापि जन ग्रहन करहु सेवा।
जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते!

अब्बास — ग़जब के जाँबाज हैं। अब मुझ पर यह हक़ीकत खुली कि इस्लाम के दायरे के बाहर भी इस्लाम है। ये सचमुच मुसलमान हैं, और रसूल पाक ऐसे आदमियों की शफ़ाअत न करें, मुमकिन नहीं।

हुसैन — कितनी दिलेरी से लड़ रहे हैं!

अब्बास — फौज में बेख़ौफ घुसे जाते हैं। ऐसी बेजिगरी से किसी को मौत के मुँह में जाते नहीं देखा।

अली अकबर — ऐसे पाँच सौ आदमी भी हमारे साथ होते, तो मैदान हमारा था।

हुसैन — आह! वह साहसराय घोड़े से गिरे। मक्कार शिमर ने पीछे से वार किया। इस्लाम को बदनाम करनेवाला, मूज़ी!

अब्बास — वह दूसरा भाई भी गिरा।

हुसैन — इनके रिवाज के मुताबिक़ लाशों को जलाना होगा। चिता तैयार कराओ।

अली अकबर — तीसरा भाई भी मारा गया।

अब्बास — ज़ालिमों ने चारों तरफ़ से घेर लिया, मगर किस ग़ज़ब के तीरन्दाज़ है। तीर से शोला-सा निकलता है।

अली अकबर — अल्लाह, उनके तीरों से आग निकल रही है। कोहराम मच गया, सारी जमैयत परेशान होकर भागी जा रही है।

अब्बास — चारों सूरमा दुश्मनों के ख़ेमों की तरफ़ जा रहे हैं। फ़ौज काई की तरह फटती जाती है। वह ख़ेमों से शोले निकलने लगे!

अली अकबर — या ख़ुदा, चारों देखते-देखते ग़ायब हो गये।

हुसैन — शायद उनके सामने कोई खन्दक़ खोदी गयी है।

अब्बास — जी हाँ, यही मेरा भी ख़याल है।

हुसैन — चिताएँ तैयार कराओ। अगर फ़रेब न किया जाता, तो ये सारी फ़ौज को ख़ाक कर देते। तीर हैं या मोजज़ा।

अब्बास — ख़ुदा के ऐसे बन्दे भी हैं, जो बिला ग़रज़ हक़ पर सिर कटाते हैं।

हुसैन — ये उस पाक मुल्क के रहनेवाले हैं, जहाँ सबसे पहले तौहीद की सदा उठी थी! ख़ुदा से मेरी दुआ है कि इन्हें शहीदों में ऊँचा रुतबा दे। वह चिता में शोले उठे! ऐ ख़ुदा, यह सोज़ इस्लाम के दिल से कभी न मिटे, इस क़ौम के लिए हमारे दिलेर हमेशा अपना ख़ून बहाते रहें, यह बीज, जो आज आग में बोया गया है, क़यामत तक फलता रहे।

चौथा दृश्य

(जैनब अपने ख़ेमे में बैठी हुई है। शाम का वक़्त)

जैनब — (स्वगत) अब्बास और अली अकबर के सिवा अब भैया के कोई रफ़ीक़ बाक़ी नहीं रहा। सब लोग उन पर निसार हो गये। हाय, क़ासिम-सा जवान, मुस्लिम के बेटे, अब्बास के भाई, भैया इमाम हसन के चारों बेटे, सब दाग़ दिये गये। देखते-देखते हरा-भरा बाग़ वीरान हो गया, गुलज़ार बस्ती उजड़ गयी। सभी माताओं के कलेजे ठंडे हुए। बापों के दिल बाग़-बाग़ हुए। मैं ही बदनसीब नामुराद रह गयी। ख़ुदा ने मुझे भी दो बेटे दिये हैं, पर जब वे काम ही न आयें, तो उनको देखकर जिगर क्या ठंडा हो। इससे तो यही बेहतर होता कि मैं बाँझ ही रहती। तब यह बेवफ़ाई का दाग़ तो माथे पर न लगता। हुसैन ने इन लड़कों को अपने लड़के की तरह समझा, लड़कों की तरह पाला, पर वे इस मुसीबत में, तारीकी में, साए की तरह साथ छोड़े देते हैं, दग़ा कर रहे हैं। हाँ, यह दग़ा नहीं तो और क्या है? आख़िर भैया अपने दिल में क्या समझ रहे होंगे। कहीं यह ख़याल न करते हों कि मैंने ही उन्हें मैदान में जाने से मना कर दिया है। यह ख़याल न पैदा हो कि मैं उनके साथ अपनी ग़रज़ निकालने के लिए ज़मानासाज़ी कर रही थी। आह! उन्हें क्योंकर अपना दिल खोलकर दिखा दूँ कि वह उनके के लिए कितना बेक़रार है। पर अपने लड़कों पर क़ाबू नहीं। जाओ, जैसे तुमने मेरे मुँह में कालिख लगायी है, मैं भी तुम्हें दूध न बख़्शूँगी। ये इतने

कमहिम्मत कैसे हो गये? जिनका नाना रण में तूफ़ान पैदा कर देता था, जिनके बाप की ललकार सुनकर दुश्मनों के कलेजे दहल जाते थे, वह ही लड़के इतने बोदे, पस्तहिम्मत हों। यह मेरी तक़दीर की ख़राबी है, और क्या! जब रण में जाना ही नहीं, तो हथियार से सजकर क्यों मुझे जलाते हैं। भैया को कौन मुँह दिखाऊँगी, उनके सामने आँखें कैसे उठाऊँगी!

(दोनों लड़कों का प्रवेश)

औम — अम्माजान, आप हमारा फ़ैसला कर दीजिए। मैं पहले रण में जाता हूँ, पर यह मुझे जाने नहीं देता, कहता है, पहले मैं जाऊँगा। सुबह से यही बहस छिड़ी हुई है, किसी तरह छोड़ता नहीं। बताओ, बड़े भाई के होते हुए छोटा भाई शहीद हो, यह कहाँ का इन्साफ़ है।

मुहम्मद — तो अम्माजान, यह कहाँ का इन्साफ़ है कि बड़ा भाई तो मरने जाय, और छोटा भाई बैठे उसकी लाश पर मातम करे। अम्मा, आप चाहे खुश हों या नाराज़, यह तो मुझसे न होगा। शायद इनका यह ख़्याल हो कि मैं जंग के क़ाबिल नहीं हूँ। छोटा हूँ, क्या जवाब दूँ, लेकिन ख़ुदा चाहेगा, तो —

एक हमले में गर हम न उलट दें सफ़े-लश्कर,
फिर दूध न अपना हमें तुम बख़्शियों मादर!?
शह के क़दमे-पाक पै सिर देके फिरेंगे,
या रण से सिरे-शिम्रोउमर लेके फिरेंगे।

अम्माजान, आप न मेरी ख़ातिर कीजिए न इनकी, इन्साफ़ से फ़रमाइए, पहले किसको जाने का हक़ है?

जैनब — अच्छा, तुम लोगों के रण में न जाने का यह मतलब था! मैं कुछ और समझ रही थी। प्यारो, तुम्हारी माँ ने तुम्हारी दिलेरी पर शक किया, उसे माफ़ करो। मालूम नहीं, मुझे क्या हो गया था कि मेरे दिल में तुम्हारी तरफ़ से ऐसे बसबसे पैदा हुए। लो, मैं झगड़ा चुकाये देती हूँ। तुम दोनों खुदा का नाम लेकर साथ-साथ सिधारो, और दिखा दो कि तुम किसी से शब्बीर की उलफ़त में कम नहीं हो। मेरी और मेरे ख़ानदान की आबरू तुम्हारे हाथ है।

शेरों के लिए नंग है तलवार से डरना,
मैदान में तन-तन के सिपर सीनों को करना।
हर ज़ख़्म पै दम उलफ़ते-शब्बीर का भरना,
क़ुरबान गयी जीने से, बेहतर है यह मरना।
दुनिया में भला इज़्ज़ते-इस्लाम तो रह जाय,
तुम जीते रहो, या न रहो, नाम तो रह जाय।

नाना का तरह कौन बग़ा करता है देखूँ?
सिर कौन हज़ारों के जुदा करता है देखूँ?
हक़ कौन बहुत माँ का अदा करता है देखूँ!
एक-एक सफ़े-जंग में क्या करता है देखूँ?
दिखलाइयो हाथों से सफ़ाई का तमाशा,
मैं परदे से देखूँगी लड़ाई का तमाशा।

यह तो मैं जानती हूँ कि तुम नाम करोगे, पर कमसिन बहुत हो, इसलिए समझाती हूँ। जाओ, तुम्हें ख़ुदा को सौंपा।

(दोनों मैदान की तरफ़ जाकर लड़ते हैं, और जैनब परदे की आड़ से देखती है। शहरबानू का प्रवेश)

शहरबानू — है-है, बहन, यह तुमने क्या सितम किया? इन नन्हें-नन्हें बच्चों को रण में झोंक दिया। अभी तो अली अकबर बैठा ही हुआ है, अब्बास मौजूद ही है, ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी?

जैनब — वे किसी के रोके रुकते थे? कल ही से हथियार सजे मुंतज़िर बैठे थे। रात-भर तलवारें साफ की गयी हैं। और यहाँ आये ही किस लिए थे। ज़िन्दगी बाक़ी है, तो दोनों फिर आयेंगे। मर जाने का ग़म नहीं, आख़िर किस दिन काम आते। जिहाद में

छोटे-बड़े की तमीज़ नहीं रहती। मैं रसूल पाक को कौन मुँह दिखाती?

शहरबानू — देखो, हाय-हाय, दोनों को दुश्मनों ने किस तरह घेर रखा है। कोई जाकर बेचारों को फेर भी नहीं देता। शब्बीर भी बैठे तमाशा देख रहे हैं, यह नहीं कि किसी को भेज दें। हैं तो ज़रा-ज़रा से, पर कैसे मछलियों की तरह चमकते फिरते हैं! ख़ैर, अच्छा हुआ, अब्बास दौड़े जा रहे हैं।

(अब्बास का मैदान की तरफ़ दौड़े हुए आना)

जैनब — (ख़ेमे से निकलकर) अब्बास, तुम्हें रसूल पाक की क़सम है, जो उन्हें लौटाने जाओ। हाँ, उनका दिल बढ़ाते जाओ। क्या मुझे शहादत के सबाब में कुछ भी देने का इरादा नहीं है? भैया तो इतने ख़ुद-ग़रज़ कभी न थे!

(दोनों भाई मारे जाते हैं। हुसैन और अब्बास उनकी लाश उठाने जाते हैं, और जैनब एक आह भरकर बेहोश हो जाती है)

पाँचवाँ दृश्य

(बारह बजे रात का समय। लड़ाई ज़रा देर के लिए बन्द है। दुश्मन की फ़ौज ग़ाफ़िल है। दरिया का किनारा। अब्बास हाथों में मशक लिये दरिया के किनारे खड़े हैं)

अब्बास — (दिल में) हम दरिया के इतने क़रीब हैं। इतनी ही दूर पर यह दरिया मौज़े मार रहा है, पर हम पानी के एक-एक बूँद को तरसते हैं। दो दिन से किसी के मुँह में पानी का क़तरा नहीं गया, बच्चे वग़ैरह पानी के लिए बिलबिला रहे हैं, औरतों के लब ख़ुश्क हुए जाते हैं, ख़ुद हज़रत हुसैन का बुरा हाथ हो रहा है। मगर कोई अपनी तकलीफ़ किसी से नहीं कहता। बेचारी सकीना तड़प रही थी। काश ये ज़ालिम इसी तरह ग़ाफ़िल पड़े रहते, और मैं मशक लिये हुए बचकर निकल जाता! जी चाहता है, दरिया-का-दरिया पी जाऊँ, पर गैरत गवारा नहीं करती कि घर के सब आदमी तो प्यासों मर रहे हों, और मैं यहाँ अपनी प्यास बुझाऊँ। घोड़े ने भी पानी में मुँह नहीं डाला। वफ़ादार जानवर! तू हैवान होकर इतना ग़ैरतमन्द है, मैं इन्सान होकर बेग़ैरत हो जाऊँ।

(दरिया से पानी लेकर घाट पर चढ़ते हैं)

एक सिपाही — यह कौन पानी लिये जाता है?

अब्बास — (ख़ामोश)।

कई आदमी — क्या कोई पानी ले रहा है? कौन है? खड़ा रह?

(कई सिपाही अब्बास को घेर लेते हैं)

एक — यह तो हुसैन के लश्कर का आदमी है — क्यों जी, तुम्हारा क्या नाम है?

अब्बास — मैं हज़रत हुसैन का भाई अब्बास हूँ।

कई आदमी — छीन लो मशक।

अब्बास — इतना आसान न समझो। एक-एक बूँद पानी के लिए एक-एक सिर देना पड़ेगा। पानी इतना महँगा कभी न बिका होगा।

(अब्बास तलवार खींचकर दुश्मनों पर झपट पड़ते हैं, और उनके घेरे के निकल जाने की कोशिश करते है। शिमर दौड़ा हुआ आता है)

शिमर — ख़बरदार, ख़बरदार, चारों तरफ़ से घेर लो, मशक में नेज़े मारो, मशक में।

अब्बास — अरे ज़ालिम, बेदर्द! तू मुसलमान होकर नबी की औलाद पर इतनी सख़्तियाँ कर रहा है। बच्चे प्यासों तड़प रहे हैं, हज़रत हुसैन का बुरा हाल हो रहा है, और तुझे ज़रा भी दर्द नहीं आता।

शिमर — ख़लीफ़ा से बग़ावत करनेवाला मुसलमान मुसलमान नहीं, और न उसके साथ कोई रियायत की जा सकती है। दिलेरो, बस जंग का इस दम खातमा है। अब्बास का लिया, फिर वहाँ हुसैन के सिवा और कोई बाक़ी न रहेगा।

(सिपाही अब्बास पर नेज़े चलाते है, और अब्बास नेज़ों को तलवार से काट देते हैं। साद का प्रवेश)

साद — ठहरो-ठहरो! दुश्मन को दोस्त बना लेने में जितना फ़ायदा है, उतना क़त्ल करने में नहीं। अब्बास, मैं आपसे कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ। एक दम के लिए तलवार रोक दीजिए। तनी हुई तलवार मसालहत की ज़बान बन्द कर देती है।

अब्बास — मसालहत की गुफ़्तगू अगर करनी है, तो हज़रत हुसैन के पास क्यों नहीं जाते। हालाँकि अब वह कुछ न सुनेंगे। दो भाँजे, दो भतीजे मारे जा चुके, कितने ही अहबाब शहीद हो चुके, वह खुद ज़िन्दगी से बेज़ार हैं, मरने पर कमर बाँध चुके हैं।

साद — तो ऐसी हालत में आपको अपना जान की और भी क़द्र करनी चाहिए। दुनिया में अली की कोई निशानी तो रहे। ख़ानदान का नाम तो न मिटे।

अब्बास — भाई के बाद जीना बेकार है।

साद —

मा बेन लहद साथ बिरादर नहीं जाता,
भाई कोई भाई के लिए मर नहीं जाता।

अब्बास —

भाई के लिए जी से गुज़र जाता है भाई,
जाता है बिरादर भी, जिधर जाता है भाई।
क्या भाई हो तेग़ों में, तो डर जाता है भाई?

आँच आता है भाई पै, तो मर जाता है भाई।

साद — आपसे तो ख़लीफ़ा को कोई दुश्मनी नहीं, आप उनकी बैयत क़बूल कर लें, तो आपकी हर तरह भलाई होगी। आप जो रुतबा चाहेंगे, वह आपको मिल जायगा, और आप हज़रत अली के जाँनशीन समझे जायँगे।

अब्बास — जब हुसैन-जैसे सुलहपसन्द आदमी ने — जिसने कभी गुस्से को पास नहीं आने दिया, जिसने जंग पर कभी सबक़त नहीं की, जिसने आज भी मुझसे ताकीद कर दी कि राह न मिले, तो दरिया पर न जाना — तुम्हारी बात नहीं मानी, तो मैं, जो इन औसाफ़ में से एक भी नहीं रखता, क्योंकर तुम्हारी बातें मानूँगा।

साद — तुम्हें अख़्तियार है।

शिमर — टूट पड़ो, टूट पड़ो।

(एक सिपाही पीछे से आकर एक तलवार मारता है, जिससे अब्बास का दाहिना हाथ कट जाता है। अब्बास बायें हाथ में तलवार ले लेते हैं)

शिमर — अभी एक हाथ बाक़ी है, जो उसे गिरा दे, उसे दीनार इनाम मिलेगा।

(चारों तरफ़ से ज़ख्मी सिपाहियों का आहें सुनायी दे रही हैं। अब्बास सफ़ों को चीरते, सिपाहियों को गिराते हुए हुसैन के ख़ेमे के सामने पहुँच जाते हैं। इतने में एक सिपाही तलवार से उनका बायाँ हाथ भी गिरा देता हैं। शिमर उसकी छाती में भाला चुभा देता है। अब्बास मशक को दाँतों से पकड़ लेते हैं। तब सिर पर एक गुर्ज पड़ता है, और अब्बास घोड़े से गिर पड़ते हैं)

अब्बास — (चिल्लाकर) भैया, तुम्हारा ग़ुलाम अब जाता है — उसकी आख़िरी सलाम क़बूल करो।

(हुसैन ख़ेमे से बाहर निकल दौड़ते हुए आते हैं, और अब्बास के पास पहुँचकर उन्हें गोद में उठा लेते हैं)

हुसैन — आह! मेरे प्यारे भाई, मेरे क़ूबते-बाजू, तुम्हारी मौत ने कमर तोड़ दी। हाय! अब कोई सहारा नहीं रहा। तुम्हें अपने पहलू में देखते हुए मुझे वह भरोसा होता था, जो बच्चे को अपनी

माँ की गोद में होता है। तुम मेरे पुश्तेपनाह थे। हाय! अब किसे देखकर दिल को ढाढ़स होगा। आह! अगर तुम्हें इतनी जल्द रुख़सत होना था, तो पहले मुझी को क्यों न मर जाने दिया? आह! अब तक मैंने तुम्हें इस तरह बचाया था, जैसे कोई आँधी में चिराग़ को बचाता है। पर क़ज़ा से कुछ बस न चला। हाय! मैं ख़ुद क्यों न पानी लेने गया? हाय, अब ख़ैर, भैया, इतनी तस्कीन है कि फिर हमसे-तुमसे जल्द मुलाक़ात होगी, और फिर हम क़यामत तक न जुदा होंगे।

छटा दृश्य

(दोपहर का समय। हुसैन अपने ख़ेमे में खड़े हैं, जैनब, कुलसूम, सकीना, शहरबानू, सब उन्हें घेरे हुए हैं)

हुसैन — जैनब, अब्बास के बाद अली अकबर से दिल को तस्कीन देता था। अब किसे देखकर दिल को ढाढ़स दूँ? हाय! मेरा जवान बेटा प्यासों तड़प-तड़पकर मर गया! किस शान से मैदान की तरफ़ गया था। कितना हँसमुख, कितना हिम्मत का

धनी! जैनब, मैंने उसे कभी उदास नहीं देखा, हमेशा मुस्कराता रहता था। ऐ आँखों! अगर रोयीं, तो तुम्हें निकालकर फेंक दूँगा। ख़ुदा की मर्ज़ी में रोना कैसा। मालूम होता है, सारी क़ुदरत मुझे तबाह करने पर तुली हुई है। यह धूप कि उसकी तरफ़ ताकने ही से आँखें जलने लगती हैं। यह जलता हुआ बालू, ये लू के झुलसानेवाले झोंके, और और यह प्यास! यों ज़िन्दा जलना तीरों और भालों के ज़ख़्मों से कहीं ज़्यादा सख़्त है।

(अली असग़र आता है, और बेहोश होकर गिर पड़ता है)

शहरबानू — हाय, मेरे बच्चे को क्या हुआ!

हुसैन — (असग़र को गोद में उठाकर) आह! यह फूल पानी के बग़ैर मुर्झाया जा रहा है। ख़ुदा, इस रंज में अगर मेरी ज़बान से तेरी शान में कोई बेअदबी हो जाय, तो माफ़ कीजियो, मैं अपने होश में नहीं हूँ। एक कटोरे पानी के लिए इस वक़्त मैं जन्नत से हाथ धोने को तैयार हूँ। (असग़र को गोद में लिये ख़ेमे से बाहर आकर) ऐ ज़ालिमों को, अगर तुम्हारे ख़याल में मैं गुनहगार हूँ, तो इस बच्चे ने तो कोई ख़ता नहीं की है, इसे एक घूँट पानी पिला दो। मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूँ, अगर इसमें तुम्हें शक है, तो

काबा का बेकस मुसाफ़िर तो हूँ। इसमें भी अगर तुम्हें ताम्मुल हो, तो मुसलमान तो हूँ। यह भी नहीं, तो अल्लाह का एक नाचीज़ बंदा तो हूँ। क्या मेरे मरते हुए बच्चे पर तुम्हें रहम भी नहीं आता?

मैं यह नहीं कहता हूँ कि पानी मुझे ला दो,
तुम आनके चिल्लू से इस आब पिला दो।
मरता है यह मरते हुए बच्चे को जिला दो,
लिल्लाह कलेजे की मेरी आग बुझा दो।
जब मुँह मेरा तकता है यह हसरत की नज़र से,
ऐ ज़ालिमों, उठता है धुआँ मेरे ज़िगर से।

(शिमर एक तीर मारता है, जो असग़र के गले को छेदता हुआ हुसैन के बाज़ू में चुभ जाता है। हुसैन जल्दी से तीर को निकालते है, और तीर निकलते ही असग़र की जान निकल जाती है। हुसैन असग़र को लिये फिर ख़ेमे में आते है)

शहरबानू — हाय मेरा फूल-सा बच्चा!

हुसैन — हमेशा के लिए इसकी प्यास बुझ गयी। (ख़ून से चिल्लू भर कर आसमान की तरफ़ उछालते हुए) इन सब आफ़तों का

गवाह ख़ुदा है। अब कौन है, जो ज़ालिमों से इस ख़ून का बदला ले?

(सज्जाद चारपाई से उठकर, लड़खड़ाते हुए, मैदान की तरफ़ चलते हैं)

जैनब — अरे बेटा, तुममें तो खड़े होने की भी ताब नहीं, महीनों से आँखें नहीं खोली, तुम कहाँ जाते हो?

सज्जाद — बिस्तर पर मरने से मैदान में मरना अच्छा है। जब सब जन्नत पहुँच चुके, तो मैं यहाँ क्यों पड़ा रहूँ?

हुसैन — बेटा, ख़ुदा के लिए बाप के ऊपर रहम करो, वापस आओ। रसूल की तुम्हीं एक निशानी हो। तुम्हारे ही ऊपर औरतों कि हिफ़ाज़त का बार है। आह! और कौन है, जो इस फ़र्ज़ को अदा करे! तुम्हीं मेरे जाँनशीन हो, इन सबको तुम्हारे हवाले करता हूँ। ख़ुदा हाफ़िज! ऐ जैनब, ऐ कुलसूम, ऐ सकीना, तुम लोगों पर मेरा सलाम हो कि यह आख़िरी मुलाक़ात है।

(जैनब रोती हुई हुसैन से लिपट जाती है)

सकीना — अब किसका मुँह देखकर जिऊँगी?

हुसैन — जैनब!

मरकर भी न भूलूँगा मैं एहसान तुम्हारे;
बेटों को भला कौन बहन भाई पै वारे।
प्यार न किया उनको, जो थे जान से प्यारे,
बस, माँ की मुहब्बत के ये अंदाज़ हैं सारे!
फ़ाक़े में हमें बर्छियाँ खाने की रज़ा दो;
बस, अब यही उल्फ़त है कि जाने की रज़ा दो।
हमशीर का ग़म है किसी भाई को गवारा?
मज़बूर है, लेकिन असद अल्लाह का प्यारा।
रंज और मुसीबत से कलेजा है दो पारा;
किससे कहूँ, जैसा मुझे सदमा है तुम्हारा।
इस घर की तबाही के लिए रोता है शब्बीर;
तुम छुटती नहीं माँ से जुदा होता है शब्बीर।

(हाथ उठाकर दुआ करते हैं)

या रब , है यह सादात का घर तेरे हवाले;
राँड़ है कई ख़स्ता जिगर तेरे हवाले।
बेकस का है बीमार, पिसर तेरे हवाले;
सब हैं मेरे दरिया के गुहर तेरे हवाले।

(मैदान की तरफ़ जाते हैं)

शिमर — (फ़ौज से) ख़बरदार, ख़बरदार, हुसैन आये। सब-के-सब सँभल जाओ, और समझ लो, अब मैदान तुम्हारा है।

हुसैन — (फ़ौज के सामने खड़े होकर कहते हैं)

बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
माँ ऐसी कि सब जिसकी शफ़ाअत के हैं मुहताज़,
बाप ऐसा, सनमख़ानों को जिसने किया ताराज।
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
लड़ने को अगर हैदर सफ़दर न निकलते,
बुत घर से ख़ुदा के कभी बाहर न निकलते।
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
किस ज़ंग से सीने को सिपर करके न आये?
किस फ़ौज की सफ़ ज़ेर व जबर करके न आये?
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
हम पाक न करते, तो जहाँ पाक न होता,
कुछ ख़ाक की दुनिया में सिवा ख़ाक न होता।
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
यह शोर अज़ाँ का सहरोशाम कहाँ था?

हम अर्श पै जब थे, तो यह इस्लाम कहाँ था?
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।
लाज़िम है कि सादात की इमदाद करो तुम,
ऐ ज़ालिमों, इस घर को न बरबाद करो तुम।
बेटा हूँ अली का व नवासा रसूल का।

(फ़ौज पर टूट पड़ते है)

शिमर — अरे नामर्दो, क्यों भागे जाते हो, कोई शेर नहीं है, जो सबको खा जायगा।

एक सिपाही — ज़रा सामने आकर देखो, तो मालूम हो। पीछे खड़े-खड़े क्या बहादुरी बघारते हो?

दूसरा — अरे, फिर इधर आ रहे हैं! ख़ुदा, बचाना।

तीसरा — उन पर तलवार चलाने को तो हाथ ही नहीं उठते। उनकी सूरत देखते ही कलेजा थर्रा जाता है।

चौथा — मैं तो हवा में तीर छोड़ता हूँ, कौन जाने, कहीं मेरे ही तीर से शहीद हो जायँ तो आक़बत में कौन मुँह दिखाऊँगा।

पाँचवाँ — मैं भी हवा में छोड़ता हूँ।

शिमर — तुफ़ है तुम पर, डूब मरो नामर्दों, घेर कर नेज़ों से क्यों नहीं वार करते?

साद — (शिमर से) हमारे लिए उन्हे घेरना उतना ही मुश्किल है, जितना चूहों के लिए बिल्ली का। उनके सामने कौन है, जिसके क़दम रुकें? वह यो तो ही क़त्ल करते-करते ख़ुद प्यास और थकान से बेदम हो जायँगे।

शिमर — (तीर चलाकर) क्यों भागते हो? क्यों अपने मुँह में कालिख लगाते हो? दुनिया क्या कहेगी, इसकी भी तुम्हें शर्म नहीं?

क़ीस — सारी फ़ौज दहल गयी, उसको खड़ा रखना मुश्किल है।

शीस — अली के सिवा और किसी का यह दम-ख़म नहीं देखा।

शिमर — (तीर चलाकर) सफ़ों को ख़ूब फैला दो, ताकि दौड़ते-दौड़ते गिर पड़े।

हुसैन — साद और शिमर, मैं तुम्हें फिर मौक़ा देता हूँ, मुझे लौट जाने दो, क्यों इन ग़रीबों की जान के दुश्मन हो रहे हो? तुम्हारा मैदान ख़ाली हो गया। तुम्हीं सामने आ जाओ, ज़ंग का फ़ैसला हो जाय।

साद — शिमर, जाते हो?

शिमर — क्यों न जाऊँगा, यहाँ जान देने नहीं आया हूँ।

सा द — मैं जाऊँ भी तो लड़ नहीं सकता।

(हुसैन दरिया का तरफ़ जाते हैं)

शिमर — अब और भी ग़ज़ब हो गया, पानी पीकर लौटे, तो ख़ुदा जाने, क्या करेंगे। हज्जाज़ को ताकीद करनी चाहिए कि दरिया का रास्ता न दे। (हज्जाज़ को बुला कर) हज्जाज़, हुसैन को हर्गिज़ दरिया की तरफ़ न जाने देना।

हज्जाज़ — (स्वगत) यह अज़ाब क्यों अपने सिर लूँ। मुझे भी तो रसूल से क़यामत में काम पड़ेगा। (प्रकट) जी हाँ, आदमियों को जमा कर रहा हूँ।

(हुसैन घोड़े की बाग ढीली कर देते हैं, पर वह पानी की तरफ़ गर्दन नहीं बढ़ाता, मुँह फेरकर हुसैन की रकाब को खींचता है)

हुसैन — आह! मेरे प्यारे बेज़बान दोस्त! तू हैवान होकर आक़ा का इतना लिहाज़ करता है, ये इन्सान होकर अपने रसूल के बेटे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं। मैं तब तक पानी न पिऊँगा, जब तक तू न पियेगा (पानी पीना चाहते हैं)

हज्जाज़ — हुसैन, तुम यहाँ पानी पी रहे हो, और लश्कर ख़ेमों में घुसी जाती है।

हुसैन — तू सच कहता है?

हज्जाज़ — यक़ीन न आये, तो जाकर देख आओ।

हुसैन — (स्वगत) इस बेकली की हालत में कोई मुझसे दग़ा नहीं कर सकता। मरते हुए आदमी से दग़ा करके कोई क्यों अपनी इज़्ज़त से हाथ धोयेगा। (घोड़े को फेर देते हैं और दौड़ाते हुए ख़ेमे की तरफ़ आते हैं) आह! इन्सान उससे कहीं ज़्यादा कमीना और कोरबातिन है, जितना मैं समझता था। इस आख़िरी वक़्त में मुझसे दग़ा की, और महज़ इसलिए कि मैं पानी न पी सकूँ।

(फिर मैदान में आकर लश्कर पर टूट पड़ते हैं, सिपाही इधर-उधर भागने लगते हैं)

शिमर — (तीर चलाकर) तुम मेरे ही हाथों मरोगे।

(तीर हुसैन के मुँह में लगता है, और वह घोड़े से गिर पड़ते हैं। फिर सँभलकर उठते हैं, और तलवार चलाने लगते हैं)

साद — शिमर, तुम्हारे सिपाही हुसैन के ख़ेमों की तरफ़ जा रहे हैं, यह मुनासिब नहीं है।

शिमर — औरतों की हिफ़ाज़त करना हमारा काम नहीं है।

हुसैन — (दाढ़ी से ख़ून पोंछते हुए) साद, अगर तुम्हें दीन का ख़ौफ़ नहीं है, तो इन्सान तो हो, तुम्हारे भी तो बाल-बच्चे हैं। इन बदमाशों को मेरे ख़ेमों में आने से क्यों नहीं रोकते?

साद — आपके ख़ेमों में कोई न जा सकेगा, जब तक मैं ज़िन्दा हूँ।

(ख़ेमों के सामने जाकर खड़ा हो जाता है)

जैनब — (बाहर निकलकर) क्यों साद! हुसैन इस बेकसी से मारे जायँ, और तुम देखते रहो? माल और दुनिया तुम्हें इतनी प्यारी है?

(साद मुँह फेरकर रोने लगता है)

शिमर — तुफ़ है तुम पर ऐ जवानो! एक प्यादा भी तुमसे नहीं मारा जाता! तुम अब नाहक़ डरते हो। हुसैन में अब जान नहीं है, उनके नहीं उठते, पैर थर्रा रहे हैं, आँखें झपकी जाती हैं, फिर भी तुम उनको शेर समझ रहे हो।

हुसैन — (दिल में) मालूम नहीं, मैंने कितने आदमियों को मारा, और अब भी मार सकता हूँ, पर हैं तो ये मरे नाना की ही उम्मत, हैं तो सब मुसलमान, फिर इन्हें मारूँ, तो किस लिए? अब कौन है, जिसके लिए ज़िन्दा रहूँ? हाय, अकबर! किससे कहें, जो ख़ूने-जिगर हमने पाया है, बाद ऐसे पिसर के भी कहीं बाप जिया है। हाय अब्बास!

ग़श आता है हमें प्यास के मारे,
उलफ़त हमें ले आयी फिर पास तुम्हारे।
इन सूखे हुए होठों से होठों को मिलाके,
कुछ मशक में पानी हो, तो भाई को पिला दो।
लेटे हुए हो रेत में क्यों मुँह को छिपाये?
ग़ाफ़िल हो बिरादर तुम्हें किस तरह जगायें?
ख़ुश हूँगा मैं, आगे जो अलम लेके बढ़ोगे।
क्या भाई के पीछे न नमाज़ आज पढ़ोगे?

लड़ते-लड़ते शाम हो गयी, हाथ नहीं उठते। आख़िरी नमाज़ पढ़ लूँ। काश नमाज़ पढ़ते हुए सिर कट जाता, तो कितना अच्छा होता!

(हुसैन नमाज़ में झुक जाते हैं, अशअस पीछे से आकर उनके कंधे पर तलवार मारता है। क़ीस दूसरे कंधे पर तलवार चलाता है। हुसैन उठते हैं, फिर गिर पड़ते है, फ़ौज में सन्नाटा छा जाता है। सब-के-सब उन्हें घेर लेते हैं)

शिमर — ख़लीफ़ा यज़ीद ने हुसैन का सिर माँगा था, कौन यह फ़ख्र हासिल करना चाहता है।

(एक सिपाही आगे बढ़कर तलवार चलाता है। मुस्लिम की छोटी लड़की दौड़ी हुई ख़ेमे से आती है; और हुसैन की पीठ पर हाथ रख देती है)

नसीमा — ओ ख़बीस, क्या तू मेरे चाचा को क़त्ल करेगा?

(तलवार नसीमा के दोनों हाथों पर पड़ती है, और हाथ कट जाते हैं। शीश तलवार लेकर आगे बढ़ता है, हुसैन का मुँह देखते ही तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है)

शिमर — क्यों तलवार क्यों डाल दी?

शीस — उन्होंने जब आँखें खोलकर मुझे देखा, तो मालूम हुआ कि रसूल की आँखें है। मेरे होश उड़ गये।

क़ीस — मैं जाता हूँ।

(तलवार लेकर जाता है, तलवार हाथ से गिर पड़ती है, और उल्टे कदम काँपता हुआ लौट आता है)

शिमर — क्यों, तुम्हें क्या हो गया?

क़ीस — यह हुसैन नहीं, ख़ुद रसूल पाक हैं। रोब से मेरे होश ग़ायब हो गये। या ख़ुदा, जहन्नुम की आग में न डालियो।

शिमर — इनकी मौत मेरे हाथों लिखी हुई है। तुम सब दिल के कच्चे हो।

(तलवार लेकर हुसैन के सीने पर चढ़ बैठता है)

हुसैन — (आँखें खोलते हैं, ओर उसकी तरफ़ ताकते हैं)

शिमर — मैं उन बुज़दिलों में नहीं हूँ, जो तुम्हारी निगाहों से दहल उठे थे।

हुसैन — तू कौन है?

शिमर — मेरा नाम शिमर है।

हुसैन — मुझे पहचानता है?

शिमर — ख़ूब पहचानता हूँ, तुम अली और फ़ातिमा के बेटे और मुहम्मद के नवासे हो।

हुसैन — यह जानकर भी तू मुझे क़त्ल करता है?

शिमर — मुझे जन्नत से जागीरें ज़्यादा प्यारी हैं।

(तलवार मारता है, हुसैन का सिर जुदा हो जाता है)

साद — (रोता हुआ) शिमर, ज़ियाद से कह देना, मुझे 'रै' की जागीर से माफ़ करें। शायद अब भी नजात हो जाय।

(अपने सीने में नेज़ा चुभा लेता है, और बेजान होकर गिर पड़ता है, फ़ौज के कितने ही सिपाही हाथों में मुँह छिपाकर रोने लगते हैं। ख़ेमों से रोने की आवाज़ें आने लगती हैं)

•••

संग्राम

भूमिका

आजकल नाटक लिखने के लिए संगीत का जानना जरूरी है। कुछ कवित्व-शक्ति भी होनी चाहिए। मैं इन दोनों गुणों से असाधारणतः वंचित हूँ। पर इस कथा का ढंग ही कुछ ऐसा था कि मैं इसे उपन्यास का रूप न दे सकता था। यही इन अनाधिकार चेष्टा का मुख्य कारण है। आशा है, सहृदय पाठक मुझे क्षमा करेंगे। मुझसे कदाचित् फिर ऐसी भूल न होगी। साहित्य के इस क्षेत्र में यह मेरा पहला और अंतिम दुस्साहसपूर्ण पद-क्षेप है।

मुझे विश्वास है कि यह नाटक रंगभूमि पर खेला जा सकता है। हाँ, रसज्ञ 'स्टेज मैनेजर' को कहीं-कहीं कुछ काट-छांट करनी पड़ेगी। मेरे लिए नाटक लिखना ही कम दुस्साहस का काम न था। उसे स्टेज के योग्य बनाने की धृष्टता अक्षम्य होती।

मगर मेरी खताओं का अन्त अभी नहीं हुआ है। मैंने एक तीसरी खता भी की है। संगीत से सर्वथा अनभिज्ञ होते हुए भी मैंने, जहाँ कहीं जी में आया है, गाने दे दिये हैं। दो खताएँ माफ करने की प्रार्थना तो मैंने की, पर तीसरी खता किस मुँह से मुआफ कराऊँ? इसके लिए पाठकवृंद और समालोचक महोदय जो दंड दें, शिरोधार्य है।

विनीत

~प्रेमचंद।

पात्र-परिचय

हलधर — मधुबन का किसान नायक

फत्तू — मधुबन का किसान

मंगरू — मधुबन का किसान

हरदास — मधुबन का किसान

सबलसिंह — मधुबन का जमींदार

कंचनसिंह — सबलसिंह का भाई

अचलसिंह — सबलसिंह का पुत्र

चेतनदास — एक संन्यासी

भृगुनाथ — गुलाबी का पुत्र

राजेश्वरी — हलधर की पत्नी

सलोनी — मधुबन की एक वृद्धा

ज्ञानी — सबलसिंह की पत्नी

गुलाबी — सबलसिंह की महराजिन

चम्पा — भृगनाथ की पत्नी

इंस्पेक्टर, थानेदार, सिपाही, डाकू, आदि।

पहला अंक

पहला दृश्य

(प्रभात का समय। सूर्य की सुनहरी किरणें खेतों और वृक्षों पर पड़ रही हैं। वृक्षपुंजों में पक्षियों का कलरव हो रहा है। बसंत ऋतु है। नई-नई कोपलें निकल रही हैं। खेतों में हरियाली छाई

हुई है। कहीं-कहीं सरसों भी फूल रही है। शीत-बिंदु पौधों पर चमक रहे हैं)

हलधर — अब और कोई बाधा न पड़े तो अबकी उपज अच्छी होगी। कैसी मोटी-मोटी बालें निकल रही हैं।

राजेश्वरी — यह तुम्हारी कठिन तपस्या का फल है।

हलधर — मेरी तपस्या कभी इतनी सफल न हुई थी। यह सब तुम्हारे पौरे की बरकत है।

राजेश्वरी — अबकी से तुम एक मजूर रख लेना। अकेले हैरान हो जाते।

हलधर — खेत ही नहीं है। मिलें तो अकेले इसके दुगुने जोत सकता हूँ।

राजेश्वरी — मैं तो गाय जरूर लूँगी। गऊ के बिना घर सूना मालूम होता है।

हलधर — मैं पहले तुम्हारे लिए कंगन बनवाकर तब दूसरी बात करूँगा। महाजन से रुपये ले लूँगा। अनाज तौल दूँगा।

राजेश्वरी — कंगन की इतनी क्या जल्दी है कि महाजन से उधर लो। अभी पहले का भी तो कुछ देना है।

हलधर — जल्दी क्यों नहीं है। तुम्हारे मैके से बुलावा आएगा ही। किसी नए गहने बिना जाओगी तो तुम्हारे गाँव-घर के लोग मुझे हँसेंगे कि नहीं?

राजेश्वरी — तो तुम बुलावा फेर देना। मैं करज लेकर कंगन न बनवाऊँगी। हाँ, गाय पालना जरूरी है। किसान के घर गोरस न हो तो किसान कैसा तुम्हारे लिए दूध-रोटी का कलेवा लाया करूँगी। बड़ी गाय लेना, चाहे दाम कुछ बेशी देना पड़ जाए।

हलधर — तुम्हें और हलकान न होना पड़ेगा। अभी कुछ दिन आराम कर लो, फिर तो यह चक्की पीसनी ही है।

राजेश्वरी — खेलना-खाना भाग्य में लिखा होता तो सास-ससुर क्यों सिधार जाते? मैं अभागिन हूँ। आते-ही-आते उन्हें चट कर गई। नारायण दें तो उनकी बरसी धूम से करना।

हलधर — हाँ, यह तो मैं पहले ही सोच चुका हूँ, पर तुम्हारा कंगन बनना भी जरूरी है। चार आदमी ताने देने लगेंगे तो क्या करोगी?

राजेश्वरी — इसकी चिंता मत करो, मैं उनका जवाब दे लूँगी लेकिन मेरी तो जाने की इच्छा ही नहीं है। जाने और बहुएँ कैसे मैके जाने को व्याकुल होती हैं, मेरा तो अब वहाँ एक दिन भी जी न लगेगी। अपना घर सबसे अच्छा लगता है। अबकी तुलसी का

चौतरा जरूर बनवा देना, उसके आस-पास बेला, चमेली, गेंदा और गुलाब के फूल लगा दूँगी तो आंगन की शोभा कैसी बढ़ जाएगी!

हलधर — वह देखो, तोतों का झुंड मटर पर टूट पड़ा।

राजेश्वरी — मेरा भी जी एक तोता पालने को चाहता है। उसे पढ़ाया करूँगी।

(गुलेल उठाकर तोतों की ओर चलाता है)

राजेश्वरी — छोड़ना मत, बस दिखाकर उड़ा दो।

हलधर — वह मारा! एक फिर गया।

राजेश्वरी — राम-राम, यह तुमने क्या किया? चार दानों के पीछे उसकी जान ही ले ली। यह कौन-सी भलमनसी है?

हलधर — (लज्जित होकर) मैंने जानकर नहीं मारा।

राजेश्वरी — अच्छा तो इसी दम गुलेल तोड़कर फेंक दो। मुझसे यह पाप नहीं देखा जाता। किसी पशु-पक्षी को तड़पते देखकर मेरे रोयें खड़े हो जाते हैं। मैंने तो दादा को एक बार बैल की पूंछ मरोड़ते देखा था, रोने लगी। तब दादा ने वचन दिया कि अब कभी बैलों को न मारूँगा। तब जाके चुप हुई मेरे गाँव में

सब लोग औंगी से बैलों को हाँकते हैं। मेरे घर कोई मजूर भी औंगी नहीं चला सकता।

हलधर — आज से परन करता हूँ कि कभी किसी जानवर को न मारूँगा।

(फत्तू मियाँ का प्रवेश)

फत्तू — हलधर, नजर नहीं लगाता, पर अबकी तुम्हारी खेती गाँव भर से उसपर है। तुमने जो आम लगाए हैं वे भी खूब बौरे हैं।

हलधर — दादा, यह सब तुम्हारा आशीर्वाद है। खेती न लगती तो काका की बरसी कैसे होती?

फत्तू — हाँ बेटा, भैया का काम दिल खोलकर करना।

हलधर — तुम्हें मालूम है दादा, चांदी का क्या भाव है। एक कंगन बनवाना था।

फत्तू — सुनता हूँ अब रुपये की रुपये-भर हो गई है। कितने की चाँदी लोगे?

हलधर — यही कोई चालीस-पैंतालीस रुपये की।

फत्तू — जब कहना चलकर ले दूँगा। हाँ, मेरा इरादा कटरे जाने का है। तुम भी चलो तो अच्छा। एक अच्छी भैंस लाना। गुड़ के रुपये तो अभी रखे होंगे न?

हलधर — कहाँ दादा, वह सब तो कंचनसिंह को दे दिए। बीघे-भर भी तो न थी, कमाई भी अच्छी न हुई थी, नहीं तो क्या इतनी जल्दी पेल-पालकर छुट्टी पा जाता?

फत्तू — महाजन से तो कभी गला ही नहीं छूटता।

हलधर — दो साल भी तो लगातार खेती नहीं जमती, गला कैसे छूटे!

फत्तू — यह घोड़े पर कौन आ रहा है? कोई अफसर है क्या?

हलधर — नहीं, ठाकुर साहब तो हैं। घोड़ा नहीं पहचानते? ऐसे सच्चे पानी का घोड़ा दस-पाँच कोस तक नहीं है।

फत्तू — सुना, एक हजार दाम लगते थे पर नहीं दिया।

हलधर — अच्छा जानवर बड़े भागों से मिलता है। कोई कहता था। अबकी घुड़दौड़ में बाजी जीत गया। बड़ी-बड़ी दूर से घोड़े आए थे, पर कोई इसके सामने न ठहरा। कैसा शेर की तरह गर्दन उठा के चलता है।

फत्तू — ऐसे सरदार को ऐसा ही घोड़ा चाहिए। आदमी हो तो ऐसा हो, अल्लाह ने इतना कुछ दिया है, पर घमंड छू तक नहीं गया। एक बच्चा भी जाए तो उससे प्यार से बातें करते हैं। अबकी ताऊन के दिनों में इन्होंने दौड़-धूप न की होती तो सैकड़ों जानें जातीं।

हलधर — अपनी जान को तो डरते ही नहीं इधर ही आ रहे हैं। सबेरे-सबेरे भले आदमी के दर्शन हुए।

फत्तू — उस जन्म के कोई महात्मा हैं, नहीं तो देखता हूँ जिसके पास चार पैसे हो गए वह यही सोचने लगता है कि किसे पीस के पी जाऊँ। एक बेगार भी नहीं लगती, नहीं तो पहले बेगार देते-देते धुर्रे उड़ जाते थे। इसी गरीब-परवरी की बरकत है कि गाँवों में न कोई कारिंदा है, न चपरासी, पर लगान नहीं रुकता। लोग मीयाद के पहले ही दे आते हैं। बहुत गाँव देखे पर ऐसा ठाकुर नहीं देखा।

(सबलसिंह घोड़े पर आकर खड़ा हो जाता है। दोनों आदमी झुक-झुककर सलाम करते हैं। राजेश्वरी घूंघट निकाल लेती है)

सबल — कहो बड़े मियाँ, गाँव में सब खैरियत है न?

फत्तू — हुज़ूर के अकबाल से सब खैरियत है।

सबल — फिर वही बात। मेरे अकबाल को क्यों सराहते हो, यह क्यों नहीं कहते कि ईश्वर की दया से या अल्लाह के फजल से खैरियत है। अबकी खेती तो अच्छी दिखाई देती है?

फत्तू — हाँ सरकार, अभी तक तो ख़ुदा का फजल है।

सबल — बस, इसी तरह बातें किया करो। किसी आदमी की खुशामद मत करो, चाहे वह जिले का हाकिम ही क्यों न हो, हाँ, अभी किसी अफसर का दौरा तो नहीं हुआ?

फत्तू — नहीं सरकार, अभी तक तो कोई नहीं आया।

सबल — और न शायद आएगी। लेकिन कोई आ भी जाए तो याद रखना, गाँव से किसी तरह की बेगार न मिले। साफ कह देना, बिना जमींदार के हुक्म के हम लोग कुछ नहीं दे सकते। मुझसे जब कोई पूछेगा तो देख लूँगा। (मुस्कराकर) हलधर! नया गौना लाए हो, हमारे घर बैना नहीं भेजा?

हलधर — हुज़ूर, मैं किस लायक हूँ।

सबल — यह तो तुम तब कहते जब मैं तुमसे मोतीचूर के लड्डू या घी के खाजे माँगता। प्रेम से शीरे और सत्तू के लड्डू भेज देते तो मैं उसी को धन्य-भाग्य कहता। यह न समझो कि हम लोग

सदा घी और मैदे खाया करते हैं। मुझे बाजरे की रोटियाँ और तिल के लड्डू और मटर के चबेना कभी-कभी हलवा और मुरब्बे से भी अच्छे लगते हैं। एक दिन मेरी दावत करो, मैं तुम्हारी नयी दुलहिन के हाथ का बनाया हुआ भोजन करना चाहता हूँ। देखें यह मैके से क्या गुन सीख कर आई है। मगर खाना बिल्कुल किसानों का-सा हो, अमीरों का खाना बनवाने की फिक्र मत करना।

हलधर — हम लोगों के लिट्टे सरकार को पसंद आएँगे?

सबल — हाँ, बहुत पसंद आएँगे।

हलधर — जब हुक्म हो।

सबल — मेहमान के हुक्म से दावत नहीं होती। खिलाने वाला अपनी मर्जी से तारीख और वक्त ठीक करता है। जिस दिन कहो, आऊँ। फत्तू, तुम बतलाओ, इसकी बहू काम-काज में चतुर है न? जबान की तेज तो नहीं है?

फत्तू — हुज़ूर, मुँह पर क्या बखान करूँ, ऐसी मेहनतिन औरत गाँव में और नहीं है। खेती का तार-तौर जितना यह समझती है उतना हलधर भी नहीं समझता। सुशील ऐसी है कि यहाँ आए आठवाँ महीना होता है, किसी पड़ोसी ने आवाज नहीं सुनी।

सबल — अच्छा तो मैं अब चलूँगा, जरा मुझे सीधे रास्ते पर लगा दो, नहीं तो यह जानवर खेतों को रौंद डालेगा। तुम्हारे गाँव से मुझे साल में पंद्रह सौ रुपये मिलते हैं। इसने एक महीने में पाँच हजार रुपये की बाजी मारी। हलधर, दावत की बात भूल न जाना।

(फत्तू और सबलसिंह जाते हैं)

राजेश्वरी — आदमी काहे को है, देवता हैं। मेरा तो जी चाहता था। उनकी बातें सुना करूँ। जी ही नहीं भरता था।एक हमारे गाँव का जमींदार है कि प्रजा को चैन नहीं लेने देता। नित्य एक-न -एक बेगार, कभी बेदखली, कभी जागा, कभी कुड़की, उसके सिपाहियों के मारे छप्पर पर कुम्हड़े-कद्दू तक नहीं बचने पाते। औरतों को राह चलते छेड़ते हैं। लोग रात-दिन मनाया करते हैं कि इसकी मिट्टी उठे। अपनी सवारी के लिए हाथी लाता है, उसका दाम असामियों से वसूल करता है। हाकिमों की दावत करता है, सामान गाँव वालों से लेता है।

हलधर — दावत सचमुच करूँ कि दिल्लगी करते थे?

राजेश्वरी — दिल्लगी नहीं करते थे, दावत करनी होगी। देखा नहीं, चलते-चलते कह गए। खाएँगे तो क्या, बड़े आदमी छोटों का मान रखने के लिए ऐसी बातें किया करते हैं, पर आएँगे जरूर।

हलधर — उनके खाने लायक भला हमारे यहाँ क्या बनेगा?

राजेश्वरी — तुम्हारे घर वह अमीरी खाना खाने थोड़े ही आएँगी। पूरी-मिठाई तो नित्य ही खाते हैं। मैं तो कुटे हुए जौ की रोटी, सावाँ की महेर, बथुवे का साफ, मटर की मसालेदार दाल और दो-तीन तरह की तरकारी बनाऊँगी। लेकिन मेरा बनाया खाएँगे? ठाकुर हैं न?

हलधर — खाने-पीने का इनको कोई विचार नहीं है। जो चाहे बना दे। यही बात इनमें बुरी है। सुना है अंग्रेजों के साथ कलपघर में बैठकर खाते हैं।

राजेश्वरी — ईसाई मत में आ गए?

हलधर — नहीं, असनान, ध्यान सब करते हैं। गऊ को कौरा दिए बिना कौर नहीं उठाते। कथा-पुराण सुनते हैं। लेकिन खाने-पीने में भ्रष्ट हो गए हैं।

राजेश्वरी — उह, होगा, हमें कौन उनके साथ बैठकर खाना है। किसी दिन बुलावा भेज देना। उनके मन की बात रह जाएगी।

हलधर — खूब मन लगा के बनाना।

राजेश्वरी — जितना सहूर है उतना करूँगी। जब वह इतने प्रेम से भोजन करने आएँगे तो कोई बात उठा थोड़े ही रखूँगी। बस, इसी एकादशी को बुला भेजो, अभी पाँच दिन हैं।

हलधर — चलो, पहले घर की सगाई तो कर डालें।

दूसरा दृश्य

(सबलसिंह अपने सजे हुए दीवानखाने में उदास बैठे हैं। हाथ में एक समाचार-पत्र है, पर उनकी आँखें दरवाजे के सामने बाग की तरफ लगी हुई हैं)

सबलसिंह — (आप-ही-आप) देहात में पंचायतों का होना जरूरी है। सरकारी अदालतों का खर्च इतना बढ़ गया है कि कोई गरीब आदमी वहाँ न्याय के लिए जा ही नहीं सकता। जार-सी भी कोई बात कहनी हो तो स्टाम्प के बगैर काम नहीं चल सकता। उसका कितना सुडौल शरीर है, ऐसा जान पड़ता है कि एक-एक

अंग सांचे में ढला है। रंग कितना प्यारा है, न इतना गोरा कि आँखों को बुरा लगे, न इतना साँवला होगा, मुझे इससे क्या मतलब वह परायी स्त्री है, मुझे उसके रूप-लावण्य से क्या वास्ता। संसार में एक-से-एक सुंदर स्त्रियाँ हैं, कुछ यही एक थोड़ी है? ज्ञानी उससे किसी बात में कम नहीं, कितनी सरल ह्रदया, कितनी मधुर-भाषिणी रमणी है। अगर मेरा जरा-सा इशारा हो तो आग में कूद पड़े। मुझ पर उसकी कितनी भक्ति, कितना प्रेम है। कभी सिर में दर्द भी होता है तो बावली हो जाती है। अब उधर मन को जाने ही न दूँगा।

(कुर्सी से उठकर आल्मारी से एक ग्रंथ निकालते हैं, उसके दो-चार पन्ने इधर-उधर से उलटकर पुस्तक को मेज पर रख देते हैं और फिर कुर्सी पर जा बैठते हैं। अचलसिंह हाथ में एक हवाई बंदूक लिए दौड़ा आता है)

अचल — दादाजी, शाम हो गई। आज घूमने न चलिएगा?

सबल — नहीं बेटा! आज तो जाने का जी नहीं चाहता। तुम गाड़ी जुतवा लो। यह बंदूक कहाँ पाई?

अचल — इनाम में. मैं दौड़ने में सबसे अव्वल निकला। मेरे साथ कोई पच्चीस लड़के दौड़े थे। कोई कहता था।, मैं बाजी मारूँगा, कोई अपनी डींग मार रहा था। जब दौड़ हुई तो मैं सबसे आगे निकला, कोई मेरे गर्द को भी न पहुंचा, अपना-सा मुँह लेकर रह गए। इस बंदूक से चाहूँ तो चिड़िया मार लूँ।

सबल — मगर चिड़ियों का शिकार न खेलना।

अचल — जी नहीं, यों ही बात कहता था। बेचारी चिड़ियों ने मेरा क्या बिगाड़ा है कि उनकी जान लेता फिरूँ। मगर जो चिड़िया दूसरी चिड़ियों का शिकार करती हैं उनके मारने में तो कोई पाप नहीं है।

सबल — (असमंजस में पड़कर) मेरी समझ में तो तुम्हें शिकारी चिड़ियों को भी न मारना चाहिए। चिड़ियों में कर्म-अकर्म का ज्ञान नहीं होता। वह जो कुछ करती हैं केवल स्वभाव-वश करती हैं, इसलिए वह दण्ड की भागी नहीं हो सकती।

अचल — कुत्ता कोई चीज चुरा ले जाता है तो क्या जानता नहीं कि मैं बुरा कर रहा हूँ। चुपके-चुपके, पैर दबाकर इधर-उधर चौकन्नी आँखों से ताकता हुआ जाता है, और किसी आदमी की आहट पाते ही भाग खड़ा होता है। कौवे का भी यही हाल है।

इससे तो मालूम होता है कि पशु-पक्षियों को भी भले-बुरे का ज्ञान होता है; तो फिर उनको दंड क्यों न दिया जाए?

सबल — अगर ऐसा ही हो तो हमें उनको दंड देने का क्या अधिकार है? हालांकि इस विषय में हम कुछ नहीं कह सकते कि शिकारी चिड़ियों में वह ज्ञान होता है, जो कुत्ते या कौवे में है या नहीं

अचल — अगर हमें पशु-पक्षी, चोरों को दंड देने का अधिकार नहीं है तो मनुष्य में चोरों को क्यों ताड़ना दी जाती है? वह जैसा करेंगे उसके फल आप पाएँगे, हम क्यों उन्हें दंड दें?

सबल — (मन में) लड़का है तो नन्हा-सा बालक मगर तर्क खूब करता है। (प्रकट) बेटा! इस विषय में हमारे प्राचीन ऋषियों ने बड़ी मार्मिक व्यवस्थाएँ की हैं, अभी तुम न समझ सकोगी। जाओ सैर कर आओ, ओवरकोट पहन लेना, नहीं तो सर्दी लग जाएगी।

अचल — मुझे वहाँ कब ले चलिएगा जहाँ आप कल भोजन करने गए थे? मैं भी राजेश्वरी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाना चाहता हूँ। आप चुपके से चले गए, मुझे बुलाया तक नहीं, मेरा तो जी चाहता है कि नित्य गाँव ही में रहता, खेतों में घूमा करता।

सबल — अच्छा, अब जब वहाँ जाऊँगा तो तुम्हें भी साथ ले लूँगा।

(अचलसिंह चला जाता है)

सबल — (आप-ही-आप) लेख का दूसरा पाइंट (मुद्दा) क्या होगा? अदालतें सबलों के अन्याय की पोषक हैं। जहाँ रुपयों के द्वारा फरियाद की जाती हो, जहाँ वकीलों? बैरिस्टरों के मुँह से बात की जाती हो, वहाँ गरीबों की कहाँ पैठ? यह अदालत नहीं, न्याय की बलिवेदी है। जिस किसी राज्य की अदालतों का यह हाल हो। जब वह थाली परस कर मेरे सामने लाई तो मुझे ऐसा मालूम होता था। जैसे कोई मेरे हृदय को खींच रहा हो, अगर उससे मेरा स्पर्श हो जाता तो शायद मैं मूर्च्छित हो जाता। किसी उर्दू कवि के शब्दों में यौवन फटा पड़ता था। कितना कोमल गात है, न जाने खेतों में कैसे इतनी मेहनत करती है। नहीं, यह बात नहीं खेतों में काम करने ही से उसका चम्पई रंग निखर कर कुंदन हो गया है। वायु और प्रकाश ने उसके सौंदर्य को चमका दिया है। सच कहा है हुस्न के लिए गहनों की आवश्यकता नहीं उसके शरीर पर कोई आभूषण न था।, किंतु सादगी आभूषणों से कहीं ज्यादा मनोहारिणी थी। गहने सौंदर्य की शोभा क्या बढ़ाएँगे, स्वयं अपनी शोभा बढ़ाते हैं। उस सादे व्यंजन में कितना स्वाद था? रूप-लावण्य ने भोजन को भी स्वादिष्ट बना दिया था। मन

फिर उधर गया, यह मुझे क्या हो गया है। यह मेरी युवावस्था नहीं है कि किसी सुंदरी को देखकर लट्टू हो जाऊँ, अपना प्रेम हथेली पर लिए प्रत्येक सुंदरी स्त्री की भेंट करता फिरूँ। मेरी प्रौढ़ावस्था है, पैंतीसवें वर्ष में हूँ। एक लड़के का बाप हूँ जो छ-सात वर्षों में जवान होगी। ईश्वर ने दिए होते तो चार-पाँच संतानों का पिता हो सकता था। यह लोलुपता है, छिछोरापन है। इस अवस्था में, इतना विचारशील होकर भी मैं इतना मलिन-हृदय हो रहा हूँ। किशोरावस्था में तो मैं आत्मशुद्धि पर जान देता था, फूँक-फूँककर कदम रखता था।, आदर्श जीवन व्यतीत करता था। और इस अवस्था में जब मुझे आत्मचिन्तन में मग्न होना चाहिए, मेरे सिर पर यह भूत सवार हुआ है। क्या यह मुझसे उस समय के संयम का बदला लिया जा रहा है। अब मेरी परीक्षा की जा रही है?

(ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — तुम्हारी ये सब किताबें कहीं छुपा दूँ? जब देखो तब एक-न -एक पोथा। खोले बैठे रहते हो, दर्शन तक नहीं होते।

सबल — तुम्हारा अपराधी मैं हूँ, जो दंड चाहे दो। यह बेचारी पुस्तकें बेकसूर हैं।

ज्ञानी — गुलबिया आज बगीचे की तरफ गई थी। कहती थी, आज वहाँ कोई महात्मा आए हैं। सैकड़ों आदमी उनके दर्शनों को जा रहे हैं। मेरी भी इच्छा हो रही है कि जाकर दर्शन कर आऊँ।

सबल — पहले मैं आकर जरा उनके रंग-ढंग देख लूँ तो फिर तुम जाना। गेरुए कपड़े पहनकर महात्मा कहलाने वाले बहुत हैं।

ज्ञानी — तुम तो आकर यही कह दोगे कि वह बना हुआ है, पाखण्डी है, धूर्त है, उसके पास न जाना। तुम्हें जाने क्यों महात्माओं से चिढ़ है।

सबल — इसीलिए चिढ़ है कि मुझे कोई सच्चा साधु नहीं दिखाई देता।

ज्ञानी — इनकी मैंने बड़ी प्रशंसा सुनी है। गुलाबी कहती थी कि उनका मुँह दीपक की तरह दमक रहा था। सैकड़ों आदमी घेरे हुए थे पर वह किसी से बात तक न करते थे।

सबल — इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह कोई सिद्ध पुरूष हैं। अशिष्टता महात्माओं का लक्षण नहीं है।

ज्ञानी — खोज में रहने वाले को कभी-कभी सिद्ध पुरूष भी मिल जाते हैं। जिसमें श्रद्धा नहीं है उसे कभी किसी महात्मा से साक्षात् नहीं हो सकता। तुम्हें संतान की लालसा न हो पर मुझे तो है। दूध-पूत से किसी का मन भरते आज तक नहीं सुना।

सबल — अगर साधुओं के आशीर्वाद से संतान मिल सकती तो आज संसार में कोई निस्संतान प्राणी खोजने से भी न मिलता। तुम्हें भगवान् ने एक पुत्र दिया है। उनसे यही याचना करो कि उसे कुशल से रखें। हमें अपना जीवन अब सेवा और परोपकार की भेंट करना चाहिए।

ज्ञानी — (चिढ़कर) तुम ऐसी निर्दयता से बातें करने लगते हो इसी से कभी इच्छा नहीं होती कि तुमसे अपने मन की बात कहूँ। लो, अपनी किताबें पढ़ो इनमें में तुम्हारी जान बसती है, जाती हूँ

सबल — बस रूठ गई। चित्रकारों ने क्रोध की बड़ी भयंकर कल्पना की है, पर मेरे अनुभव से यह सिद्ध होता है कि सौंदर्य क्रोध ही का रूपांतर है। कितना अनर्थ है कि ऐसी मोहिनी मूर्ति को इतना विकराल स्वरूप दे दिया जाए?

ज्ञानी — (मुस्कराकर) नमक-मिर्च लगाना कोई तुमसे सीख ले। मुझे भोली पाकर बातों में उड़ा देते हो,लेकिन आज मैं न मानूँगी

सबल — ऐसी जल्दी क्या है? मैं स्वामीजी को यहीं बुला लाऊँगा, खूब जी भरकर दर्शन कर लेना। वहाँ बहुत से आदमी जमा होंगे, उनसे बातें करने का भी अवसर न मिलेगी। देखने वाले हंसी उड़ाएँगे कि पति तो साहब बना गिरता है और स्त्री साधुओं के पीछे दौड़ा करती है।

ज्ञानी — अच्छा, तो कब बुला दोगे?

सबल — कल पर रखो।

(ज्ञानी चली जाती है)

सबलसिंह — (आज-ही-आप) संतान की क्यों इतनी लालसा होती है? जिसके संतान नहीं है वह अपने को अभागा समझता है, अहर्निश इसी क्षोभ और चिंता में डूबा रहता है। यदि यह लालसा इतनी व्यापक न होती तो आज हमारा धार्मिक जीवन कितना शिथिल, कितना नीरव होता। न तीर्थयात्राओं की इतनी धूम होती, न मंदिरों की इतनी रौनक, न देवताओं में इतनी भक्ति, न साधु-महात्माओं पर इतनी श्रद्धा, न दान और व्रत की इतनी धूम। यह

सब कुछ संतान-लालसा का ही चमत्कार है! खैर कल चलूँगा, देखूँ इन स्वामीजी के क्या रंग-ढंग हैं। अदालतों की बात सोच रहा था। यह आक्षेप किया जाता है कि पंचायतें यथार्थ न्याय न कर सकेंगी, पंच लोग मुँह-देखी करेंगे और वहाँ भी सबलों की ही जीत होगी। इसका निवारण यों हो सकता है कि स्थायी पंच न रखे जाएँ। जब जरूरत हो, दोनों पक्षों के लोग अपने?अपने पंचों को नियत कर दें। किसानों में भी ऐसी कामिनियाँ होती हैं, यह मुझे न मालूम था। यह निस्संदेह किसी उच्च कुल की लड़की है। किसी कारणवश इस दुरवस्था में आ फँसी है। विधाता ने इस अवस्था में रखकर उसके साथ अत्याचार किया है। उसके कोमल हाथ खेतों में कुदाल चलाने के लिए नहीं बनाए गए हैं, उसकी मधुर वाणी खेतों में कौवे हाँकने के लिए उपयुक्त नहीं है, जिनके केशों से झूमर का भार भी न सहा जाए उन पर उपले और अनाज के टोकरे रखना महान् अनर्थ है, माया की विषम लीला है। भाग्य का क्रूर रहस्य है। वह अबला है, विवश है, किसी से अपने हृदय की व्यथा। कह नहीं सकती। अगर मुझे मालूम हो जाये कि वह इस हालत में सुखी है, तो मुझे संतोष हो जाएगी। पर वह कैसे मालूम हो, कुलवती स्त्रियाँ अपनी विपत्ति? कथा। नहीं कहतीं, भीतर-ही-भीतर जलती हैं पर जबान से हाय नहीं करती। मैं फिर उसी उधेड़-बुन में पड़ गया। समझ में नहीं

आता मेरे चित्त की यह दशा क्यों हो रही है। अब तक मेरा मन कभी इतना चंचल नहीं हुआ था। मेरे युवाकाल के सहवासी तक मेरी अरसिकता पर आश्चर्य करते थे। अगर मेरी इस लोलुपता की जरा भी भनक उनके कान में पड़ जाए तो मैं कहीं मुँह दिखाने लायक न रहूँ। यह आग मेरे हृदय में ही जले, और चाहे हृदय जलकर राख हो जाए पर उसकी कराह किसी के कान में न पड़ेगी। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। यह प्रेम-ज्योति उद्दीप्त करने में भी उसकी कोई-न-कोई मसलहत जरूर होगी। (घंटी बजाता है)

एक नौकर — हुज़ूर हुकुम?

सबल — घोड़ा खींचो।

नौकर — बहुत अच्छा।

तीसरा दृश्य

(समय — आठ बजे दिन। स्थान — सबलसिंह का मकान। कंचनसिंह अपनी सजी हुई बैठक में दुशाला ओढ़े, आँखों पर

सुनहरी ऐनक चढ़ाए मसनद लगाए बैठे हैं, मुनीमजी बही में कुछ लिख रहे हैं)

कंचन — समस्या यह है कि सूद की दर कैसे घटाई जाए। भाई साहब मुझसे नित्य ताकीद किया करते हैं कि सूद कम लिया करो। किसानों की ही सहायता के लिए उन्होंने मुझे इस कारोबार में लगाया। उनका मुख्य उद्देश्य यही है। पर तुम जानते हो धन के बिना धर्म नहीं होता। इलाके की आमदनी घर के जरूरी खर्च के लिए भी काफी नहीं होती। भाई साहब ने किफायत का पाठ नहीं पढ़ा। उनके हजारों रुपये साल तो केवल अधिकारियों के सत्कार की भेंट हो जाते हैं। घुड़दौड़ और पोलो और क्लब के लिए धन चाहिए। अगर उनके आसरे रहूँ तो सैकड़ों रुपये जो मैं स्वयं साधुजनों की अतिथि-सेवा में खर्च करता हूँ, कहाँ से आएँ?

मुनीम — वह बुद्धिमान पुरूष हैं, पर न जाने यह फ़जूलखर्ची क्यों करते हैं?

कंचन — मुझे बड़ी लालसा है कि एक विशाल धर्मशाला बनवाऊँ। उसके लिए धन कहाँ से आएगा? भाई साहब के आज्ञानुसार नाम-मात्र के लिए ब्याज लूँ तो मेरी सब कामनाएँ धरी

ही रह जाएँ। मैं अपने भोग-विलास के लिए धन नहीं बटोरना चाहता, केवल परोपकार के लिए चाहता हूँ। कितने दिनों से इरादा कर रहा हूँ कि एक सुंदर वाचनालय खोल दूँ। पर पर्याप्त धन नहीं यूरोप में केवल एक दानवीर ने हजारों वाचनालय खोल दिए हैं। मेरा हौसला इतना तो नहीं पर कम-से-कम एक उत्तम वाचनालय खोलने की अवश्य इच्छा है। सूद न लूँ तो मनोरथ पूरे होने के और क्या साधन हैं? इसके अतिरिक्त यह भी तो देखना चाहिए कि मेरे कितने रुपये मारे जाते हैं? जब असामी के पास कुछ जायदाद ही न हो तो रुपये कहाँ से वसूल हों। यदि यह नियम कर लूँ कि बिना अच्छी जमानत के किसी को रुपये ही न दूँगा तो गरीबों का काम कैसे चलेगा? अगर गरीबों से व्यवहार न करूँ तो अपना काम नहीं चलता। वह बेचारे रुपये चुका तो देते हैं। मोटे आदमियों से लेन-देन कीजिए तो अदालत गए बिना कौड़ी नहीं वसूल होती।

(हलधर का प्रवेश)

कंचन — कहो हलधर, कैसे चले?

हलधर — कुछ नहीं सरकार, सलाम करने चला आया।

कंचन — किसान लोग बिना किसी प्रयोजन के सलाम करने नहीं चलते। फारसी कहावत है — सलामे दोस्ताई बेग़रज नेस्त।

हलधर — आप तो जानते ही हैं फिर पूछते क्यों हैं? कुछ रुपयों का काम था।

कंचन — तुम्हें किसी पंडित से साइत पूछकर चलना चाहिए था। यहाँ आजकल रुपयों का डौल नहीं क्या करोगे रुपये लेकर?

हलधर — काका की बरसी होने वाली है। और भी कई काम हैं।

कंचन — स्त्री के लिए गहने भी बनवाने होंगे?

हलधर — (हँसकर) सरकार, आप तो मन की बात ताड़ लेते हैं।

कंचन — तुम लोगों के मन की बात जान लेना ऐसा कोई कठिन काम नहीं, केवल खेती अच्छी होनी चाहिए। यह फसल अच्छी है, तुम लोगों को रुपये की जरूरत होना स्वाभाविक है। किसान ने खेत में पौधे लहराते हुए देखे और उनके पेट में चूहे कूदने लगे नहीं तो ऋण लेकर बरसी करने या गहने बनवाने का क्या काम, इतना सब्र नहीं होता कि अनाज घर में आ जाए तो यह सब मनसूबे बांधें। मुझे रुपयों का सूद दोगे, लिखाई दोगे, नजराना दोगे, मुनीमजी की दस्तूरी दोगे, दस के आठ लेकर घर जाओगे,

लेकिन यह नहीं होता कि महीने-दो-महीने रुक जाएँ। तुम्हें तो इस घड़ी रुपये की धुन है, कितना ही समझाऊँ, ऊँच-नीच सुझाऊँ मगर कभी न मानोगे। रुपये न दूँ तो मन में गालियाँ दोगे और किसी दूसरे महाजन की चिरौरी करोगी।

हलधर — नहीं सरकार, यह बात नहीं है, मुझे सचमुच ही बड़ी जरूरत है।

कंचन — हाँ-हाँ, तुम्हारी जरूरत में किसे संदेह है, जरूरत न होती तो यहाँ आते ही क्यों, लेकिन यह ऐसी जरूरत है जो टल सकती है, मैं इसे जरूरत नहीं कहता, इसका नाम ताव है, जो खेती का रंग देखकर सिर पर सवार हो गया है।

हलधर — आप मालिक हैं जो चाहे कहैं। रुपयों के बिना मेरा काम न चलेगा। बरसी में भोज-भात देना ही पड़ेगा, गहना-पाती बनवाए बिना बिरादरी में बदनामी होती है, नहीं तो क्या इतना मैं नहीं जानता कि करज लेने से भरम उठ जाता है। करज करेजे की चीर है। आप तो मेरी भलाई के लिए इतना समझा रहे हैं, पर मैं बड़ा संकट में हूँ।

कंचन — मेरी रोकड़ उससे भी ज्यादा संकट में है। तुम्हारे लिए बंकधर से रुपये निकालने पड़ेंगी। कोई और कहता तो मैं उसे सूखा जवाब देता, लेकिन तुम मेरे पुराने असामी हो, तुम्हारे बाप से

भी मेरा व्यवहार था।, इसलिए तुम्हें निराश नहीं करना चाहता। मगर अभी से जताए देता हूँ कि जेठी में सब रुपया सूद समेत चुकाना पड़ेगा। कितने रुपये चाहते हो?

हलधर — सरकार, दो सौ रुपये दिला दें।

कंचन — अच्छी बात है, मुनीमजी लिखा-पढ़ी करके रुपये दे दीजिए। मैं पूजा करने जाता हूँ। (जाता है)

मुनीम — तो तुम्हें दो सौ रुपये चाहिए न। पहिले पाँच रुपये सैकड़े नजराना लगता था। अब दस रुपये सैकड़े हो गया है।

हलधर — जैसी मर्जी।

मुनीम — पहले दो रुपये सैकड़े लिखाई पड़ती थी, अब चार रुपये सैकड़े हो गई है।

हलधर — जैसा सरकार का हुकुम।

मुनीम — स्टाम्प के पाँच रुपये लगेंगी।

हलधर — सही है।

मुनीम — चपरासियों का हक दो रुपये होगी।

हलधर — जो हुकुम।

मुनीम — मेरी दस्तूरी भी पाँच रुपये होती है, लेकिन तुम गरी। आदमी हो, तुमसे चार रुपये ले लूँगा। जानते ही हो मुझे यहाँ से कोई तलब तो मिलती नहीं, बस इसी दस्तूरी पर भरोसा है।

हलधर — बड़ी दया है।

मुनीम — एक रुपया ठाकुर जी को चढ़ाना होगी।

हलधर — चढ़ा दीजिए। ठाकुर तो सभी के हैं।

मुनीम — और एक रुपया ठकुराइन के पान का खर्च।

हलधर — ले लीजिए। सुना है गरीबों पर बड़ी दया करती हैं।

मुनीम — कुछ पढ़े हो?

हलधर — नहीं महाराज, करिया अच्छर भैंस बराबर है।

मुनीम — तो इस स्टाम्प पर बाएँ अंगूठे का निशान करो।

(सादे स्टाम्प पर निशान बनवाता है)

मुनीम — (संदूक से रुपये निकालकर) गिन लो।

हलधर — ठीक ही होगी।

मुनीम — चौखट पर जाकर तीन बार सलाम करो और घर की राह लो।

(हलधर रुपये अंगोछे में बाँधता हुआ जाता है। कंचनसिंह का प्रवेश)

मुनीम — जरा भी कान-पूंछ नहीं हिलाई।

कंचन — इन मूर्खों पर ताव सवार होता है तो इन्हें कुछ नहीं सूझता, आँखों पर पर्दा पड़ जाता है। इन पर दया आती है, पर करूँ क्या? धन के बिना धर्म भी तो नहीं होता।

चौथा दृश्य

(स्थान — मधुबन। सबलसिंह का चौपाल। समय — आठ बजे रात। फाल्गुन का आरंभ)

चपरासी — हुज़ूर, गाँव में सबसे कह आया है। लोग जादू के तमाशे की खबर सुनकर उत्सुक हो रहे हैं।

सबल — स्त्रियों को भी बुलावा दे दिया है न?

चपरासी — जी हाँ, अभी सब-की-सब घरवालों को खाना खिलाकर आई जाती हैं।

सबल — तो इस बरामदे में एक पर्दा डाल दो। स्त्रियों को पर्दे के अंदर बिठाना। घास-चारे, दूध-लकड़ी आदि का प्रबंध हो गया न?

चपरासी — हुज़ूर, सभी चीजों का ढेर लगा हुआ है। जब यह चीजें बेगार में ली जाती थीं तब एक-एक मुट्ठी घास के लिए गाली और मार से काम लेना पड़ता था। हुज़ूर ने बेगार बन्द करके सारे गाँव को बिन दामों गुलाम बना लिया है। किसी ने भी दाम लेना मंजूर नहीं किया। सब यही कहते हैं कि सरकार हमारे मेहमान हैं। धन्य-भाग! जब तक चाहें सिर और आँखों पर रहें। हम खिदमत के लिए दिलोजान से हाजिर हैं। दूध तो इतना आ गया है कि शहर में चार रुपये को भी न मिलता।

सबल — यह सब एहसान की बरकत है। जब मैंने बेगार बन्द करने का प्रस्ताव किया तो तुम लोग, यहाँ तक कि कंचनसिंह भी, सभी मुझे डराते थे। सबको भय था। कि असामी शोख हो जाएँगे,

सिर पर चढ़ जाएँगी। लेकिन मैं जानता था। कि एहसान का नतीजा कभी बुरा नहीं होता। अच्छा, महराज से कहो कि मेरा भोजन भी जल्द बना दें।

(चपरासी चला जाता है)

सबल — (मन में) बेगार बन्द करके मैंने गाँव वालों को अपना भक्त बना लिया। बेगार खुली रहती तो कभी-न-कभी राजेश्वरी को भी बेगार करनी ही पड़ती, मेरे आदमी जाकर उसे दिक करते। अब यह नौबत कभी न आएगी। शोक यही है कि यह काम मैंने नेक इरादों से नहीं किया, इसमें मेरा स्वार्थ छिपा हुआ है। लेकिन अभी तक मैं निश्चय नहीं कर सका कि इसका अन्त क्या होगा? राजेश्वरी के उद्धार करने का विचार तो केवल भ्रांत है। मैं उसकी अनुपम रूप-छटा, उसके सरल व्यवहार और उसके निर्दोष अंग-विन्यास पर आसक्त हूँ। इसमें रत्ती-भर भी संदेह नहीं है। मैं कामवासना की चपेट में आ गया हूँ और किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता। खूब जानता हूँ कि यह महाघोर पाप है! आश्चर्य होता है कि इतना संयमशील होकर भी मैं इसके दांव में कैसे आ पड़ा। ज्ञानी को अगर जरा भी संदेह हो जाय तो वह तो

तुरंत विष खा ले। लेकिन अब परिस्थिति पर हाथ मलना व्यर्थ है। यह विचार करना चाहिए कि इसका अन्त क्या होगा? मान लिया कि मेरी चालें सीधी पड़ती गई और वह मेरा कलमा पढ़ने लगी तो? कलुषित प्रेम! पापाभिनय! भगवन्! उस घोर नारकीय अग्निकुंड में मुझे मत डालना। मैं अपने मुख को और उस सरलहृदय बालिका की आत्मा को इस कालिमा से वेष्ठित नहीं करना चाहता। मैं उससे केवल पवित्र प्रेम करना चाहता हूँ, उसकी मीठी-मीठी बातें सुनना चाहता हूँ, उसकी मधुर मुस्कान की छटा देखना चाहता हूँ, और कलुषित प्रेम क्या है... जो हो, अब तो नाव नदी में डाल दी है, कहीं-न-कहीं पार लगेगी ही। कहाँ ठिकाने लगेगी? सर्वनाश के घाट पर? हाँ, मेरा सर्वनाश इसी बहाने होगी। यह पाप-पिशाच मेरे कुल का भक्षण कर जाएगी। ओह! यह निर्मूल शंकाएँ हैं। संसार में एक-से-एक कुकर्मी व्यभिचारी पड़े हुए हैं, उनका सर्वनाश नहीं होता। कितनों ही को मैं जानता हूँ जो विषय-भोग में लिप्त हो रहे हैं। ज्यादा-से-ज्यादा उन्हें यह दंड मिलता है कि जनता कहती है, बिगड़ गया, कुल में दाग लगा दिया। लेकिन उनकी मान-प्रतिष्ठा में जरा भी अन्तर नहीं पड़ता। यह पाप मुझे करना पड़ेगा। कदाचित मेरे भाग्य में यह बदा हुआ है। हरि इच्छा। हाँ, इसका प्रायश्चित करने में कोई कसर न रखूँगा। दान, व्रत, धर्म, सेवा इनके पर्दे में मेरा अभिनय

होगी। दान, व्रत, परोपकार, सेवा ये सब मिलकर कपट-प्रेम की कालिमा को नहीं धो सकते। अरे, लोग अभी से तमाशा देखने आने लगे। खैर, आने दूँ। भोजन में देर हो जाएगी। कोई चिंता नहीं बारह बजे सब फिल्म खत्म हो जाएँगी। चलूँ सबको बैठाऊँ। (प्रकट) तुम लोग यहाँ आकर फर्श पर बैठो, स्त्रियाँ पर्दे में चली जाएँ। (मन में) है, वह भी है! कैसा सुंदर अंग-विन्यास है! आज गुलाबी साड़ी पहने हुए है। अच्छा, अब की तो कई आभूषण भी हैं। गहनों से उसके शरीर की शोभा ऐसी बढ़ गई है मानो वृक्ष में फूल लगे हों।

(दर्शक यथास्थान बैठ जाते हैं, सबलसिंह चित्रों को दिखाना शुरू करते हैं)

(पहला चित्र — कई किसानों का रेलगाड़ी में सवार होने के लिए धक्कम-धक्का करना, बैठने का स्थान न मिलना, गाड़ी में खड़े रहना, एक कुली को जगह के लिए घूस देना, उसका इनको एक मालगाड़ी में बैठा देना। एक स्त्री का छूट जाना और रोना। गार्ड का गाड़ी को न रोकना)

हलधर — बेचारी की कैसी दुर्गति हो रही है। लो, लात-घूंसे चलने लगे। सब मार खा रहे हैं।

फत्तू — यहाँ भी घूस दिए बिना नहीं चलता। किराया दिया, घूस उसपर सेब लात-घूंसे खाए उसकी कोई गिनती नहीं बड़ा अंधेर है। रुपये बड़े जतन से रखे हुए हैं। कैसा जल्दी निकाल रहा है कि कहीं गाड़ी न खुल जाए।

राजेश्वरी — (सलोनी से) हाय-हाय, बेचारी छूट गई! गोद में लड़का भी है। गाड़ी नहीं रुकी। सब बड़े निर्दयी हैं। हाय भगवन्, उसका क्या हाल होगा?

सलोनी — एक बेर इसी तरह मैं भी छूट गई थी। हरदुआर जाती थी।

राजेश्वरी — ऐसी गाड़ी पर कभी न सवार हो, पुण्य तो आगे-पीछे मिलेगा, यह विपत्ति अभी से सिर पर आ पड़ी।

(दूसरा चित्र — गाँव का पटवारी खाट पर बस्ता खोले बैठा है। कई किसान आस-पास खड़े हैं। पटवारी सभी से सालाना नजर वसूल कर रहा है)

हलधर — लाला का पेट तो फूल के कुप्पा हो गया है। चुटिया इतनी बड़ी है जैसे बैल की पगहिया।

फत्तू — इतने आदमी खड़े गिड़गिड़ा रहे हैं, पर सिर नहीं उठाते, मानो कहीं के राजा हैं! अच्छा, पेट पर हाथ धरकर लोट गया। पेट अगर रहा है, बैठा नहीं जाता। चुटकी बजाकर दिखाता है कि भेंट लाओ। देखो, एक किसान कमर से रुपया निकालता है। मालूम होता है, बीमार रहा है, बदन पर मिरजई भी नहीं है। चाहे तो छाती के हाड़ गिन लो। वाह, मुंशीजी! रुपया फेंक दिया, मुँह फेर लिया, अब बात न करेंगी। जैसे बन्दरिया रूठ जाती है और बन्दर की ओर पीठ फेरकर बैठ जाती है। बेचारा किसान कैसे हाथ जोड़कर मना रहा है, पेट दिखाकर कहता है, भोजन का ठिकाना नहीं, लेकिन लाला साहब कब सुनते हैं।

हलधर — बड़ी गलाकाटू जात है।

फत्तू — जानता है कि चाहे बना दूँ, चाहे बिगाड़ दूँ। यह सब हमारी ही दशा तो दिखाई जा रही है।

(तीसरा चित्र — थानेदार साहब गाँव में एक खाट पर बैठे हैं। चोरी के माल की तफतीश कर रहे हैं। कई कांस्टेबल वर्दी पहने हुए खड़े हैं। घरों में खानातलाशी हो रही है। घर की

सब चीजें देखी जा रही हैं। जो चीज जिसको पसन्द आती है, उठा लेता है। औरतों के बदन पर के गहने भी उतरवा लिए जाते हैं)

फत्तू — इन जालिमों से ख़ुदा बचाए।

एक किसान — आए हैं अपने पेट भरने। बहाना कर दिया कि चोरी के माल का पता लगाने आए हैं।

फत्तू — अल्लाह मियाँ का कहर भी इन पर नहीं गिरता। देखो बेचारों की खानातलाशी हो रही है।

हलधर — खानातलाशी काहे की है, लूट है। उस पर लोग कहते हैं कि पुलिस तुम्हारे जान?माल की रक्षा करती है।

फत्तू — इसके घर में कुछ नहीं निकला।

हलधर — यह दूसरा घर किसी मालदार किसान का है। देखो हाँडी में सोने का कंठा रखा हुआ है। गोप भी है। महतो इसे पहनकर नेवता खाने जाते होंगे। चौकीदार ने उड़ा लिया। देखो, औरतें आंगन में खड़ी की गई हैं। उनके गहने उतारने को कह रहा है।

फत्तू — बेचारा महतो थानेदार के पैरों पर फिर रहा है और अंजुली भर रुपये लिए खड़ा है।

राजेश्वरी — (सलोनी से) पुलिसवाले जिसकी इज्जत चाहें ले लें।

सलोनी — हाँ, देखते तो साठ बरस हो गए। इनके उसपर तो जैसे कोई है ही नहीं

राजेश्वरी — रुपये ले लिए, बेचारियों की जान बची। मैं तो इन सभी के सामने कभी न खड़ी हो सकूँ चाहे कोई मार ही डाले।

सलोनी — तस्वीरें न जाने कैसे चलती हैं।

राजेश्वरी — कोई कल होगी और क्या!

हलधर — अब तमाशा बन्द हो रहा है।

एक किसान — आधी रात भी हो गई। सबेरे ऊख काटनी है।

सबल — आज तमाशा बन्द होता है। कल तुम लोगों को और भी अच्छे-अच्छे चित्र दिखाए जाएँगे, जिससे तुम्हें मालूम होगा कि बीमारी से अपनी रक्षा कैसे की जा सकती है। घरों की और गाँवों की सगाई कैसे होनी चाहिए, कोई बीमार पड़ जाए तो उसकी देख-रेख कैसे करनी चाहिए। किसी के घर में आग लग जाए तो उसे कैसे बुझाना चाहिए। मुझे आशा है कि आज की तरह तुम लोग कल भी आओगी।

(सब लोग चले जाते हैं)

पाँचवाँ दृश्य

(प्रातःकाल का समय। राजेश्वरी अपनी गाय को रेवड़ में ले जा रही है। सबलसिंह से मुठभेड़)

सबल — आज तीन दिन से मेरे चंद्रमा बहुत बलवान हैं। रोज एक बार तुम्हारे दर्शन हो जाते हैं। मगर आज मैं केवल देवी के दर्शनों ही से संतुष्ट न हूँगी। कुछ वरदान भी लूँगा।

(राजेश्वरी असमंजस में पड़कर इधर-उधर ताकती है और सिर झुकाकर खड़ी हो जाती है)

सबल — देवी, अपने उपासकों से यों नहीं लजाया करती। उन्हें धीरज देती हैं, उनकी दुःख-कथा। सुनती हैं, उन पर दया की

दृष्टि फेरती हैं। राजेश्वरी, मैं भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मुझे तुमसे जितनी श्रद्धा और प्रेम है उतनी किसी उपासक को अपनी इष्ट देवी से भी न होगी। मैंने जिस दिन से तुम्हें देखा है, उसी दिन से अपने हृदय-मंदिर में तुम्हारी पूजा करने लगा हूँ। क्या मुझ पर जरा भी दया न करोगी?

राजेश्वरी — दया आपकी चाहिए, आप हमारे ठाकुर हैं। मैं तो आपकी चेरी हूँ। अब मैं जाती हूँ। गाय किसी के खेत में पैठ जाएगी। कोई देख लेगा तो अपने मन में न जाने क्या कहेगी।

सबल — तीनों तरफ अरहर और ईख के खेत हैं, कोई नहीं देख सकता। मैं इतनी जल्द तुम्हें न जाने दूँगा। आज महीनों के बाद मुझे यह सुअवसर मिला है, बिना वरदान लिए न छोड़ूँगा। पहले यह बतलाओ कि इस काक-मंडली में तुम जैसी हंसनी क्यों कर आ पड़ी? तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं?

राजेश्वरी — यह कहानी कहने लगूँगी तो बड़ी देर हो जाएगी। मुझे यहाँ कोई देख लेगा तो अनर्थ हो जाएगी।

सबल — तुम्हारे पिता भी खेती करते हैं?

राजेश्वरी — पहले बहुत दिनों तक टापू में रहे। वहीं मेरा जन्म हुआ। जब वहाँ की सरकार ने उनकी जमीन छीन ली तो यहाँ

चले आए। तब से खेती-बारी करते हैं। माता का देहात हो गया। मुझे याद आता है, कुंदन का-सा रंग था। बहुत सुंदर थीं।

सबल — समझ गया। (तृष्णापूर्ण नेत्रों से देखकर) तुम्हारा तो इन गंवारों में रहने से जी घबराता होगी। खेती-बारी की मेहनत भी तुम जैसी कोमलांगी सुंदरी को बहुत अखरती होगी।

राजेश्वरी — (मन में) ऐसे तो बड़े दयालु और सज्जन आदमी हैं, लेकिन निगाह अच्छी नहीं जान पड़ती। इनके साथ कुछ कपट-व्यवहार करना चाहिए। देखूँ किस रंग पर चलते हैं। (प्रकट) क्या करूँ भाग्य में जो लिखा था। वह हुआ।

सबल — भाग्य तो अपने हाथ का खेल है। जैसे चाहो वैसा बन सकता है। जब मैं तुम्हारा भक्त हूँ तो तुम्हें किसी बात की चिंता न करनी चाहिए। तुम चाहो तो कोई नौकर रख लो। उसकी तलब मैं दे दूँगा, गाँव में रहने की इच्छा न हो तो शहर चलो, हलधर को अपने यहाँ रख लूँगा, तुम आराम से रहना। तुम्हारे लिए मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ, केवल तुम्हारी दया-दृष्टि चाहता हूँ। राजेश्वरी, मेरी इतनी उम्र गुजर गई लेकिन परमात्मा जानते हैं कि आज तक मुझे न मालूम हुआ कि प्रेम क्या वस्तु है। मैं इस रस के स्वाद को जानता ही न था।, लेकिन जिस दिन से तुमको देखा है, प्रेमानन्द का अनुपम सुख भोग रहा हूँ।

तुम्हारी सूरत एक क्षण के लिए भी आँखों से नहीं उतरती। किसी काम में जी नहीं लगता, तुम्हीं चित्त में बसी रहती हो, बगीचे में जाता हूँ तो मालूम होता है कि फूलों में तुम्हारी ही सुगंधि है, श्यामा की चहक सुनता हूँ तो मालूम होता है कि तुम्हारी ही मधुर ध्वनि है। चंद्रमा को देखता हूँ तो जान पड़ता है कि वह तुम्हारी ही मूर्ति है। प्रबल उत्कंठा होती है कि चलकर तुम्हारे चरणों पर सिर झुका दूँ। ईश्वर के लिए यह मत समझो कि मैं तुम्हें कलंकित कराना चाहता हूँ। कदापि नहीं! जिस दिन यह कुभाव, यह कुचेष्टा, मन में उत्पन्न होगी उस दिन हृदय को चीरकर बाहर फेंक दूँगा। मैं केवल तुम्हारे दर्शन से अपनी आँखों को तृप्त करना, तुम्हारी सुललित वाणी से अपने श्रवण को मुग्ध करना चाहता हूँ। मेरी यही परमाकांक्षा है कि तुम्हारे निकट रहूँ, तुम मुझे अपना प्रेमी और भक्त समझो और मुझसे किसी प्रकार का पर्दा या संकोच न करो। जैसे किसी सागर के निकट के वृक्ष उससे रस खींचकर हरे-भरे रहते हैं उसी प्रकार तुम्हारे समीप रहने से मेरा जीवन आनंदमय हो जाएगी।

(चेतनदास भजन गाते हुए दोनों प्राणियों को देखते चले जाते हैं)

राजेश्वरी — (मन में) मैं इनसे कौशल करना चाहती थी पर न जाने इनकी बातें सुनकर क्यों हृदय पुलकित हो रहा है। एक-एक शब्द मेरे हृदय में चुभ जाता है। (प्रकट) ठाकुर साहब, एक दीन मजूरी करने वाली स्त्री से ऐसी बातें करके उसका सिर आसमान पर न चढ़ाइए। मेरा जीवन नष्ट हो जाएगी। आप धर्मात्मा हैं, जसी हैं, दयावान हैं। आज घर-घर आपके जस का बखान हो रहा है, आपने अपनी प्रजा पर जो दया की है उसकी महिमा मैं नहीं गा सकती। लेकिन ये बातें अगर किसी के कान में पड़ गई तो यही परजा, जो आपके पैरों की धूल माथे पर चढ़ाने को तरसती है, आपकी बैरी हो जाएगी, आपके पीछे पड़ जाएगी। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। मुझे भूल जाइए। संसार में एक-से-एक सुंदर औरतें हैं। मैं गँवारिन हूँ। मजूरी करना मेरा काम है। इन प्रेम की बातों को सुनकर मेरा चित्त ठिकाने न रहेगी। मैं उसे अपने बस में न रख सकूँगी। वह चंचल हो जाएगा और न जाने उस अचेत दशा में क्या कर बैठे। उसे फिर नाम की, कुल की, निंदा की लाज न रहेगी। प्रेम बढ़ती हुई नदी है। उसे आप यह नहीं कह सकते कि यहाँ तक चढ़ना, इसके आगे नहीं चढ़ाव होगा तो वह किसी के रोके न रुकेगी। इसलिए मैं आपसे विनती करती हूँ कि यहीं तक रहने दीजिए। मैं अभी

तक अपनी दशा में संतुष्ट हूँ। मुझे इसी दशा में रहने दीजिए। अब मुझे देर हो रही है, जाने दीजिए।

सबल — राजेश्वरी, प्रेम के मद से मतवाला आदमी उपदेश नहीं सुन सकता। क्या तुम समझती हो कि मैंने बिना सोचे-समझे इस पथ पर पग रखा है। मैं दो महीनों से इसी हैस-बैस में हूँ। मैंने नीति का, सदाचरण का, धर्म का, लोकनिंदा का आश्रय लेकर देख लिया, कहीं संतोष न हुआ तब मैंने यह पथ पकड़ा। मेरे जीवन को बनाना-बिगाड़ना अब तुम्हारे ही हाथ है। अगर तुमने मुझ पर तरस न खाया तो अन्त यही होगा कि मुझे आत्महत्या जैसा भीषण पाप करना पड़ेगा, क्योंकि मेरी दशा असह्य हो गई है। मैं इसी गाँव में घर बना लूँगा, यहीं रहूँगा, तुम्हारे लिए भी मकान, धन-संपत्ति, जगह-जमीन किसी पदार्थ की कमी न रहेगी। केवल तुम्हारी स्नेह-दृष्टि चाहता हूँ।

राजेश्वरी — (मन में) इनकी बातें सुनकर मेरा चित्त चंचल हुआ जाता है। आप-ही-आप मेरा हृदय इनकी ओर खिंचा जाता है। पर यह तो सर्वनाश का मार्ग है। इससे मैं इन्हें कटु वचन सुनाकर यहीं रोक देती हूँ। (प्रकट) आप विद्वान हैं, सज्जन हैं, धर्मात्मा हैं, परोपकारी हैं, और मेरे मन में आपका जितना मान है वह मैं कह नहीं सकती। मैं अब से थोड़ी देर पहले आपको देवता समझती थी। पर आपके मुँह से ऐसी बातें सुनकर दुःख

होता है। आपसे मैंने अपना हाल साफ-साफ कह दिया। उस पर भी आप वही बातें करते जाते हैं। क्या आप समझते हैं कि मैं अहीर जात और किसान हूँ तो मुझे अपने धरम-करम का कुछ विचार नहीं है और मैं धन और संपत्ति पर अपने धरम को बेच दूँगी? आपका यह भरम है। आपको मैं इतनी सिरिद्दा से न देखती होती तो इस समय आप यहाँ इस तरह बेधड़क मेरे धरम का सत्यानाश करने की बातचीत न करते। एक पुकार पर सारा गाँव यहाँ आ जाता और आपको मालूम हो जाता कि देहात के गंवार अपनी औरतों की लाज कैसे रखते हैं। मैं जिस दशा में भी हूँ संतुष्ट हूँ, मुझे किसी वस्तु की तृषना नहीं है। आपका धन आपको मुबारक रहे। आपकी कुशल इसी में है कि अभी आप यहाँ से चले जाइए। अगर गाँव वालों के कानों में इन बातों की जरा भी भनक पड़ी तो वह मुझे तो किसी तरह जीता न छोड़ेंगे, पर आपके भी जान के दुश्मन हो जाएँगी। आपकी दया, उपकार, सेवा एक भी आपको उनके कोप से न बचा सकेगी। (चली जाती है)

सबल — (आप-ही-आप) इसकी सम्मति मेरे चित्त को हटाने की जगह और भी बल के साथ अपनी ओर खींचती है। ग्रामीण स्त्रियाँ भी इतनी दृढ़ और आत्माभिमानी होती हैं, इसका मुझे ज्ञान न था। अबोध बालक को जिस काम के लिए मना करो, वही

अदबदाकर करता है। मेरे चित्त की दशा उसी बालक के समान है। वह अवहेलना से हतोत्साह नहीं, वरन् और भी उत्तेजित होता है।

(प्रस्थान)

छठा दृश्य

(स्थान — मधुबन गाँव। समय — फागुन का अन्त, तीसरा पहर, गाँव के लोग बैठे बातें कर रहे हैं)

एक किसान — बेगार तो सब बन्द हो गई थी। अब यह दहलाई की बेगार क्यों माँगी जाती है?

फत्तू — जमींदार की मर्जी। उसी ने अपने हुक्म से बेगार बन्द की थी। वही अपने हुक्म से जारी करता है।

हलधर — यह किस बात पर चिढ़ गए? अभी तो चार-ही-पाँच दिन होते हैं, तमाशा दिखाकर कर गए हैं। हम लोगों ने उनके सेवा-सत्कार में तो कोई बात उठा नहीं रखी।

फत्तू — भाई, राजा ठाकुर हैं, उनका मिजाज बदलता रहता है। आज किसी पर खुश हो गए तो उसे निहाल कर दिया, कल नाखुश हो गए तो हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। मन की बात है।

हलधर — अकारन ही थोड़े किसी का मिजाज बदलता है। वह तो कहते थे, अब तुम लोग हाकिम-हुक्काम किसी को भी बेगार मत देना। जो कुछ होगा मैं देख लूँगा। कहाँ आज यह हुकुम निकाल दिया। जरूर कोई बात मर्जी के खिलाफ हुई है।

फत्तू — हुई होगी। कौन जाने घर ही में किसी ने कहा हो, असामी अब सेर हो गए, तुम्हें बात भी न पूछेंगे। इन्होंने कहा हो कि सेर कैसे हो जाएँगे, देखो अभी बेगार लेकर दिखा देते हैं। या कौन जाने कोई काम-काज आ पड़ा हो, अरहर भरी रखी हो, दलवा कर बेच देना चाहते हों।

कई आदमी — हाँ, ऐसी ही कोई बात होगी। जो हुकुम देंगे वह बजाना ही पड़ेगा, नहीं तो रहेंगे कहाँ!

एक किसान — और जो बेगार न दें तो क्या करें?

फत्तू — करने की एक ही कही। नाक में दम कर दें, रहना मुसकिल हो जाए। अरे और कुछ न करें लगान की रसीद ही न दें तो उनका क्या बना लोगे? कहाँ फरियाद ले जाओगे और कौन

सुनेगा? कचहरी कहाँ तक दौड़ोगे? फिर वहाँ भी उनके सामने तुम्हारी कौन सुनेगा!

कई आदमी — आजकल मरने की छुट्टी ही नहीं है, कचहरी कौन दौड़ेगा? खेती तैयार खड़ी है, इधर ऊख बोना है, फिर अनाज माँड़ना पड़ेगा। कचहरी के धक्के खाने से तो यही अच्छा है कि जमींदार जो कहे, वही बजाएँ।

फत्तू — घर पीछे एक औरत जानी चाहिए। बुढ़ियों को छांटकर भेजा जाए।

हलधर — सबके घर बुढ़िया कहाँ?

फत्तू — तो बहू-बेटियों को भेजने की सलाह मैं न दूँगा।

हलधर — वहाँ इसका कौन खटका है?

फत्तू — तुम क्या जानो, सिपाही हैं, चपरासी हैं, क्या वहाँ सब-के-सब देवता ही बैठे हैं। पहले की बात दूसरी थी।

एक किसान — हाँ, यह बात ठीक है। मैं तो अम्माँ को भेज दूँगा।

हलधर — मैं कहाँ से अम्माँ लाऊँ?

फत्तू — गाँव में जितने घर हैं क्या उतनी बुढ़िया न होंगी। गिनो एक-दो-तीन, राजा की माँ चार, उस टोले में पाँच, पच्छिम ओर सात, मेरी तरफ नौ — कुल पच्चीस बुढ़ियाँ हैं।

हलधर — घर कितने होंगे?

फत्तू — घर तो अबकी मरदुमसुमारी में तीस थे। कह दिया जाएगा, पाँच घरों में कोई औरत ही नहीं है, हुकुम हो तो मर्द ही हाजिर हों।

हलधर — मेरी ओर से कौन बुढ़िया जाएगी?

फत्तू — सलोनी काकी को भेज दो। लो वह आप ही आ गई।

(सलोनी आती है)

फत्तू — अरे सलोनी काकी, तुझे जमींदार की दलहाई में जाना पड़ेगा।

सलोनी — जाय नौज, जमींदार के मुँह में लूका लगे, मैं उसका क्या चाहती हूँ कि बेगार लेगी। एक धुर जमीन भी तो नहीं है। और बेगार तो उसने बन्द कर दी थी?

फत्तू — जाना पड़ेगा, उसके गाँव में रहती हो कि नहीं?

सलोनी — गाँव उसके पुरखों का नहीं है, हाँ नहीं तो। फतुआ, मुझे चिढ़ा मत, नहीं कुछ कह बैठूँगी।

फत्तू — जैसे गा-गाकर चक्की पीसती हो उसी तरह गा-गाकर दाल दलना। बता कौन गीत गाओगी?

सलोनी — डाढ़ीजार, मुझे चिढ़ा मत, नहीं तो गाली दे दूँगी। मेरी गोद का खेला लौंडा मुझे चिढ़ाता है।

फत्तू — कुछ तू ही थोड़े जाएगी। गाँव की सभी बुढ़ियाँ जाएँगी।

सलोनी — गंगा-असनान है क्या? पहले तो बुढ़ियाँ छांटकर न जाती थीं। मैं उमिर-भर कभी नहीं गई। अब क्या बहुओं को पर्दा लगा है। गहने गढ़ा-गढ़ा कर तो वह पहनें, बेगार करने बुढ़ियाँ जाएँ।

फत्तू — अबकी कुछ ऐसी ही बात आ पड़ी है। हलधर के घर कोई बुढ़िया नहीं है। उसकी घरवाली कल की बहुरिया है, जा नहीं सकती। उसकी ओर से चली जा।

सलोनी — हाँ, उसकी जगह पर चली जाऊँगी। बेचारी मेरी बड़ी सेवा करती है। जब जाती हूँ तो बिना सिर में तेल डाले और हाथ-पैर दबाए नहीं आने देती। लेकिन बहली जुता देगा न?

फत्तू — बेगार करने रथ पर बैठकर जाएगी।

हलधर — नहीं काकी, मैं बहली जुता दूँगा। सबसे अच्छी बहली में तुम बैठना।

सलोनी — बेटा, तेरी बड़ी उम्मिर हो, जुग-जुग जी। बहली में ढोल-मजीरा रख देना। गाती बजाती जाऊँगी।

सातवाँ दृश्य

(समय — संध्या। स्थान — मधुबन। ओले पड़ गए हैं। गाँव के स्त्री-पुरूष खेतों में जमा हैं)

फत्तू — अल्लाह ने परसी-परसायी थाली छीन ली।

हलधर — बना-बनाया खेल बिगड़ गया।

फत्तू — छावत लागत छह बरस और छिन में होत उजाड़ब कई साल के बाद तो अबकी खेती जरा रंग पर आई थी। कल इन खेतों को देखकर कैसी गज-भर की छाती हो जाती थी। ऐसा जान पड़ता था।, सोना बिछा दिया गया है। बित्ते-बित्ते भर की बालें लहराती थीं, पर अल्लाह ने मारा सब सत्यानाश कर दिया।

बाग में निकल जाते थे तो बौर की महक से चित्त खिल उठता था। पर आज बौर की कौन कहे पत्ते तक झड़ गए।

एक वृद्ध किसान — मेरी याद में इतने बड़े-बड़े ओले कभी न पड़े थे।

हलधर — मैंने इतने बड़े ओले देखे ही न थे, जैसे चट्टान काट-काटकर लुढ़का दिया गया हो,

फत्तू — तुम अभी हो कै दिन के? मैंने भी इतने बड़े ओले नहीं देखे।

एक वृद्ध किसान — एक बेर मेरी जवानी में इतने बड़े ओले गिरे थे कि सैकड़ों ढोर मर गए। जिधर देखो मरी हुई चिड़ियाँ गिरी मिलती थीं। कितने ही पेड़ फिर पड़े। पक्की छतें तक गट गई थीं। बखारों में अनाज सड़ गए, रसोई में बर्तन चकनाचूर हो गए। मुदा अनाज की मड़ाई हो चुकी थी। इतना नुकसान नहीं हुआ था।

सलोनी — मुझे तो मालूम होता है कि जमींदार की नीयत बिगड़ गई है, तभी ऐसी तबाही हुई है।

राजेश्वरी — काकी, भगवान न जाने क्या करने वाले हैं। बार-बार मने करती थी कि अभी महाजन से रुपये न लो। लेकिन मेरी

कौन सुनता है। दौड़े-दौड़े गए दो सौ रुपये उठा लाए, जैसे धरोहर हो, देखें अब कहाँ से देते हैं। लगान उसपर से देना है। पेट तो मजूरी करके मर जाएगा, लेकिन महाजन से कैसे गला छूटेगा?

हलधर — भला पूछा तो काकी, कौन जानता था। कि क्या सुदनी हैं। आगम देख के तब रुपये लिए थे। यह आगत न आ जाती तो एक सौ रुपये का तो अकेले तेलहन निकल जाता। छाती-भर गेहूँ खड़ा था।

फत्तू — अब तो जो होना था। वह हो गया। पछताने से क्या हाथ आएगा?

राजेश्वरी — आदमी ऐसा काम ही क्यों करे कि पीछे से पछताना पड़े।

सलोनी — मेरी सलाह मानो, सब जने जाकर ठाकुर से फरियाद करो कि लगान की माफी हो जाए। दयावान आदमी हैं। मुझे तो बिस्सास है कि माँग कर देंगे। दलहाई की बेगार में हम लोगों से बड़े प्रेम से बातें करते रहे। किसी को छटांक-भर भी दाल न दलने दी। पछताते रहे कि नाहक तुम लोगों को दिक किया। मुझसे बड़ी भूल हुई मैं तो फिर कहूँगी कि आदमी नहीं देवता हैं।

फत्तू — जमींदार के माफ करने से थोड़े माफी होती है; जब सरकार माफ करे तब न? नहीं तो जमींदार को मालगुजारी घर से चुकानी पड़ेगी। तो सरकार से इसकी कोई आशा नहीं अमले लोग तहकीकात करने को भेजे जाएँगी। वह असामियों से खूब रिसवत पाएँगे तो नुकसान दिखाएँगे, नहीं तो लिख देंगे ज्यादा नकसान नहीं हुआ। सरकार बहुत करेगी चार आने की छूट कर देगी। जब बारह आने देने ही पड़ेंगे तो चार आने और सही। रिसवत और कचहरी की दौड़ से तो बच जाएँगी। सरकार को अपना खजाना भरने से मतलब है कि परजा को पालने सेब सोचती होगी, यह सब न रहेंगे तो इनके और भाई तो रहेंगे ही। जमीन परती थोड़े पड़ी रहेगी।

एक वृद्ध किसान — सरकार एक पैसा भी न छोड़ेगी। इस साल कुछ छोड़ भी देगी तो अगले साल सूद समेत वसूल कर लेगी।

फत्तू — बहुत निगाह करेगी तो तकाबी मंजूर कर देगी। उसका भी सूद लेगी। हर बहाने से रुपया खींचती है। कचहरी में झूठी कोई दरखास देने जाओ तो बिना टके खर्च किए सुनाई नहीं होती। अफीम सरकार बेचे, दाई, गांजा, भांग, मदक, चरस सरकार बेचे। और तो और नोन तक बेचती है। इस तरह रुपया न खींचे तो अफसरों की बड़ी-बड़ी तलब कहाँ से दे! कोई एक लाख पाता है, कोई दो लाख, कोई तीन लाख। हमारे यहाँ जिसके पास

लाख रुपये होते हैं वह लखपती कहलाता है, मारे घमंड के सीधे ताकता नहीं सरकार के नौकरों की एक-एक साल की तलब दो-दो लाख होती है। भला वह लगान की एक पाई भी न छोड़ेगी।

हलधर — बिना सुराज मिले हमारी दसा न सुधरेगी। अपना राज होता तो इस कठिन समय में अपनी मदद करता।

फत्तू — मदद करेंगे! देखते हो जब से दाई, अफीम की बिक्री बन्द हो गई है अमले लोग नसे का कैसा बखान करते गिरते हैं। कुरान शरीफ में नसा हराम लिखा है, और सरकार चाहती है कि देस नसेबाज हो जाए। सुना है, साहब ने आजकल हुकुम दे दिया है कि जो लोग खुद अफीम-सराब पीते हों और दूसरों को पीने की सलाह देते हों, उनका नाम खैरखाहों में लिख लिया जाए। जो लोग पहले पीते थे, अब छोड़ बैठे हैं, या दूसरों को पीना मना करते हैं, उनका नाम बागियों में लिखा जाता है।

हलधर — इतने सारे रुपये क्या तलबों में ही उठ जाते हैं?

राजेश्वरी — गहने बनवाते हैं।

फत्तू — ठीक तो कहती हैं। क्या सरकार के जोरू-बच्चे नहीं हैं? इतनी बड़ी फौज बिना रुपये के ही रखी है! एक-एक तोप लाखों में आती है। हवाई जहाज कई-कई लाख के होते हैं। सिपाहियों को सर्च के लिए हवा-गाड़ी चाहिए। जो खाना यहाँ रईसों को

मयस्सर नहीं होता वह सिपाहियों को खिलाया जाता है। साल में छः महीने सब बड़े-बड़े हाकिम पहाड़ों की सैर करते हैं। देखते तो हो छोटे-छोटे हाकिम भी बादशाहों की तरह ठाट से रहते हैं, अकेली जान पर दस-पंद्रह नौकर रखते हैं, एक पूरा बंगला रहने को चाहिए। जितना बड़ा हमारा गाँव है उससे ज्यादा जमीन एक बंगले के हाते में होती है। सुनते हैं, दस रुपये-बीस रुपये बोतल की शराब पीते हैं। हमको-तुमको भरपेट रोटियाँ नहीं नसीब होतीं, वहाँ रात-दिन रंग चढ़ा रहता है। हम-तुम रेलगाड़ी में धक्के खाते हैं। एक-एक डब्बे में जहाँ दस की जगह है वहाँ बीस, पच्चीस, तीस, चालीस ठूंस दिए जाते हैं। हाकिमों के वास्ते सभी सजी-सजाई गाड़ियाँ रहती हैं, आराम से गद्दी पर लेटे हुए चले जाते हैं। रेलगाड़ी को जितना हम किसानों से मिलता है उसका एक हिस्सा भी उन लोगों से न मिलता होगी। मगर तिस पर भी हमारी कहीं पूछ नहीं जमाने की खूबी है!

हलधर — सुना है, मेमें अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती।

फत्तू — सो ठीक है, दूध पिलाने से औरत का शरीर ढीला हो जाता है, वह फुरती नहीं रहती। दाइयाँ रख लेते हैं। वही बच्चों को पालती-पोसती हैं। माँ खाली देखभाल करती रहती हैं। लूट है लूट!

सलोनी — दरखास दो। मेरा मन कहता है, छूट हो जाएगी।

फत्तू — कह तो दिया, दो-चार आने की छूट हुई भी तो बरसों लग जाएँगी। पहले पटवारी कागद बनाएगा, उसको पूजो! तब कानूगो जाँच करेगा, उसको पूजो! तब तहसीलदार नजर सानी करेगा, उसको पूजो! तब डिप्टी के सामने कागद पेस होगा, उसको पूजो! वहाँ से तब बड़े साहब के इजलास में जाएगा, वहाँ अहलमद और अरदली और नाजिर सभी को पूजना पड़ेगा। बड़े साहब कमसनर को रपोट देंगे, वहाँ भी कुछ-न-कुछ पूजा करनी पड़ेगी। इस तरह मंजूरी होते-होते एक जुग बीत जाएगी। इन सब झंझटों से तो यही अच्छा है कि —

रहिमन चुप तै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै बेर।।

हलधर — मुझे तो साठ रुपये लगान देने हैं। बैल-बधिया बिक जाएँगे तब भी पूरा न पड़ेगा।

किसान — बचेंगे किसके! अभी साल-भर खाने को चाहिए। देखो, गेहूँ के दाने कैसे बिखरे पड़े हैं जैसे किसी ने मसल दिए हों।

हलधर — क्या करना होगा?

राजेश्वरी — होगा क्या, जैसी करनी वैसी भरनी होगी। तुम तो खेत में बाल लगते ही बावले हो गए। लगान तो था। ही, उसपर से महाजन का बोझ भी सिर पर लाद लिया।

फत्तू — तुम मैके चली जाना। हम दोनों जाकर कहीं मजूरी करेंगी। अच्छा काम मिल गया तो साल-भर में डोंगा पार है।

राजेश्वरी — हाँ, और क्या, गहने तो मैंने पहने हैं, गाय का दूध मैंने खाया है, बरसी मेरे ससुर की हुई है, अब जो भरौती के दिन आए तो मैं मैके भाग जाऊँ। यह मेरा किया न होगी। तुम लोग जहाँ जाना, वहीं मुझे भी लेते चलना। और कुछ न होगा तो पकी-पकाई रोटियाँ तो मिल जाएँगी।

सलोनी — बेटी, तूने यह बात मेरे मन की कही। कुलवंती नारी के यही लच्छन हैं। मुझे भी अपने साथ लेती चलना। (गाती है)

चलो पटने की देखो बहार, सहर गुलजार रे।

फत्तू — हाँ, दाई, खूब गा, गाने का यही अवसर है। सुख में तो सभी गाते हैं।

सलोनी — और क्या बेटा, अब तो जो होना था।, हो गया। रोने से लौट थोड़े ही आएगी। (गाती है)

उसी पटने में तमोलिया बसत है।
बीड़ों की अजब बहार रे।

पटना शहर गुलजार रे॥

फत्तू — काकी का गाना तानसेन सुनता तो कानों पर हाथ रखता। हाँ, दाई!

सलोनी — (गाती है)

उसी पटने में बजजवा बसत है॥
कैसी सुंदर लगी है बजार रे।
पटना सहर गुलजार रे॥

फत्तू — बस एक कड़ी और गा दे काकी! तेरे हाथ जोड़ता हूँ। जी बहल गया।

सलोनी — जिसे देखो गाने को ही कहता है, कोई यह नहीं पूछता कि बुढ़िया कुछ खाती-पीती भी है या आसिरवादों से ही जीती है।

राजेश्वरी — चलो, मेरे घर काकी, क्या खाओगी?

सलोनी — हलधर, तू इस हीरे को डिबिया में बन्द कर ले, ऐसा न हो किसी की नजर लग जाए। हाँ बेटी, क्या खिलाएगी?

राजेश्वरी — जो तुम्हारी इच्छा हो,

सलोनी — भरपेट?

राजेश्वरी — हाँ, और क्या?

सलोनी — बेटी, तुम्हारे खिलाने से अब मेरा पेट न भरेगी। मेरा पेट भरता था। जब रुपये का पसेरी-भर घी मिलता था। अब तो पेट ही नहीं भरता। चार पसेरी अनाज पीसकर जांत पर से उठाती थी। चार पसेरी की रोटियाँ पकाकर चौके से निकलती थी। अब बहुएँ आती हैं तो चूल्हे के सामने जाते उनको ताप चढ़ आती है, चक्की पर बैठते ही सिर में पीड़ा होने लगती है। खाने को तो मिलता नहीं, बल-बूता कहाँ से आए। न जाने उपज ही नहीं होती कि कोई ढो ले जाता है। बीस मन का बीघा उतरता था। बीस रुपये भी हाथ में आ जाते थे, तो पछाई बैलों की जोड़ी द्वार पर बंध जाती थी। अब देखने को रुपये तो बहुत मिलते हैं पर ओले की तरह देखते-देखते फल जाते हैं। अब तो भिखारी को भीख देना भी लोगों को अखरता है।

फत्तू — सच कहना काकी, तुम काका को मुट्ठी में दबा लेती थी कि नहीं?

सलोनी — चल, उनका जोड़ दस-बीस गाँव में न था। तुझे तो होस आता होगा, कैसा डील-डौल था। चुटकी से सुपारी गोड़ देते थे। (गाती है)

चलो-चलो सखी अब जाना,
पिया भेज दिया परवाना।

एक दूत जबर चल आया, सब लस्कर संग सजाया री।
किया बीच नगर के थाना,
पिया भेज दिया परवाना।
गढ़ कोट-किले गिरवाए, सब द्वार बन्द करवाए री।
अब किस विधि होय रहाना।
पिया भेज दिया परवाना।
जब दूत महल में आवे, तुझे तुरत पकड़ ले जावे री।
तेरा चले न एक बहाना।
पिया भेज दिया परवाना॥

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(स्थान — चेतनदास की कुटी, गंगातट। समय — संध्या)

सबल — महाराज, मनोवृत्तियों के दमन करने का सबसे सरल उपाय क्या है?

चेतनदास — उपाय बहुत हैं, किंतु मैं मनोवृत्तियों के दमन करने का उपदेश नहीं करता। उनको दमन करने से आत्मा संकुचित हो जाती है। आत्मा को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है। यदि इन्द्रियों का दमन कर दिया जाए तो मनुष्य की चेतना-शक्ति लुप्त हो जाएगी। योगियों ने इच्छाओं को रोकने के लिए कितने यत्न लिखे हैं। हमारे योगग्रंथ उन उपदेशों से परिपूर्ण हैं। मैं इन्द्रियों का दमन करना अस्वाभाविक, हानिकर और आपत्तिजनक समझता हूँ।

सबल — (मन में) आदमी तो विचारशील जान पड़ता है। मैं इसे रंगा हुआ समझता था। (प्रकट) यूरोप के तत्त्वज्ञानियों ने कहीं-कहीं इस विचार का पुष्टिकरण किया है, पर अब तक मैं उन विचारों को भ्रांतिकारक समझता था। आज आपके श्रीमुख से उनका समर्थन सुनकर मेरे कितने ही निश्चित सिद्धान्तों को आघात पहुँच रहा है।

चेतनदास — इंद्रियों द्वारा ही हमको जगत् का ज्ञान प्राप्त होता है। वृत्तियों का दमन कर देने से ज्ञान का एकमात्र द्वार ही बन्द हो जाता है। अनुभवहीन आत्मा कदापि उच्च पद नहीं प्राप्त कर

सकती। अनुभव का द्वार बन्द करना विकास का मार्ग बन्द करना है, प्रकृति के सब नियमों के कार्य में बाधा डालना है। आत्मा मोक्षपद प्राप्त कर सकती है। जिसने अपने ज्ञान द्वारा इंद्रियों को मुक्त रखा हो, त्याग का महत्व आह्वान में नहीं है। जिसने मधुर संगीत सुना ही न हो उसे संगीत की रूचि न हो तो कोई आश्चर्य नहीं आश्चर्य तो तब है जब वह संगीतकला का भली-भाँति आस्वादन करने, उसमें लिप्त होने के बाद वृत्तियों को उधर से हटा ले। वृत्तियों का दमन करना वैसा ही है जैसे बालकों को खड़े होने या दौड़ने से रोकना। ऐसे बालक को चोट चाहे न लगे पर वह अवश्य ही अपंग हो जाएगी।

सबल — (मन में) कितने स्वाधीन और मौलिक विचार हैं। (प्रकट) तब तो आपके विचार में हमें अपनी इच्छाओं को अबाध्य कर देना चाहिए।

चेतनदास — मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि आत्मा के विकास में पापों का भी मूल्य है। उज्ज्वल प्रकाश सात रंगों के सम्मिश्रण से बनता है। उसमें लाल रंग का महत्व उतना ही है जितना नीले या पीले रंग का। उत्तम भोजन वही है जिसमें षट्रसों का सम्मिश्रण हो, इच्छाओं को दमन करो, मनोवृत्तियों को रोको, यह मिथ्या तत्त्ववादियों के ढकोसले हैं। यह सब अबोध बालकों को डराने के 'जू-जू' हैं। नदी के तट पर न जाओ, नहीं तो डूब

जाओगे, यह मूर्ख माता-पिता की शिक्षा है। विचारशील प्राणी अपने बालकों को नदी के तट पर केवल ले ही नहीं जाते वरन् उसे नदी में प्रविष्ट कराते हैं, उसे तैरना सिखाते हैं।

सबल — (मन में) कितनी मधुर वाणी है। वास्तव में प्रेम चाहे कलुषित ही क्यों न हो, चरित्र-निर्माण में अवश्य अपना स्थान रखता है। (प्रकट) तो पाप कोई घृणित वस्तु नहीं?

चेतनदास — कदापि नहीं संसार में कोई वस्तु घृणित नहीं है, कोई वस्तु त्याज्य नहीं है। मनुष्य अहंकार के वश होकर अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है। वास्तव में धर्म और अधर्म, सुविचार और कुविचार, पाप और पुण्य, यह सब मानव जीवन की मध्यवर्ती अवस्थाएँ मात्र हैं।

सबल — (मन में) कितना उदार हृदय है! (प्रकट) महाराज, आपके उपदेश से मेरे संतप्त मन को बड़ी शांति प्राप्त हुई (प्रस्थान)।

चेतनदास — (आप-ही-आप) इस जिज्ञासा का आशय खूब समझता हूँ। तुम्हारी अशांति का रहस्य खूब जानता हूँ। तुम फिसल रहे थे, मैंने एक धक्का और दे दिया। अब तुम नहीं संभल सकते।

दूसरा दृश्य

(समय — संध्या। स्थान — सबलसिंह की बैठक)

सबल — (आप-ही-आप) मैं चेतनदास को धूर्त समझता था।, पर यह तो ज्ञानी महात्मा निकले। कितना तेज और शौर्य है! ज्ञानी उनके दर्शनों को लालायित है। क्या हर्ज है! ऐसे आत्म-ज्ञानी पुरूषों के दर्शन से कुछ उपदेश ही मिलेगी।

(कंचनसिंह का प्रवेश)

कंचन — (तार दिखाकर) दोनों जगह हार हुई पूना में घोड़ा कट गया। लखनऊ में जाकी घोड़े से फिर पड़ा।

सबल — यह तो तुमने बुरी खबर सुनाई। कोई पाँच हजार का नुकसान हो गया।

कंचन — गल्ले का बाजार चढ़ गया। अगर अपना गेहूँ दस दिन और न बेचता तो दो हजार साफ निकल आते।

सबल — पर आगम कौन जानता था।

कंचन — असामियों से एक कौड़ी वसूल होने की आशा नहीं सुना है कई असामी घर छोड़कर भागने की तैयारी कर रहे हैं। बैल-बधिया बेचकर जाएँगी। कब तक लौटेंगे, कौन जानता है। मरें, जिएँ, न जाने क्या हो! यत्न न किया गया तो ये सब रुपये भी मारे जाएँगी। पाँच हजार के माथे जाएगी। मेरी राय है कि उन पर डिगरी कराके जायदादें नीलाम करा ली जाएँ। असामी सब-के-सब मातबर हैं; लेकिन ओलों ने तबाह कर दिया।

सबल — उनके नाम याद हैं?

कंचन — सबके नाम तो नहीं, लेकिन दस-पाँच नाम छांट लिए हैं। जगरांव का लल्लू, तुलसी, भूफोर, मधुबन का सीता, नब्बी, हलधर, चिरौंजी।

सबल — (चौंककर) हलधर के जिम्मे कितने रुपये हैं?

कंचन — सूद मिलाकर कोई दो सौ पचास होंगी।

सबल — (मन में) बड़ी विकट समस्या है` मेरे ही हाथों उसे यह कष्ट पहुंचे! इसके पहले मैं इन हाथों को ही काट डालूँगा। उसकी एक दया-दृष्टि पर ऐसे-ऐसे कई ढाई सौ न्यौछावर हैं। वह मेरी है, उसे ईश्वर ने मेरे लिए बनाया है, नहीं तो मेरे मन में उसकी लगन क्यों होती। समाज के अनर्गल नियमों ने उसके और मेरे बीच यह लोहे की दीवार खड़ी कर दी है। मैं इस

दीवार को खोद डालूँगा। इस कांटे को निकालकर फूल को गले में डाल लूँगा। सांप को हटाकर मणि को अपने हृदय में रख लूँगा। (प्रकट) और असामियों की जायदाद नीलाम करा सकते हो, हलधर की जायदाद नीलाम कराने के बदले मैं उसे कुछ दिनों हिरासत की हवा खिलाना चाहता हूँ। वह बदमाश आदमी है, गाँव वालों को भड़काता है कुछ दिन जेल में रहेगा तो उसका मिजाज ठंडा हो जाएगा।

कंचन — हलधर देखने में तो बड़ा सीधा और भोला आदमी मालूम होता है

सबल — बना हुआ है तुम अभी उसके हथकंडों को नहीं जानते। मुनीम से कह देना, वह सब कार्रवाई कर देगी। तुम्हें अदालत में जाने की जरूरत नहीं।

(कंचनसिंह का प्रस्थान)

सबल — (आप-ही-आप) ज्ञानियों ने सत्य ही कहा है कि काम के वश में पड़कर मनुष्य की विद्या, विवेक सब नष्ट हो जाते हैं। यदि वह नीच प्रकृति है तो मनमाना अत्याचार करके अपनी तृष्णा को पूरी करता है; यदि विचारशील है तो कपट-नीति से अपना

मनोरथ सिद्ध करता है। इसे प्रेम नहीं कहते, यह है काम-लिप्सा। प्रेम पवित्र, उज्ज्वल, स्वार्थ-रहित, सेवामय, वासना-रहित वस्तु है। प्रेम वास्तव में ज्ञान है। प्रेम से संसार सृष्टि हुई, प्रेम से ही उसका पालन होता है। यह ईश्वरीय प्रेम है। मानव-प्रेम वह है जो जीव-मात्र को एक समझे, जो आत्मा की व्यापकता को चरितार्थ करे, जो प्रत्येक अणु में परमात्मा का स्वरूप देखे, जिसे अनुभूत हो कि प्राणी-मात्र एक ही प्रकाश की ज्योति है। प्रेम उसे कहते हैं। प्रेम के शेष जितने रूप हैं, सब स्वार्थमय, पापमय हैं। ऐसे कोढ़ी को देखकर जिसके शरीर में कीड़े पड़ गए हों अगर हम विह्वल हो जाएँ और उसे तुरंत गले लगा लें तो वह प्रेम है। सुंदर, मनोहर स्वरूप को देखकर सभी का चित्त आकर्षित होता है, किसी का कम, किसी का ज्यादा। जो साधनहीन हैं, क्रियाहीन हैं, या पौरुषहीन हैं वे कलेजे पर हाथ रखकर रह जाते हैं और दो-एक दिन में भूल जाते हैं। जो सम्पन्न हैं, चतुर हैं, साहसी हैं, उद्योगशील हैं, वह पीछे पड़ जाते हैं और अभीष्ट लाभ करके ही दम लेते हैं। यही कारण है कि प्रेम-वृत्ति अपने सामर्थ्य के बाहर बहुत कम जाती है। बाजार की लड़की कितनी ही सर्वगुणपूर्ण हो पर मेरी वृत्ति उधर जाने का नाम न लेगी। वह जानती है कि वहाँ मेरी दाल न गलेगी। राजेश्वरी के विषय में मुझे संशय न था। वहाँ भय, प्रलोभन, नृशंसता, किसी युक्ति का

प्रयोग किया जा सकता था। अन्त में, यदि ये सब युक्तियाँ विफल होतीं तो।

(अचलसिंह का प्रवेश)

अचल — दादाजी, देखिए नौकर बड़ी गुस्ताखी करता है। अभी मैं फुटबाल देखकर आया हूँ, कहता हूँ, जूता उतार दे, लेकिन वह लालटेन साफ कर रहा है, सुनता ही नहीं आप मुझे कोई अलग एक नौकर दे दीजिए, जो मेरे काम के सिवा और किसी का काम न करे।

सबल — (मुस्कराकर) मैं भी एक गिलास पानी मागूँ तो न दे?

अचल — आप हंसकर टाल देते हैं, मुझे तकलीफ होती है। मैं जाता हूँ, इसे खूब पीटता हूँ।

सबल — बेटा, वह काम भी तो तुम्हारा ही है। कमरे में रोशनी न होती तो उसके सिर होते कि अब तक लालटेन क्यों नहीं जलाई। क्या हर्ज है, आज अपने ही हाथ से जूते उतार लो। तुमने देखा होगा, जरूरत पड़ने पर लेडियाँ तक अपने बक्स उठा लेती हैं। जब बम्बे मेल आती है तो जरा स्टेशन पर देखो।

अचल — आज अपने जूते उतार लूँ, कल को जूतों में रोगन भी आप ही लगा लूँ, वह भी तो मेरा ही काम है, फिर खुद ही कमरे की सगाई भी करने लगूँ; अपने हाथों टब भी भरने लगूँ, धोती भी छांटने लगूँ।

सबल — नहीं, यह सब करने को मैं नहीं कहता, लेकिन अगर किसी दिन नौकर न मौजूद हो तो जूता उतार लेने में कोई हानि नहीं है।

अचल — जी हाँ, मुझे यह मालूम है; मैं तो यहाँ तक मानता हूँ कि एक मनुष्य को अपने दूसरे भाई से सेवा-टहल कराने का कोई अधिकार ही नहीं है। यहाँ तक कि साबरमती आश्रम में लोग अपने हाथों अपना चौका लगाते हैं, अपने बर्तन माँजते हैं और अपने कपड़े तक धो लेते हैं। मुझे इसमें कोई उज्र या इंकार नहीं है, मगर तब आप ही कहने लगेंगे— बदनामी होती है, शर्म की बात है, और अम्माँजी की तो नाक ही कटने लगेगी। मैं जानता हूँ नौकरों के अधीन होना अच्छी आदत नहीं है। अभी कल ही हम लोग कण्व स्थान गए थे।हमारे मास्टर थे और पंद्रह लड़के ग्यारह बजे दिन को धूप में चले। छतरी किसी के पास नहीं रहने दी गई। हाँ, लोटा-डोर साथ था।कोई एक बजे वहाँ पहुंचे। कुछ देर पेड़ के नीचे दम लिया। तब ताला। में स्नान किया। भोजन बनाने की ठहरी। घर से कोई भोजन करके

नहीं गया था। फिर क्या था, कोई गाँव से जिंस लाने दौड़ा, कोई उपले बटोरने लगा, दो-तीन लड़के पेड़ों पर चढ़कर लकड़ी तोड़ लाए, कुम्हार के घर से हाँडियाँ और घड़े आए। पत्तों के पत्तल हमने खुद बनाए। आलू का भर्ता और बाटियाँ बनाई गई। खाते-पकाते चार बज गए। घर लौटने की ठहरी। छः बजते-बजते यहाँ आ पहुंचे। मैंने खुद पानी खींचा, खुद उपले बटोरे। एक प्रकार का आनंद और उत्साह मालूम हो रहा था। यह ट्रिप (क्षमा कीजिएगा अंग्रेजी शब्द निकल गया) चक्कर इसीलिए तो लगाया गया था। जिसमें हम जरूरत पड़ने पर सब काम अपने हाथों से कर सकें, नौकरों के मोहताज न रहें।

सबल — इस चक्कर का हाल सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई अब ऐसे गस्त की ठहरे तो मुझसे भी कहना, मैं भी चलूँगा। तुम्हारे अध्यापक महाशय को मेरे चलने में कोई आपत्ति तो न होगी?

अचल — (हँसकर) वहाँ आप क्या कीजिएगा, पानी खींचिएगा?

सबल — क्यों, कोई ऐसा मुश्किल काम नहीं है।

अचल — इन नौकरों में दो-चार अलग कर दिए जाएँ तो अच्छा हो, इन्हें देखकर खामखाह कुछ-न-कुछ काम लेने का जी चाहता है। कोई आदमी सामने न हो तो आलमारी से खुद किताब निकाल लाता हूँ, लेकिन कोई रहता है तो खुद नहीं उठता, उसी

को उठाता हूँ। आदमी कम हो जाएँगे तो यह आदत छूट जाएगी।

सबल — हाँ, तुम्हारा यह प्रस्ताव बहुत अच्छा है। इस पर विचार करूँगा। देखो, नौकर खाली हो गया, जाओ जूते खुलवा लो।

अचल — जी नहीं, अब मैं कभी नौकर से जूता उतरवाऊँगा ही नहीं, और न पहनूँगा। खुद ही पहन लूँगा, उतार लूँगा। आपने इशारा कर दिया वह काफी है। (चला जाता है)

सबल — (मन में) ईश्वर तुम्हें चिरायु करें, तुम होनहार देख पड़ते हो, लेकिन कौन जानता है, आगे चलकर क्या रंग पकड़ोगे। मैं आज के तीन महीने पहले अपनी सच्चरित्रता पर घमंड करता था। वह घमंड एक क्षण में चूर-चूर हो गया। खैर होगा अगर और अब देनदारों पर दावा न हो, केवल हलधर ही पर किया जाए तो घोर अन्याय होगी। मैं चाहता हूँ दावे सभी पर किए जाएँ, लेकिन जायदाद किसी की नीलाम न कराई जाए। असामियों को जब मालूम हो जाएगा कि हमने घर छोड़ा और जायदाद गई तो वह कभी न जाएँगी। उनके भागने का एक कारण यह भी होगा कि लगान कहाँ से देंगे। मैं लगान मुआफ कर दूँ तो कैसा हो, मेरा ऐसा ज्यादा नुकसान न होगी। इलाके में सब जगह तो ओले गिरे नहीं हैं। सिर्फ दो-तीन गाँवों में गिरे हैं, पाँच हजार

रुपये का मुआमला है। मुमकिन है इस मुआफी की खबर गवर्नमेंट को भी हो जाए और मुआफी का हुक्म दे दे, तो मुझे मुफ्त में यश मिल जाएगा और अगर सरकार न भी मुआफ करे तो इतने आदमियों का भला हो जाना ही कौन छोटी बात है! रहा हलधर, उसे कुछ दिनों के लिए अलग कर देने से मेरी मुश्किल आसान हो जाएगी। यह काम ऐसे गुप्त रीति से होना चाहिए कि किसी को कानोंकान खबर न हो, लोग यही समझें कि कहीं परदेश निकल गया होगा। तब मैं एक बार फिर राजेश्वरी से मिलूँ और तकदीर का फैसला कर लूँ। तब उसे मेरे यहाँ आकर रहने में कोई आपत्ति न होगी। गाँव में निरावलंब रहने से तो उसका चित्त स्वयं घबरा जाएगी। मुझे तो विश्वास है कि वह यहाँ सहर्ष चली आएगी। यही मेरा अभीष्ट है। मैं केवल उसके समीप रहना, उसकी मृदु मुस्कान, उसकी मनोहर वाणी।

(ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — स्वामीजी से आपकी भेंट हुई?

सबल — हाँ।

ज्ञानी — मैं उनके दर्शन करने जाऊँ?

सबल — नहीं।

ज्ञानी — पाखंडी हैं न? यह तो मैं पहले ही समझ गई थी

सबल — नहीं, पाखंडी नहीं हैं, विद्वान् हैं, लेकिन मुझे किसी कारण से उनमें श्रद्धा नहीं हुई पवित्रात्मा का यही लक्षण है कि वह दूसरों के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न कर दे। अभी थोड़ी देर पहले मैं उनका भक्त था पर इतनी देर में उनके उपदेशों पर विचार करने से ज्ञात हुआ कि उनसे तुम्हें ज्ञानोपदेश नहीं मिल सकता और न वह आशीर्वाद ही मिल सकता है, जिससे तुम्हारी मनोकामना पूरी हो!

तीसरा दृश्य

(स्थान — मधुबन गाँव। समय — बैशाख, प्रातःकाल)

फत्तू — पाँचों आदमियों पर डिगरी हो गई। अब ठाकुर साहब जब चाहें उनके बैल-बधिये नीलाम करा लें।

एक किसान — ऐसे निर्दयी तो नहीं हैं। इसका मतलब कुछ और ही है।

फत्तू — इसका मतलब मैं समझता हूँ। दिखाना चाहते हैं कि हम जब चाहें असामियों को बिगाड़ सकते हैं। असामियों को घमंड न हो, फिर गाँव में हम जो चाहें करें, कोई मुँह न खोले।

(सबलसिंह के चपरासी का प्रवेश)

चपरासी — सरकार ने हुक्म दिया है कि असामी लोग जरा भी चिंता न करें। हम उनकी हर तरह मदद करने को तैयार हैं। जिनके लोगों ने अभी तक लगान नहीं दिया है उनकी माफी हो गई। अब सरकार किसी से लगान न हुई। अगले साल के लगान के साथ यह बकाया न वसूल की जायेगी। यह छूट सरकार की ओर से नहीं हुई है। ठाकुर साहब ने तुम लोगों की परवरिश के खयाल से यह रिआयत की है। लेकिन जो असामी परदेश चला जाएगा उसके साथ यह रिआयत न होगी। छोटे ठाकुर साहब ने देनदारों पर डिगरी कराई है। मगर उनका हुक्म भी यही है कि डिगरी जारी न की जाएगी। हाँ, जो लोग भागेंगे

उनकी जायदाद नीलाम करा ली जाएगी। तुम लोग दोनों ठाकुरों को आशीर्वाद दो।

एक किसान — भगवान दोनों भाइयों की जुगुल जोड़ी सलामत रखें।

दूसरा — नारायन उनका कल्यान करें। हमको जिला लिया, नहीं तो इस विपत्ति में कुछ न सूझता था।

तीसरा — धन्य है उनकी उदारता को। राजा हो तो ऐसा दीनपालक हो, परमात्मा उनकी बढ़ती करे।

चौथा — ऐसा दानी देश में और कौन है। नाम के लिए सरकार को लाखों रुपये चंदा दे आते हैं, हमको कौन पूछता है। बल्कि वह चंदा भी हमीं से ड़ंडे मार-मारकर वसूल कर लिया जाता है।

पहला — चलो, कल सब जने डेवढ़ी की जय मना आएँ।

दूसरा — हाँ, कल भोरे चलो।

तीसरा — चलो देवी के चौरे पर चलकर जय-जयकार मनाएँ।

चौथा — कहाँ है हलधर, कहो ढोल-मजीरा लेता चले।

(फत्तू हलधर के घर जाकर खाली हाथ लौट आता है)

पहला किसान — क्या हुआ? खाली हाथ क्यों आए?

फत्तू — हलधर तो आज दो दिन से घर ही नहीं आया।

दूसरा किसान — उसकी घरवाली से पूछा, कहीं नातेदारी में तो नहीं गया।

फत्तू — वह तो कहती है कि कल सबेरे खांचा लेकर आम तोड़ने गए थे। तब से लौटकर नहीं आए।

(सब-के-सब हलधर के द्वार पर आकर जमा हो जाते हैं। सलोनी और फत्तू घर में जाते हैं)

सलोनी — बेटा, तूने उसे कुछ कहा-सुना तो नहीं। उसे बात बहुत लगती है, लड़कपन से जानती हूँ। गुड़ के लिए रोए, लेकिन माँ झमककर गुड़ का पिंड़ा सामने फेंक दे तो कभी न उठाए। जब वह गोद में प्यार से बैठाकर गुड़ तोड़-तोड़ खिलाए तभी चुप हो,

फत्तू — यह बेचारी गऊ है, कुछ नहीं कहती-सुनती।

सलोनी — जरूर कोई-न-कोई बात हुई होगी, नहीं तो घर क्यों न आता? इसने गहनों के लिए ताना दिया होगा, चाहे महीन साड़ी माँगी हो, भले घर की बेटी है न, इसे महीन साड़ी अच्छी लगती है।

राजेश्वरी — काकी, क्या मैं इतनी निकम्मी हूँ कि देश में जिस बात की मनाही है वही करूँगी।

(फत्तू बाहर आता है)

मंगरू — मेरे जान में तो उसे थाने वाले पकड़ ले गए।

फत्तू — ऐसा कुमारगी तो नहीं है कि था ने वालों की आंख पर चढ़ जाए।

हरदास — थाने वालों की भली कहते हो, राह चलते लोगों को पकड़ा करते हैं। आम लिए देखा होगा; कहा होगा, चल थाने पहुँचा आ।

फत्तू — ऐसा दबैल तो नहीं है, लेकिन थाने ही पर जाता तो अब तक लौट आना चाहिए था।

मंगरू — किसी के रुपये-पैसे तो नहीं आते थे।

फत्तू — और किसी के नहीं, ठाकुर कंचनसिंह के दो सौ रुपये आते हैं।

मंगरू — कहीं उन्होंने गिरफ्तारी करा लिया हो,

फत्तू — सम्मन तक तो आया नहीं, नालिस कब हुई, डिगरी कब हुई औरों पर नालिस हुई तो सम्मन आया, पेशी हुई, तजबीज सुनाई गई।

हरदास — बड़े आदमियों के हाथ में सब कुछ है, जो चाहें करा दें। राज उन्हीं का है, नहीं तो भला कोई बात है कि सौ-पचास रुपये के लिए आदमी गिरफ्तारी कर लिया जाए, बाल-बच्चों से अलग कर दिया जाए, उसका सब खेती-बारी का काम रोक दिया जाए।

मंगरू — आदमी चोरी या और कोई कुन्याव करता है तब उसे कैद की सजा मिलती है। यहाँ महाजन बेकसूर हमें थोड़े-से रुपयों के लिए जेहल भेज सकता है। यह कोई न्याव थोड़े ही है।

हरदास — सरकार न जाने ऐसे कानून क्यों बनाती है। महाजन के रुपये आते हैं, जयदाद से ले, गिरफ्तारी क्यों करे।

मंगरू — कहीं डमरा टापू वाले न बहका ले गए हों।

फत्तू — ऐसा भोला नहीं है कि उनकी बातों में आ जाए।

मंगरू — कोई जान-बूझकर उनकी बातों में थोड़े ही आता है। सब ऐसी-ऐसी पट्टी पढ़ाते हैं कि अच्छे-अच्छे धोखे में आ जाते हैं। कहते हैं, इतना तलब मिलेगा, रहने को बंगला मिलेगा, खाने को वह मिलेगा जो यहाँ रईसों को भी नसीब नहीं, पहनने को रेशमी कपड़े मिलेंगे, और काम कुछ नहीं, बस खेत में जाकर ठंढे-ठंढे देख-भाल आए।

फत्तू — हाँ, यह तो सच है। ऐसी-ऐसी बातें सुनकर वह आदमी क्यों न धोखे में आ जाए जिसे कभी पेट-भर भोजन न मिलता हो, घास-भूसे से पेट भर लेना कोई खाना है। किसान पहर रात से पहर रात तक छाती फाड़ता है तब भी रोटी-कपड़े को नहीं होता, उस पर कहीं महाजन का डर, कहीं जमींदार की धौंस, कहीं पुलिस की डांट-डपट, कहीं अमलों की नजर-भेंट, कहीं हाकिमों की रसद-बेगारब सुना है जो लोग टापू में भरती हो जाते हैं उनकी बड़ी दुर्गत होती है। झोंपड़ी रहने को मिलती है और रात-दिन काम करना पड़ता है। जरा भी देर हुई तो अफसर कोड़ों से मारता है। पाँच साल तक आने का हुकुम नहीं है, उस पर तरह-तरह की सखती होती रहती है। औरतों की बड़ी बेइज्जती होती है, किसी की आबरू बचने नहीं पाती। अफसर सब गोरे हैं, वह औरतों को पकड़ ले जाते हैं। अल्लाह न करे कि कोई उन

दलालों के फंदे में फंसे! पाँच-छः साल में कुछ रुपये जरूर हो जाते हैं; पर उस लतखोरी से तो अपने देश की रूखी ही अच्छी। मुझे तो बिस्सास ही नहीं आता कि हलधर उनके फांसे में आ जाए।

हरदास — साधु लोग भी आदमियों को बहका ले जाते हैं।

फत्तू — हाँ, सुना तो है, मगर हलधर साधुओं की संगत में नहीं बैठा। गांजे-चरस की भी चाट नहीं कि इसी लालच से जा बैठता हो।

मंगरू — साधु आदमियों को बहकाकर क्या करते हैं?

फत्तू — भीख मँगवाते हैं और क्या करते हैं। अपना टहल करवाते हैं, बर्तन मंजवाते हैं, गांजा भरवाते हैं। भोले आदमी समझते हैं, बाबाजी सिद्ध हैं, प्रसन्न हो जाएँगे तो एक चुटकी राख में मेरा भला हो जाएगा, मुकुत बन जाएगी वह घाते में। कुछ कामचोर निखट्टू ऐसे भी हैं जो केवल मीठे पदार्थों के लालच में साधुओं के साथ पड़े रहते हैं। कुछ दिनों में यही टहलुवे संत बन बैठते हैं और अपने टहल के लिए किसी दूसरे को मूंड़ते हैं। लेकिन हलधर न तो पेटू ही है, न कामचोर ही है।

हरदास — कुछ तुम्हारा मन कहता है वह किधर गया होगा? तुम्हारा उसके साथ आठों पहर का उठना-बैठना है।

फत्तू — मेरी समझ में तो वह परदेश चला गया। दो सौ रुपये कंचनसिंह के आते थे। ब्याज समेत ढाई सौ रुपये होंगे। लगान की धौंस अलग। अभी दुधमुँहा बालक है, संसार का रंग-ढंग नहीं देखा, थोड़े में ही फूल उठता है और थोडे। में ही हिम्मत हार बैठता है। सोचा होगा, कहीं परदेश चलूँ और मेहनत-मजूरी करके सौ-दो सौ ले आऊँ। दो-चार दिन में चिट्ठी-पत्तर आएगी।

मंगरू — और तो कोई चिंता नहीं, मर्द है, जहाँ रहेगा, वहीं कमा खाएगा, चिंता तो उसकी घरवाली की है। अकेले कैसे रहेगी?

हरदास — मैके भेज दिया जाए।

मंगरू — पूछो, जाएगी?

फत्तू — पूछना क्या है, कभी न जाएगी। हलधर होता तो जाती। उसके पीछे कभी नहीं जा सकती।

राजेश्वरी — (द्वार पर खड़ी होकर) हाँ काका, ठीक कहते हो, अभी मैके चली जाऊँ तो घर और गाँव वाले यही न कहेंगे कि उनके पीछे गाँव में दस-पाँच दिन भी कोई देख-भाल करने वाला नहीं रहा तभी तो चली आई। तुम लोग मेरी कुछ चिंता न करो। सलोनी काकी को घर में सुला लिया करूँगी। और डर ही क्या है? तुम लोग तो हो ही।

चौथा दृश्य

(स्थान — हलधर का घर, राजेश्वरी और सलोनी आंगन में लेटी हुई हैं। समय — आधी रात)

राजेश्वरी — (मन में) आज उन्हें गए दस दिन हो गए। मंगल-मंगल आठ, बुध नौ, वृहस्पत दस। कुछ खबर नहीं मिली, न कोई चिट्ठी न पत्तर। मेरा मन बारम्बार यही कहता है कि यह सब सबलसिंह की करतूत है। ऐसे दानी-धर्मात्मा पुरूष कम होंगे, लेकिन मुझ नसीबों जली के कारन उनका दान-धर्म सब मिट्टी में मिला जाता है। न जाने किस मनहूस घड़ी में मेरा जनम हुआ! मुझमें ऐसा कौन-सा गुन है? न मैं ऐसी सुंदरी हूँ, न इतने बनाव-सिंगार से रहती हूँ, माना इस गाँव में मुझसे सुंदर और कोई स्त्री नहीं है। लेकिन शहर में तो एक-से-एक पड़ी हुई हैं। यह सब मेरे अभाग का फल है। मैं अभागिनी हूँ। हिरन कस्तूरी के लिए मारा जाता है। मैना अपनी बोली के लिए पकड़ी जाती है। फूल अपनी सुगंध के लिए तोड़ा जाता है। मैं भी अपने रूप-रंग के हाथों मारी जा रही हूँ।

सलोनी — क्या नींद नहीं आती बेटी?

राजेश्वरी — नहीं काकी, मन बड़ी चिंता में पड़ा हुआ है। भला क्यों काकी, अब कोई मेरे सिर पर तो रहा नहीं, अगर कोई पुरूष मेरा धर्म बिगाड़ना चाहे तो क्या करूँ?

सलोनी — बेटी, गाँव के लोग उसे पीसकर पी जाएँगी।

राजेश्वरी — गाँव वालों पर बात खुल गई तब तो मेरे माथे पर कलंक लग ही जाएगी।

सलोनी — उसे दंड देना होगी। उससे कपट-प्रेम करके उसे विष पिला देना होगी। विष भी ऐसा कि फिर वह आँखें न खोले। भगवान को, चंद्रमा को, इन्द्र को जिस अपराध का दंड मिला था। क्या, हम उसका बदला न लेंगी। यही हमारा धरम है। मुँह से मीठी-मीठी बातें करो पर मन में कटार छिपाए रखो।

राजेश्वरी — (मन में) हाँ, अब यही मेरा धरम है। अब छल और कपट से ही मेरी रक्षा होगी। वह धर्मात्मा सही, दानी सही, विद्वान सही, यह भी जानती हूँ कि उन्हें मुझसे प्रेम है, सच्चा प्रेम है। वह मुझे पाकर मुग्ध हो जाएँगे, मेरे इशारों पर नाचेंगे, मुझ पर अपने प्राण न्यौछावर करेंगी। क्या मैं इस प्रेम के बदले कपट कर सकूँगी? जो मुझ पर जान देगा, मैं उसके साथ कैसे दगा करूँगी? यह बात मरदों में ही है कि जब वह किसी दूसरी स्त्री पर मोहित

हो जाते हैं तो पहली स्त्री के प्राण लेने से भी नहीं हिचकते। भगवान्, यह मुझसे कैसे होगा? (प्रकट) क्यों काकी, तुम अपनी जवानी में तो बड़ी सुंदर रही होगी?

सलोनी — यह तो नहीं जानती बेटी, पर इतना जानती हूँ कि तुम्हारे काका की आँखों में मेरे सिवा और कोई स्त्री जँचती ही न थी। जब तक चार-पाँच लड़कों की माँ न हो गई, पनघट पर न जाने दिया।

राजेश्वरी — बुरा न मानना काकी, यों ही पूछती हूँ, उन दिनों कोई दूसरा आदमी तुम पर मोहित हो जाता और काका को जेहल भिजवा देता तो तुम क्या करतीं?

सलोनी — करती क्या, एक कटारी अंचल के नीचे छिपा लेती। जब वह मेरे उसपर प्रेम के फूलों की वर्षा करने लगता, मेरे सुख-विलास के लिए संसार के अच्छे-अच्छे पदार्थ जमा कर देता, मेरे एक कटाक्ष पर, एक मुस्कान पर, एक भाव पर फूला न समाता, तो मैं उससे प्रेम की बातें करने लगती। जब उस पर नशा छा जाता, वह मतवाला हो जाता तो कटार निकालकर उसकी छाती में भोंक देती।

राजेश्वरी — तुम्हें उस पर तनिक भी दया न आती?

सलोनी — बेटी, दया दीनों पर की जाती है कि अत्याचारियों पर? धर्म प्रेम के उसपर है, उसी भाँति जैसे सूरज चंद्रमा के उसपर है। चंद्रमा की ज्योति देखने में अच्छी लगती है, लेकिन सूरज की ज्योति से संसार का पालन होता है।

राजेश्वरी — (मन में) भगवान्, मुझसे यह कपट-व्यवहार कैसे निभेगा! अगर कोई दुष्ट, दुराचारी आदमी होता तो मेरा काम सहज था। उसकी दुष्टता मेरे क्रोध को भड़का देती है। भय तो इस पुरूष की सज्जनता से है। इससे बड़ा भय उसके निष्कपट प्रेम से है। कहीं प्रेम की तरंगों में बह तो न जाऊँगी, कहीं विलास में तो मतवाली न हो जाऊँगी। कहीं ऐसा तो न होगा कि महलों को देखकर मन में इस झोंपड़े का निरादर होने लगे, तकियों पर सोकर यह टूटी खाट गड़ने लगे, अच्छे-अच्छे भोजन के सामने इस रूखे-सूखे भोजन से मन फिर जाए, लौंडियों के हाथों पान की तरह फेरे जाने से यह मेहनत-मजूरी अखरने लगे। सोचने लगूँ ऐसा सुख पाकर क्यों उस पर लात मारूँ? चार दिन की जिंदगानी है उसे छल-कपट, मरने-मारने में क्यों गँवाऊँ? भगवान की जो इच्छा थी वह हुआ और हो रहा है। (प्रकट) काकी, कटार भोंकते हुए तुम्हें डर न लगता?

सलोनी — डर किस बात का? क्या मैं पछी से भी गई-बीती हूँ। चिड़िया को सोने के पिंजरे में रखो, मेवे और मिठाई खिलाओ,

लेकिन वह पिंजरे का द्वार खुला पाकर तुरंत उड़ जाती है। अब बेटी, सोओ, आधी रात से ऊपर हो गई। मैं तुम्हें गीत सुनाती हूँ। (गाती है)

मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।

राजेश्वरी — (मन में) इन्हें गाने की पड़ी है। कंगाल होकर जैसे आदमी को चोर का भय नहीं रहता, न आगम की कोई चिंता, उसी भाँति जब कोई आगे-पीछे नहीं रहता तो आदमी निश्चिंत हो जाता है। (प्रकट) काकी, मुझे भी अपनी भाँति प्रसन्न-चित्त रहना सिखा दो।

सलोनी — ऐ, नौज बेटी! चिंता धन और जन से होती है। जिसे चिंता न हो वह भी कोई आदमी है। वह अभागा है, उसका मुँह देखना पाप है। चिंता बड़े भागों से होती है। तुम समझती होगी, बुढ़िया हरदम प्रसन्न रहती है तभी तो गाया करती है। सच्ची बात यह है कि मैं गाती नहीं, रोती हूँ। आदमी को बड़ा आनंद मिलता है तो रोने लगता है। उसी भाँति जब दुख अथाह हो जाता है, तो गाने लगता है। इसे हंसी मत समझो, यह पागलपन है। मैं पगली हूँ। पचास आदमियों का परिवार आँखों के सामने से उठ गया। देखें भगवान इस मिट्टी की कौन गत करते हैं। (गाती है)

मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।
ए जी पावन की, घर लावन की।
छोड़ काज अरू लाज जगत की।
निश दिन ध्यान लगावन की॥
मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।
सुरत उजाली खुल गई ताली।
गगन महल में जावन की॥
मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।
झिलमिल कारी जो निहारी।
जैसे बिजली सावन की।
मुझे लगन लगी प्रभु पावन की॥

बेटी, तुम हलधर का सपना तो नहीं देखती हो?

राजेश्वरी — बहुत बुरे-बुरे सपने देखती हूँ। इसी डर के मारे तो मैं और नहीं सोती। आंख झपकी और सपने दिखाई देने लगे।

सलोनी — कल से तुलसी माता को दिया चढ़ा दिया करो। एतवार-मंगल को पीपल में पानी दे दिया करो। महावीर सामी को लड्डू की मनौती कर दो। कौन जाने देवताओं के प्रताप से लौट आए। अच्छा, अब महावीर जी का नाम लेकर सो जाव। रात बहुत हो गई है, दो घड़ी में भोर हो जाएगी।

(सलोनी करवट बदलकर सोती है और खर्राटे भरने लगती है)

राजेश्वरी — (आप-ही-आप) बुढ़िया सो रही है, अब मैं चलने की तैयारी करूँ। छत्री लोग रन पर जाते थे तो खूब सजकर जाते थे। मैं भी कपड़े-लत्ते से लैस हो जाऊँ। वह पाँचों हथियार लगाते थे। मेरे हथियार मेरे गहने हैं। वही पहन लेती हूँ। वह केसर का तिलक लगाते थे, मैं सिंदूर का टीका लगा लेती हूँ। वह मलिच्छों का संहार करने जाते थे, मुझे देवता का संहार करना है। भगवती तुम मेरी सहाय हो लेकिन छत्री लोग तो हंसते हुए घर से विदा होते थे। मेरी आँखों में आँसू भरे आते हैं। आज यह घर छूटता है! इसे सातवें दिन लीपती थी, त्योहारों पर पोतनी मिट्टी से पोतती थी। कितनी उमंग से आंगन में फुलवारी लगाती थी। अब कौन इनकी इतनी सेवा करेगी। दो ही चार दिनों में यहाँ भूतों का डेरा हो जाएगी। हो जाए! जब घर का प्राणी ही नहीं रहा तो घर लेकर क्या करूँ? आह, पैर बाहर नहीं निकलते, जैसे दीवारें खींच रही हों। इनसे गले मिल लूँ। गाय-भैंस कितने साध से ली थीं। अब इनसे भी नाता टूटता है। दोनों गाभिन हैं। इनके बच्चों को भी न खेलाने पाई। बेचारी हुड़क-हुड़ककर मर जाएँगी। कौन इन्हें मुँह अंधेरे भूसा-खली देगा, कौन इन्हें तलाब में नहलाएगा।

दोनों मुझे देखते ही खड़ी हो गई। मेरी ओर मुँह बढ़ा रही है, पूछ रही हैं कि आज कहाँ की तैयारी है? हाय! कैसे प्रेम से मेरे हाथों को चाट रही हैं! इनकी आँखों में कितना प्यार है! आओ, आज चलते-चलते तुम्हें अपने हाथों से दाना खिला दूँ! हा भगवान्! दाना नहीं खातीं, मेरी ओर मुँह करके ताकती हैं। समझ रही हैं कि यह इस तरह बहला कर हमें छोड़े जाती है। इनके पास से कैसे जाऊँ? रस्सी तुड़ा रही हैं, हुंकार मार रही हैं। वह देखो, बैल भी उठ बैठे। वह गए, इन बेचारों की सेवा न हो सकी। वह इन्हें घंटों सहलाया करते थे। लोग कहते हैं तुम्हें आने वाली बातें मालूम हो जाती हैं। कुछ तुम ही बताओ, वह कहाँ हैं, कैसे हैं, कब आएँगे? क्या अब कभी उनकी सूरत देखनी न नसीब होगी? ऐसा जान पड़ता है, इनकी आँखों में आँसू भरे हैं। जाओ, अब तुम सभी को भगवान के भरोसे छोड़ती हूँ। गाँव वालों को दया आएगी तो तुम्हारी सुधि लेंगे, नहीं तो यहीं भूखे रहोगी। फत्तू मियाँ तुम्हारी सेवा करेंगे। उनके रहते तुम्हें कोई कष्ट न होगी। वह दो आँखें भी न करेंगे कि अपने बैलों को दाना और खली दें, तुम्हारे सामने सूखा भूसा डाल दें। लो, अब विदा होती हूँ। भोर हो रहा है, तारे मद्धिम पड़ने लगे। चलो मन, इस रोने-बिसूरने से काम न चलेगा! अब तो मैं हूँ और प्रेम-कौशल का

रनछेत्र है। भगवती का और उनसे भी अधिक अपनी दृढ़ता का भरोसा है।

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान — सबलसिंह का दीवानखाना, खस की टट्टियाँ लगी हुई, पंखा चल रहा है। सबल शीतलपाटी पर लेटे हुए डेमोक्रेसी नामक ग्रंथ पढ़ रहे हैं, द्वार पर एक दरबान बैठा झपकियाँ ले रहा है। समय — दोपहर, मध्याह्न की प्रचंड धूप)

सबल — हम अभी जनसत्तात्मक राज्य के योग्य नहीं हैं, कदापि नहीं हैं। ऐसे राज्य के लिए सर्वसाधारण में शिक्षा की प्रचुर मात्रा होनी चाहिए। हम अभी उस आदर्श से कोसों दूर हैं। इसके लिए महान स्वार्थ-त्याग की आवश्यकता है। जब तक प्रजा-मात्र स्वार्थ को राष्ट्र पर बलिदान करना नहीं सीखती, इसका स्वप्न देखना मन की मिठाई खाना है। अमरीका, फ्रांस, दक्षिणी अमरीका आदि देशों ने बड़े समारोह से इसकी व्यवस्था की, पर उनमें से किसी को भी सफलता नहीं हुई वहाँ अब भी धन और सम्पत्ति वालों के

ही हाथों में अधिकार है। प्रजा अपने प्रतिनिधि कितनी ही सावधानी से क्यों न चुने, पर अन्त में सत्ता गिने-गिनाए आदमियों के ही हाथों में चली जाती है। सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था ही ऐसी दूषित है कि जनता का अधिकांश मुट्ठी भर आदमियों के वंशवर्ती हो गया है। जनता इतनी निर्बल, इतनी अशक्त है कि इन शक्तिशाली पुरूषों के सामने सिर नहीं उठा सकती। यह व्यवस्था अपवादमय, विनष्टकारी और अत्याचारपूर्ण है। आदर्श व्यवस्था यह है कि सबके अधिकार बराबर हों, कोई जमींदार बनकर, कोई महाजन बनकर जनता पर रोब न जमा सके यह ऊँच-नीच का घृणित भेद उठ जाए। इस सबल?निबल संग्राम में जनता की दशा बिगड़ती चली जाती है। इसका सबसे भयंकर परिणाम यह है कि जनता आत्मसम्मान-विहीन होती जाती है, उसमें प्रलोभनों का प्रतिकार करने, अन्याय का सिर कुचलने की सामर्थ्य नहीं रही। छोटे-छोटे स्वार्थ के लिए बहुधा भयवश कैसे-कैसे अनर्थ हो रहे हैं। (मन में) कितनी यथार्थ बात लिखी है। आज ऐसा कोई असामी नहीं है जिसके घर में मैं अपने दुष्टाचरण का तीर न चला सकूँ। मैं कानून के बल से, भय के बल से, प्रलोभन के बल से अपना अभीष्ट पूरा कर सकता हूँ। अपनी शक्ति का ज्ञान हमारे दुस्साहस को, कुभावों को और भी उत्तेजित कर देता है। खैर! हलधर को जेल गए हुए आज दसवाँ दिन है,

मैं गाँव की तरफ नहीं गया। न जाने राजेश्वरी पर क्या गुजर रही है। कौन मुँह लेकर जाऊँ? अगर कहीं गाँव वालों को यह चाल मालूम हो गई होगी तो मैं वहाँ मुँह भी न दिखा सकूँगा। राजेश्वरी को अपनी दशा चाहे कितनी कष्टप्रद जान पड़ती हो, पर उसे हलधर से प्रेम है। हलधर का द्रोही बनकर मैं उसके प्रेम-रस को नहीं पा सकता। क्यों न कल चला जाऊँ, इस उधेड़-बुन में कब तक पड़ा रहूँगी। अगर गाँव वालों पर यह रहस्य खुल गया होगा तो मैं विस्मय दिखाकर कह सकता हूँ कि मुझे खबर नहीं है, आज ही पता लगाता हूँ। सब तरह उनकी दिलजोई करनी होगी और हलधर को मुक्त कराना पड़ेगा। सारी बाजी इसी दांव पर निर्भर है। मेरी भी क्या हालत है, पढ़ता हूँ डेमोक्रेसी और अपने को धोखा देना व्यर्थ है। यह प्रेम नहीं है, केवल काम-लिप्सा है। प्रेम दुर्लभ वस्तु है, यह उस अधिकार का जो मुझे असामियों पर है, दुरूपयोग मात्र है।

(दरबान आता है)

सबल — क्या है? मैंने कह दिया है इस वक्त मुझे दिक मत किया करो। क्या मुखतार आए हैं? उन्हें और कोई वक्त ही नहीं मिलता?

दरबान — जी नहीं, मुखतार नहीं आए हैं। एक औरत है।

सबल — औरत है? कोई भिखारिन है क्या? घर में से कुछ लाकर देदो। तुम्हें जरा भी तमीज नहीं है, जरा-सी बात के लिए मुझे दिक किया।

दरबान — हुज़ूर, भिखारिन नहीं है। अभी फाटक पर एक्के पर से उतरी है। खूब गहने पहने हुई है। कहती है, मुझे राजा साहब से कुछ कहना है।

सबल — (चौंककर) कोई देहातिन होगी। कहाँ है?

दरबान — वहीं मौलसरी के नीचे बैठी है।

सबल — समझ गया, ब्राह्मणी है, अपने पति के लिए दवा माँगने आई है। (मन में) वही होगी। दिल कैसा धड़कने लगा। दोपहर का समय है। नौकर-चाकर सब सो रहे होंगे। दरबान को बरफ लाने के लिए बाजार भेज दूँ। उसे बगीचे वाले बंगले में ठहराऊँ। (प्रकट) उसे भेज दो और तुम जाकर बाजार से बरफ लेते आओ।

दरबान चला जाता है। राजेश्वरी आती हैं। सबलसिंह तुरंत उठकर उसे बगीचे वाले बंगले में ले जाते हैं।

राजेश्वरी — आप तो टट्टी लगाए आराम कर रहे हैं और मैं जलती हुई धूप में मारी-मारी फिर रही हूँ। गाँव की ओर जाना ही छोड़ दिया। सारा शहर भटक चुकी तो मकान का पता मिला।

सबल — क्या कहूँ, मेरी हिमाकत से तुम्हें इतनी तकलीफ हुई, बहुत लज्जित हूँ। कई दिन से आने का इरादा करता था। पर किसी-न-किसी कारण से रुक जाना पड़ता था। बरफ आती होगी, एक गिलास शर्बत पी लो तो यह गरमी दूर हो जाए।

राजेश्वरी — आपकी कृपा है, मैंने बरफ कभी नहीं पी है। आप जानते हैं, मैं यहाँ क्या करने आई हूँ?

सबल — दर्शन देने के लिए।

राजेश्वरी — जी नहीं, मैं ऐसी निःस्वार्थ नहीं हूँ। आई हूँ आपके घर में रहने; आपका प्रेम खींच लाया है। जिस रस्सी में बंधी हुई थी वह टूट गई। उनका आज दस-ग्यारह दिन से कुछ पता नहीं है। मालूम होता है कहीं देस-विदेस भाग गए। फिर मैं किसकी होकर रहती। सब छोड़-छाड़कर आपकी सरन आई हूँ, और सदा के लिए। उस ऊजड़ गाँव से जी भर गया।

सबल — तुम्हारा घर है, आनंद से रहो, धन्य भाग कि मुझे आज यह अवसर मिला। मैं इतना भाग्यवान हूँ, मुझे इसका विश्वास ही न था। मेरी तो यह हालत हो रही है —

हमारे घर में वह आएँ, ख़ुदा की कुदरत है।
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।

ऐसा बौखला गया हूँ कि कुछ समझ में ही नहीं आता, तुम्हारी कैसे खिदमत करूँ।

राजेश्वरी — मुझे इसी बंगले में रहना होगा?

सबल — ऐसा होता तो क्या पूछना था।, पर यहाँ बखेड़ा है, बदनामी होगी। मैं आज ही शहर में एक अच्छा मकान ठीक कर लूँगा। सब इंतजाम वहीं हो जाएगी।

राजेश्वरी — (प्रेम कटाक्ष से देखकर) प्रेम करते हो और बदनामी से डरते हो, यह कच्चा प्रेम है।

सबल — (झेंपकर) अभी नया रंगरूट हूँ न?

राजेश्वरी — (सजल नेत्रों से) मैंने अपना सर्वस अापको दे दिया। अब मेरी लाज आपके हाथ है।

सबल — (उसके दोनों हाथ पकड़कर तस्कीन देते हुए) राजेश्वरी, मैं तुम्हारी इस कृपा को कभी न भूलूँगा। मुझे भी आज से अपना सेवक, अपना चाकर, जो चाहे समझो।

राजेश्वरी — (मुस्कराकर) आदमी अपने सेवक की सरन नहीं जाता, अपने स्वामी की सरन आता है। मालूम नहीं आप मेरे मन के भावों को जानते हैं या नहीं, पर ईश्वर ने आपको इतनी विद्या और बुद्धि दी है, आपसे कैसे छिपा रह सकता है। मैं आपके प्रेम, केवल आपके प्रेम के वश होकर आई हूँ। पहली बार जब आपकी निगाह मुझ पर पड़ी तो उसने मुझ पर मंत्र-सा फूंक दिया। मुझे उसमें प्रेम की झलक दिखाई दी। तभी से मैं आपकी हो गई। मुझे भोगविलास की इच्छा नहीं, मैं केवल आपको चाहती हूँ। आप मुझे झोंपड़ी में रखिए, मुझे गजी-गाढ़ा पहनाइए, मुझे उनमें भी सरग का आनंद मिलेगी। बस आपकी प्रेम-दिरिष्ट मुझ पर बनी रहे।

सबल — (गर्व के साथ) मैं जिंदगी-भर तुम्हारा रहूँगा और केवल तुम्हारा। मैंने उच्च कुल में जन्म पाया। घर में किसी चीज की कमी नहीं थी। मेरा पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ, जैसा रईसों के लड़कों का होता है। घर में बीसियों युवती महरियाँ, महराजिनें थीं। उधर नौकर-चाकर भी मेरी कुवृत्तियों को भड़काते रहते थे। मेरे चरित्र-पतन के सभी सामान जमा थे। रईसों के

अधिकांश युवक इसी तरह भ्रष्ट हो जाते हैं। पर ईश्वर की मुझ पर कुछ ऐसी दया थी कि लकड़पन ही से मेरी प्रवृत्ति विद्याभ्यास की ओर थी और उसने युवावस्था में भी साथ न छोड़ा। मैं समझने लगा था।, प्रेम कोई वस्तु ही नहीं, केवल कवियों की कल्पना है। मैंने एक-से-एक यौवनवती सुंदरियाँ देखी हैं, पर कभी मेरा चित्त विचलित नहीं हुआ। तुम्हें देखकर पहली बार मेरी हृदयवीणा के तारों में चोट लगी। मैं इसे ईश्वर की इच्छा के सिवाय और क्या कहूँ। तुमने पहली ही निगाह में मुझे प्रेम का प्याला पिला दिया, तब से आज तक उसी नशे में मस्त था। बहुत उपाय किए, कितनी ही खटाइयाँ खाई पर यह नशा न उतरा। मैं अपने मन के इस रहस्य को अब तक नहीं समझ सका। राजेश्वरी, सच कहता हूँ, मैं तुम्हारी ओर से निराश था। समझता था, अब यह जिंदगी रोते ही कटेगी, पर भाग्य को धन्य है कि आज घर बैठे देवी के दर्शन हो गए और जिस वरदान की आशा थी, वह भी मिल गया।

राजेश्वरी — मैं एक बात कहना चाहती हूँ, पर संकोच के मारे नहीं कह सकती।

सबल — कहो-कहो मुझसे क्या संकोच! मैं कोई दूसरा थोड़े ही हूँ।

राजेश्वरी — न कहूँगी, लाज आती है।

सबल — तुमने मुझे चिंता में डाल दिया, बिना सुने मुझे चैन न आएगी।

राजेश्वरी — कोई ऐसी बात नहीं है, सुनकर क्या कीजिएगा!

सबल — (राजेश्वरी के दोनों हाथ पकड़कर) बिना कहे न जाने दूँगा, कहना पड़ेगा।

राजेश्वरी — (असमंजस में पड़कर) मैं सोचती हूँ, कहीं आप यह समझें कि जब यह अपने पति की होकर न रही तो मेरी होकर क्या रहेगी। ऐसी चंचल औरत का क्या ठिकाना?

सबल — बस करो राजेश्वरी, अब और कुछ मत कहो, तुमने मुझे इतना नीच समझ लिया। अगर मैं तुम्हें अपना हृदय खोलकर दिखा सकता तो तुम्हें मालूम होता कि मैं तुम्हें क्या समझता हूँ। वह घर, उस घर के प्राणी, वह समाज, तुम्हारे योग्य न थे। गुलाब की शोभा बाग में है, घूरे पर नहीं। तुम्हारा वहाँ रहना उतना अस्वाभाविक था। जितना सुअर के माथे पर सेंदुर का टीका होता है या झोंपड़ी में झाड़। वह जलवायु तुम्हारे सर्वथा। प्रतिकूल थी। हंस मरुभूमि में नहीं रहता। इसी तरह अगर मैं सोचूँ, कहीं तुम यह न समझो कि जब यह अपनी विवाहिता स्त्री का न हुआ तो मेरा क्या होगा, तो?

राजेश्वरी — (गंभीरता से) मुझमें और आप में बड़ा अन्तर है।

सबल — यह बातें फिर होंगी, इस वक्त आराम करो, थक गई होगी। पंखा खोले देता हूँ। सामने वाली कोठरी में पानी-वानी सब रखा हुआ है। मैं अभी आता हूँ।

छठा दृश्य

(सबलसिंह का भवन। गुलाबी और ज्ञानी फर्श पर बैठी हुई हैं। बाबा चेतनदास गालीचे पर मसनद लगाए लेटे हुए हैं। रात के आठ बजे हैं)

गुलाबी — आज महात्माजी ने बहुत दिनों के बाद दर्शन दिए।

ज्ञानी — मैंने समझा था। कहीं तीर्थ करने चले गए होंगी।

चेतनदास — माताजी मेरे को अब तीर्थयात्रा से क्या प्रयोजन? ईश्वर तो मन में है, उसे पर्वतों के शिखर और नदियों के तट पर क्यों खोजूँ? वह घट-घटव्यापी है, वही तुममें है, वही मुझमें है, उसी की अखिल ज्योति है। यह विभिन्नता केवल बहिर्जगत में है,

अन्तर्जगत में कोई भेद नहीं है। मैं अपनी कुटी में बैठा हुआ ध्यानावस्था में अपने भक्तों से साक्षात् करता रहा हूँ। यह मेरा नित्य का नियम है।

गुलाबी — (ज्ञानी से) महात्माजी अन्तरजामी हैं। महाराज, मेरा लड़का मेरे कहने में नहीं है। बहू ने उस पर न जाने कौन-सा मंत्र डाल दिया है कि मेरी बात ही नहीं पूछता। जो कुछ कमाता है वह लाकर बहू के हाथ में देता है, वह चाहे कान पकड़कर उठाए या बैठाए, बोलता ही नहीं। कुछ ऐसा उतजोग कीजिए कि वह मेरे कहने में हो जाए, बहू की ओर से उसका चित्त फिर जाए। बस यही मेरी लालसा है।

चेतनदास — (मुस्कराकर) बेटे को बहू के लिए ही तो पाला पोसा था। अब वह बहू का हो रहा तो तेरे को क्यों ईर्ष्या होती है?

ज्ञानी — महाराज, वह स्त्री के पीछे इस बेचारी से लड़ने पर तैयार हो जाता है।

चेतनदास — वह कोई बात नहीं है। मैं उसे मोम की भाँति जिधर चाहूँ फेर सकता हूँ, केवल इसको मुझ पर श्रद्धा रखनी चाहिए। श्रद्धा, श्रद्धा, श्रद्धा; यही अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति का मूलमंत्र है। श्रद्धा से ब्रह्म मिल जाता है। पर श्रद्धा उत्पन्न कैसे हो? केवल बातों ही से श्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती। वह कुछ

देखना चाहती है। बोलो, क्या दिखाऊँ? तुम दोनों मन में कोई बात ले लो। मैं अपने योगबल से अभी बतला दूँगा। ज्ञानी देवी, पहले तुम मन में कोई बात लो।

ज्ञानी — ले लिया, महाराज!

चेतनदास — (ध्यान करके) बड़ी दूर चली गई। मोतियों का हार है न?

ज्ञानी — हाँ महाराज, यही बात थी।

चेतनदास — गुलाबी, अब तुम कोई बात लो।

गुलाबी — ले ली, महाराज!

चेतनदास — (ध्यान करके, मुस्कराकर) बहू से इतना द्वेष? वह मर जाए?

गुलाबी — हाँ, महाराज, यही बात थी। आप सचमुच अन्तरजामी हैं।

चेतनदास — कुछ और देखना चाहती हो? बोलो, क्या वस्तु यहाँ मंगवाऊँ? मेवा, मिठाई, हीरे, मोती इन सब वस्तुओं के ढेर लगा सकता हूँ। अमरूद के दिन नहीं हैं, जितना अमरूद चाहो मंगवा दूँ। भेजो प्रभूजी, भेजो, तुरत भेजो — (मोतियों का ढेर लगता है)

गुलाबी — आप सिद्ध हैं।

ज्ञानी — आपकी चमत्कार-शक्ति को धन्य है!

चेतनदास — और क्या देखना चाहती हो? कहो, यहाँ से बैठे-बैठे अन्तरध्यान हो जाऊँ और फिर यहीं बैठा हुआ मिलूँ। कहो, वहाँ उस वृक्ष के नीचे तुम्हें नेपथ्य में गाना सुनाऊँ। हाँ, यही अच्छा है। देवगण तुम्हें गाना सुनाएँगे, पर तुम्हें उनके दर्शन न होंगे। उस वृक्ष के नीचे चली जाओ।

(दोनों जाकर पेड़ के नीचे खड़ी हो जाती हैं। गाने की ध्वनि आने लगती है)

बाहिर ढूंढ़न जा मत सजनी,
पिया घर बीच बिराज रहे री॥
गगन महल में सेज बिछी है
अनहद बाजे बाज रहे री॥
अमृत बरसे, बिजली चमके
घुमर-घुमर घन गाज रहे री॥

ज्ञानी — ऐसे महात्माओं के दर्शन दुर्लभ होते हैं।

गुलाबी — पूर्वजन्म में बहुत अच्छे कर्म किए थे। यह उसी का फल है।

ज्ञानी — देवताओं को भी बस में कर लिया है।

गुलाबी — जोगबल की बड़ी महिमा है। मगर देवता बहुत अच्छा नहीं गाते। गला दबाकर गाते हैं क्या?

ज्ञानी — पगला गई है क्या! महात्माजी अपनी सिद्धि दिखा रहे हैं कि तुम्हारे लिए देवताओं की संगीत-मंडली खड़ी की है।

गुलाबी — ऐसे महात्मा को राजा साहब धूर्त कहते हैं।

ज्ञानी — बहुत विद्या पढ़ने से आदमी नास्तिक हो जाता है। मेरे मन में तो इनके प्रति भक्ति और श्रद्वा की एक तरंग-सी उठ रही है। कितना देवतुल्य स्वरूप है।

गुलाबी — कुछ भेंट-भांट तो लेंगे नहीं?

ज्ञानी — अरे राम-राम! महात्माओं को रुपये-पैसे का क्या मोह? देखती तो हो कि मोतियों के ढेर सामने लगे हुए हैं, किस चीज की कमी है?

(दोनों कमरे में आती हैं। गाना बन्द होता है)

ज्ञानी — अरे! महात्माजी कहाँ चले गए? यहाँ से उठते तो नहीं देखा।

गुलाबी — उनकी माया कौन जाने! अन्तरध्यान हो गए होंगी।

ज्ञानी — कितनी अलौकिक लीला है!

गुलाबी — अब मरते दम तक इनका दामन न छोड़ूँगी। इन्हीं के साथ रहूँगी और सेवा-टहल करती रहूँगी।

ज्ञानी — मुझे तो पूरा विश्वास है कि मेरा मनोरथ इन्हीं से पूरा होगी।

(सहसा चेतनदास मसनद लगाए बैठे दिखाई देते हैं)

गुलाबी — (चरणों पर गिरकर) धन्य हो महाराज, आपकी लीला अपरम्पार है।

ज्ञानी — (चरणों पर गिरकर) भगवान्, मेरा उद्धार करो।

चेतनदास — कुछ और देखना चाहती है?

ज्ञानी — महाराज, बहुत देख चुकी। मुझे विश्वास हो गया कि आप मेरा मनोरथ पूरा कर देंगी।

चेतनदास — जो कुछ मैं कहूँ वह करना होगी।

ज्ञानी — सिर के बल करूँगी।

चेतनदास — कोई शंका की तो परिणाम बुरा होगी।

ज्ञानी — (काँपती हुई) अब मुझे कोई शंका नहीं हो सकती। जब आपकी शरण आ गई तो कैसी शंका?

चेतनदास — (मुस्कराकर) अगर आज्ञा दूँ, कुएँ में कूद पड़!

ज्ञानी — तुरंत कूद पड़ूँगी। मुझे विश्वास है कि उससे भी मेरा कल्याण होगी।

चेतनदास — अगर कहूँ, अपने सब आभूषण उतारकर मुझे दे दे तो मन में यह तो न कहेगी, इसीलिए यह जाल फैलाया था।, धूर्त है।

ज्ञानी — (चरणों में गिरकर) महाराज, आप प्राण भी माँगें तो आपकी भेंट करूँगी।

चेतनदास — अच्छा अब जाता हूँ। परीक्षा के लिए तैयार रहना।

सातवाँ दृश्य

(समय — प्रातःकाल, ज्येष्ठ। स्थान — गंगा का तट। राजेश्वरी एक सजे हुए कमरे में मसनद लगाए बैठी है। दो-तीन लौंडियाँ इधर-उधर दौड़कर काम कर रही हैं। सबलसिंह का प्रवेश)

सबल — अगर मुझे उषा का चित्र खींचना हो तो तुम्हीं को नमूना बनाऊँ। तुम्हारे मुख पर मंद समीरण से लहराते हुए केश ऐसी शोभा दे रहे हैं मानो...

राजेश्वरी — दो नागिनें लहराती चली जाती हों, किसी प्रेमी को डसने के लिए।

सबल — तुमने हंसी में उड़ा दिया, मैंने बहुत ही अच्छी उपमा सोची थी।

राजेश्वरी — खैर, यह बताइए तीन दिन तक दर्शन क्यों नहीं दिया।

सबल — (असमंजस में पड़कर) मैंने समझा शायद मेरे रोज आने से किसी को संदेह हो जाए।

राजेश्वरी — मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है। आपको यहाँ नित्य आना होगी। आपको क्या मालूम है कि यहाँ किस तरह तड़प-तड़पकर दिन काटती हूँ।

सबल — राजेश्वरी, मैं अपनी दशा कैसे दर्शाऊँ। बस, यही समझ लो जैसे पानी बिना मछली के तड़पती हो, न सैर करने को जी चाहता है, न घर से निकलने का, न किसी से मिलने-जुलने को यहाँ तक कि सिनेमा देखने को भी जी नहीं चाहता। जब यहाँ आने लगता हूँ तो ऐसी प्रबल उत्कंठा होती है कि उड़कर आ पहुँचूँ। जब यहाँ से चलता हूँ तो ऐसा जान पड़ता है कि मुकदमा हार आया हूँ। राजेश्वरी, पहले मेरी केवल यही इच्छा थी कि तुम्हें आँखों से देखता रहूँ, तुम्हारी मधुर वाणी सुनता रहूँ। तुम्हें अपनी देवी बनाकर पूजना चाहता था।, पर जैसे ज्वर में जल से तृप्ति नहीं होती, जैसे नई सभ्यता में विलास की वस्तुओं से तृप्ति नहीं होती, वैसे ही प्रेम का भी हाल है! वह सर्वस्व देना और सर्वस्व लेना चाहता है। इतना यत्न करने पर भी घर के लोग मुझे चिंतित नेत्रों से देखने लगे हैं। उन्हें मेरे स्वभाव में कोई ऐसी बात नजर आती है जो पहले नहीं आती थी। न जाने इसका क्या अन्त होगा!

राजेश्वरी — इसका जो अन्त होगा वह मैं जानती हूँ और उसे जानते हुए मैंने इस मार्ग पर पांव रखा है। पर उन चिंताओं को छोड़िए। जब ओखली में सिर दिया है तो मूसलों का क्या डर! मैं यही चाहती हूँ कि आप दिन में किसी समय अवश्य आ जाया करें। आपको देखकर मेरे चित्त की ज्वाला शांत हो जाती है, जैसे

जलते हुए घाव पर मरहम लग जाए। अकेले मुझे डर भी लगता है कि कहीं वह हलजोत किसान मेरी टोह लगाता हुआ आ न पहुंचे। यह भय सदैव मेरे हृदय पर छाया रहता है। उसे क्रोध आता है तो वह उन्मत्त हो जाता है। उसे जरा भी खबर मिल गई तो मेरी जान की खैरियत नहीं है।

सबल — उसकी जरा भी चिंता मत करो। मैंने उसे हिरासत में रखवा दिया है। वहाँ छह महीने तक रखूँगा। अभी तो एक महीने से कुछ ही उसपर हुआ है। छह महीने के बाद देखा जाएगी। रुपये कहाँ हैं कि देकर छूटेगा!

राजेश्वरी — क्या जाने उसके गाय-बैल कहाँ गए? भूखों मर गए होंगी।

सबल — नहीं, मैंने पता लगाया था। वह बुड्ढ़ा मुसलमान फत्तू उसके सब जानवरों को अपने घर ले गया है और उनकी अच्छी तरह सेवा करता है।

राजेश्वरी — यह सुनकर चिंता मिट गई। मैं डरती थी कहीं सब जानवर मर गए हों तो हमें हत्या लगे।

सबल — (घड़ी देखकर) यहाँ आता हूँ तो समय के पर-से लग जाते हैं। मेरा बस चलता तो एक-एक मिनट के एक-एक घंटे बना देता।

राजेश्वरी — और मेरा बस चलता तो एक-एक घंटे के एक-एक मिनट बना देती। जब प्यास-भर पानी न मिले तो पानी में मुँह ही क्यों लगाए। जब कपड़े पर रंग के छींटे ही डालने हैं तो उसका उजला रहना ही अच्छा। अब मन को समेटना सीखूँगी।

सबल — प्रिय...

राजेश्वरी — (बात काटकर) इस पवित्र शब्द को अपवित्र न कीजिए।

सबल — (सजल नयन होकर) मेरी इतनी याचना तुम्हें स्वीकार करनी पड़ेगी। प्रिये, मुझे अनुभव हो रहा है कि यहाँ रहकर हम आनंदमय प्रेम का स्वर्ग-सुख न भोग सकेंगी। क्यों न हम किसी सुरम्य स्थान पर चलें जहाँ विघ्न और बाधाओं, चिंताओं और शंकाओं से मुक्त होकर जीवन व्यतीत हो, मैं कह सकता हूँ कि मुझे जलवायु परिवर्तन के लिए किसी स्वास्थ्यकर स्थान की जरूरत है! जैसे गढ़वाल, आबू पर्वत या रांची...

राजेश्वरी — लेकिन ज्ञानी देवी को क्या कीजिएगा? क्या वह साथ न चलेंगी?

सबल — बस यही एक रूकावट है। ऐसा कौन-सा यत्न करूँ कि वह मेरे साथ चलने पर आग्रह न करे। इसके साथ ही कोई संदेह भी न हो।

राजेश्वरी — ज्ञानी सती हैं, वह किसी तरह यहाँ न रहेंगी। यूं आप दस-पाँच दिन, या एक-दो महीने के लिए कहीं जाएँ तो वह साथ न जाएँगी, लेकिन जब उन्हें मालूम होगा कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तब वह किसी तरह न रुकेंगी। और यह बात भी है कि ऐसी सती स्त्री को मैं दुःखी नहीं करना चाहती। मैं तो केवल आपका प्रेम चाहती हूँ। उतना ही जितना ज्ञानी से बचे। मैं उनका अधिकार नहीं छीनना चाहती। मैं उनके पैरों की धूल के बराबर भी नहीं हूँ। मैं उनके घर में चोर की भाँति घुसी हूँ। उनसे मेरी क्या बराबरी। आप उन्हें दुःखी किए बिना मुझ पर जितनी कृपा कर सकते हैं उतनी कीजिए।

सबल — (मन में) कैसे पवित्र विचार हैं! ऐसा नारी-रत्न पाकर मैं उसके सुख से वंचित हूँ। मैं कमल तोड़ने के लिए क्यों पानी में घुसा जब जानता था कि वहाँ दलदल है। मदिरा पीकर चाहता हूँ कि उसका नशा न हो।

राजेश्वरी — (मन में) भगवन्, देखूँ अपने व्रत का पालन कर सकती हूँ या नहीं कितने पवित्र भाव हैं! कितना अगाध प्रेम!

सबल — (उठकर) प्रिये, कल इसी वक्त फिर आऊँगा। प्रेमालिंगन के लिए चित्त उत्कंठित हो रहा है।

राजेश्वरी — यहाँ प्रेम की शांति नहीं, प्रेम की दाह है। जाइए। देखूँ, अब यह पहाड़-सा दिन कैसे कटता है। नींद भी जाने कहाँ भाग गई!

सबल — (छज्जे के जीने से लौटकर) प्रिये, गजब हो गया, वह देखो, कंचनसिंह जा रहे हैं। उन्होंने मुझे यहाँ से उतरते देख लिया। अब क्या करूँ?

राजेश्वरी — देख लिया तो क्या हरज हुआ? समझे होंगे आप किसी मित्र से मिलने आए होंगे। जरा मैं भी उन्हें देख लूँ।

सबल — जिस बात का मुझे डर था। वही हुआ। अवश्य ही उन्हें कुछ टोह लग गई है। नहीं तो इधर उनके आने का कोई काम न था। यह तो उनके पूजा-पाठ का समय है। इस वक्त कभी बाहर नहीं निकलते। हाँ, गंगास्नान करने जाते हैं, मगर घड़ी रात रहे। इधर से कहाँ जाएँगी। घरवालों को संदेह हो गया।

राजेश्वरी — आपसे स्वरूप बहुत मिलता हुआ है। सुनहरी ऐनक खूब खिलती है।

सबल — अगर वह सिर झुकाए अपनी राह चले जाते तो मुझे शंका न होती; पर वह इधर-उधर, नीचे-उपर इस भाँति ताकते जाते थे जैसे शोहदे कोठों की ओर झाँकते हैं। यह उनका स्वभाव नहीं है। बड़े ही धर्मज्ञ, सच्चरित्र, ईश्वरभक्त पुरूष हैं।

सांसारिकता से उन्हें घृणा है। इसीलिए अब तक विवाह नहीं किया।

राजेश्वरी — अगर यह हाल है तो यहाँ पूछताछ करने जरूर आएँगी।

सबल — मालूम होता है इस घर का पता पहले लगा लिया है। इस समय पूछताछ करने ही आए थे। मुझे देखा तो लौट गए। अब मेरी लज्जा, मेरा लोक-सम्मान, मेरा जीवन तुम्हारे अधीन है। तुम्हीं मेरी रक्षा कर सकती हो।

राजेश्वरी — क्यों न कोई दूसरा मकान ठीक कर लीजिए।

सबल — इससे कुछ न होगी। बस यही उपाय है कि जब वह यहाँ आएँ तो उन्हें चकमा दिया जाए। कहला भेजो, मैं सबलसिंह को नहीं जानती। वह यहाँ कभी नहीं आते। दूसरा उपाय यह है कि उन्हें कुछ दिनों के लिए यहाँ से टाल दूँ। कह देता हूँ कि जाकर लायलपुर से गेहूँ खरीद लाओ। तब तक हम लोग यहाँ से कहीं और चल देंगी।

राजेश्वरी — यही तरकीब अच्छी है।

सबल — अच्छी तो है, पर हुआ बड़ा अनर्थ। अब पर्दा ढका रहना कठिन है।

राजेश्वरी — (मन में) ईश्वर, यही मेरी प्रतिज्ञा के पूरे होने का अवसर है। मुझे बल प्रदान करो। (प्रकट) यह सब मुसीबतें मेरी लाई हुई हैं। मैं क्या जानती थी कि प्रेम-मार्ग में इतने कांटे हैं।

सबल — मेरी बातों का ध्यान रखना। मेरे होश ठिकाने नहीं हैं। चलूँ, देखूँ, मुआमला अभी कंचनसिंह ही तक है या ज्ञानी को भी खबर हो गई।

राजेश्वरी — आज संध्या समय आइए। मेरा जी उधर ही लगा रहेगा।

सबल — अवश्य आऊँगा। अब तो मन लागि रह्यो होनी हो सो होई। मुझे अपनी कीर्ति बहुत प्यारी है। अब तक मैंने मान-प्रतिष्ठा ही को जीवन का आधार समझ रखा था।, पर अब अवसर आया तो मैं इसे प्रेम की वेदी पर उसी तरह चढ़ा दूँगा जैसे उपासक पुष्पों को चढ़ा देता है, नहीं जैसे कोई ज्ञानी पार्थिव वस्तुओं को लात मार देता है। (जाता है)

आठवाँ दृश्य

(समय — संध्या, जेठ का महीना। स्थान — मधुबन। कई आदमी फत्तू के द्वार पर खड़े हैं)

मंगरू — फत्तू, तुमने बहुत चक्कर लगाया, सारा संसार छान डाला।

सलोनी — बेटा, तुम न होते तो हलधर का पता लगना मुसकिल था।

हरदास — पता लगना तो मुसकिल नहीं था।, हाँ जरा देर में लगता।

मंगरू — कहाँ-कहाँ गए थे?

फत्तू — पहले तो कानपुर गया। वहाँ के सब पुतलीघरों को देखा। कहीं पता न लगी। तब लोगों ने कहा, बंबई चले जाव। वहाँ चला गया। मुदा उतने बड़े शहर में कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता। चार-पाँच दिन पुतलीघरों में देखने गया, पर हिया। छूट गया। शहर काहे को है पूरा मुलुक है। जान पड़ता है संसार भर के आदमी वहीं आकर जमा हो गए हैं। तभी तो यहाँ गाँव में आदमी नहीं मिलते। सच मानो, कुछ नहीं तो एक हजार मील तो होंगी। रात-दिन उनकी चिमनियों से धुआं निकला करता है। ऐसा जान पड़ता है, राक्षसों की फौज मुँह से आग निकालती आकाश से लड़ने जा रही है। आखिर निराश होकर वहाँ से चला

आया। गाड़ी में एक बाबूजी से बातचीत होने लगी। मैंने सब राम?कहानी उन्हें सुनाई। बड़े दयावान आदमी थे।कहा ,किसी अखबार में छपा दो कि जो उनका पता बता देगा उसे पचास रुपये इनाम दिया जाएगी। मेरे मन में भी बात जम गई। बाबूजी ही से मसौदा बनवा लिया और यहाँ गाड़ी से उतरते ही सीधे अखबार के दफ्तर में गया। छपाई का दाम देकर चला आया। पाँचवें दिन वह चपरासी यहाँ आया जो मुझसे खड़ा बातें कर रहा था।उसने रत्ती-रत्ती सब पता बता दिया। हलधर न कलकत्ता गया है न बंबई,यहीं हिरासत में है। वही कहावत हुई,गोद में लड़का सहर में ढिंढोरा।

मंगरू — हिरासत में क्यों है?

फत्तू — महाजन की मेहरबानी और क्या?माघ-पूस में कंचनसिंह के यहाँ से कुछ रुपये लाया था। बस नादिहंदी के मामले में गिरफ्तारी करा दिया।

हरदास — उनके रुपये तो यहाँ और कई आदमियों पर आते हैं, किसी को गिरफ्तारी नहीं कराया। हलधर पर ही क्यों इतनी टेढ़ी निगाह की?

फत्तू — पहले सबको गिरफ्तारी कराना चाहते थे,पर बाद को सबलसिंह ने मना कर दिया। दावा दायर करने की सलाह थी।

पर बड़े ठाकुर तो दयावान जीव हैं, दावा भी मुल्तवी कर दिया, इधर लगान भी मुआफ कर दी। मुझसे जब चपरासी ने यह हाल कहा तो जैसे बदन में आग जल गई। सीधे कंचनसिंह के पास गया और मुँह में जो कुछ आया कह सुनाया। सोच लिया था।, दो-चार का सिर तोड़ के रख दूँगा, जो होगा देखा जाएगी। मगर बेचारे ने जबान तक नहीं खोली। जब मैंने कहा , आप बड़े धर्मात्मा की पूंछ बनते हैं, सौ-दो सौ रुपयों के लिए गरीबों को जेहल में डालते हैं, उस आदमी का तो यह हाल हुआ, उसकी घरवाली का कहीं पता नहीं, मालूम नहीं कहीं डूब मरी या क्या हुआ, यह सब पाप किसके सिर पड़ेगा, खुदाताला को क्या मुँह दिखाओगे तो बेचारे रोने लगे। लेकिन जब रुपयों की बात आई तो उस रकम में एक पैसा भी छोड़ने की हामी नहीं भरी।

सलोनी — इतनी दौड़धूप तो कोई अपने बेटे के लिए भी न करता। भगवान इसका फल तुम्हें देंगी।

हरदास — महाजन के कितने रुपये आते हैं?

फत्तू — कोई ढाई सौ होंगे। थोड़ी?थोड़ी मदद कर दो तो आज ही हलधर को छुड़ा लूँ। मैं बहुत जेरबारी में पड़ गया हूँ। नहीं तो तुम लोगों से न माँगता।

मंगरू — भैया, यहाँ रुपये कहाँ, जो कुछ लेई-पूंजी थी वह बेटी के गौने में खर्च हो गई। उस पर पत्थर ने और भी चौपट कर दिया।

सलोनी — बने के साथी सब होते हैं, बिगड़े का साथी कोई नहीं होता।

मंगरू — जो चाहे समझो, पर मेरे पास कुछ नहीं है।

हरदास — अगर दस-बीस दे भी दें तो कौन जल्दी मिले जाते हैं। बरसों में मिलें तो मिलें। उसमें सबसे पहले अपनी जमा लेंगे, तब कहीं औरों को मिलेगी।

मंगरू — भला इस दौड़-धूप में तुम्हारे कितने रुपये लगे होंगे?

फत्तू — क्या जाने, मेरे पास कोई हिसाब-किताब थोड़े ही है!

मंगरू — तब भी अंदाज से?

फत्तू — कोई एक सौ बीस रुपये लगे होंगी।

मंगरू — (हरदास को कनखियों से देखकर) बेचारा हलधर तो बिना मौत मर गया। सौ रुपये इन्होंने चढ़ा दिए, ढाई सौ रुपये महाजन के होते हैं, गरी। कहाँ तक भरेगा?

फत्तू — मुसीबत में जो मदद की जाती है वह अल्लाह की राह में की जाती है। उसे कर्ज नहीं समझा जाता।

हरदास — तुम अपने सौ रुपये तो सीधे कर लोगे?

सलोनी — (मुँह चिढ़ाकर) हाँ, दलाली के कुछ पैसे तुझे भी मिल जाएँगी। मुँह धो रखना। हाँ बेटा, उसे छुड़ाने के लिए ढाई सौ रुपये की क्या फिकर करोगे? कोई महाजन खड़ा किया है?

फत्तू — नहीं, काकी, महाजनों के जाल में न पडूँगा। कुछ तुम्हारी बहू के गहने-पाते हैं वह गिरो रख दूँगा। रुपये भी उसके पास कुछ-न-कुछ निकल ही आएँगे। बाकी रुपये अपने दोनों नाटे बेचकर खड़े कर लूँगा।

सलोनी — महीने ही भर में तो तुम्हें फिर बैल चाहने होंगी।

फत्तू — देखा जाएगी। हलधर के बैलों से काम चलाऊँगा।

बेटा — बेटा, तुम तो हलधर के पीछे तबाह हो गए।

फत्तू — काकी, इन्हीं दिनों के लिए तो छाती गाड़-गाड़ कमाते हैं। और लोग थाने-अदालतों में रुपये बर्बाद करते हैं। मैंने तो एक पैसा भी बर्बाद नहीं किया। हलधर कोई गैर तो नहीं है, अपना ही लड़का है। अपना लड़का इस मुसीबत में होता तो उसको छुड़ाना पड़ता न! समझ लूँगा कि अपनी बेटी के निकाह में लग गए।

सलोनी — (हरदास की ओर देखकर) देखा, मर्द ऐसे होते हैं। ऐसे सपूतों के जन्म से माता का जीवन सुफल होता है। तुम दोनों हलधर के पट्टीदार हो, एक ही परदादा के परपोते हो, पर तुम्हारा लोहू सफेद हो गया है। तुम तो मन में खुश होगे कि अच्छा हुआ वह गया, अब उसके खेतों पर हम कब्जा कर हुई।

हरदास — काकी, मुँह न खुलवाओ। हमें कौन हलधर से वाह-वाही लूटनी है, न एक के दो वसूल करने हैं। हम क्यों इस झमेले में पड़ें। यहाँ न ऊधो का लेना, न माधो का देना, अपने काम-से-काम है। फिर हलधर ने कौन यहाँ किसी की मदद कर दी? प्यासों मर भी जाते तो पानी को न पूछता। हाँ, दूसरों के लिए चाहे घर लुटा देते हों।

मंगरू — हलधर की बात ही क्या है, अभी कल का लड़का है। उसके बाप ने भी कभी किसी की मदद की? चार दिन की आई बहू है, वह भी हमें दुसमन समझती है।

सलोनी — (फत्तू से) बेटा, सांझ हुई, दीयाबत्ती करने जाती हूँ। तुम थोड़ी देर में मेरे पास आना, कुछ सलाह करूँगी।

फत्तू — अच्छा एक गीत तो सुनाती जाओ। महीनों हो गए तुम्हारा गाना नहीं सुना।

सलोनी — इन दोनों को अब कभी अपना गाना न सुनाऊँगी।

हरदास — लो, हम कानों में उंगली रखे लेते हैं।

सलोनी — हाँ, कान खोलना मत। (गाती है)

ढूंढ़ गिरी सारा संसार, नहीं मिला कोई अपना।
भाई भाई बैरी है गए, बाप हुआ जमदूत।
दया-धरम का उठ गया डेरा, सज्जनता है सपना।
नहीं मिला कोई अपना।

(जाती है)

नौवाँ दृश्य

(स्थान — मधुवन, हलधर का मकान, गाँव के लोग जमा हैं।
समय — ज्येष्ठ की संध्या)

हलधर — (बाल बढ़े हुए, दुर्बल, मलिन मुख) फत्तू काका, तुमने मुझे नाहक छुड़ाया, वहीं क्यों न घुलने दिया। अगर मुझे मालूम होता कि घर की यह दशा है तो उधर से ही देश-विदेश की राह लेता, यहाँ अपना काला मुँह दिखाने न आता। मैं इस औरत को

पतिव्रता समझता था। देवी समझकर उसकी पूजा करता था। पर यह नहीं जानता था। कि वह मेरे पीठ फेरते ही यों पुरखों के माथे पर कलंक लगाएगी। हाय!

सलोनी — बेटा, वह सचमुच देवी थी। ऐसी पतिबरता नारी मैंने नहीं देखी। तुम उस पर संदेह करके उस पर बड़ा अन्याय कर रहे हो, मैं रोज रात को उसके पास सोती थी। उसकी आँखें रात-की-रात खुली रहती थीं। करवटें बदला करती। मेरे बहुत कहने-सुनने पर भी कभी-कभी भोजन बनाती थी, पर दो-चार कौर भी न खाया जाता। मुँह जूठा करके उठ आती। रात-दिन तुम्हारी ही चर्चा, तुम्हारी ही बातें किया करती थी। शोक और दुःख में जीवन से निराश होकर उसने चाहे प्राण दे दिए हों पर वह कुल को कलंक नहीं लगा सकती। बरम्हा भी आकर उस पर यह दोख लगाएँ तो मुझे उन पर बिसवास न आएगी।

फत्तू — काकी, तुम तो उसके साथ सोती ही बैठती थीं, तुम जितना जानती हो उतना मैं कहाँ से जानूँगा, लेकिन इससे गाँव में सत्तर बरस की उमिर गुजर गई, सैकड़ों बहुएँ आई पर किसी में वह बात नहीं पाई जो इसमें है। न ताकना, न झांकना, सिर झुकाए अपनी राह जाना, अपनी राह आना। सचमुच ही देवी थी।

हलधर — काका, किसी तरह मन को समझाने तो दो। जब अंगूठी पानी में फिर गई तो यह सोचकर क्यों न मन को धीरज दूँ कि उसका नग कच्चा था। हाय, अब घर में पांव नहीं रखा जाता। ऐसा जान पड़ता है कि घर की जान निकल गई।

सलोनी — जाते-जाते घर को लीप गई है। देखो अनाज मटकों में रखकर इनका मुँह मिट्टी से बन्द कर दिया है। यह घी की हाँड़ी है। लबालब भरी हुई बेचारी ने संच कर रखा था। क्या कुलटाएँ गिरस्ती की ओर इतना ध्यान देती हैं? एक तिनका भी तो इधर-उधर पड़ा नहीं दिखाई देता।

हलधर — (रोकर) काकी, मेरे लिए अब संसार सूना हो गया। वह गंगा की गोद में चली गई। अब फिर उसकी मोहिनी मूरत देखने को न मिलेगी। भगवान बड़ा निर्दयी है। इतनी जल्दी छीन लेना था। तो दिया ही क्यों था।

फत्तू — बेटा, अब तो जो कुछ होना था। वह हो चुका, अब सबर करो और अल्लाताला से दुआ करो कि उस देवी को निजात दे। रोने-धोने से क्या होगा! वह तुम्हारे लिए थी ही नहीं उसे भगवान ने रानी बनने के लिए बनाया था। कोई ऐसी ही बात हो गई थी कि वह कुछ दिनों के लिए इस दुनिया में आई थी। वह मियाद पूरी करके चली गई। यही समझकर सबर करो।

हलधर — काका, नहीं सबर होता। कलेजे में पीड़ा हो रही है। ऐसा जान पड़ता है, कोई उसे जबरदस्ती मुझसे छीन ले गया हो, हाँ, सचमुच वह मुझसे छीन ली गयी है, और यह अत्याचार किया है सबलसिंह और उनके भाई ने। न मैं हिरासत में जाता, न घर यों तबाह होता। उसका वध करने वाले, उसकी जान लेने वाले यही दोनों भाई हैं? नहीं, इन दोनों भाइयों को क्यों बदनाम करूँ, सारी विपत्ति इस कानून की लाई हुई है, जो गरीबों को धनी लोगों की मुट्ठी में कर देता है। फिर कानून को क्यों कहूँ। जैसा संसार वैसा व्यवहार।

फत्तू — बस, यही बात है, जैसा संसार वैसा व्यवहार। धनी लोगों के हाथ में अखितयार है। गरीबों को सताने के लिए जैसा कानून चाहते हैं, बनाते हैं। बैठो, नाई बुलवाए देता हूँ, बाल बनवा लो।

हलधर — नहीं काका, अब इस घर में न बैठूँगा। किसके लिए घर-बार के झमेले में पड़ूँ। अपना पेट है, उसकी क्या चिंता! इस अन्यायी संसार में रहने का जी नहीं चाहता। ढाई सौ रुपयों के पीछे मेरा सत्यानास हो गया। ऐसा परबस होकर जिया ही तो क्या! चलता हूँ, कहीं साधु-वैरागी हो जाऊँगा, माँगता-खाता फिरूँगा।

हरदास — तुम तो साधु-बैरागी हो जाओगे, यह रुपये कौन भरेगा?

फत्तू — रुपये-पैसे की कौन बात है, तुमको इससे क्या मतलब? यह तो आपस का व्यवहार है, हमारी अटक पर तुम काम आए, तुम्हारी अटक पर हम काम आएँगी। कोई लेन-देन थोड़ा ही किया है!

सलोनी — इसकी बिच्छू की भाँति डंक मारने की आदत है।

हलधर — नहीं, इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। फत्तू काका, मैं तुम्हारी नेकी को कभी नहीं भूल सकता। तुमने जो कुछ किया वह अपना बाप भी न करता। जब तक मेरे दम-में-दम है तुम्हारा और तुम्हारे खानदान का गुलाम बना रहूँगी। मेरा घर-द्वार, खेती-बारी, बैल-बधिये, जो कुछ है सब तुम्हारा है, और मैं तुम्हारा गुलाम हूँ। बस, अब मुझे बिदा करो, जीता रहूँगा तो फिर मिलूँगा, नहीं तो कौन किसका होता है। काकी, जाता हूँ, सब भाइयों को राम-राम!

फत्तू — (रास्ता रोककर गद्गद कंठ से) बेटा, इतना दिल छोटा न करो। कौन जाने, अल्लाताला बड़ा कारसाज है, कहीं बहू का पता लग ही जाये। इतने अधीर होने की कोई बात नहीं है।

हरदास — चार दिन में तो दूसरी सगाई हो जाएगी।

हलधर — भैया, दूसरी सगाई अब उस जनम में होगी। इस जनम में तो अब ठोकर खाना ही लिखा है। अगर भगवान को यह न मंजूर होता तो क्या मेरा बना-बनाया घर उजड़ जाता?

फत्तू — मेरा तो दिल बार-बार कहता है कि दो-चार दिन में राजेश्वरी का पता जरूर लग जाएगी। कुछ खाना बनाओ, खाओ, सबेरे चलेंगे, फिर इधर-उधर टोह लगाएँगी।

हरदास — पहले जाके तालाब में अच्छी तरह असनान कर लो। चलूँ, जानवर हार से आ गए होंगे।

(सब चले जाते हैं)

हलधर — यह घर गाड़े खाता है, इसमें तो बैठा भी नहीं जाता। इस वक्त काम करके आता था। तो उसकी मोहनी सूरत देखकर चित्त कैसा खिल जाता था। कंचन, तूने मेरा सुख हर लिया, तूने मेरे घर में आग जल दी। ओहो, वह कौन उजली साड़ी पहने उस घर में खड़ी है। वही है, छिपी हुई थी। खड़ी है, आती नहीं (उस घर के द्वार पर जाकर) राम! राम! कितना भरम हुआ, सन की गांठ रखी हुई है अब उसके दर्शन फिर नसीब न होंगे। जीवन में अब कुछ नहीं रहा। हा, पापी, निर्दयी! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया, मुट्ठी

भर रुपयों के पीछे! इस अन्याय का मजा तुझे चखाऊँगा। तू भी क्या समझेगा कि गरीबों का गला काटना कैसा होता है।

(लाठी लेकर घर से निकल जाता है)

दसवाँ दृश्य

(स्थान — गुलाबी का घर। समय — प्रातःकाल)

गुलाबी — जो काम करन बैठती है उसी की हो रहती है। मैंने घर में झाड़ू लगाई, पूजा के बासन धोए, तोते को चारा खिलाया, गाय खोली, उसका गोबर उठाया, और यह महारानी अभी पाँच सेर गेहूँ लिये जांत पर औंघ रही हैं। किसी काम में इसका जी नहीं लगता। न जाने किस घमंड में भूली रहती है। बाप के पास ऐसा कौन-सा दहेज था। कि किसी धनिक के घर जाती। कुछ नहीं, यह सब तुम्हारे सिर चढ़ाने का फल है। औरत को जहाँ मुँह लगाया कि उसका सिर गिरा। फिर उसके पांव जमीन पर

नहीं पड़ते। इस जात को तो कभी मुँह लगाए ही नहीं चाहे कोई बात भी न हो; पर उसका मान मरदन नित्य करता रहे।

भृगु — क्या करूँ अम्माँ, सब कुछ करके तो हार गया। कोई बात सुनती ही नहीं ज्योंही गरम पड़ता हूँ, रोने लगती है। बस दया आ जाती है।

गुलाबी — मैं रोती हूँ तब तो तेरा कलेजा पत्थर का हो जाता है, उसे रोते देखकर क्यों दया आ जाती है।

भृगु — अम्माँ, तुम घर की मालकिन हो, तुम रोती हो तो हमारा दुःख देखकर रोती हो, तुम्हें कौन कुछ कह सकता है?

गुलाबी — तू ही अपने मन से समझ, मेरी उमिर अब नौकरी करने की है। यह सब तेरे ही कारण न करना पड़ता है? तीन महीने हो गए, तूने घर के खरच के लिए एक पैसा भी न दिया। मैं न जाने किस-किस उपाय से काम चलाती हूँ। तू कमाता है तो क्या करता है? जवान बेटे के होते मुझे छाती फाड़नी पड़े, तो दिनों को रोऊँ कि न रोऊँ। उस पर घर में कोई बात पूछने वाला नहीं पूछो महरानी से महीने-भर हो गए, कभी सिर में तेल डाला, कभी पैर दबाए। सीधे मुँह बात तो करतीं नहीं, भला सेवा क्या करेंगी। रोऊँ न तो क्या करूँ? मौत भी नहीं आ जाती कि इस जंजाल से छूट जाती। जाने कागद कहाँ खो गया।

भृगु — अम्माँ ऐसी बातें न करो। तुम्हारे बिना यह गिरस्ती कौन चलाएगा? तुम्हीं ने पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है। जब तक जीती हो इसी तरह पाले जाओ। फिर तो यह चक्की गले पड़ेगी ही।

गुलाबी — अब मेरा किया नहीं होता।

भृगु — तो मुझे परदेस जाने दो। यहाँ मेरा किया कुछ न होगी।

गुलाबी — आखिर मुनीबी में तुझे कुछ मिलता है कि नहीं वह सब कहाँ उड़ा देता है?

भृगु — कसम ले लो जो इधर तीन महीने में कौड़ी से भेंट हुई हो,

जब से ओले पड़े हैं, ठाकुर साहब ने लेन-देन सब बन्द कर दिया है।

गुलाबी — तेरी मारफत बाजार से सौदा-सुलफ आता है कि नहीं घर में जिस चीज का काम पड़ता है वह मैं तुझी से मँगवाने को कहती हूँ। पाँच-छः सौ का सौदा तो भीतर ही का आता होगी। तू उसमें कुछ काटपेच नहीं करता?

भृगु — मुझे तो अम्माँ, यह सब कुछ नहीं आता।

गुलाबी — चल, झूठे कहीं के मेरे सौदे में तो तू अपनी चाल चल ही जाता है, वहाँ न चलेगी। दस्तूरी पाता है, भाव में कसता है। तौल में कसता है। उस पर मुझसे उड़ने चला है। सुनती हूँ दलाली भी करते हो, यह सब कहाँ उड़ जाता है?

भृगु — अम्माँ, किसी ने तुमसे झूठमूठ कह दिया होगी। तुम्हारा सरल स्वभाव है, जिसने जो कुछ कह दिया वही मान जाती हो, तुम्हारे चरण छूकर कहता हूँ जो कभी दलाली की हो, सौदे-सुलुफ में दो-चार रुपये कभी मिल जाते हैं तो भंग-बूटी, पान-पत्ते का खर्च चलता है।

गुलाबी — जाकर चुड़ैल से कह दे पानी-वानी रखे, नहाऊँ नहीं तो ठाकुर के यहाँ कैसे जाऊँगी? सारे दिन चक्की के नाम को रोया करेगी क्या?

भृगु — अम्माँ, तुम्हीं जाकर कहो, मेरा कहना न मानेगी।

गुलाबी — हाँ, तू क्यों कहेगा! तुझे तो उसने भेड़ बना लिया है। ऊँगलियों पर नचाया करती है। न जाने कौन-सा जादू डाल दिया है कि तेरी मति ही हर गई। जा, ओढ़नी ओढ़ के बैठ।

(बहू के पास जाती है)

क्यों रे, सारे दिन चक्की के नाम को रोएगी या और भी कोई काम है?

चम्पा — क्या चार हाथ-पैर कर लूँ? क्या यहाँ सोयी हूँ!

गुलाबी — चुप रह, डायन कहीं की, बोलने को मरी जाती है। सेर-भर गेहूँ लिए बैठी है। कौन लड़के-बाले रो रहे हैं कि उनके तेल- उबटन में लगी रहती है। घड़ी रात रहे क्यों नहीं उठती? बांझिन, तेरा मुँह देखना पाप है।

चम्पा — इसमें भी किसी का बस है? भगवान नहीं देते तो क्या अपने हाथों से गढ़ लूँ?

गुलाबी — फिर मुँह नहीं बन्द करती चुड़ैल। जीभ कतरनी की तरह चला करती है। लजाती नहीं तेरे साथ की आई बहुरियाँ दो-दो लड़कों की माँ हो गई हैं और तू अभी बांठ बनी है। न जाने कब तेरा पैरा इस घर से उठेगी। जा, नहाने को पानी रख दे, नहीं तो भले परांठे चखाऊँगी। एक दिन काम न करूँ तो मुँह में मक्खी आने-जाने लगे। सहज में ही यह चरबौतियाँ नहीं उड़ती।

बहू — जैसी रोटियाँ तुम खिलाती हो ऐसी जहाँ छाती गाड़ूँगी वहीं मिल जाएँगी। यहाँ गद्दी-मसनद नहीं लगी है।

गुलाबी — (दांत पीसकर) जी चाहता है सट से तालू से जबान खींच लें। कुछ नहीं, मेरी यह सब सांसत भगुवा करा रहा है, नहीं तो तेरी मजाल थी कि मुझसे यों जबान चलाती। कलमुँहे को और घर न मिलता था। जो अपने सिर की बला यहाँ पटक गया। अब जो पाऊँ तो मुँह झौंस दूँ।

चम्पा — अम्माँजी, मुझे जो चाहो कह लो, तुम्हारा दिया खाती हूँ, मारो या काटो, दादा को क्यों कोसती हो? भाग बखानो कि बेटे के सिर पर मौर चढ़ गया, नहीं तो कोई बात भी न पूछता। ऐसा हुस्न नहीं बरसता था। कि देख के लट्टू हो जाता।

गुलाबी — भगवान को डरती हूँ, नहीं तो कच्चा ही खा जाती। न जाने कब इस अभागिन बांझ से संग छूटेगी।

(चली जाती है। भृगु आता है)

चम्पा — तुम मुझे मेरे घर क्यों नहीं पहुँचा देते, नहीं एक दिन कुछ खाकर सो रहूँगी तो पछताओगे। टुकुर-टुकुर देखा करते हो, पर मुँह नहीं खुलता कि अम्माँ, वह भी तो आदमी है, पाँच सेर गेहूँ पीसना क्या दाल-भात का कौर है?

भृगु — -तुम उसकी बातों का बुरा क्यों मानती हो, मुँह ही से न कहती है कि और कुछ। समझ लो कुतिया भूँक रही है। दुधार गाय की लात भी सही जाती है। आज नौकरी करना छोड़ दें तो सारी गृहस्थी का बोझ मेरे ही सिर पड़ेगा कि और किसी के सिर? धीरज धरे कुछ दिन पड़ी रहो, चार थान गहने हो जाएँगे, चार पैसे गांठ में हो जाएँगी। इतनी मोटी बात भी नहीं समझती हो, झूठ-मूठ उलझ जाती हो,

चम्पा — मुझसे तो ताने सुनकर चुप नहीं रहा जाता। शरीर में ज्वाला-सी उठने लगती है।

भृगु — उठने दिया करो, उससे किसी के जलने का डर नहीं है। बस उसकी बातों का जवाब न दिया करो। इस कान सुना और उस कान उड़ा दिया।

चप्पा — सोनार कंठा कब देगा?

भृगु — दो-तीन दिन में देने को कहा है। ऐसे सुंदर दाने बनाए हैं कि देखकर खुश हो जाओगी। यह देखो

चम्पा — क्या है?

भृगु — न दिखाऊँगा, न।

चम्पा — मुट्ठी खोलो। यह गिन्नी कहाँ पाई? मैं न दूँगी।

भृगु — पाने की न पूछो, एक असामी रुपये लौटाने आया था। खाते में दो रुपये सैकड़े का दर लिखा है, मैंने ढाई रुपये सैकड़े की दर से वसूल किया।

(बाहर चला जाता है)

चम्पा — (मन में) बुढ़िया सीधी होती तो चैन-ही-चैन था।

तीसरा अंक

प्रथम दृश्य

(स्थान — कंचनसिंह का कमरा। समय — दोपहर, खस की टट्टी लगी हुई है, कंचनसिंह सीतलपाटी बिछाकर लेटे हुए हैं, पंखा चल रहा है)

कंचन — (आप-ही-आप) भाई साहब में तो यह आदत कभी नहीं थी। इसमें अब लेश-मात्र भी संदेह नहीं है कि वह कोई अत्यंत रूपवती स्त्री है। मैंने उसे छज्जे पर से झाँकते देखा था।, भाई साहब आड़ में छिप गए थे। अगर कुछ रहस्य की बात न होती तो वह कदापि न छिपते, बल्कि मुझसे पूछते, कहाँ जा रहे हो, मेरा माथा उसी वक्त ठनका था। जब मैंने उन्हें नित्यप्रति बिना किसी कोचवान के अपने हाथों टमटम हाँकते सैर करने जाते देखा। उनकी इस भाँति घूमने की आदत न थी। आजकल न कभी क्लब जाते हैं न और किसी से मिलते-जुलते हैं। पत्रों से भी रूचि नहीं जान पड़ती। सप्ताह में एक-न -एक लेख अवश्य लिख लेते थे, पर इधर महीनों से एक पंक्ति भी कहीं नहीं लिखी, यह बुरा हुआ। जिस प्रकार बंधा हुआ पानी खुलता है तो बड़े वेग से बहने लगता है अथवा रुकी वायु चलती है तो बहुत प्रचण्ड हो जाता है, उसी प्रकार संयमी पुरूष जब विचलित होता है, यह अविचार की चरम सीमा तक चला जाता है। न किसी की सुनता है, न किसी के रोके रुकता है, न परिणाम सोचता है। उसके विवेक और बुद्धि पर पर्दा-सा पड़ जाता है। कदाचित् भाई साहब को मालूम हो गया है कि मैंने उन्हें वहाँ देख लिया। इसीलिए वह मुझसे माल खरीदने के लिए पंजाब जाने को कहते हैं। मुझे कुछ दिनों के लिए हटा देना चाहते हैं। यही बात है, नहीं तो वह

माल-वाल की इतनी चिंता कभी न किया करते थे। मुझे तो अब कुशल नहीं दीखती। भाभी को कहीं खबर मिल गई तो वह प्राण ही दे देंगी। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे विद्वान, गंभीर पुरूष भी इस मायाजाल में फँस जाते हैं। अगर मैंने अपनी आँखों न देखा होता तो भाई साहब के संबंध में कभी इस दुष्कल्पना का विश्वास न आता।

(ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — बाबूजी, आज सोए नहीं?

कंचन — नहीं, कुछ हिसाब-किताब देख रहा था। भाई साहब ने लगान न मुआफ कर दिया होता तो अबकी मैं ठाकुरद्वारे में जरूर हाथ लगा देता। असामियों से कुछ रुपये वसूल होते, लेकिन उन पर दावा ही न करने दिया।

ज्ञानी — वह तो मुझसे कहते थे दो-चार महीनों के लिए पहाड़ों की सैर करने जाऊँगा। डॉक्टर ने कहा है, यहाँ रहोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जाएगी। आजकल कुछ दुर्बल भी तो हो गये हैं। बाबूजी एक बात पूछूँ, बताओगे। तुम्हें भी इनके स्वभाव में कुछ अन्तर दिखायी देता है? मुझे तो बहुत अन्तर मालूम होता है। वह

कभी इतने नम्र और सरल नहीं थे। अब वह एक-एक बात सावधान होकर कहते हैं कि कहीं मुझे बुरा न लगे। उनके सामने जाती हूँ तो मुझे देखते ही मानो नींद से चौंक पड़ते हैं और इस भाँति हंसकर स्वागत करते हैं जैसे कोई मेहमान आया हो, मेरा मुँह जोहा करते हैं कि कोई बात कहे और उसे पूरी कर दूँ। जैसे घर के लोग बीमार का मन रखने का यत्न करते हैं या जैसे किसी शोक-पीड़ित मनुष्य के साथ लोगों का व्यवहार सदय हो जाता है, उसी प्रकार आजकल पके हुए फोड़े की तरह मुझे ठेस से बचाया जाता है। इसका रहस्य कुछ मेरी समझ में नहीं आता। खेद तो मुझे यह है कि इन सारी बातों में दिखावट और बनावट की बू आती है। सच्चा क्रोध उतना हृदयभेदी नहीं होता जितना कृत्रिम प्रेम।

कंचन — (मन में) वही बात है। किसी बच्चे से हम अशर्फी ले लेते हैं कि खो न दे तो उसे मिठाइयों से फुसला देते हैं। भाई साहब ने भाभी से अपना प्रेम-रत्न छीन लिया है और बनावटी स्नेह और प्रणय से इनको तस्कीन देना चाहते हैं। इस प्रेम-मूर्ति का अब परमात्मा ही मालिक है। (प्रकट) मैंने तो इधर ध्यान नहीं दिया। स्त्रियाँ सूक्ष्मदर्शी होती हैं।

(ख़िदमतगार आता है। ज्ञानी चली जाती है)

कंचन — क्या काम है?

ख़िदमतगार — यह सरकारी लिफाफा आया है। चपरासी बाहर खड़ा है।

कंचन — (रसीद की बही पर हस्ताक्षर करके) यह सिपाही को दो। (ख़िदमतगार चला जाता है) अच्छा, गाँव वालों ने मिलकर हलधर को छुड़ा लिया। अच्छा ही हुआ। मुझे उससे कोई दुश्मनी तो थी नहीं मेरे रुपये वसूल हो गए। यह कार्रवाई न की जाती तो कभी रुपये न वसूल होते। इसी से लोग कहते हैं कि नीचों को जब तक खूब न दबाओ उनकी गांठ नहीं खुलती। औरों पर भी इसी तरह दावा कर दिया गया होता तो बात-की-बात में सब रुपये निकल आते। और कुछ न होता तो ठाकुरद्वारे में हाथ तो लगा ही देता। भाई साहब को समझाना तो मेरा काम नहीं, उनके सामने रोब, शर्म और संकोच से मेरी जबान ही न खुलेगी। उसी के पास चलूँ, उसके रंग-ढंग देखूँ, कौन है, क्या चाहती है, क्यों यह जाल फैलाया है? अगर धन के लोभ से यह माया रची है तो जो कुछ उसकी इच्छा हो देकर यहाँ से हटा दूँ। भाई साहब को और समस्त परिवार को सर्वनाश से बचा

लूँ। (फिर ख़िदमतगार आता है) क्या बार-बार आते हो? क्या काम है? मेरे पास पेशगी देने के लिए रुपये नहीं हैं।

ख़िदमतगार — हुज़ूर, रुपये नहीं माँगता। बड़े सरकार ने आपको याद किया है।

कंचन — (मन में) मेरा तो दिल धक-धक कर रहा है, न जाने क्यों बुलाते हैं! कहीं पूछ न बैठें, तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हो,

(उठकर ठाकुर सबलसिंह के कमरे में जाते हैं)

सबल — तुमको एक विशेष कारण से तकलीफ दी है। इधर कुछ दिनों से मेरी तबीयत अच्छी नहीं रहती, रात को नींद कम आती है और भोजन से भी अरूचि हो गई है।

कंचन — आपका भोजन आधा भी नहीं रहा।

सबल — हाँ, वह भी जबरदस्ती खाता हूँ। इसलिए मेरा विचार हो रहा है कि तीन-चार महीनों के लिए मंसूरी चला जाऊँ।

कंचन — जलवायु के बदलने से कुछ लाभ तो अवश्य होगा।

सबल — तुम्हें रुपयों का प्रबंध करने में ज्यादा असुविधा तो न होगी?

कंचन — उसपर तो केवल पाँच हजार रुपये होंगे। चार हजार दो सौ पचास रुपये मूलचंद ने दिये हैं, पाँच सौ रुपये श्रीराम ने, और ढाई सौ रुपये हलधर ने।

सबल — (चौंककर) क्या हलधर ने भी रुपये दे दिए?

कंचन — हाँ, गाँव वालों ने मदद की होगी।

सबल — तब तो वह छूटकर अपने घर पहुँच गया होगा?

कंचन — जी हाँ।

सबल — (कुछ देर तक सोचकर) मेरे सफर की तैयारी में कै दिन लगेंगे?

कंचन — क्या जाना बहुत जरूरी है? क्यों न यहीं कुछ दिनों के लिए देहात चले जाइए। लिखने-पढ़ने का काम भी बन्द कर दीजिए।

सबल — डाक्टरों की सलाह पहाड़ों पर जाने की है। मैं कल किसी वक्त यहाँ से मंसूरी चला जाना चाहता हूँ।

कंचन — जैसी इच्छा।

सबल — मेरे साथ किसी नौकर-चाकर के जाने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी भाभी चलने के लिए आग्रह करेंगी। उन्हें समझा देना कि तुम्हारे चलने से खर्च बहुत बढ़ जाएगी। नौकर, महरी,

मिसराइन, सभी को जाना पड़ेगा और इस वक्त इतनी गुंजाइश नहीं।

कंचन — अकेले तो आपको बहुत तकलीफ होगी।

सबल — (खीझकर) क्या संसार में अकेले कोई यात्रा नहीं करता? अमरीका के करोड़पति तक एक हैंडबैग लेकर भारत की यात्रा पर चल खड़े होते हैं, मेरी कौन गिनती है। मैं उन रईसों में नहीं हूँ जिनके घर में चाहे भोजन का ठिकाना न हो, जायदाद बिकी जाती हो, पर जूता नौकर ही पहनाएगा, शौच के लिए लोटा लेकर नौकर ही जाएगा। यह रियासत नहीं हिमाकत है।

(कंचनसिंह चले जाते हैं)

सबल — (मन में) वही हुआ जिसकी आशंका थी। आज ही राजेश्वरी से चलने को कहूँ और कल प्रातःकाल यहाँ से चल दूँ। हलधर कहीं आ पड़ा और उसे संदेह हो गया तो बड़ी मुश्किल होगी। ज्ञानी आसानी से न मानेगी। उसे देखकर दया आती है। किंतु आज हृदय को कड़ा करके उसे भी रोकना पड़ेगा।

(अंचल का प्रवेश)

अचल — दादाजी, आप पहाड़ों पर जा रहे हैं, मैं भी साथ चलूँगा।

सबल — बेटा, मैं अकेले जा रहा हूँ, तुम्हें तकलीफ होगी।

अचल — इसीलिए तो मैं और चलना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि खूब तकलीफ हो, सब काम अपने हाथों करना पड़े, मोटा खाना मिले और कभी मिले, कभी न मिले। तकलीफ उठाने से आदमी की हिम्मत मजबूत हो जाती है, वह निर्भय हो जाता है। जरा-जरा-सी बातों से घबराता नहीं, मुझे जरूर ले चलिए।

सबल — मैं वहाँ एक जगह थोड़े ही रहूँगा। कभी यहाँ, कभी वहाँ।

अचल — यह तो और भी अच्छा है। तरह-तरह की चीजें, नये-नये दृश्य देखने में आएँगी। और मुल्कों में तो लड़कों को सरकार की तरफ से सैर करने का मौका दिया जाता है। किताबों में भी लिखा है कि बिना देशाटन किए अनुभव नहीं होता, और भूगोल जानने का तो इसके सिवा कोई अन्य उपाय नहीं है। नक्शों और माडलों के देखने से क्या होता है! मैं इस मौके को न जाने दूँगा।

सबल — बेटा, तुम कभी-कभी व्यर्थ में जिद करने लगते हो, मैंने कह दिया कि मैं इस वक्त अकेले ही जाना चाहता हूँ, यहाँ तक कि किसी नौकर को भी साथ नहीं ले जाता। अगले वर्ष मैं तुम्हें

इतनी सैरें करा दूँगा कि तुम ऊब जाओगी। (अचल उदास होकर चला जाता है) अब सफर की तैयारी करूँ। मुख्तसर ही सामान ले जाना मुनासिब होगी। रुपये हों तो जंगल में भी मंगल हो सकता है। आज शाम को राजेश्वरी से भी चलने की तैयारी करने को कह दूँगा, प्रातःकाल हम दोनों यहाँ से चले जाएँ। प्रेम-पाश में फंसकर देखा, नीति का, आत्मा का, धर्म का कितना बलिदान करना पड़ता है, और किस-किस वन की पत्तियाँ तोड़नी पड़ती हैं।

दूसरा दृश्य

(स्थान — राजेश्वरी का सजा हुआ कमरा। समय — दोपहर)

लौंडी — बाईजी, कोई नीचे पुकार रहा है।

राजेश्वरी — (नींद से चौंककर) क्या कहा -', आग जली है?

लौंडी — नौज, कोई आदमी नीचे पुकार रहा है।

राजेश्वरी — पूछा नहीं कौन है, क्या कहता है, किस मतलब से आया है? संदेशा लेकर दौड़ चली, कैसे मजे का सपना देख रही थी।

लौंडी — ठाकुर साहब ने तो कह दिया है कि कोई कितना ही पुकारे, कोई हो, किवाड़ न खोलना, न कुछ जवाब देना। इसीलिए मैंने कुछ पूछताछ नहीं की।

राजेश्वरी — मैं कहती हूँ जाकर पूछो, कौन है?

(महरी जाती है और एक क्षण में लौट आती है)

लौंडी — अरे बाईजी, बड़ा गजब हो गया। यह तो ठाकुर साहब के छोटे भाई बाबू कंचनसिंह हैं। अब क्या होगा?

राजेश्वरी — होगा क्या, जाकर बुला ला।

लौंडी — ठाकुर साहब सुनेंगे तो मेरे सिर का बाल भी न छोड़ेंगे।

राजेश्वरी — तो ठाकुर साहब को सुनाने कौन जाएगा! अब यह तो नहीं हो सकता कि उनके भाई द्वार पर आएँ और मैं उनकी

बात तक न पूछूँ। वह अपने मन में क्या कहेंगे! जाकर बुला ला और दीवानखाने में बिठला। मैं आती हूँ।

लौंडी — किसी ने पूछा तो मैं कह दूँगी, अपने बाल न नुचवाऊँगी।

राजेश्वरी — तेरा सिर देखने से तो यही मालूम होता है कि एक नहीं कई बार बाल नुच चुके हैं। मेरी खातिर से एक बार और नुचवा लेना। यह लो, इससे बालों के बढ़ाने की दवा ले लेना।

(लौंडी चली जाती है)

राजेश्वरी — (मन में) इनके आने का क्या प्रयोजन है? कहीं उन्होंने जाकर इन्हें कुछ कहा-सुना तो नहीं? आप ही मालूम हो जाएगी। अब मेरा दांव आया है। ईश्वर मेरे सहायक हैं। मैं किसी भाँति आप ही इनसे मिलना चाहती थी। वह स्वयं आ गए। (आईने में सूरत देखकर) इस वक्त किसी बनाव चुनाव की जरूरत नहीं, यह अलसाई मतवाली आँखें सोलहों सिंगार के बराबर हैं। क्या जानें किस स्वभाव का आदमी है। अभी तक विवाह नहीं किया है, पूजा-पाठ, पोथी-पत्रे में रात-दिन लिप्त रहता है। इस पर मंत्र चलना कठिन है। कठिन हो सकता है, पर

असाध्य नहीं है। मैं तो कहती हूँ, कठिन भी नहीं है। आदमी कुछ खोकर तब सीखता है। जिसने खोया ही नहीं वह क्या सीखेगी। मैं सचमुच बड़ी अभागिन हूँ। भगवान् ने यह रूप दिया था। तो ऐसे पुरूष का संग क्यों दिया जो बिल्कुल दूसरों की मुट्ठी में था।! यह उसी का फल है कि जिनके सज्जनों की मुझे पूजा करनी चाहिए थी, आज मैं उनके खून की प्यासी हो रही हूँ। क्यों न खून की प्यासी होऊँ? देवता ही क्यों न हो, जब अपना सर्वनाश कर दे तो उसकी पूजा क्यों करूँ! यह दयावान हैं, धर्मात्मा हैं, गरीबों का हित करते हैं पर मेरा जीवन तो उन्होंने नष्ट कर दिया। दीन-दुनिया कहीं का न रखा। मेरे पीछे एक बेचारे भोले-भाले, सीधे-सादे आदमी के प्राणों के घातक हो गए। कितने सुख से जीवन कटता था। अपने घर में रानी बनी हुई थी। मोटा खाती थी, मोटा पहनती थी, पर गाँव-भर में मरजाद तो थी। नहीं तो यहाँ इस तरह मुँह में कालिख लगाए चोरों की तरह पड़ी हूँ जैसे कोई कैदी कालकोठरी में बन्द हो, आ गए कंचनसिंह, चलूँ। (दीवानखाने में आकर) देवरजी को प्रणाम करती हूँ।

कंचन — (चकित होकर मन में) मैं न जानता था कि यह ऐसी सुंदरी रमणी है। रम्भा के चित्र से कितनी मिलती-जुलती है! तभी तो भाई साहब लोट-पोट हो गए। वाणी कितनी मधुर है।

(प्रकट) मैं बिना आज्ञा ही चला आया, इसके लिए क्षमा माँगता हूँ। सुना है भाई साहब का कड़ा हुक्म है कि यहाँ कोई न आने पाए।

राजेश्वरी — आपका घर है, आपके लिए क्या रोक-टोक! मेरे लिए तो जैसे आपके भाई साहब, वैसे आप। मेरे धन्य भाग कि आप जैसे भक्त पुरूष के दर्शन हुए।

कंचन — (असमंजस में पड़कर मन में) मैंने काम जितना सहज समझा था। उससे कहीं कठिन निकला। सौंदर्य कदाचित् बुद्धि-शक्तियों को हर लेता है। जितनी बातें सोचकर चला था। वह सब भूल गई, जैसे कोई नया पत्ता अखाड़े में उतरते ही अपने सारे दांव-पेंच भूल जाए। कैसे बात छेड़ूँ? (प्रकट) आपको यह तो मालूम ही होगा कि भाई साहब आपके साथ कहीं बाहर जाना चाहते हैं?

राजेश्वरी — (मुस्कराकर) जी हाँ, यह निश्चय हो चुका है।

कंचन — अब किसी तरह नहीं रुक सकता?

राजेश्वरी — हम दोनों में से कोई एक बीमार हो जाए तो रुक सके

कंचन — ईश्वर न करें, ईश्वर न करें, पर मेरा आशय यह था। कि आप भाई साहब को रोकें तो अच्छा हो, वह एक बार घर से

जाकर फिर मुश्किल से लौटेंगी। भाभी जी को जब से यह बात मालूम हुई है वह बार-बार भाई साहब के साथ चलने पर जिद कर रही हैं। अगर भैया छिपकर चले गए तो भाभी के प्राणों ही पर बन जाएगी।

राजेश्वरी — इसका तो मुझे भी भय है, क्योंकि मैंने सुना है, ज्ञानी देवी उनके बिना एक छन भी नहीं रह सकती। पर मैं भी तो आपके भैया ही के हुक्म की चेरी हूँ, जो कुछ वह कहेंगे उसे मानना पड़ेगा। मैं अपना देश, कुल, घर-बार छोड़कर केवल उनके प्रेम के सहारे यहाँ आई हूँ। मेरा यहाँ कौन है? उस प्रेम का सुख उठाने से मैं अपने को कैसे रोकूँ? यह तो ऐसा ही होगा कि कोई भोजन बनाकर भूखों तड़पा करे, घर छाकर धूप में जलता रहे। मैं ज्ञानीदेवी से डाह नहीं करती, इतनी ओछी नहीं हूँ कि उनसे बराबरी करूँ। लेकिन मैंने जो यह लोक-लाज, कुल-मरजाद तजा है वह किसलिए!

कंचन — इसका मेरे पास क्या जवाब है?

राजेश्वरी — जवाब क्यों नहीं है, पर आप देना नहीं चाहते।

कंचन — दोनों एक ही बात है, भय केवल आपके नाराज होने का है।

राजेश्वरी — इससे आप निश्चिंत रहिए। जो प्रेम की आँच सह सकता है, उसके लिए और सभी बातें सहज हो जाती हैं।

कंचन — मैं इसके सिवा और कुछ न कहूँगा कि आप यहाँ से न जाएँ।

राजेश्वरी — (कंचन की ओर तिरछी चितवनों से ताकते हुए) यह आपकी इच्छा है?

कंचन — हाँ, यह मेरी प्रार्थना है। (मन में) दिल नहीं मानता, कहीं मुँह से कोई बात निकल न पड़े।

राजेश्वरी — चाहे वह रूठ ही जाएँ?

कंचन — नहीं-नहीं, अपने कौशल से उन्हें राजी कर लो।

राजेश्वरी — (मुस्कराकर) मुझमें यह गुण नहीं है।

कंचन — रमणियों में यह गुण बिल्ली के नखों की भाँति छिपा रहता है। जब चाहें उसे काम में ला सकती हैं।

राजेश्वरी — उनसे आपके आने की चरचा तो करनी ही होगी।

कंचन — नहीं, हरगिज नहीं मैं तुम्हें ईश्वर की कसम दिलाता हूँ। भूलकर भी उनसे यह जिक्र न करना, नहीं तो मैं जहर खा लूँगा, फिर तुम्हें मुँह न दिखाऊँगा।

राजेश्वरी — (हँसकर) ऐसी धमकियों का तो प्रेम-बर्ताव में कुछ अर्थ नहीं होता, लेकिन मैं आपको उन आदमियों में नहीं समझती। मैं आपसे कहना नहीं चाहती थी, पर बात पड़ने पर कहना ही पड़ा कि मैं आपके सरल स्वभाव और आपकी निष्कपट बातों पर मोहित हो गई हूँ। आपके लिए मैं सब कष्ट सहने को तैयार हूँ। पर आपसे यही बिनती है कि मुझ पर कृपादृष्टि बनाए रखिएगा और कभी-कभी दर्शन देते रहिएगा।

(राजेश्वरी गाती है)

क्या सो रहा मुसाफिर बीती है रैन सारी।
अब जाग के चलन की कर ले सभी तैयारी।
तुझको है दूर जाना, नहीं पास कुछ खजाना,
आगे नहीं ठिकाना होवे बड़ी खुआरी।
क्या सो रहा मुसाफिर बीती है रैन सारी।
पूंजी सभी गमाई, कुछ ना करी कमाई,
क्या लेके घर को जाई करजा किया है भारी॥
क्या सो रहा मुसाफिर बीती है रैन सारी।

(कंचन चला जाता है)

तीसरा दृश्य

(स्थान — सबलसिंह का घर। सबलसिंह बगीचे में हौज के किनारे मसहरी के अंदर लेटे हुए हैं। समय — ग्यारह बजे रात)

सबल — (आप-ही-आप) आज मुझे उसके बर्ताव में कुछ रूखाई-सी मालूम होती थी। मेरा बहम नहीं है, मैंने बहुत विचार से देखा। मैं घंटे भर तक बैठा चलने के लिए जोर देता रहा, पर उसने एक बार नहीं करके फिर हाँ न की। मेरी तरफ एक बार भी उन प्रेम की चितवनों से नहीं देखा जो मुझे मस्त कर देती हैं। कुछ गुमसुम-सी बैठी रही। कितना कहा कि तुम्हारे न चलने से घोर अनर्थ होगी। यात्रा की सब तैयारियाँ कर चुका हूँ, लोग मन में क्या कहेंगे कि पहाड़ों की सैर का इतना चाव था, और इतनी जल्द ठण्डा हो गया? लेकिन मेरी सारी अनुनय-विनय एक तरफ और उसकी 'नहीं' एक तरफ। इसका कारण क्या है? किसी ने बहका तो नहीं दिया। हाँ, एक बात याद आई। उसके इस कथन का क्या आशय हो सकता है कि हम चाहे जहाँ जाएँ, टोहियों और गोयंदों से बच न सकेंगे। क्या यहाँ टोहिये आ गए?

इसमें कंचन की कुछ कारस्तानी मालूम होती है। टोहियेपन की आदत उन्हीं में है। उनका उस दिन उचक्कों की भाँति इधर-उधर, उपर-नीचे ताकते जाना निरर्थक नहीं था। इन्होंने कल मुझे रोकने की कितनी चेष्टा की थी। ज्ञानी की निगाह भी कुछ बदली हुई देखता हूँ। यह सारी आग कंचन की लगाई हुई है। तो क्या कंचन वहाँ गया था।? राजेश्वरी के सम्मुख जाने की इसे क्योंकर हिम्मत हुई किसी महफिल में तो आज तक गया नहीं बचपन ही से औरतों को देखकर झेंपता है। वहाँ कैसे गया? जाने क्योंकर पाया। मैंने तो राजेश्वरी से सख्त ताकीद कर दी थी कि कोई भी यहाँ न आने पाए। उसने मेरी ताकीद की कुछ परवाह न की। दोनों नौकरानियाँ भी मिल गई। यहाँ तक कि राजेश्वरी ने इनके जाने की कुछ चर्चा ही नहीं की। मुझसे बात छिपाई, पेट में रखा। ईश्वर, मुझे यह किन पापों का दण्ड मिल रहा है? अगर कंचन मेरे रास्ते में पड़ते हैं तो पड़ें, परिणाम बुरा होगी। अत्यंत भीषण। मैं जितना ही नर्म हूँ उतना ही कठोर भी हो सकता हूँ। मैं आज से ताक में हूँ। अगर निश्चय हो गया कि इसमें कंचन का कुछ हाथ है तो मैं उसके खून का प्यासा हो जाऊँगा। मैंने कभी उसे कड़ी निगाह से नहीं देखा। पर उसकी इतनी जुर्रत! अभी यह खून बिल्कुल ठंडा नहीं हुआ है, उस जोश का कुछ हिस्सा बाकी है, जो कटे हुए सिरों और तड़पती हुई लाशों का

दृश्य देखकर मतवाला हो जाता था। इन बाहों में अभी दम है, यह अब भी तलवार और भाले का वार कर सकती हैं। मैं अबोध बालक नहीं हूँ कि मुझे बुरे रास्ते से बचाया जाए, मेरी रक्षा की जाए। मैं अपना मुखतार हूँ जो चाहूँ करूँ। किसी को चाहे वह मेरा भाई ही क्यों न हो, मेरी भलाई और हित?कामना का ढोंग रचने की जरूरत नहीं अगर बात यहीं तक है तो गनीमत है, लेकिन इसके आगे बढ़ गई है तो फिर इस कुल की खैरियत नहीं इसका सर्वनाश हो जाएगा और मेरे ही हाथों। कंचन को एक बार सचेत कर देना चाहिए।

(ज्ञानी आती है)

ज्ञानी — क्या अभी तक सोए नहीं? बारह तो बज गए होंगे।

सबल — नींद को बुला रहा हूँ, पर उसका स्वभाव तुम्हारे जैसा है। आप-ही-आप आती है, पर बुलाने से मान करने लगती है। तुम्हें नींद क्यों नहीं आई?

ज्ञानी — चिंता का नींद से बिगाड़ है।

सबल — किस बात की चिंता है?

ज्ञानी — एक बात है कि कहूँ। चारों तरफ चिंताएँ ही चिंताएँ हैं। इस वक्त तुम्हारी यात्रा की चिंता है। तबीयत अच्छी नहीं, अकेले जाने को कहते हो, परदेश वाली बात है, न जाने कैसी पड़े कैसी न पड़े। इससे तो यही अच्छा था। कि यहीं इलाज करवाते।

सबल — (मन-ही-मन) क्यों न इसे खुश कर दूँ जब जरा-सी बात फेर देने से काम निकल सकता है। (प्रकट) इस जरा-सी बात के लिए इतनी चिंता करने की क्या जरूरत?

ज्ञानी — तुम्हारे लिए जरा-सी हो, पर मुझे तो असूझ मालूम होता है।

सबल — अच्छा तो लो, न जाऊँगी।

ज्ञानी — मेरी कसम?

सबल — सत्य कहता हूँ। जब इससे तुम्हें इतना कष्ट हो रहा है तो न जाऊँगी।

ज्ञानी — मैं इस अनुग्रह को कभी न भूलूँगी। आपने मुझे उबार लिया, नहीं तो न जाने मेरी क्या दशा होती। अब मुझे कुछ दंड भी दीजिए। मैंने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया है और उसका कठिन दंड चाहती हूँ।

सबल — मुझे तुमसे इसकी शंका ही नहीं हो सकती।

ज्ञानी — पर यह अपराध इतना बड़ा है कि आप उसे क्षमा नहीं कर सकते।

सबल — (कौतूहल से) क्या बात है, सुनूँ?

ज्ञानी — मैं कल आपके मना करने पर भी स्वामी चेतनदास के दर्शनों को चली गई थी।

सबल — अकेले?

ज्ञानी — गुलाबी साथ थी।

सबल — (मन में) क्या करे बेचारी किसी तरह मन तो बहलाये। मैंने एक तरह इससे मिलना ही छोड़ दिया। बैठे-बैठे जी ऊब गया होगा। मेरी आज्ञा ऐसी कौन महत्व की वस्तु है। जब नौकर-चाकर जब चाहते हैं उसे भंग कर देते हैं और मैं उनका कुछ नहीं कर सकता, तो इस पर क्यों गर्म पड़ूँ। मैं खुली आँखों धर्म और नीति को भंग कर रहा हूँ, ईश्वरीय आज्ञा से मुँह मोड़ रहा हूँ तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि इसके साथ जरा-सी बात के लिए सख्ती करूँ। (प्रकट) यह कोई अपराध नहीं, और न मेरी आज्ञा इतनी अटल है कि भंग ही न की जाय। अगर तुम इसे अपराध समझती हो तो मैं इसे सहर्ष क्षमा करता हूँ।

ज्ञानी — स्वामी, आपके बर्ताव में आजकल क्यों इतना अन्तर हो गया है? आपने क्यों मुझे बंधनों से मुक्त कर दिया है, मुझ पर पहले की भाँति शासन क्यों नहीं करते? नाराज क्यों नहीं होते, कटु शब्द क्यों नहीं कहते, पहले की भाँति रूठते क्यों नहीं, डाँटते क्यों नहीं? आपकी यह सहिष्णुता देखकर मेरे अबोध मन में भाँति-भाँति की शंका उठने लगती है कि यह प्रेम-बंधन का ढीलापन न हो,

सबल — नहीं प्रिये, यह बात नहीं है। देश-देशांतर के पत्र-पत्रिकाओं को देखता हूँ तो वहाँ की स्त्रियों की स्वाधीनता के सामने यहाँ का कठोर शासन कुछ अच्छा नहीं लगता। अब स्त्रियाँ कौन्सिलों में जा सकती हैं, वकालत कर सकती हैं, यहाँ तक कि भारत में भी स्त्रियों को अन्याय के बंधन से मुक्त किया जा रहा है, तो क्या मैं ही सबसे गया-बीता हूँ कि वही पुरानी लकीर पीटे जाऊँ।

ज्ञानी — मुझे तो उस राजनैतिक स्वाधीनता के सामने प्रेम-बंधन कहीं सुखकर जान पड़ता है। मैं वह स्वाधीनता नहीं चाहती।

सबल — (मन में) भगवन्, इस अपार प्रेम का मैंने कितना घोर अपमान किया है? इस सरल ह्रदया के साथ मैंने कितनी अनीति की है? आँखों में आँसू क्यों भरे आते हैं? मुझ जैसा कुटिल मनुष्य इस देवी के योग्य नहीं था। (प्रकट) प्रिये, तुम मेरी ओर से लेश-

मात्र भी शंका न करो। मैं सदैव तुम्हारा हूँ और रहूँगा। इस समय गाना सुनने का जी चाहता है। वही अपना प्यारा गीत गाकर मुझे सुना दो।

(ज्ञानी सरोद लाकर सबलसिंह को दे देती है। गाने लगती है)

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई।
माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई,
संतन संग बैठि-बैठि लोक लाज खोई।
अब तो मेरा ...।

चौथा दृश्य

(स्थान — गंगा तट। बरगद के घने वृक्ष के नीचे तीन-चार आदमी लाठियाँ और तलवारें लिए बैठे हैं। समय — दस बजे रात)

एक डाकू — दस बजे और अभी तक लौटी नहीं

दूसरा — तुम उतावले क्यों हो जाते हो, जितनी ही देर में लौटेगी उतना ही सन्नाटा होगा, अभी इक्के-दुक्के रास्ता चल रहा है।

तीसरा — इसके बदन पर कोई पाँच हजार के गहने तो होंगे?

चौथा — सबलसिंह कोई छोटा आदमी नहीं है। उसकी घरवाली बन-ठनकर निकलेगी तो दस हजार से कम का माल नहीं

पहला — यह शिकार आज हाथ आ जाए तो कुछ दिनों चैन से बैठना नसीब हो, रोज-रोज रात-रात भर घात में बैठे रहना अच्छा नहीं लगता। यह सब कुछ करके भी शरीर को आराम न मिला तो बात ही क्या रही।

दूसरा — भाग्य में आराम वदा होता तो यह कुकरम न करने पड़ते। कहीं सेठों की तरह गद्दी-मसनद लगाए बैठे होते। हमें चाहे कोई खजाना ही मिल जाए पर आराम नहीं मिल सकता।

तीसरा — कुकरम क्या हमीं करते हैं, यही कुकरम तो संसार कर रहा है। सेठजी रोजगार के नाम से डाका मारते हैं, अमले घूस के नाम से डाका मारते हैं, वकील मेहनताना के नाम से डाका मारता है। पर उन डकैतों के महल खड़े हैं, हवागाड़ियों पर सैर करते गिरते हैं, पेचवान लगाए मखमली गद्दियों पर पड़े रहते हैं। सब उनका आदर करते हैं, सरकार उन्हें बड़ी-बड़ी पदवियाँ देती है। हमीं लोगों पर विधाता की निगाह क्यों इतनी कड़ी रहती है?

चौथा डाकू — काम करने का ढंग है। वह लोग पढ़े-लिखे हैं इसलिए हमसे चतुर हैं। कुकरम भी करते हैं और मौज भी उड़ाते हैं। वही पत्थर मंदिर में पुजता है और वही नालियों में लगाया जाता है।

पहला — चुप, कोई आ रहा है।

(हलधर का प्रवेश। गाता है)

सात सखी पनघट पर आई कर सोलह सिंगार,
अपना दु:ख रोने लगीं, जो कुछ बदा लिलार।
पहली सखी बोली, सुनो चार बहनो मेरा पिया सराबी है,
कंगन की कौड़ी पास न रखता, दिल का बड़ा नवाबी है।
जो कुछ पाता सभी उड़ाता, घर की अजब खराबी है।
लोटा-थाली गिरवी रख दी, फिरता लिये रिकाबी है।
बात-बात पर आंख बदलता, इतना बड़ा मिजाजी है।
एक हाथ में दोना कुल्हड़, दूजे बोतल गुलाबी है।

पहला डाकू — कौन है? खड़ा रह।

हलधर — तुम तो ऐसा डपट रहे हो जैसे मैं कोई चोर हूँ। कहो क्या कहते हो?

दूसरा डाकू — (साथियों से) जवान तो बड़ा गठीला और जीवट का है। (हलधर से) किधर चले? घर कहाँ है?

हलधर — यह सब आल्हा पूछकर क्या करोगे? अपना मतलब कहो।

तीसरा डाकू — हम पुलिस के आदमी हैं, बिना तलाशी लिए किसी को जाने नहीं देते।

हलधर — (चौकन्ना होकर) यहाँ क्या धरा है जो तलाशी को धमकाते हो, धन के नाते यही लाठी है और इसे मैं बिना दस-पाँच सिर फोड़े दे नहीं सकता।

चौथा डाकू — तुम समझ गए हम लोग कौन हैं, या नहीं?

हलधर — ऐसा क्या निरा बुद्धू ही समझ लिया है?

चौथा डाकू — तो गांठ में जो कुछ हो दे दो, नाहक रार क्यों मचाते हो?

हलधर — तुम भी निरे गंवार हो, चील के घोंसले में माँस ढूँढ़ते हो,

पहला डाकू — यारो, संभलकर, पालकी आ रही है।

चौथा डाकू — बस टूट पड़ो जिसमें कहार भाग खड़े हों।

(ज्ञानी की पालकी आती है। चारों डाकू तलवारें लिए कहारों पर जा पड़ते हैं। कहार पालकी पटककर भाग खड़े होते हैं। गुलाबी बरगद की आड़ों में छिप जाती है)

एक डाकू — ठकुराइन, जान की खैर चाहती हो तो सब गहने चुपके से उतार के रख दो। अगर गुल मचाया या चिल्लाई तो हमें जबरदस्ती तुम्हारा मुँह बन्द करना पड़ेगा और हम तुम्हारे उसपर हाथ नहीं उठाना चाहते।

दूसरा डाकू — सोचती क्या हो, यहाँ ठाकुर सबलसिंह नहीं बैठे हैं जो बंदूक लिए आते हों। चटपट उतारो।

तीसरा — (पालकी का परदा उठाकर) यह यों न मानेगी, ठकुराइन है न, हाथ पकड़कर बांध दो, उतार लो सब गहने।

(हलधर लपककर उस डाकू पर लाठी चलाता है और वह हाय मारकर बेहोश हो जाता है। तीनों बाकी डाकू उस पर टूट पड़ते हैं। लाठियाँ चलने लगती हैं)

हलधर — वह मारा, एक और गिरा।

पहला डाकू — भाई, तुम जीते हम हारे, शिकार क्यों भगाए देते हो? माल में आधा तुम्हारा।

हलधर — तुम हत्यारे हो, अबला स्त्रियों पर हाथ उठाते हो, मैं अब तुम्हें जीता न छोड़ूँगा।

डाकू — यार, दस हजार से कम का माल नहीं है। ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। थानेदार को सौ-दो सौ रुपये देकर टरका देंगे। बाकी सारा अपना है।

हलधर — (लाठी तानकर) जाते हो या हड्डी तोड़ के रख दूँ?

(दोनों डाकू भाग जाते हैं। हलधर कहारों को बुलाता है जो एक मंदिर में छिपे बैठे हैं। पालकी उठती है)

ज्ञानी — भैया, आज तुमने मेरे साथ जो उपकार किया है इसका फल तुम्हें ईश्वर देंगे, लेकिन मेरी इतनी विनती है कि मेरे घर तक चलो। तुम देवता हो, तुम्हारी पूजा करूँगी।

हलधर — रानी जी, यह तुम्हारी भूल है। मैं न देवता हूँ न दैत्य। मैं भी घातक हूँ। पर मैं अबला औरतों का घातक नहीं, हत्यारों ही का घातक हूँ। जो धन के बल से गरीबों को लूटते

हैं, उनकी इज्जत बिगाड़ते हैं, उनके घर को भूतों का डेरा बना देते हैं। जाओ, अब से गरीबों पर दया रखना। नालिस, कुड़की, जेहल, यह सब मत होने देना।

(नदी की ओर चला जाता है। गाता है)

दूजी सखी बोली सुनो सखियो, मेरा पिया जुआरी है।
रात-रात भर गड़ पर रहता, बिगड़ी दसा हमारी है।
घर और बार दांव पर हारा, अब चोरी की बारी है।
गहने-कपड़े को क्या रोऊँ, पेट की रोटी भारी है।
कौड़ी ओढ़ना कौड़ी बिछौना, कौड़ी सौत हमारी है।

ज्ञानी — (गुलाबी से) आज भगवान ने बचा लिया नहीं तो गहने भी जाते और जान की भी कुशल न थी।

गुलाबी — यह जरूर कोई देवता है, नहीं तो दूसरों के पीछे कौन अपनी जान जोखिम में डालता?

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान — मधुबन। समय — नौ बजे रात, बादल घिरा हुआ है, एक वृक्ष के नीचे बाबा चेतनदास मृगछाले पर बैठे हुए हैं। फत्तू, मंगरू, हरदास आदि धूनी से जरा हट कर बैठे हैं)

चेतनदास — संसार कपटमय है। किसी प्राणी का विश्वास नहीं जो बड़े ज्ञानी, बड़े त्यागी, धर्मात्मा प्राणी हैं— उनकी चित्तवृत्ति को ध्यान से देखो तो स्वार्थ से भरा पाओगी। तुम्हारा जमींदार धर्मात्मा समझा जाता है, सभी उसके यश कीर्ति की प्रशंसा करते हैं। पर मैं कहता हूँ कि ऐसा अत्याचारी, कपटी, धूर्त, भ्रष्टाचरण मनुष्य संसार में न होगी।

मंगरू — बाबा, आप महात्मा हैं, आपकी जबान कौन पकड़े, पर हमारे ठाकुर सचमुच देवता हैं। उनके राज में हमको जितना सुख है उतना कभी नहीं था।

हरदास — जेठी की लगान माफ कर दी थी। अब असामियों को भूसे-चारे के लिए बिना ब्याज के रुपये दे रहे हैं।

फत्तू — उनमें और चाहे कोई बुराई हो पर असामियों पर हमेशा परवरिस की निगाह रखते हैं।

चेतनदास — यही तो उसकी चतुराई है कि अपना स्वार्थ भी सिद्ध कर लेता है और अपकीर्ति भी नहीं होने देता। रुपये से, मीठे वचन से, नम्रता से लोगों को वशीभूत कर लेता है।

मंगरू — महाराज, आप उनका स्वभाव नहीं जानते जभी ऐसा कहते हैं। हम तो उन्हें सदा से देखते आते हैं। कभी ऐसी नीयत नहीं देखी कि किसी से एक पैसा बेसी ले लें। कभी किसी तरह की बेगार नहीं ली, और निगाह का तो ऐसा साफ आदमी कहीं देखा ही नहीं

हरदास — कभी किसी पर निगाह नहीं डाली।

चेतनदास — भली प्रकार सोचो, अभी हाल ही में कोई स्त्री यहाँ से निकल गई है?

फत्तू — (उत्सुक होकर) हाँ महाराज, अभी थोड़े ही दिन हुए।

चेतनदास — उसके पति का भी पता नहीं है?

फत्तू — हाँ महाराज, वह भी गायब है।

चेतनदास — स्त्री परम सुंदरी है?

फत्तू — हाँ महाराज, रानी मालूम होती है।

चेतनदास — उसे सबलसिंह ने घर डाल लिया है।

फत्तू — घर डाल लिया है?

मंगरू — झूठ है।

हरदास — विश्वास नहीं आता।

फत्तू — और हलधर कहाँ है?

चेतनदास — इधर-उधर मारा-मारा फिरता है। डकैती करने लगा है। मैंने उसे बहुत खोजा पर भेंट नहीं हुई।

(सलोनी गाती हुई आती है)

मुझे जोगिनी बना के कहाँ गए रे जोगिया।

फत्तू — सलोनी काकी, इधर आओ! राजेश्वरी तो सबलसिंह के घर बैठ गई।

सलोनी — चल झूठे, बेचारी को बदनाम करता है।

मंगरू — ठाकुर साहब में यह लत है ही नहीं।

सलोनी — मर्दों की मैं नहीं चलाती, न इनके सुभाव का कुछ पता मिलता है, पर कोई भरी गंगा में राजेश्वरी को कलंक लगाए तो भी मुझे विश्वास न आएगी। वह ऐसी औरत नहीं।

फत्तू — विश्वास तो मुझे भी नहीं आता, पर यह बाबा जी कह रहे हैं।

सलोनी — आपने आँखों देखा है?

चेतनदास — नित्य ही देखता हूँ। हाँ, कोई दूसरा देखना चाहे तो कठिनाई होगी। उसके लिए किराए पर एक मकान लिया गया है, तीन लौंडिया सेवा टहल के लिए हैं, ठाकुर प्रातःकाल जाता है और घड़ीभर में वहाँ से लौट आता है। संध्या समय फिर जाता है और नौ-दस बजे तक रहता है। मैं इसका प्रमाण देता हूँ। मैंने सबलसिंह को समझाया, पर वह इस समय किसी की नहीं सुनता। मैं अपनी आँखों यह अत्याचार नहीं देख सकता। मैं संन्यासी हूँ। मेरा धर्म है कि ऐसे अत्याचारियों का, ऐसे पाखंडियों का संहार करूँ। मैं पृथ्वी को ऐसे रंगे हुए सियारों से मुक्त कर देना चाहता हूँ। उसके पास धन का बल है तो हुआ करे। मेरे पास न्याय और धर्म का बल है। इसी बल से मैं उसको परास्त करूँगा। मुझे आशा थी कि तुम लोगों से इस पापी को दंड देने में मुझे यथेष्ट सहायता मिलेगी। मैं समझता था। कि देहातों में

आत्माभिमान का अभी अन्त नहीं हुआ है, वहाँ के प्राणी इतने पतित नहीं हुए हैं कि अपने उसपर इतना घोर, पैशाचिक अनर्थ देखकर भी उन्हें उत्तेजना न हो, उनका रक्त न खौलने लगे। पर अब ज्ञात हो रहा है कि सबल ने तुम लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। उसके दयाभाव ने तुम्हारे आत्मसम्मान को कुचल डाला है। दया का आघात अत्याचार के आघात से कम प्राणघातक नहीं होता। अत्याचार के आघात से क्रोध उत्पन्न होता है, जी चाहता है मर जायें या मार डालें। पर दया की चोट सिर को नीचा कर देती है, इससे मनुष्य की आत्मा और भी निर्बल हो जाती है, उसके अभिमान का अन्त हो जाता है। वह नीच, कुटिल, खुशामदी हो जाता है। मैं तुमसे फिर पूछता हूँ, तुममें कुछ लज्जा का भाव है या नहीं?

एक किसान — महाराज, अगर आपका ही कहना ठीक हो तो हम क्या कर सकते हैं? ऐसे दयावान पुरुष की बुराई हमसे न होगी। औरत आप ही खराब हो तो कोई क्या करे?

मंगरू — बस, तुमने मेरे मन की बात कही।

हरदास — वह सदा से हमारी परवरिस करते आए हैं। हम आज उनसे बागी कैसे हो जाएँ?

दूसरा किसान — बागी हो भी जाएँ तो रहें कहाँ? हम तो उनकी मुट्ठी में हैं। जब चाहें हमें पीस डालें। पुस्तैनी अदावत हो जाएगी।

मंगरू — अपनी लाज तो ढाँकते नहीं बनती, दूसरों की लाज कोई क्या ढाँकेगा?

हरदास — स्वामीजी, आप सन्नासी हैं, आप सब कुछ कर सकते हैं। हम गृहस्थ लोग जमींदारों से बिगाड़ करने लगें तो कहीं ठिकाना न लगे।

मंगरू — हाँ और क्या, आप तो अपने तपोबल से ही जो चाहें कर सकते हैं। अगर आप सराप भी दे दें तो कुकर्मी खड़े-खड़े भस्म हो जाएँ ब

सलोनी — जा, चुल्लू-भर पानी में डूब मर कायर कहीं का। हलधर तेरे सगे चाचा का बेटा है। जब तू उसका नहीं तो और किसका होगा? मुँह में कालिख नहीं लगा लेता, उसपर से बातें बनाता है। तुझे तो चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठना चाहिए था। मर्द वह होते हैं जो अपनी आन पर जान दे देते हैं। तू हिजड़ा है। अब जो मुँह खोला तो लूका लगा दूँगी।

मंगरू — सुनते हो फत्तू काका, इनकी बातें, जमींदार से बैर बढ़ाना इनकी समझ में दिल्लगी है। हम पुलिस वालों से चाहे न

डरें, अमलों से चाहे न डरें, महाजन से चाहे बिगाड़ कर लें, पटवारी से चाहे कहा -सुनी हो जाए, पर जमींदार से मुँह लगना अपने लिए गढ़ा खोदना है। महाजन एक नहीं हजारों हैं, अमले आते-जाते रहते हैं, बहुत करेंगे सता लेंगे, लेकिन जमींदार से तो हमारा जनम-मरन का व्योहार है। उसके हाथ में तो हमारी रोटियाँ हैं। उससे ऐंठकर कहाँ जाएँगे? न काकी, तुम चाहे गालियाँ दो, चाहे ताने मारो, पर सबलसिंह से हम लड़ाई नहीं ठान सकते।

चेतनदास — (मन में) मनोनीत आशा न पूरी हुई हलधर के कुटुम्बियों में ऐसा कोई न निकला जो आवेग में आकर अपमान का बदला लेने को तैयार हो जाता। सब-के-सब कायर निकले। कोई वीर आत्मा निकल आती जो मेरे रास्ते से इस बाधा को हटा देती, फिर ज्ञानी अपनी हो जाती। यह दोनों उस काम के तो नहीं हैं, पर हिम्मती मालूम होते हैं। बुढ़िया दीन बनी हुई है, पर है पोढ़ी, नहीं तो इतने घमंड से बातें न करती। मियाँ गांठ का पूरा तो नहीं, पर दिल का दिलेर जान पड़ता है। उत्तेजना में पड़कर अपना सर्वस्व खो सकता है। अगर दोनों से कुछ धन मिल जाए तो सब-इंस्पेक्टर को मिलाकर, कुछ मायाजाल से, कुछ लोभ से काबू में कर लूँ। कोई मुकदमा खड़ा हो जाये। कुछ न होगा भांडा तो फूट जाएगा। ज्ञानी उन्हें अबकी भाँति देवता तो न समझती रहेगी। (प्रकट) इस पापी को दंड देने का मैंने प्रण कर

लिया है। ऐसे कायर व्यक्ति भी होते हैं, यह मुझे ज्ञात न था। हरीच्छा! अब कोई दूसरी ही युक्ति काम में लानी चाहिए।

सलोनी — महाराज, मैं दीन-दुखिया हूँ, कुछ कहना छोटा मुँह बड़ी बात है, पर मैं आपकी मदद के लिए हर तरह हाजिर हूँ। मेरी जान भी काम आए तो दे सकती हूँ।

फत्तू — स्वामीजी, मुझसे भी जो हो सकेगा करने को तैयार हूँ। हाथों में तो अब मकदूर नहीं रहा, पर और सब तरह हाजिर हूँ।

चेतनदास — मुझे इस पापी का संहार करने के लिए किसी की मदद की आवश्यकता न होती। मैं अपने योग और तप के बल से एक क्षण में उसे रसातल को भेज सकता हूँ, पर शास्त्रों में ऐसे कामों के लिए योगबल का व्यवहार करना वर्जित है। इसी से विवश हूँ। तुम धन से मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?

सलोनी — (फत्तू की ओर सशंक दृष्टि से ताकते हुए) महाराज, थोड़े-से रुपये धाम करने को रख छोड़े थे। वह आपके भेंट कर दूँगी। यह भी तो पुण्य ही का काम है।

फत्तू — काकी, तेरे पास कुछ रुपये ऊपर हों तो मुझे उधार दे दे।

सलोनी — चल, बातें बनाता है। मेरे पास रुपये कहाँ से आएँगे? कौन घर के आदमी कमाई कर रहे हैं। चालीस साल बीत गए बाहर से एक पैसा भी घर में नहीं आया।

फत्तू — अच्छा, नहीं देती है मत दे। अपने तीनों सीसम के पेड़ बेच दूँगा।

चेतनदास — अच्छा, तो मैं जाता हूँ विश्राम करने। कल दिन-भर में तुम लोग प्रबंध करके जो कुछ हो सके इस कार्य के निमित्त दे देना। कल संध्या को मैं अपने आश्रम पर चला जाऊँगा।

(प्रस्थान)

छठा दृश्य

(स्थान — शहर वाला किराये का मकान। समय — आधी रात। कंचनसिंह और राजेश्वरी बातें कर रहे हैं)

राजेश्वरी — देवरजी, मैंने प्रेम के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। पर जिस प्रेम की आशा थी वह नहीं मयस्सर हुआ। मैंने अपना

सर्वस्व दिया है तो उसके लिए सर्वस्व चाहती भी हूँ। मैंने समझा था।,एक के बदले आधी पर संतोष कर लूँगी। पर अब देखती हूँ तो जान पड़ता है कि मुझसे भूल हो गयी। दूसरी बड़ी भूल यह हुई कि मैंने ज्ञानी देवी की ओर ध्यान नहीं दिया था। उन्हें कितना दुःख,कितना शोक,कितनी जलन होगी,इसका मैंने जरा भी विचार नहीं किया था। आपसे एक बात पूछूँ,नाराज तो न होंगे?

कंचन — तुम्हारी बात से मैं नाराज हूँगा!

राजेश्वरी — आपने अब तक विवाह क्यों नहीं किया?

कंचन — इसके कई कारण हैं। मैंने धर्मग्रन्थों में पढ़ा था। कि गृहस्थ जीवन मनुष्य की मोक्ष-प्राप्ति में बाधक होता है। मैंने अपना तन,मन,धन सब धर्म पर अर्पण कर दिया था।दान और व्रत को ही मैंने जीवन का उद्देश्य समझ लिया था।उसका मुख्य कारण यह था। कि मुझे प्रेम का कुछ अनुभव न था।मैंने उसका सरस स्वाद न पाया था।उसे केवल माया की एक कूटलीला समझा करता था।,पर अब ज्ञात हो रहा है कि प्रेम में कितना पवित्र आनंद और कितना स्वर्गीय सुख भरा हुआ है। इस सुख के सामने अब मुझे धर्म,मोक्ष और व्रत कुछ भी नहीं जँचते। उसका सुख भी चिंतामय है,इसका दुःख भी रसमय।

राजेश्वरी — (वक्र नेत्रों से ताककर) यह सुख कहाँ प्राप्त हुआ?

कंचन — यह न बताऊँगा।

राजेश्वरी — (मुस्कराकर) बताइए चाहे न बताइए, मैं समझ गई। जिस वस्तु को पाकर आप इतने मुग्ध हो गए हैं वह असल में प्रेम नहीं है। प्रेम की केवल झलक है। जिस दिन आपको प्रेम-रत्न मिलेगा उस दिन आपको इस आनंद का सच्चा अनुभव होगा।

कंचन — मैं यह रत्न पाने योग्य नहीं हूँ। वह आनंद मेरे भाग्य में ही नहीं है।

राजेश्वरी — है और मिलेगा। भाग्य से इतने निराश न हूजिए। आप जिस दिन, जिस घड़ी, जिस पल इच्छा करेंगे वह रत्न आपको मिल जाएगा। वह आपकी इच्छा की बाट जोह रहा है।

कंचन — (आँखों में आँसू भरकर) राजेश्वरी, मैं घोर धर्म-संकट में हूँ। न जाने मेरा क्या अन्त होगा। मुझे इस प्रेम पर अपने प्राण बलिदान करने पड़ेंगे।

राजेश्वरी — (मन में) भगवान, मैं कैसी अभागिनी हूँ। ऐसे निश्छल सरल पुरूष की हत्या मेरे हाथों हो रही है। पर करूँ क्या, अपने अपमान का बदला तो लेना ही होगी। (प्रकट) प्राणेश्वर, आप

इतने निराश क्यों होते हैं। मैं आपकी हूँ और आपकी रहूँगी। संसार की आँखों में मैं चाहे जो कुछ हूँ, दूसरों के साथ मेरा बाहरी व्यवहार चाहे जैसा हो, पर मेरा हृदय आपका है। मेरे प्राण आप पर न्योछावर हैं। (आंचल से कंचन के आँसू पोंछकर) अब प्रसन्न हो जाइए। यह प्रेमरत्न आपकी भेंट है।

कंचन — राजेश्वरी, उस प्रेम को भोगना मेरे भाग्य में नहीं है। मुझ जैसा भाग्यहीन पुरूष और कौन होगा जो ऐसे दुर्लभ रत्न की ओर हाथ नहीं बढ़ा सकता। मेरी दशा उस पुरूष की-सी है जो क्षुधा से व्याकुल होकर उन पदार्थों की ओर लपके जो किसी देवता की अर्चना के लिए रखे हुए हों। मैं वही अमानुषी कर्म कर रहा हूँ। मैं पहले यह जानता कि प्रेम-रत्न कहाँ मिलेगा तो तुम अप्सरा भी होतीं तो आकाश से उतार लाता। दूसरों की आंख पड़ने के पहले तुम मेरी हो जातीं, फिर कोई तुम्हारी ओर आंख उठाकर भी न देख सकता। पर तुम मुझे उस वक्त मिलीं जब तुम्हारी ओर प्रेम की दृष्टि से देखना भी मेरे लिए अधर्म हो गया। राजेश्वरी, मैं महापापी, अधर्मी जीव हूँ। मुझे यहाँ इस एकांत में बैठने का, तुमसे ऐसी बातें करने का अधिकार नहीं है। पर प्रेमाघात ने मुझे संज्ञाहीन कर दिया है। मेरा विवेक लुप्त हो गया है। मेरे इतने दिन का ब्रह्मचर्य और धर्मनिष्ठा का अपहरण हो गया है। इसका परिणाम कितना भयंकर होगा, ईश्वर ही

जाने। अब यहाँ मेरा बैठना उचित नहीं है। मुझे जाने दो। (उठ खड़ा होता है)

राजेश्वरी — (हाथ पकड़कर) न जाने पाइएगा। जब इस धर्म का पचड़ा छेड़ा है तो उसका निपटारा किए जाइए। मैं तो समझती थी जैसे जगन्नाथ पुरी में पहुँचकर छुआछूत का विचार नहीं रहता, उसी भाँति प्रेम की दीक्षा पाने के बाद धर्म-अधर्म का विचार नहीं रहता। प्रेम आदमी को पागल कर देता है। पागल आदमी के काम और बात का, विचार और व्यवहार का कोई ठिकाना नहीं।

कंचन — इस विचार से चित्त को संतोष नहीं होता। मुझे अब जाने दो। अब और परीक्षा में मत डालो।

राजेश्वरी — अच्छा बतलाते जाइए कब आइएगा?

कंचन — कुछ नहीं जानता क्या होगी। (रोते हुए) मेरे अपराध क्षमा करना।

(जीने से उतरता है। द्वार पर सबलसिंह आते दिखाई देते हैं। कंचन एक अंधेरे बरामदे में छिप जाता है)

सबल — (उसपर जाकर) अरे! अभी तक तुम सोयी नहीं?

राजेश्वरी — जिनके आँखों में प्रेम बसता है वहाँ नींद कहाँ?

सबल — यह उन्निद्रा प्रेम में नहीं होती। कपट-प्रेम में होती है।

राजेश्वरी — (सशंक होकर) मुझे तो इसका कभी अनुभव नहीं हुआ। आपने इस समय आकर बड़ी कृपा की।

सबल — (क्रोध से) अभी यहाँ कौन बैठा हुआ था?

राजेश्वरी — आपकी याद।

सबल — मुझे भ्रम था। कि याद संदेह नहीं हुआ करती है। आज यह नयी बात मालूम हुई। मैं तुमसे विनय करता हूँ, बतला दो, अभी कौन यहाँ से उठकर गया है?

राजेश्वरी — आपने देखा है तो क्यों पूछते हैं?

सबल — शायद मुझे भ्रम हुआ हो।

राजेश्वरी — ठाकुर कंचनसिंह थे।

सबल — तो मेरा गुमान ठीक निकला। वह क्या करने आया था।?

राजेश्वरी — (मन में) मालूम होता है मेरा मनोरथ उससे जल्द पूरा होगा जितनी मुझे आशा थी। (प्रकट) यह प्रश्न आप व्यर्थ

करते हैं। इतनी रात गए जब कोई पुरूष किसी अन्य स्त्री के पास जाता है तो उसका एक ही आशय हो सकता है।

सबल — उसे तुमने आने क्यों दिया?

राजेश्वरी — उन्होंने आकर द्वार खटखटाया, कहारिन जाकर खोल आई। मैंने तो उन्हें यहाँ आने पर देखा।

सबल — कहारिन उससे मिली हुई है?

राजेश्वरी — यह उससे पूछिए।

सबल — जब तुमने उसे बैठे देखा तो दुत्कार क्यों न दिया?

राजेश्वरी — प्राणेश्वर, आप मुझसे ऐसे सवाल पूछकर दिल न जलाएँ। यह कहाँ की रीति है कि जब कोई आदमी अपने पास आए तो उसको दुत्कार दिया जाए, वह भी जब आपका भाई हो, मैं इतनी निष्ठुर नहीं हो सकती। उनसे मिलने में तो भय जब होता कि जब मेरा अपना चित्त चंचल होता, मुझे अपने उसपर विश्वास न होता। प्रेम के गहरे रंग में सराबोर होकर अब मुझ पर किसी दूसरे रंग के चढ़ने की सम्भावना नहीं है। हाँ, आप बाबू कंचनसिंह को किसी बहाने से समझा दीजिये कि अब से यहाँ न आएँ। वह ऐसी प्रेम और अनुराग की बातें करने लगते हैं कि

उसके ध्यान से ही लज्जा आने लगती है। विवश होकर बैठती हूँ, सुनती हूँ।

सबल — (उन्मत्त होकर) पाखंडी कहीं का, धर्मात्मा बनता है, विरक्त बनता है, और कर्म ऐसे नीच! तू मेरा भाई सही, पर तेरा वध करने में कोई पाप नहीं है। हाँ, इस राक्षस की हत्या मेरे ही हाथों होगी। ओह! कितनी नीच प्रकृति है, मेरा सगा भाई और यह व्यवहार! असह्य है, अक्षम्य है। ऐसे पापी के लिए नरक ही सबसे उत्तम स्थान है। आज ही इसी रात को तेरी जीवन-लीला समाप्त हो जाएगी। तेरा दीपक बुझ जाएगा। हाँ धूर्त, क्या कामलोलुपता के लिए यही एक ठिकाना था।! तुझे मेरे ही घर में आग लगानी थी। मैं तुझे पुत्रवत् प्यार करता था। तुझे (क्रोध से होंठ चबाकर) तेरी लाश को इन्हीं आँखों से तड़पते हुए देखूँगी।

(नीचे चला जाता है)

राजेश्वरी — (आप-ही-आप) ऐसा जान पड़ता है, भगवान् स्वयं यह सारी लीला कर रहे हैं, उन्हीं की प्रेरणा से सब कुछ होता हुआ मालूम होता है। कैसा विचित्र रहस्य है। मैं बैलों को मारा जाना नहीं देख सकती थी, चींटियों को पैरों तले पड़ते देखकर मैं पांव

हटा लिया करती थी, पर अभाग्य मुझसे यह हत्याकांड करा रहा है। मेरे ही निर्दय हाथों के इशारे से यह कठपुतलियाँ नाच रही हैं!

(करूण स्वरों में गाती है)

ऊधो, कर्मन की गति न्यारी।

(गाते-गाते प्रस्थान)

सातवाँ दृश्य

(स्थान — दीवानखाना। समय — तीन बजे रात। घटा छायी हुई है। सबलसिंह तलवार हाथ में लिये द्वार पर खड़े हैं)

सबल — (मन में) अब सो गया होगा। मगर नहीं, आज उसकी आँखों में नींद कहाँ! पड़ा-पड़ा प्रेमाग्नि में जल रहा होगा, करवटें बदल रहा होगा। उस पर यह हाथ न उठ सकेंगे। मुझमें इतनी निर्दयता नहीं है। मैं जानता हूँ वह मुझ पर प्रतिघात न करेगा। मेरी तलवार को सहर्ष अपनी गर्दन पर ले लेगी। हाँ! यही तो

उसका प्रतिघात होगा। ईश्वर करे, वह मेरी ललकार पर सामने खड़ा हो जाए। तब यह तलवार वज्र की भाँति उसकी गर्दन पर गिरेगी। अरक्षित, निश्शस्त्र पुरूष पर मुझसे आघात न होगा। जब वह करुण दीन नेत्रों से मेरी ओर ताकेगा— तो मेरी हिम्मत छूट जाएगी। (धीरे-धीरे कंचनसिंह के कमरे की ओर बढ़ता है)

हा! मानव-जीवन कितना रहस्यमय है। हम दोनों ने एक ही माँ के उदर से जन्म लिया, एक ही स्तन का दूध पिया, सदा एक साथ खेले, पर आज मैं उसकी हत्या करने को तैयार हूँ। कैसी विडम्बना है! ईश्वर करे उसे नींद आ गई हो, सोते को मारना धर्म-विरुद्ध हो, पर कठिन नहीं है। दीनता दया को जागृत कर देती है(चौंककर) अरे! यह कौन तलवार लिये बढ़ा चला आता है। कहीं छिपकर देखूँ, इसकी क्या नीयत है। लम्बा आदमी है, शरीर कैसा गठा हुआ है। किवाड़ के दरारों से निकलते हुए प्रकाश में आ जाये तो देखूँ कौन है? वह आ गया। यह तो हलधर मालूम होता है, बिल्कुल वही है, लेकिन हलधर के दाढ़ी नहीं थी। सम्भव है दाढ़ी निकल आयी हो, पर है हलधर, हाँ वही है, इसमें कोई संदेह नहीं है। राजेश्वरी की टोह किसी तरह मिल गयी। अपमान का बदला लेना चाहता है। कितना भयंकर स्वरूप हो गया है। आँखें चमक रही हैं। अवश्य हममें से किसी का खून करना चाहता है। मेरी ही जान का गाहक होगी। कमरे में झांक

रहा है। चाहूँ तो अभी पिस्तौल से इसका काम तमाम कर दूँ। पर नहीं खूब सूझी। क्यों न इससे वह काम लूँ जो मैं नहीं कर सकता। इस वक्त कौशल से काम लेना ही उचित है। (तलवार छिपाकर) कौन है, हलधर?

(हलधर तलवार खींचकर चौकन्ना हो जाता है)

सबल — हलधर, क्या चाहते हो?

हलधर — (सबल के सामने आकर) संभल जाइएगा, मैं चोट करता हूँ।

सबल — क्यों मेरे खून के प्यासे हो रहे हो?

हलधर — अपने दिल से पूछिए।

सबल — तुम्हारा अपराधी मैं नहीं हूँ, कोई दूसरा ही है।

हलधर — क्षत्री होकर आप प्राणों के भय से झूठ बोलते नहीं लजाते?

सबल — मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।

हलधर — सरासर झूठ है। मेरा सर्वनाश आपके हाथों हुआ है। आपने मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी। मेरे घर में आग लगा दी

और अब आप झूठ बोलकर अपने प्राण बचाना चाहते हैं। मुझे सब खबरें मिल चुकी हैं। बाबा चेतनदास ने सारा कच्चा चित्ता मुझसे कह सुनाया है। अब बिना आपका खून पिए इस तलवार की प्यास न बुझेगी।

सबल — हलधर, मैं क्षत्रिय हूँ और प्राणों को नहीं डरता। तुम मेरे साथ कमरे तक आओ। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं कोई छल-कपट न करूँगा। वहाँ मैं तुमसे सब वृत्तांत सच-सच कह दूँगा। तब तुम्हारे मन में जो आए, वह करना।

(हलधर चौकन्नी दृष्टि से ताकता हुआ सबल के साथ उसके दीवानखाने में जाता है)

सबल — तख्त पर बैठ जाओ और सुनो। यह सारी आग कंचनसिंह की लगाई हुई है। उसने कुटनी द्वारा राजेश्वरी को घर से निकलवा लिया है। उसके गोइंदों ने राजेश्वरी का उससे बखान किया होगा वह उस पर मोहित हो गया और तुम्हें जेल पहुँचाकर अपनी इच्छा पूरी की जबसे मुझे यह समाचार मिला है, मैं उसका शत्रु हो गया हूँ। तुम जानते हो, मुझे अत्याचार से कितनी घृणा है। अत्याचारी पुरूष चाहे वह मेरा पुत्र ही क्यों न

हो, मेरी दृष्टि में हिंसक जन्तु के समान है और उसका वध करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। इसीलिए मैं यह तलवार लेकर कंचनसिंह का वध करने जा रहा था। इतने में तुम दिखायी पड़े। मुझे अब मालूम हुआ कि जिसे मैं बड़ा धर्मात्मा, ईश्वरभक्त, सदाचारी, त्यागी समझता था। वह वास्तव में एक परले दर्जे का व्याभिचारी, विषयी मनुष्य है। इसीलिए उसने अब तक विवाह नहीं किया। उसने कर्मचारियों को घूस देकर तुम्हें चुपके-चुपके गिरफ्तारी करा लिया और अब राजेश्वरी के साथ विहार करता है। अभी आधी रात को वहाँ से लौटकर आया है। मैंने तुमसे सारा वृत्तांत कह सुनाया, अब तुम्हारी जो इच्छा हो करो।

(हलधर लपककर कंचनसिंह के कमरे की ओर चलता है)

सबल — ठहरो-ठहरो, यों नहीं सम्भव है तुम्हारी आहट पाकर जाग उठे। नौकर-सिपाही उसका चिल्लाना सुनकर जाग पड़ें। प्रातःकाल वह गंगा नहाने जाता है। उस वक्त अंधेरा रहता है। वहीं तुम उसे गंगा की भेंट कर सकते हो, घात लगाए रहो, अवसर आते ही एक हाथ में काम तमाम कर दो और लाश को

वहीं बहा दो। तुम्हारा मनोरथ पूरा होने का इससे सुगम उपाय नहीं है।

हलधर — (कुछ सोचकर) मुझे धोखा तो नहीं देना चाहते? इस बहाने से मुझे टाल दो और फिर सचेत हो जाओ और मुझे पकड़वा देने का इंतजाम करो।

सबल — मैंने ईश्वर की कसम खायी है, अगर अब भी तुम्हें विश्वास न आए तो जो चाहे करो।

हलधर — अच्छी बात है, जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। अगर इस समय धोखा देकर बच भी गए तो फिर क्या कभी दाव ही न आएगा? मेरे हाथों से बचकर अब नहीं जा सकते। मैं चाहूँ तो एक क्षण में तुम्हारे कुल का नाश कर दूँ, पर मैं हत्यारा नहीं हूँ। मुझे धन की लालसा नहीं है। मैं तो केवल अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूँ। आपको भी सचेत किए देता हूँ। मैं अभी और टोह लगाऊँगा। अगर पता चला कि आपने मेरा घर उजाड़ा है तो मैं आपको भी जीता न छोड़ूँगा। मेरा तो जो होना था। हो चुका, पर मैं अपने उजाड़ने वालों को कुकर्म का सुख न भोगने दूँगा।

(चला जाता है)

सबल — (मन में) मैं कितना नीच हो गया हूँ। झूठ, दगा फरेब किसी पाप से भी मुझे हिचक नहीं होती। पर जो कुछ भी हो, हलधर बड़े मौके से आ गया अब बिना लाठी टूटे ही सांप मरा जाता है।

(प्रस्थान)

आठवाँ दृश्य

(स्थान — नदी का किनारा। समय — चार बजे भोर, कंचन पूजा की सामग्री लिए आता है और एक तख्त पर बैठ जाता है, फिटन घाट के उसपर ही रुक जाती है)

कंचन — (मन में) यह जीवन का अन्त है! यह बड़े-बड़े इरादों और मनसूबों का परिणाम है। इसीलिए जन्म लिया था। यही मोक्षपद है। यह निर्वाण है। माया-बंधनों से मुक्त रहकर आत्मा को उच्चतम पद पर ले जाना चाहता था। यह वही महान पद

है। यही मेरी सुकीर्तिरूपी धर्मशाला है, यही मेरा आदर्श कृष्ण मंदिर है! इतने दिनों के नियम और संयम, सत्संग और भक्ति, दान और व्रत ने अन्त में मुझे वहाँ पहुंचाया जहाँ कदाचित् भ्रष्टाचार और कुविचार, पाप और कुकर्म ने भी न पहुंचाया होता। मैंने जीवन यात्रा का कठिनतम मार्ग लिया, पर हिंसक जीव-जंतुओं से बचने का, अथाह नदियों को पार करने का, दुर्गम घाटियों से उतरने का कोई साधन अपने साथ न लिया। मैं स्त्रियों से रहता था।, इन्हें जीवन का कांटा समझता था।, इनके बनाव-श्रृंगार को देखकर मुझे घृणा होती थी। पर आज वह स्त्री जो मेरे भाई की प्रेमिका है, जो मेरी माता के तुल्य है, प्रेम में इतनी शक्ति है, मैं यह न जानता था।! हाय, यह आग अब बुझती नहीं दिखायी देती। यह ज्वाला मुझे भस्म करके ही शांत होगी। यही उत्तम है। अब इस जीवन का अन्त होना ही अच्छा है। इस आत्मपतन के बाद अब जीना धिक्कार है। जीने से यह ताप और ज्वाला दिन-दिन प्रचंड होगी। घुल-घुलकर, कुढ़-कुढ़कर मरने से, घर में बैर का बीज बोने से, जो अपने पूज्य हैं उनसे वैमनस्य करने से यह कहीं अच्छा है कि इन विपत्तियों के मूल ही का नाश कर दूँ। मैंने सब तरह परीक्षा करके देख लिया। राजेश्वरी को किसी तरह नहीं भूल सकता, किसी तरह ध्यान से नहीं उतार सकता।

(चेतनदास का प्रवेश)

कंचन — स्वामी जी को दंडवत् करता हूँ।

चेतनदास — बाबा, सदा सुखी रहो, इधर कई दिनों से तुमको नहीं देखा। मुख मलिन है, अस्वस्थ तो नहीं थे?

कंचन — नहीं महाराज, आपके आशीर्वाद से कुशल से हूँ। पर कुछ ऐसे झंझटों में पड़ा रहा कि आपके दर्शन न कर सका। बड़ा सौभाग्य था कि आज प्रातःकाल आपके दर्शन हो गए। आप तीर्थयात्रा पर कब जाने का विचार कर रहे हैं?

चेतनदास — बाबा, अब तक तो चला गया होता, पर भगतों से पिंड नहीं छूटता। विशेषतः मुझे तुम्हारे कल्याण के लिए तुमसे कुछ कहना था। और बिना कहे मैं न जा सकता था। यहाँ इसी उद्देश्य से आया हूँ। तुम्हारे उसपर एक घोर संकट आने वाला है। तुम्हारा भाई सबलसिंह तुम्हें वध कराने की चेष्टा कर रहा है। घातक शीघ्र ही तुम्हारे उसपर आघात करेगी। सचेत हो जाओ।

कंचन — महाराज, मुझे अपने भाई से ऐसी आशंका नहीं है।

चेतनदास — यह तुम्हारा भ्रम है। प्रेम ईर्ष्या में मनुष्य अस्थिरचित्त, उन्मत्त हो जाता है।

कंचन — यदि ऐसा ही हो तो मैं क्या कर सकता हूँ? मेरी आत्मा तो स्वयं अपने पाप के बोझ से दबी हुई है।

चेतनदास — यह क्षत्रियों की बातें नहीं हैं। भूमि, धन और नारी के लिए संग्राम करना क्षत्रियों का धर्म है। उन वस्तुओं पर उसी का वास्तविक अधिकार है जो अपने बाहुबल से उन्हें छीन सके इस संग्राम में दया और धर्म, विवेक और विचार, मान और प्रतिष्ठा, सभी कायरता के पर्याय हैं। यही उपदेश कृष्ण भगवान ने अर्जुन को दिया था।, और वही उपदेश मैं तुम्हें दे रहा हूँ। तुम मेरे भक्त हो इसलिए यह चेतावनी देना मेरा कर्तव्य था। योद्धाओं की भाँति क्षेत्र में निकलो और अपने शत्रु के मस्तक को पैरों से कुचल डालो, उसका गेंद बनाकर खेलो अथवा अपनी तलवार की नोक पर उछालो। यही वीरों का धर्म है। जो प्राणी क्षत्रिय वंश में जन्म लेकर संग्राम से मुँह मोड़ता है, वह केवल कापुरुष ही नहीं, पापी है, विधर्मी है, दुरात्मा है। कर्मक्षेत्र में कोई किसी का पुत्र नहीं, भाई नहीं, मित्र नहीं, सब एक दूसरे के शत्रु हैं। यह समस्त संसार कुछ नहीं, केवल एक वृहत्, विराट् शत्रुता है। दर्शनकारों और धर्माचार्यों ने संसार को प्रेममय कहा है। उनके कथनानुसार ईश्वर स्वयं प्रेम है। यह भ्रांति का सर्वश्रेष्ठ

उदाहरण है जिसने संसार को वेष्ठित कर रखा है। भूल जाओ कि तुम किसी के भाई हो, जो तुम्हारे उसपर आघात करे उसका प्रतिघात करो, जो तुम्हारी ओर वक्र नेत्रों से ताके उसकी आँखें निकाल लो। राजेश्वरी तुम्हारी है, प्रेम के नाते उस पर तुम्हारा ही अधिकार है। अगर तुम अपने कर्तव्य-पथ से हटकर उसे उस पुरूष के हाथों में छोड़ दोगे जिससे उसे पहले चाहे प्रेम रहा हो, पर अब वह उससे घृणा करती है, तो तुम न्याय, नीति और धर्म के घातक सिद्ध होगे और जन्म-जन्मान्तरों तक इसका दंड भोगते रहोगे

(चेतनदास का प्रस्थान)

कंचन — (मन में) मन, अब क्या कहते हो? क्षत्रिय धर्म का पालन करके भाई से लड़ोगे, उसके प्राणों पर आघात करोगे या क्षत्रिय धर्म को भंग करके आत्महत्या करोगे? जी तो मरने को नहीं चाहता। अभी तक भक्ति और धर्म के जंजाल में पड़ा रहा, जीवन का कुछ सुख नहीं देखा। अब जब उसकी आशा हुई तो यह कठिन समस्या सामने आ खड़ी हुई हो क्षत्रियधर्म के विरुद्ध, पर भाई से मैं किसी भाँति विग्रह नहीं कर सकता। उन्होंने सदैव

मुझसे पुत्रवत् प्रेम किया है। याद नहीं आता कि कोई अमृदु शब्द उनके मुँह से सुना हो। वह योग्य हैं, विद्वान् हैं, कुशल हैं। मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। अवसर न मिलने की बात नहीं है। भैया का शत्रु मैं हो ही नहीं सकता। क्षत्रियों के ऐसे धर्म सिद्धान्त न होते तो जरा-जरा-सी बात पर खून की नदियाँ क्योंकर बहतीं और भारत क्यों हाथ से जाता? नहीं, कदापि नहीं, मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। साधुगण झूठ नहीं बोलते, पर यह महात्माजी उन पर भी मिथ्या दोषारोपण कर गए। मुझे विश्वास नहीं आता कि वह मुझ पर इतने निर्दय हो जायेंगी। उनके दया और शील का पारावार नहीं वह मेरी प्राण-हत्या का संकेत नहीं दे सकते। एक नहीं, हजार राजेश्वरियाँ हों, पर भैया मेरे शत्रु नहीं हो सकते। यह सब मिथ्या है। मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। हाय, अभी एक क्षण में यह घटना सारे नगर में फैल जाएगी। लोग समझेंगे, पांव फिसल गया होगा। राजेश्वरी क्या समझेगी? उसे मुझसे प्रेम है, अवश्य शोक करेगी, रोयेगी और अब से कहीं ज्यादा प्रेम करने लगेगी। और भैया? हाय, यही तो मुसीबत है। अब मैं उन्हें मुँह नहीं दिखा सकता। मैं उनका अपराधी हूँ। मैंने धर्म-हत्या की है। अगर वह मुझे जीता चुनवा दें तो भी मुझे आह भरने का अधिकार नहीं है। मेरे लिए अब यही एक मार्ग रह गया है। मेरे बलिदान से ही अब शांति

होगी। पर भैया पर मेरे हाथ न उठेंगी। पानी गहरा है। भगवान्, मैंने पाप किये हैं, तुम्हें मुँह दिखाने योग्य नहीं हूँ। अपनी अपार दया की छाँह में मुझे भी शरण देना। राजेश्वरी, अब तुझे कैसे देखूँगा?

(पीलपाये पर खड़ा होकर अथाह जल में कूद पड़ता है। हलधर का तलवार और पिस्तौल लिये आना)

हलधर — बड़े मौके से आया। मैंने समझा था। देर हो गयी। पाखंडी कुकर्मी कहीं का। रोज गंगा नहाने आता है, पूजा करता है, तिलक लगाता है, और कर्म इतने नीच। ऐसे मौके से मिले हो कि एक ही बार में काम तमाम कर दूँगा। और परायी स्त्रियों पर निगाह डालो! (पीलपाये की आड़ में छिपकर सुनता है) पापी भगवान् से दया की याचना कर रहा है। यह नहीं जानता है कि एक क्षण में नर्क के द्वार पर खड़ा होगा। राजेश्वरी, अब तुम्हें कैसे देखूँगा? अभी प्रेत हुए जाते हो फिर उसे जी भरकर देखना। (पिस्तौल का निशाना लगाता है) अरे! यह तो आप-ही-आप पानी में कूद पड़ा, क्या प्राण देना चाहता है? (पिस्तौल किनारे की ओर फेंककर पानी में कूद पड़ता है और कंचनसिंह को गोद में लिए

एक क्षण में बाहर आता है। मन में) अभी पानी पेट में बहुत कम गया है। इसे कैसे होश में लाऊँ? है तो यह अपना बैरी, पर जब आप ही मरने पर उतारू है तो मैं इस पर क्या हाथ उठाऊँ। मुझे तो इस पर दया आती है।

(कंचनसिंह को लेटाकर उसकी पीठ में घुटने लगाकर उसकी बाँहों को हिलाता है। चेतनदास का प्रवेश)

चेतनदास — (आश्चर्य से) यह क्या दुर्घटना हो गयी? क्या तूने इनको पानी में डूबा दिया?

हलधर — नहीं महाराज, यह तो आप नदी में कूद पड़े। मैं तो बाहर निकाल लाया हूँ?

चेतनदास — लेकिन तू इन्हें वध करने का इरादा करके आया था। मूर्ख, मैंने तुझे पहले ही जता दिया था। कि तेरा शत्रु सबलसिंह है, कंचनसिंह नहीं पर तूने मेरी बात का विश्वास न किया। उस धूर्त सबल के बहकाने में आ गया। अब फिर कहता हूँ कि तेरा शत्रु वही है, उसी ने तेरा सर्वनाश किया है, वही राजेश्वरी के साथ विलास करता है।

हलधर — मैंने इन्हें राजेश्वरी का नाम लेते अपने कानों से सुना है।

चेतनदास — हो सकता है कि राजेश्वरी जैसी सुंदरी को देखकर इसका चित्त भी चंचल हो गया हो, सबलसिंह ने संदेहवश इसके प्राण हरण की चेष्टा की हो, बस यही बात है।

हलधर — स्वामी जी क्षमा कीजिएगा, मैं सबलसिंह की बात में आ गया। अब मुझे मालूम हो गया कि वही मेरा बैरी है। ईश्वर ने चाहा तो वह भी बहुत दिन तक अपने पाप का सुख न भोगने पायेंगा।

चेतनदास — (मन में) अब कहाँ जाता है? आज पुलिस वाले भी घर की तलाशी हुई। अगर उनसे बच गया तो यह तो तलवार निकाले बैठा ही है। ईश्वर की इच्छा हुई तो अब शीघ्र ही मनोरथ पूरे होंगे। ज्ञानी मेरी होगी और मैं इस विपुल सम्पत्ति का स्वामी हो जाऊँगा। कोई व्यवसाय, कोई विद्या, मुझे इतनी जल्द इतना सम्पत्तिशाली न बना सकती थी। (प्रस्थान)

कंचन — (होश में आकर) नहीं, तुम्हारा शत्रु मैं हूँ। जो कुछ किया है, मैंने किया है। भैया निर्दोष हैं, तुम्हारा अपराधी मैं हूँ। मेरे जीवन का अन्त हो, यही मेरे पापों का दंड है। मैं तो स्वयं

अपने को इस पाप-जाल से मुक्त करना चाहता था। तुमने क्यों मुझे बचा लिया? (आश्चर्य से) अरे, यह तो तुम हो, हलधर?

हलधर — (मन में) कैसा बेछल-कपट का आदमी है। (प्रकट) आप आराम से लेटे रहें, अभी उठिए न।

कंचन — नहीं, अब नहीं लेटा जाता। (मन में) समझ में आ गया, राजेश्वरी इसी की स्त्री है। इसीलिए भैया ने वह सारी माया रची थी। (प्रकट) मुझे उठाकर बैठा दो। वचन दो कि भैया का कोई अहित न करोगे।

हलधर — ठाकुर, मैं यह वचन नहीं दे सकता।

कंचन — किसी निर्दोष की जान लोगे? तुम्हारा घातक मैं हूँ। मैंने तुम्हें चुपके से जेल भिजवाया और राजेश्वरी को कुटनियों द्वारा यहाँ बुलाया।

(तीन डाकू लाठियाँ लिये आते हैं)

एक — क्यों गुरू, पड़ा हाथ भरपूर?

दूसरा — यह तो खासा टैयाँ सा बैठा हुआ है। लाओ मैं एक हाथ दिखाऊँ।

हलधर — खबरदार, हाथ न उठाना।

दूसरा — क्या कुछ हत्थे चढ़ गया क्या?

हलधर — हाँ, असर्फियों की थैली है। मुँह धो रखना।

तीसरा — यह बहुत कड़ा ब्याज लेता है। सब रुपये इसकी तोंद में से निकाल लो।

हलधर — जबान संभालकर बात करो।

पहला — अच्छा, इसे ले चलो, दो-चार दिन बर्तन मँजवायेंगे। आराम करते-करते मोटा हो गया है।

दूसरा — तुमने इसे क्यों छोड़ दिया?

हलधर — इसने वचन दिया कि अब सूद न लूँगा।

पहला — क्यों बच्चा, गुरू को सीधा समझकर झांसा दे दिया।

हलधर — बक-बक मत करो। इन्हें नाव पर बैठाकर डेरे पर लेते चलो। यह बेचारे सूद-ब्याज जो कुछ लेते हैं अपने भाई के हुकुम से लेते हैं। आज उसी की खबर लेने का विचार है।

(सब कंचन को सहारा देकर नाव पर बैठा देते हैं और गाते हुए नाव चलाते हैं)

नारायण का नाम सदा मन के अंदर लाना चहिए!
मानुष तन है दुर्लभ जग में इसका फल पाना चहिए!
दुर्जन संग नरक का मारग उससे दूर जाना चहिए!
सत संगत में सदा बैठ के हरि के गुण गाना चहिए!
धरम कमाई करके अपने हाथों की खाना चहिए!
परनारी को अपनी माता के समान जाना चहिए!
झूठ-कपट की बात सदा कहने में शरमाना चहिए!
कथा। पुरान संत संगत में मन को बहलाना चहिए!
नारायण का नाम सदा मन के अंदर लाना चहिए!

नौवाँ दृश्य

(स्थान — गुलाबी का मकान। समय — संध्या, चिराग जल चुके हैं, गुलाबी संदूक से रुपये निकाल रही है)

गुलाबी — भाग जाग जाएँगे। स्वामीजी के प्रताप से यह सब रुपये दूने हो जाएँगे। पूरे तीन सौ रुपये हैं। लौटूँगी तो हाथ में छः सौ रुपये की थैली होगी। इतने रुपये तो बरसों में भी न

बटोर पाती। साधु-महात्माओं में बड़ी शक्ति होती है। स्वामीजी ने यह मंत्र दिया है। भृगु के गले में बाँध दूँ। फिर देखूँ, यह चुड़ैल उसे कैसे अपने बस में किये रहती है। उन्होंने तो कहा है कि वह उसकी बात भी न पूछेगी। यही तो मैं चाहती हूँ। उसका मानमर्दन हो जाये, घमंड टूट जाये। (भृगु को बुलाती है) क्यों बेटा, आजकल तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है? दुबले होते जाते हो?

भृगु — क्या करूँ? सारे दिन बही खोले बैठे-बैठे थक जाता हूँ। ठाकुर कंचनसिंह एक बीड़ा पान को भी नहीं पूछते। न कहीं घूमने जाता हूँ, न कोई उत्तम वस्तु भोजन को मिलती है। जो लोग लिखने-पढ़ने का काम करते हैं उन्हें दूध, मक्खन, मेवा-मिसरी इच्छानुकूल मिलनी चाहिए। रोटी, दाल, चावल तो मजदूरों का भोजन है। साँझ-सबेरे वायु-सेवन करना चाहिए। कभी-कभी थियेटर देखकर मन बहलाना चाहिए। पर यहाँ इनमें से कोई भी सुख नहीं यही होगा कि सूखते-सूखते एक दिन जान से चला जाऊँगी।

गुलाबी — ऐ नौज बेटा, कैसी बात मुँह से निकालते हो? मेरे जान में तो कुछ फेर-फार है। इस चुड़ैल ने तुम्हें कुछ कर-करा दिया है। यह पक्की टोनिहारी है। पूरब की न है। वहाँ की सब लड़कियाँ टोनिहारी होती हैं।

भृगु — कौन जाने यही बात हो, कंचनसिंह के कमरे में अकेले बैठता हूँ तो ऐसा डर लगता है जैसे कोई बैठा हो, रात को आने लगता हूँ तो फाटक पर मौलसरी के पेड़ के नीचे किसी को खड़ा देखता हूँ। कलेजा थर-थर काँपने लगता है। किसी तरह चित्त को ढाढ़स देता हुआ चला आता हूँ। लोग कहते हैं, पहले वहाँ किसी की कबर थी।

गुलाबी — मैं स्वामीजी के पास से यह जंतर लायी हूँ। इसे गले में बांध लो, शंका मिट जाएगी। और कल से अपने लिए पाव-भर दूध भी लाया करो। मैंने खूबा अहीर से कहा है। उसके लड़के को पढ़ा दिया करो, वह तुम्हें दूध दे देगा।

भृगु — जंतर लाओ मैं बांध लूँ, पर खूबा के लड़के को मैं न पढ़ा सकूंगा। लिखने-पढ़ने का काम करते-करते सारे दिन यों ही थक जाता हूँ। मैं जब तक कंचनसिंह के यहाँ रहूँगा, मेरी तबीयत अच्छी न होगी। मुझे कोई दुकान खुलवा दो।

गुलाबी — बेटा, दुकान के लिए तो पूंजी चाहिए। इस घड़ी तो यह तावीज बांध लो। फिर मैं और कोई जतन करूँगी। देखो, देवीजी ने खाना बना लिया? आज मालकिन ने रात को वहीं रहने को कहा है।

भृगु जाता है और चम्पा से पूछकर आता है गुलाबी चौके में जाती है।

गुलाबी — पीढ़ा तक नहीं रखा, लोटे का पानी तक नहीं रखा। अब मैं पानी लेकर आऊँ और अपने हाथ से आसन डालूँ तब खाना खाऊँ। क्यों इतने घमंड के मारे मरी जाती हो, महारानी? थोड़ा इतराओ, इतना आकाश पर दिया न जलाओ।

(चम्पा थाली लाकर गुलाबी के सामने रख देती है। वह एक कौर उठाती है और क्रोध से थाली चम्पा के सिर पर पटक देती है)

भृगु — क्या है, अम्माँ?

गुलाबी — है क्या, यह डायन मुझे विष देने पर तुली हुई है। यह खाना है कि जहर है? मार नमक भर दिया। भगवान् न जाने कब इसकी मिट्टी इस घर से उठाएँगी। मर गए इसके बाप-चचा। अब कोई झाँकता तक नहीं जब तक ब्याह न हुआ था।, द्वार की मिट्टी खोदे डालते थे। इतने दिन इस अभागिनी को रसोई बनाते हो गए, कभी ऐसा न हुआ कि मैंने पेट भर भोजन किया हो, यह मेरे पीछे पड़ी हुई है?

भृगु — अम्माँ, देखो सिर लोहूलुहान हो गया। जरा नमक ज्यादा ही हो गया तो क्या उसकी जान ले लोगी। जलती हुई दाल डाल दी। सारे बदन में छाले पड़ गए। ऐसा भी कोई क्रोध करता है।

गुलाबी — (मुँह चिढ़ाकर) हाँ-हाँ, देख, मरहम-पट्टी कर। दौड़ डाक्टर को बुला ला, नहीं कहीं मर न जाए। अभी लौंडा है, त्रिया-चरित्र देखा कर। मैंने उधर पीठ फेरी, इधर ठहाके की हंसी उड़ने लगेगी। तेरे सिर चढ़ाने से तो इसका मिजाज इतना बढ़ गया है। यह तो नहीं पूछता कि दाल में क्यों इतना नमक झोंक दिया, उल्टे और घाव पर मरहम रखने चला है। (झमककर चली जाती है)

चम्पा — मुझे मेरे घर पहुँचा दो।

भृगु — सारा सिर लोहूलुहान हो गया। इसके पास रुपये हैं, उसी का इसे घमंड है। किसी तरह रुपये निकल जाते तो यह गाय हो जाती।

चम्पा — तब तक तो यह मेरा कचूमर ही निकाल लेंगी।

भृगु — सबर का फल मीठा होता है।

चम्पा — इस घर में अब मेरा निबाह न होगी। इस बुढ़िया को देखकर आँखों में खून उतर आता है।

भृगु — अबकी एक गहरी रकम हाथ लगने वाली है। एक ठाकुर ने कानों की बाली हमारे यहाँ गिरों रखी थी। वादे के दिन टल गये। ठाकुर का कहीं पता नहीं। पूरब गया था। न जाने मर गया या क्या! मैंने सोचा है तुम्हारे पास जो गिन्नी रखी है उसमें चार-पाँच रुपये और मिलाकर बाली छुड़ा लूँ। ठाकुर लौटेगा तो देखा जाएगी। पचास रुपये से कम का माल नहीं है।

चम्पा — सच!

भृगु — हाँ अभी तौले आता हूँ। पूरे दो तोले है।

चम्पा — तो कब ला दोगे?

भृगु — कल लो। वह तो अपने हाथ का खेल है। आज दाल में नमक क्यों ज्यादा हुआ?

चम्पा — सुबह कहने लगीं, खाने में नमक ही नहीं है। मैंने इस बेला नमक पीसकर उनकी थाली में उसपर से डाल दिया कि खाओ खूब जी भर के। वह एक-न-एक खुचड़ निकालती हैं तो मैं तो उन्हें जलाया करती हूँ।

भृगु — अच्छा, अब मुझे भी भूख लगी है, चलो।

चम्पा — (आप-ही-आप) सिर में जरा-सी चोट लगी तो क्या, कानों की बालियाँ तो मिल गयीं? इन दामों तो चाहे कोई मेरे सिर पर दिन-भर थालियाँ पटका करे।

(प्रस्थान)

चौथा अंक

पहला दृश्य

(स्थान — मधुबन। थानेदार, इंस्पेक्टर और कई सिपाहियों का प्रवेश)

इंस्पेक्टर — एक हजार की रकम एक चीज होती है।

थानेदार — बेशक!

इंस्पेक्टर — और करना कुछ नहीं दो-चार शहादतें बनाकर खाना तलाशी कर लेनी है।

थानेदार — गाँव वाले तो सबलसिंह ही के खिलाफ होंगे।

इंस्पेक्टर — आजकल बड़े-से-बड़े आदमी को जब चाहें फांस लें। कोई कितना ही मुअजिज हो, अफसरों के यहाँ उसकी कितनी ही रसाई हो, इतना कह दीजिए कि हुज़ूर, यह तो सुराज का हामी है, बस सारे हुक्काम उसके जानी दुश्मन हो जाते हैं। फिर वह गरी। अपनी कितनी ही सगाई दिया करे, अपनी वफादारी के कितने ही सबूत पेश करता फिरे, कोई उसकी नहीं सुनता। सबलसिंह की इज्जत हुक्काम की नजरों में कम नहीं थी। उनके साथ दावतें खाते थे, घुड़दौड़ में शरीक होते थे, हर एक जलसे में शरीक किए जाते थे, पर मेरे एक फिकरे ने हजरत का सारा रंग फीका कर दिया। साहब ने फौरन हुक्म दिया कि जाकर उसकी तलाशी लो और कोई सबूत दस्तयाब हो तो गिरफ्तारी का वारंट ले जाओ!

थानेदार — आपने क्या फिकरा जमाया था।?

इंस्पेक्टर — अजी कुछ नहीं, महज इतना कहा था। कि आजकल यहाँ सुराज की बड़ी धूम है। ठाकुर सबलसिंह पंचायतें कायम कर रहे हैं। इतना सुनना था। कि साहब का चेहरा सुर्ख हो गया। बोले— दगाबाज आदमी है। मिलकर वार करना

चाहता है, फौरन उसके खिलाफ सबूत पैदा करो। इसके कब्ल मैंने कहा था।, हुज़ूर, यह बड़ा जिनाकार आदमी है, अपने एक असामी की औरत को निकाल लाया है। इस पर सिर्फ मुस्कराए, तीवरों पर जरा भी मैल नहीं आयी। तब मैंने यह चाल चली। यह लो, गाँव के मुखिया आ गए, जरा रोब जमा दूँ।

(मंगरू, हरदास, फत्तू आदि का प्रवेश। सलोनी भी पीछे-पीछे आती है और अलग खड़ी हो जाती है)

इंस्पेक्टर — आइए शेख जी, कहिए खैरियत तो है?

फत्तू — (मन में) सबलसिंह के नेक और दयावान होने में कोई संदेह नहीं कभी हमारे उसपर सख्ती नहीं की। हमेशा रिआयत ही करते रहे, पर आंख का लगना बुरा होता है। पुलिस वाले न जाने उन्हें किस-किस तरह सताएँगे। कहीं जेहल न भिजवा दें। राजेश्वरी को वह जबरदस्ती थोड़े ही ले गए। वह तो अपने मन से गई। मैंने चेतनदास बाबा को नाहक इस बुरे काम में मदद दी। किसी तरह सबलसिंह को बचाना चाहिए। (प्रकट) सब अल्लाह का करम है।

इंस्पेक्टर — तुम्हारे जमींदार साहब तो खूब रंग लाये। कहाँ तो वह पारसाई और कहाँ यह हरकत।

फत्तू — हुज़ूर, हमको तो कुछ मालूम नहीं।

इंस्पेक्टर — तुम्हारे बचाने से अब वह नहीं बच सकते। अब तो आ गए शेर के पंजे में। अपना बयान दीजिए। यहाँ गाँव में पंचायत किसने कायम की?

फत्तू — हुज़ूर, गाँव के लोगों ने मिलकर कायम की, जिसमें छोटी-छोटी बातों के पीछे अदालत की ठोकरें न खानी पड़ें।

इंस्पेक्टर — सबलसिंह ने यह कहा कि अदालतों में जाना गुनाह है?

फत्तू — हुज़ूर, उन्होंने ऐसी बात तो नहीं कही, हाँ पंचायत के फायदे बताये थे।

इंस्पेक्टर — उन्होंने तुम लोगों को बेगार बन्द करने की ताकीद नहीं की? सच बोलना, ख़ुदा तुम्हारे सामने है।

फत्तू — (बगलें झाँकते हुए) हुज़ूर, उन्होंने यह तो नहीं कहा। हाँ, यह जरूर कहा कि जो चीज दो उसका मुनासिब दाम लो।

इंस्पेक्टर — वह एक ही बात हुई अच्छा, उस गाँव में शराब की दुकान थी वह किसने बन्द करायी?

फत्तू — हुज़ूर, ठीकेदार ने आप ही बन्द कर दी, उसकी बिक्री न होती थी।

इंस्पेक्टर — सबलसिंह ने सबसे यह नहीं कहा कि जो उस दुकान पर जाये उसे पंचायत में सजा मिलनी चाहिए।

फत्तू — (मन में) इसको जरा-जरा-सी बातों की खबर है। (प्रकट) हुज़ूर, मुझे याद नहीं।

इंस्पेक्टर — शेखजी, तुम कन्नी काट रहे हो, इसका नतीजा अच्छा नहीं है। दारोगा जी ने तुम्हारा जो बयान लिखा है उस पर चुपके से दस्तखत कर दो, वरना जमींदार तो न बचेंगे, तुम अलबत्ता गेहूँ के साथ घुन की तरह पिस जाओगे।

फत्तू — हुज़ूर का अखतियार है, जो चाहें करें, पर मैं तो वही कहूँगा जो जानता हूँ।

इंस्पेक्टर — तुम्हारा क्या नाम है?

मंगरू — (सामने आकर) मंगरू।

इंस्पेक्टर — जो पूछा जाये उसका साफ-साफ जवाब देना। इधर-उधर किया तो तुम जानोगे। पुलिस का मारा पानी नहीं माँगता। यहाँ गाँव में पंचायत किसने कायम की?

मंगरू — (मन में) मैं तो जो यह चाहेंगे वही कहूँगा। पीछे देखी जाएगी। गालियाँ देने लगें या पिटवाने ही लगें तो इनका क्या बना लूँगा? सबलसिंह तो मुझे बचा न देंगे। (प्रकट) ठाकुर सबलसिंह ने।

इंस्पेक्टर — उन्होंने तुम लोगों से कहा था न कि सरकारी अदालत में जाना पाप है। जो सरकारी अदालत में जाये उसका हुक्का-पानी बन्द कर दो।

मंगरू — (मन में) यह तो नहीं कहा था। खाली अदालतों के खर्च से बचने के लिए पंचायत खोलने की ताकीद की थी। पर ऐसा कह दूँ तो अभी यह जामे से बाहर हो जाए। (प्रकट) हाँ हुज़ूर, कहा था, बात सच्ची कहूँगा। जमींदार आकबत में थोड़े ही साथ देंगे।

इंस्पेक्टर — सबलसिंह ने यह नहीं कहा था कि किसी हाकिम को बेगार मत दो?

मंगरू — (मन में) उन्होंने तो इतना ही कहा था कि मुनासिब दाम लेकर दो। (प्रकट) हाँ हुज़ूर, कहा था, कहा था। सच्ची बात कहने में क्या डर?

इंस्पेक्टर — शराब और गांजे की दुकान तोड़वाने की तहरीर उनकी तरफ से हुई थी न?

मंगरू — बराबर हुई थी। जो शराब गांजा पिए उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया जाता था।

इंस्पेक्टर — अच्छा, अपने बयान पर अंगूठे का निशान दो। तुम्हारा क्या नाम है जी? इधर आओ।

हरदास — (सामने आकर) हरदास।

इंस्पेक्टर — सच्चा बयान देना जैसा मंगरू ने दिया है, वरना तुम जानोगे।

हरदास — (मन में) सबलसिंह तो अब बचते नहीं, मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं? यह जो कुछ कहलाना चाहते हैं मैं उससे चार बात ज्यादा ही कहूँगा। यह हाकिम हैं, खुश होकर मुखिया बना दें तो साल में सौ-दो सौ रुपये अनायास ही हाथ लगते रहें। (प्रकट) हुज़ूर, जो कुछ जानता हूँ वह रत्ती-रत्ती कह दूँगा।

इंस्पेक्टर — तुम समझदार आदमी मालूम होते हो, अपना नफा-नुकसान समझते हो, यहाँ पंचायत के बारे में क्या जानते हो?

हरदास — हुज़ूर, ठाकुर सबलसिंह ने खुलवायी थी। रोज यही कहा करें कि कोई आदमी सरकारी अदालत में न जाये। सरकार के इसटाम क्यों खरीदो। अपने झगड़े आप चुका लो। फिर न तुम्हें पुलिस का डर रहेगा न सरकार का। एक तरह से तुम

अदालतों को छोड़ देने से ही सुराज पा जाओगे। यह भी हुक्म दिया था। कि जो आदमी अदालत जाये उसका हुक्का-पानी बन्द कर देना चाहिए।

इंस्पेक्टर — बयान ऐसा होना चाहिए। अच्छा, सबलसिंह ने बेगार के बारे में तुमसे क्या कहा था।?

हरदास — हुज़ूर, वह तो खुल्लमखुल्ला कहते थे कि किसी को बेगार मत दो, चाहे बादशाह ही क्यों न हो, अगर कोई जबरदस्ती करे तो अपना और उसका खून एक कर दो।

इंस्पेक्टर — ठीक है। शराब गांजे की दुकान कैसे बन्द हुई?

हरदास — हुज़ूर, बन्द न होती तो क्या करती, कोई वहाँ खड़ा नहीं होने पाता था। ठाकुर साहब ने हुक्म दे दिया था। कि जिसे वहाँ खड़े, बैठे, या खरीदते पाओ उसके मुँह में कालिख लगाकर सिर पर सौ जूते लगाओ।

इंस्पेक्टर — बहुत अच्छा। अंगूठे का निशान कर दो। हम तुमसे बहुत खुश हुए।

(सलोनी गाती है—)

सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का

इंस्पेक्टर — यह पगली क्या गा रही है? अरी पगली इधर आ।

सलोनी — (सामने आकर) सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का?

इंस्पेक्टर — दारोगा जी, इसका बयान भी लिख लीजिए।

सलोनी — हाँ, लिख लो। ठाकुर सबलसिंह मेरी बहू को घर से भगा ले गए और पोते को जेहल भिजवा दिया।

इंस्पेक्टर — यह फजूल बातें मैं नहीं पूछता। बता यहाँ उन्होंने पंचायत खोली है न?

सलोनी — यह फजूल बातें मैं क्या जानूँ? मुझे पंचायत से क्या लेना-देना है। जहाँ चार आदमी रहते हैं वहाँ पंचायत रहती ही है। सनातन से चली आती है, कोई नयी बात है? इन बातों से पुलिस से क्या मतलब? तुम्हें तो देखना चाहिए, सरकार के राज में भले आदमियों की आबरू रहती है कि लुटती है। सो तो नहीं, पंचायत और बेगार का रोना ले बैठे। बेगार बन्द करने को सभी कहते हैं। गाँव के लोगों को आप ही अखरता है। सबलसिंह ने कह दिया तो क्या अंधेर हो गया। शराब, ताड़ी, गांजा, भांग पीने को सभी मना करते हैं। पुरान, भागवत, साधु-संत सभी इसको निखिद्ध कहते हैं। सबलसिंह ने कहा तो क्या नयी बात कही? जो तुम्हारा काम है वह करो, ऊटपटांग बातों में क्यों पड़ते हो?

इंस्पेक्टर — बुढ़िया शैतान की खाला मालूम होती है।

थानेदार — तो इन गवाहों को अब जाने दूँ?

इंस्पेक्टर — जी नहीं, अभी रिहर्सल तो बाकी है। देखो जी, तुमने मेरे रू-ब-रू जो बयान दिया है वही तुम्हें बड़े साहब के इजलास पर देना होगी। ऐसा न हो, कोई कुछ कहे, कोई कुछ, मुकदमा भी बिगड़ जाये और तुम लोग भी गलतबयानी के इल्जाम में धर लिये जाओ। दारोगाजी शुरू कीजिए। तुम लोग सब साथ-साथ वही बातें कहो जो दारोगाजी की जबान से निकलें।

दारोगा — ठाकुर सबलसिंह कहते थे कि सरकारी अदालतों की जड़ खोद डालो, भूलकर भी वहाँ न जाओ। सरकार का राज अदालतों पर कायम है। अदालत को तर्क कर देने से राज की बुनियाद हिल जाएगी।

(सब-के-सब यही बात दुहराते हैं)

दारोगा — अपने मुआमले पंचायतों में तै कर लो।

सब-के-सब — अपने मुआमले पंचायतों में तै कर लो।

दारोगा — उन्होंने हुक्म दिया था। कि किसी अफसर को बेगार मत दो।

सब-के-सब — उन्होंने हुक्म दिया था। कि किसी अफसर को बेगार मत दो।

दारोगा — बेगार न मिलेगी तो कोई दौरा करने न आएगी। तुम लोग जो चाहना, करना। यह सुराज की दूसरी सीढ़ी है।

सब-के-सब — बेगार न मिलेगी तो कोई दौरा करने न आएगी। यह सुराज की दूसरी सीढ़ी है।

दारोगा — यह और कहो, तुम लोग जो जी चाहे करना।

इंस्पेक्टर — यही जुमला तो जान है।

सब-के-सब — तुम लोग जो जी चाहे करना।

दारोगा — उन्होंने हुक्म दिया था। कि जो नशे की चीजें खरीदे उसका हुक्का-पानी बन्द कर दो।

सब-के-सब — उन्होंने हुक्म दिया था। कि जो नशे की चीजें खरीदे उसका हुक्का-पानी बन्द कर दो।

दारोगा — अगर इतने पर भी न माने तो उसके घर में आग लगा दो।

सब-के-सब — अगर इतने पर भी न माने तो उसके घर में आग लगा दो।

दारोगा — उसके मुँह में कालिख लगाकर सौ जूते लगाओ

सब-के-सब — उसके मुँह में कालिख लगाकर सौ जूते लगाओ

दारोगा — जो आदमी विलायती कपड़े खरीदे उसे गधे पर सवार कराके गाँव-भर में घुमाओ।

सब-के-सब — जो आदमी विलायती कपड़े खरीदे उसे गधे पर सवार कराके गाँव-भर में घुमाओ।

दारोगा — जो पंचायत का हुक्म न माने उसे उल्टे लटकाकर पचास बेंत लगाओ

सब-के-सब — जो पंचायत का हुक्म न माने उसे उल्टे लटकाकर पचास बेंत लगाओ।

दारोगा — (इंस्पेक्टर से) इतना तो काफी होगा।

इंस्पेक्टर — इतना उन्हें जहन्नुम भेजने के लिए काफी है। तुम लोग देखो, खबरदार, इसमें एक हर्फ का भी उलटफेर न हो, अच्छा अब चलना चाहिए। (कानिसटिब्लों से) देखो, बकरे हों तो दो पकड़ लो।

सिपाही — बहुत अच्छा हुज़ूर, दो नहीं चार।

दारोगा — एक पाँच सेर घी भी लेते चलो।

सिपाही — अभी लीजिए, सरकार!

(दारोगा और इंस्पेक्टर का प्रस्थान। सलोनी गाती है)

सैयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का।
अब तो मैं पहनूँ अतलस का लहंगा
और चबाऊँ पान।
द्वारे बैठ नजारा मारूँ।
सैयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का।

फत्तू — काकी, गाती ही रहेगी?

सलोनी — जा तुझसे नहीं बोलती। तू भी डर गया।

फत्तू — काकी, इन सभी से कौन लड़ता? इजलास पर जाकर जो सच्ची बात है, वह कह दूँगा।

मंगरू — पुलिस के सामने जमींदार कोई चीज नहीं।

हरदास — पुलिस के सामने सरकार कोई चीज नहीं।

सलोनी — सच्चाई के सामने जमींदार-सरकार कोई चीज नहीं।

मंगरू — सच बोलने में निबाह नहीं है।

हरदास — सच्चे की गर्दन सभी जगह मारी जाती है।

सलोनी — अपना धर्म तो नहीं बिगड़ता। तुम कायर हो, तुम्हारा मुँह देखना पाप है। मेरे सामने से हट जाओ।

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(स्थान — सबलसिंह का कमरा। समय — दस बजे दिन)

सबल — (घड़ी की तरफ देखकर) दस बज गए। हलधर ने अपना काम पूरा कर लिया। वह नौ बजे तक गंगा से लौट आते थे। कभी इतनी देर न होती थी। अब राजेश्वरी फिर मेरी हुई चाहे ओढ़ूँ, बिछाऊँ या गले का हार बनाऊँ। प्रेम के हाथों यह दिन देखने की नौबत आएगी, इसकी मुझे जरा भी शंका न थी। भाई की हत्या की कल्पना मात्र से ही रोयें खड़े हो जाते हैं। इस कुल का सर्वनाश होने वाला है। कुछ ऐसे ही लक्षण दिखाई देते हैं। कितना उदार, कितना सच्चा! मुझसे कितना प्रेम, कितनी श्रद्धा

थी। पर हो ही क्या सकता था।? एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती थीं? संसार में प्रेम ही वह वस्तु है, जिसके हिस्से नहीं हो सकते। यह अनौचित्य की पराकाष्ठा थी कि मेरा छोटा भाई, जिसे मैंने सदैव अपना पुत्र समझा, मेरे साथ यह पैशाचिक व्यवहार करे। कोई देवता भी यह अमर्यादा नहीं कर सकता था। यह घोर अपमान! इसका परिणाम और क्या होता? यही आपत्ति-धर्म था। इसके लिए पछताना व्यर्थ है (एक क्षण के बाद) जी नहीं मानता, वही बातें याद आती हैं। मैंने कंचन की हत्या क्यों कराई? मुझे स्वयं अपने प्राण देने चाहिए थे। मैं तो दुनिया का सुख भोग चुका था।! स्त्री-पुत्र सबका सुख पा चुका था। उसे तो अभी दुनिया की हवा तक न लगी थी। उपासना और आराधना ही उसका एकमात्र जीवनाधार थी। मैंने बड़ा अत्याचार किया।

(अचलसिंह का प्रवेश)

अचल — बाबूजी, अब तक चाचाजी गंगास्नान करके नहीं आये?

सबल — हाँ, देर तो हुई अब तक तो आ जाते थे।

अचल — किसी को भेजिए, जाकर देख आए।

सबल — किसी से मिलने चले गए होंगे।

अचल — मुझे तो जाने क्यों डर लग रहा है। आजकल गंगाजी बढ़ रही हैं।

(सबलसिंह कुछ जवाब नहीं देते)

अचल — वह तैरने दूर निकल जाते थे।

(सबल चुप रहते हैं)

अचल — आज जब वह नहाने जाते थे तो न जाने क्यों मुझे देखकर उनकी आँखें भर गयी थीं। मुझे प्यार करके कहा था।, ईश्वर तुम्हें चिरंजीवी करे। इस तरह तो कभी आशीष नहीं देते थे।

(सबल रो पड़ते हैं और वहाँ से उठकर बाहर बरामदे में चले जाते हैं। अचल कंचनसिंह के कमरे की ओर जाता है)

सबल — (मन में) अब पछताने से क्या फायदा? जो कुछ होना था।, हो चुका। मालूम हो गया कि काम के आवेग में बुद्धि,

विद्या, विवेक सब साथ छोड़ देते हैं। यही भावी थी, यही होनहार था।, यही विधाता की इच्छा थी। राजेश्वरी, तुझे ईश्वर ने क्यों इतनी रूप-गुणशीला बनाया? पहले पहले जब मैंने तुझसे बात की थी, तूने मेरा तिरस्कार क्यों न किया, मुझे कटु शब्द क्यों न सुनाये? मुझे कुत्ते की भाँति दुत्कार क्यों न दिया? मैं अपने को बड़ा सत्यवादी समझा करता था। पर पहले ही झोंके में उखड़ गया, जड़ से उखड़ गया। मुलम्मे को मैं असली रंग समझ रहा था। पहली ही आँच में मुलम्मा उड़ गया। अपनी जान बचाने के लिए मैंने कितनी घोर धूर्तता से काम लिया। मेरी लज्जा, मेरा आत्माभिमान, सबकी क्षति हो गयी! ईश्वर करे, हलधर अपना वार न कर सका हो और मैं कंचन को जीता जागता आते देखूँ। मैं राजेश्वरी से सदैव के लिए नाता तोड़ लूँगा। उसका मुँह तक न देखूँगा। दिल पर जो कुछ बीतेगी झेल लूँगा।

(अधीर होकर बरामदे में निकल आते हैं और रास्ते की ओर टकटकी लगाकर देखते हैं। ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — अभी बाबूजी नहीं आये। ग्यारह बज गए। भोजन ठंडा हो रहा है। कुछ कह नहीं गए, कब तक आयेंगे?

सबल — (कमरे में आकर) मुझसे तो कुछ नहीं कहा।

ज्ञानी — तो आप चलकर भोजन कर लीजिए।

सबल — उन्हें भी आ जाने दो। तब तक तुम लोग भोजन करो।

ज्ञानी — हरज ही क्या है, आप चलकर खा लें। उनका भोजन अलग रखवा दूँगी। दोपहर तो हुआ।

सबल — (मन में) आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने घर पर अकेले भोजन किया हो, ऐसे भोजन करने पर धिक्कार है। भाई का वध करके मैं भोजन करने जाऊँ और स्वादिष्ट पदार्थों का आनंद उठाऊँ। ऐसे भोजन करने पर लानत है। (प्रकट) अकेले मुझसे भोजन न किया जायेगी।

ज्ञानी — तो किसी को गंगाजी भेज दो। पता लगाये कि क्या बात है। कहाँ चले गए? मुझे तो याद नहीं आता कि उन्होंने कभी इतनी देर लगायी हो, जरा जाकर उनके कमरे में देखूँ, मामूली कपड़े पहनकर गए हैं या अचकन-पजामा भी पहना है। (जाती है और एक क्षण में लौट आती है)

– कपड़े तो साधारण ही पहनकर गए हैं, पर कमरा न जाने क्यों भांय-भांय कर रहा है, वहाँ खड़े होते एक भय-सा लगता था। ऐसी

शंका होती है कि वह अपनी मसनद पर बैठे हुए हैं, पर दिखाई नहीं देते। न जाने क्यों मेरे तो रोयें खड़े हो गए और रोना आ गया। किसी को भेजकर पता लगवाइए।

(सबल दोनों हाथों से मुँह छिपाकर रोने लगता है)

ज्ञानी — हाय, यह आप क्या करते हैं! इस तरह जी छोटा न कीजिये। वह अबोध बालक थोड़े ही हैं। आते ही होंगे।

सबल — (रोते हुए) आह, ज्ञानी! अब वह घर न आयेंगी। अब हम उनका मुँह फिर न देखेंगी।

ज्ञानी — किसी ने कोई बुरी खबर कही है क्या? (सिसकियाँ लेती है)

सबल — (मन में) अब मन में बात नहीं रह सकती। किसी तरह नहीं वह आप ही बाहर निकली पड़ती है। ज्ञानी से मुझे इतना प्रेम कभी न हुआ था। मेरा मन उसकी ओर खिंचा जाता है। (प्रकट) जो कुछ किया है मैंने ही किया है। मैं ही विष की गांठ हूँ। मैंने ईर्ष्या के वश होकर यह अनर्थ किया है। ज्ञानी, मैं पापी हूँ, राक्षस हूँ, मेरे हाथ अपने भाई के खून से रंगे हुए हैं, मेरे सिर पर भाई का खून सवार है। मेरी आत्मा की जगह अब केवल

कालिमा की रेखा है! हृदय के स्थान पर केवल पैशाचिक निर्दयता। मैंने तुम्हारे साथ दगा की है। तुम और सारा संसार मुझे एक विचारशील, उदार, पुण्यात्मा पुरूष समझते थे, पर मैं महान् पानी, नराधम, धूर्त हूँ। मैंने अपने असली स्वरूप को सदैव तुमसे छिपाया। देवता के रूप में मैं राक्षस था। मैं तुम्हारा पति बनने योग्य न था। मैंने एक पति-परायणा स्त्री को कपट चालों से निकाला, उसे लाकर शहर में रखा। कंचनसिंह को भी मैंने वहाँ दो-तीन बार बैठे देखा। बस, उसी क्षण से मैं ईर्ष्या की आग में जलने लगा और अन्त में मैंने एक हत्यारे के हाथों(रोकर) भैया को कैसे पाऊँ? ज्ञानी, इन तिरस्कार के नेत्रों से न देखो। मैं ईश्वर से कहता हूँ, तुम कल मेरा मुँह न देखोगी। मैं अपनी आत्मा को कलुषित करने के लिए अब और नहीं जीना चाहता। मैं अपने पापों का प्रायश्चित एक ही दिन में समाप्त कर दूँगा। मैंने तुम्हारे साथ दगा की, क्षमा करना।

ज्ञानी — (मन में) भगवन्! पुरूष इतने ईर्ष्यालु, इतने विश्वासघाती, इतने क्रूर, वज्र-हृदय होते हैं! अगर मैंने स्वामी चेतनदास की बात पर विश्वास किया होता तो यह नौबत न आने पाती। पर मैंने तो उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। यह उसी अश्रद्धा का दण्ड है। (प्रकट) मैं आपको इससे ज्यादा विचारशील समझती थी।

किसी दूसरे के मुँह से ये बातें सुनकर मैं कभी विश्वास न करती।

सबल — ज्ञानी, मुझे सच्चे दिल से क्षमा करो। मैं स्वयं इतना दुःखी हूँ कि उस पर एक जौ का बोझ भी मेरी कमर तोड़ देगी। मेरी बुद्धि इस समय भ्रष्ट हो गई है। न जाने क्या कर बैठूँ। मैं आपे में नहीं हूँ। तरह-तरह के आवेग मन में उठते हैं। मुझमें उनको दबाने की सामर्थ्य नहीं है। कंचन के नाम से एक धर्मशाला और ठाकुरद्वारा अवश्य बनवाना। मैं तुमसे यह अनुरोध करता हूँ, यह मेरी अंतिम प्रार्थना है। विधाता की यह वीभत्स लीला, यह पैशाचिक तांडव जल्द समाप्त होने वाला है। कंचन की यही जीवन-लालसा थी। इन्हीं लालसाओं पर उसने जीवन के सब आनंदों, सभी पार्थिव सुखों को अर्पण कर दिया था। अपनी लालसाओं को पूरा होते देखकर उसकी आत्मा प्रसन्न होगी और इस कुटिल निर्दय आघात को क्षमा कर देगी।

(अचलसिंह का प्रवेश)

ज्ञानी — (आँखें पोंछकर) बेटा, क्या अभी तुमने भी भोजन नहीं किया?

अचल — अभी चाचाजी तो आए ही नहीं आज उनके कमरे में जाते हुए न जाने क्यों भय लगता है। ऐसा मालूम होता है कि वह कहीं छिपे बैठे हैं और दिखाई नहीं देते। उनकी छाया कमरे में छिपी हुई जान पड़ती है।

सबल — (मन में) इसे देखकर चित्त कातर हो रहा है। इसे फलते-फूलते देखना मेरे जीवन की सबसे बड़ी लालसा थी। कैसा चतुर, सुशील, हंसमुख लड़का है। चेहरे से प्रतिभा टपक पड़ती है। मन में क्या-क्या इरादे थे। इसे जर्मनी भेजना चाहता था। संसार-यात्रा कराके इसकी शिक्षा को समाप्त करना चाहता था। इसकी शक्तियों का पूरा विकास करना चाहता था।, पर सारी आशाएँ धूल में मिल गई। (अचल को गोद में लेकर) बेटा, तुम जाकर भोजन कर लो, मैं तुम्हारे चाचाजी को देखने जाता हूँ।

अचल — आप लोग आ जाएँगे तो साथ ही मैं भी खाऊँगी। अभी भूख नहीं है।

सबल — और जो मैं शाम तक न आऊँ?

अचल — आधी रात तक आपकी राह देखकर तब खा लूँगा, मगर आप ऐसा प्रश्न क्यों करते हैं?

सबल — कुछ नहीं, यों ही। अच्छा बताओ, मैं आज मर जाऊँ तो तुम क्या करोगे?

ज्ञानी — कैसे असगुन मुँह से निकालते हो!

अचल — (सबलसिंह की गर्दन में हाथ डालकर) आप तो अभी जवान हैं, स्वस्थ हैं, ऐसी बातें क्यों सोचते हैं?

सबल — कुछ नहीं, तुम्हारी परीक्षा करना चाहता हूँ।

अचल — (सबल की गोद में सिर रखकर) नहीं, कोई और ही कारण है। (रोकर) बाबूजी, मुझसे छिपाइए न, बताइए। आप क्यों इतने उदास हैं, अम्माँ क्यों रो रही हैं? मुझे भय लग रहा है। जिधर देखता हूँ उधर ही बेरौनकी-सी मालूम होती है, जैसे पिंजरे में से चिड़िया उड़ गई हो,

(कई सिपाही और चौकीदार बंदूकें और लाठियाँ लिए हाते में घुस आते हैं, और थानेदार तथा। इंस्पेक्टर और सुपरिंटेंडेंट घोड़ों से उतरकर बरामदे में खड़े हो जाते हैं। ज्ञानी भीतर चली जाती है। और सबल बाहर निकल आते हैं)

इंस्पेक्टर — ठाकुर साहब, आपकी खानातलाशी होगी। यह वारंट है।

सबल — शौक से लीजिए।

सुपरिंटेंडेंट — हम तुम्हारा रियासत छीन लेगी। हम तुमको रियासत दिया है, तब तुम इतना बड़ा आदमी बना है और मोटर में बैठा घूमता है। तुम हमारा बनाया हुआ है। हम तुमको अपने काम के लिए रियासत दिया है और तुम सरकार से दुश्मनी करता है। तुम दोस्त बनकर तलवार मारना चाहता है। दगाबाज है। हमारे साथ पोलो खेलता है, क्लब में बैठता है, दावत खाता है और हमीं से दुश्मनी रखता है। यह रियासत तुमको किसने दिया?

सबल — (सरोष होकर) मुगल बादशाहों ने। हमारे खानदान में पच्चीस पुश्तों से यह रियासत चली आती है।

सुपरिंटेंडेंट — झूठ बोलता है। मुगल लोग जिसको चाहता था। जागीर देता था।, जिससे नाराज हो जाता था। उससे जागीर छीन लेता था। जागीरदार मौरूसी नहीं होता था। तुम्हारा बुजुर्ग लोग मुगल बादशाहों से ऐसा बदखाही करता जैसा तुम हमारे साथ कर रहा है, तो जागीर छिन गया होता। हम तुमको असामियों से लगान वसूल करने के लिए कमीसन देता है और तुम हमारा जड़ खोदना चाहता है। गाँव में पंचायत बनाता है, लोगों को ताड़ी-शराब पीने से रोकता है, हमारा रसद-बेगार बन्द करता है। हमारा गुलाम होकर हमको आँखें दिखाता है। जिस बर्तन में पानी पीता है उसी में छेद करता है। सरकार चाहे तो एक घड़ी

में तुमको मिट्टी में मिला दे सकता है। (दोनों हाथ से चुटकी बजाता है)

सबल — आप जो काम करने आए हैं वह काम कीजिए और अपनी राह लीजिए। मैं आपसे सिविक्स और पालिटिक्स के लेक्चर नहीं सुनना चाहता।

सुपरिंटेंडेंट — हम न रहें तो तुम एक दिन भी अपनी रियासत पर काबू नहीं पा सकता।

सबल — मैं आपसे डिसकशन (बहस) नहीं करना चाहता। पर यह समझ रखिए कि अगर मान लिया जाय, सरकार ने ही हमको बनाया तो उसने अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्धि के ही लिए यह पालिसी कायम की। जमींदारों की बदौलत सरकार का राज कायम है। जब-जब सरकार पर कोई संकट पड़ा है, जमींदारों ने ही उसकी मदद की है। अगर आपका खयाल है कि जमींदारों को मिटाकर आप राज्य कर सकते हैं तो भूल है। आपकी हस्ती जमींदारों पर निर्भर है।

सुपरिंटेंडेंट — हमने अभी किसानों के हमले से तुमको बचाया, नहीं तो तुम्हारा निशान भी न रहता।

सबल — मैं आपसे बहस नहीं करना चाहता।

सुपरिंटेंडेंट — हम तुमसे चाहता है कि जब रैयत के दिल में बदखाही पैदा हो तो तुम हमारा मदद करे। सरकार से पहले वही लोग बदखाही करेगा जिसके पास जायदाद नहीं है, जिसका सरकार से कोई कनेक्शन (संबंध) नहीं है। हम ऐसे आदमियों का तोड़ करने के लिए ऐसे लोगों को मजबूत करना चाहता है जो जायदाद वाला है और जिसका हस्ती सरकार पर है। हम तुमसे रैयत को दबाने का काम लेना चाहता है।

सबल — और लोग आपको इस काम में मदद दे सकते हैं, मैं नहीं दे सकता। मैं रैयत का मित्र बनकर रहना चाहता हूँ, शत्रु बनकर नहीं अगर रैयत को गुलामी में जकड़े और अंधकार में डाले रखने के लिए जमींदारों की सृष्टि की गई है तो मैं इस अत्याचार का पुरस्कार न लूँगा चाहे वह रियासत ही क्यों न हो, मैं अपने देश-बंधुओं के मानसिक और आत्मिक विकास का इच्छुक हूँ। दूसरों को मूर्ख और अशक्त रखकर अपना ऐश्वर्य नहीं चाहता।

सुपरिंटेंडेंट — तुम सरकार से बगावत करता है।

सबल — अगर इसे बगावत कहा जाता है तो मैं बागी ही हूँ।

सुपरिंटेंडेंट — हाँ, यही बगावत है। देहातों में पंचायत खोलना बगावत है, लोगों को शराब पीने से रोकना बगावत है, लोगों को

अदालतों में जाने से रोकना बगावत है। सरकारी आदमियों का रसद बेगार बन्द करना बगावत है।

सबल — तो फिर मैं बागी हूँ।

अचल — मैं भी बागी हूँ।

सुपरिंटेंडेंट — गुस्ताख लड़का।

इंस्पेक्टर — हुज़ूर, कमरे में चलें, वहाँ मैंने बहुत-से कागजात जमा कर रखे हैं।

सुपरिंटेंडेंट — चलो।

इंस्पेक्टर — देखिए, यह पंचायतों की फेहरिस्त है और पंचों के नाम हैं।

सुपरिंटेंडेंट — बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह पंचायतों पर एक मजमून है।

सुपरिंटेंडेंट — बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह कौम के लीडरों की तस्वीरों का अल्बम है।

सुपरिंटेंडेंट — बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह चंद किताबें हैं, मैजिनी के मजामीन, वीर हारडी का हिन्दुस्तान का सफरनामा, भक्त प्रह्लाद का वृतान्त, टॉल्स्टाय की कहानियाँ।

सुपरिंटेंडेंट — सब बड़े काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह मिसमेरिजिम की किताब है।

सुपरिंटेंडेंट — ओह, यह बड़े काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह दवाइयों का बक्स है।

सुपरिंटेंडेंट — देहातियों को बस में करने के लिए! यह भी बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह मैजिक लालटेन है।

सुपरिंटेंडेंट — बहुत ही काम का चीज है।

इंस्पेक्टर — यह लेन-देन का बही है।

सुपरिंटेंडेंट — मोस्ट इम्पार्टेंट! बड़े काम का चीज। इतना सबूत काफी है। अब चलना चाहिए।

एक कानिस्टिबल — हुज़ूर, बगीचे में एक अखाड़ा भी है।

सुपरिंटेंडेंट — बहुत बड़ा सबूत है।

दूसरा कानिस्टिबल — हुज़ूर, अखाड़े के आगे एक गऊशाला भी है। कई गायें-भैंसें बंधी हुई हैं।

सुपरिंटेंडेंट — दूध पीता है जिसमें बगावत करने के लिए ताकत हो जाए। बहुत बड़ा सबूत है। वेल सबलसिंह, हम तुमको गिरफ्तारी करता है।

सबल — आपको अधिकार है।

(चेतनदास का प्रवेश)

इंस्पेक्टर — आइए स्वामीजी, तशरीफ लाइए।

चेतनदास — मैं जमानत देता हूँ।

इंस्पेक्टर — आप! यह क्योंकर!

सबल — मैं जमानत नहीं देना चाहता। मुझे गिरफ्तारी कीजिए।

चेतनदास — नहीं, मैं जमानत दे रहा हूँ।

सबल — स्वामीजी, आप दया के स्वरूप हैं, पर मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं जमानत नहीं देना चाहता।

चेतनदास — ईश्वर की इच्छा है कि मैं तुम्हारी जमानत करूँ।

सुपरिंटेंडेंट — वेल इंस्पेक्टर, आपकी क्या राय है? जमानत लेनी चाहिए या नहीं?

इंस्पेक्टर — हुज़ूर, स्वामीजी बड़े मोतबर, सरकार के बड़े खैरख्वाह हैं। इनकी जमानत मंजूर कर लेने में कोई हर्ज नहीं है।

सुपरिंटेंडेंट — हम पाँच हजार से कम न लेगी।

चेतनदास — मैं स्वीकार करता हूँ।

सबल — स्वामीजी, मेरे सिद्धान्त भंग हो रहे हैं।

चेतनदास — ईश्वर की यही इच्छा है।

(पुलिस के कर्मचारियों का प्रस्थान। ज्ञानी अंदर से निकलकर चेतनदास के पैरों पर फिर पड़ती है)

चेतनदास — माई, तेरा कल्याण हो,

ज्ञानी — आपने आज मेरा उद्धार कर दिया।

चेतनदास — सब कुछ ईश्वर करता है।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(स्थान — स्वामी चेतनदास की कुटी। समय — संध्या)

चेतनदास — (मन में) यह चाल मुझे खूब सूझी। पुलिस वाले अधिक-से-अधिक कोई अभियोग चलाते। सबलसिंह ऐसे कांटों से डरने वाला मनुष्य नहीं है। पहले मैंने समझा था। उस चाल से यहाँ उसका खूब अपमान होगी। पर वह अनुमान ठीक न निकला। दो घंटे पहले शहर में सबल की जितनी प्रतिष्ठा थी, अब उससे सतगुनी है। अधिकारियों की दृष्टि में चाहे वह फिर गया हो, पर नगरवासियों की दृष्टि में अब वह देव-तुल्य है। यह काम हलधर ही पूरा करेगी। मुझे उसके पीछे का रास्ता साफ करना चाहिए।

(ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — महाराज, आप उस समय इतनी जल्दी चले आए कि मुझे आपसे कुछ कहने का अवसर ही न मिला। आप यदि सहाय न होते तो आज मैं कहीं की न रहती। पुलिस वाले किसी दूसरे व्यक्ति की जमानत न लेते। आपके योगबल ने उन्हें परास्त कर दिया।

चेतनदास — माई, सब ईश्वर की महिमा है। मैं तो केवल उसका तुच्छ सेवक हूँ।

ज्ञानी — आपके सम्मुख इस समय मैं बहुत निर्लज्ज बनकर आई हूँ। मैं अपराधिनी हूँ, मेरा अपराध क्षमा कीजिए। आपने मेरे पतिदेव के विषय में जो बातें कहीं थीं वह एक-एक अक्षर सच निकलीं। मैंने आप पर अविश्वास किया। मुझसे यह घोर अपराध हुआ। मैं अपने पति को देव-तुल्य समझती थी। मुझे अनुमान हुआ कि आपको किसी ने भ्रम में डाल दिया है। मैं नहीं जानती थी कि आप अन्तर्यामी हैं। मेरा अपराध क्षमा कीजिए।

चेतनदास — तुझे मालूम नहीं है, आज तेरे पति ने कैसा पैशाचिक काम कर डाला है। मुझे इसके पहले कहने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

ज्ञानी — नहीं महाराज, मुझे मालूम है। उन्होंने स्वयं मुझसे सारा वृत्तांत कह सुनाया। भगवान् यदि मैंने पहले ही आपकी चेतावनी

पर ध्यान दिया होता तो आज इस हत्याकांड की नौबत न आती। यह सब मेरी अश्रद्धा का दुष्परिणाम है। मैंने आप जैसे महात्मा पुरूष का अविश्वास किया, उसी का यह दंड है। अब मेरा उद्धार आपके सिवा और कौन कर सकता है। आपकी दासी हूँ, आपकी चेरी हूँ। मेरे अवगुणों को न देखिए। अपनी विशाल दया से मेरा बेड़ा पार लगाइए।

चेतनदास — अब मेरे वश की बात नहीं मैंने तेरे कल्याण के लिए, तेरी मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े अनुष्ठान किए थे। मुझे निश्चय था। कि तेरा मनोरथ सिद्ध होगी। पर इस पापाभिनय ने मेरे समस्त अनुष्ठानों को विफल कर दिया। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह कुकर्म तेरे कुल का सर्वनाश कर देगी।

ज्ञानी — भगवान्, मुझे भी यही शंका हो रही है। मुझे भय है कि मेरे पतिदेव स्वयं पश्चात्ताप के आवेग में अपना प्राणांत न कर देंब उन्हें इस समय अपनी दुष्कृति पर अत्यंत ग्लानि हो रही है। आज वह बैठे-बैठे देर तक रोते रहे। इस दुःख और निराशा की दशा में उन्होंने प्राणों का अन्त कर दिया तो कुल का सर्वनाश हो जाएगी। इस सर्वनाश से मेरी रक्षा आपके सिवा और कौन कर सकता है? आप जैसा दयालु स्वामी पाकर अब किसकी शरण जाऊँ? ऐसा कोई यत्न कीजिए कि उनका चित्त शांत हो जाए। मैं

अपने देवर का जितना आदर और प्रेम करती थी वह मेरा हृदय ही जानता है। मेरे पति भी अपने भाई को पुत्र के समान समझते थे। वैमनस्य का लेश भी न था। पर अब तो जो कुछ होना था।, हो चुका। उसका शोक जीवन-पर्यन्त रहेगी। अब कुल की रक्षा कीजिए। मेरी आपसे यही याचना है।

चेतनदास — पाप का दण्ड ईश्वरीय नियम है। उसे कौन भंग कर सकता है?

ज्ञानी — योगीजन चाहें तो ईश्वरीय नियमों को भी झुका सकते हैं।

चेतनदास — इसका तुझे विश्वास है?

ज्ञानी — हाँ, महाराज! मुझे पूरा विश्वास है।

चेतनदास — श्रद्वा है?

ज्ञानी — हाँ, महाराज, पूरी श्रद्धा है।

चेतनदास — भक्त को अपने गुरू के सामने अपना तन-मन-धन सभी समर्पण करना पड़ता है। वही अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। भक्त गुरू की बातों पर, उपदेशों पर, व्यवहारों पर कोई शंका नहीं करता। वह अपने गुरू को ईश्वर-तुल्य समझता है। जैसे कोई रोगी अपने को वैद्य के

हाथों में छोड़ देता है, उसी भाँति भक्त भी अपने शरीर को, अपनी बुद्धि को और आत्मा को गुरू के हाथों में छोड़ देता है। तू अपना कल्याण चाहती है तो तुझे भक्तों के धर्म का पालन करना पड़ेगा।

ज्ञानी — महाराज, मैं अपना तन-मन-धन सब आपके चरणों पर समर्पित करती हूँ।

चेतनदास — शिष्य का अपने गुरू के साथ आत्मिक संबंध होता है। उसके और सभी संबंध पार्थिव होते हैं। आत्मिक संबंध के सामने पार्थिव संबंधों का कुछ भी मूल्य नहीं होता। मोक्ष के सामने सांसारिक सुखों का कुछ भी मूल्य नहीं है। मोक्षपद-प्राप्ति ही मानव-जीवन का उद्देश्य है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्राणी को ममत्व का त्याग करना चाहिए। पिता-माता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, शत्रु-मित्र यह सभी संबंध पार्थिव हैं। यह सब मोक्षमार्ग की बाधाएँ हैं। इनसे निवृत्त होकर ही मोक्ष-पद प्राप्त हो सकता है। केवल गुरू की कृपा-दृष्टि ही उस महान् पद पर पहुंचा सकती है। तू अभी तक भ्रांति में पड़ी हुई है। तू अपने पति और पुत्र, धन और संपत्ति को ही जीवन सर्वस्व समझ रही है। यही भ्रांति तेरे दुःख और शोक का मूल कारण है। जिस दिन तुझे इस भ्रांति से निवृत्ति होगी उसी दिन तुझे मोक्ष मार्ग दिखाई देने लगेगी। तब इन सांसारिक सुखों से तेरा मन आप-ही-

आप हट जाएगा। तुझे इनकी असारता प्रकट होने लगेगी। मेरा पहला उपदेश यह है कि गुरू ही तेरा सर्वस्व है। मैं ही तेरा सब कुछ हूँ।

ज्ञानी — महाराज, आपकी अमृतवाणी से मेरे चित्त को बड़ी शांति मिल रही है।

चेतनदास — मैं तेरा सर्वस्व हूँ। मैं तेरी संपत्ति हूँ, तेरी प्रतिष्ठा हूँ, तेरा पति हूँ, तेरा पुत्र हूँ, तेरी माता हूँ, तेरा पिता हूँ, तेरा स्वामी हूँ, तेरा सेवक हूँ, तेरा दान हूँ, तेरा व्रत हूँ। हाँ, मैं तेरा स्वामी हूँ और तेरा ईश्वर हूँ। तू राधिका है, मैं तेरा कन्हैया हूँ,तू सती है, मैं तेरा शिव हूँ,तू पत्नी है, मैं तेरा पति हूँ,तू प्रकृति है, मैं तेरा पुरुष हूँ,तू जीव है, मैं आत्मा हूँ, तू स्वर है, मैं उसका लालित्य हूँ, तू पुष्प है, मैं उसकी सुगंध हूँ।

ज्ञानी — भगवन्, मैं आपके चरणों की रज हूँ। आपकी सुधा-वर्षा से मेरी आत्मा तृप्त हो गई।

चेतनदास — तेरा पति तेरा शत्रु है, जो तुझे अपने कुकृत्यों का भागी बनाकर तेरी आत्मा का सर्वनाश कर रहा है।

ज्ञानी — (मन में) वास्तव में उनके पीछे मेरी आत्मा कलुषित हो रही है। उनके लिए मैं अपनी मुक्ति क्यों बिगाड़ूँ। अब उन्होंने

अधर्म-पथ पर पग रखा है, मैं उनकी सहगामिनी क्यों बनूँ? (प्रकट) स्वामीजी, अब मैं आपकी शरण आई हूँ, मुझे उबारिए।

चेतनदास — प्रिये, हम और तुम एक हैं, कोई चिंता मत करो। ईश्वर ने तुम्हें मंझधार में डूबने से बचा लिया। वह देखो सामने ताक पर बोतल है। उसमें महाप्रसाद रखा हुआ है। उसे उतारकर अपने कोमल हाथों से मुझे पिलाओ और प्रसाद-स्वरूप स्वयं पान करो। तुम्हारा अन्तःकरण आलोकमय हो जाएगी। सांसारिकता की कालिमा एक क्षण में कट जाएगी और भक्ति का उज्ज्वल प्रकाश प्रस्फुटित हो जाएगा। यह वह सोमरस है जोर ऋषिगण पान करके योगबल प्राप्त किया करते थे।

(ज्ञानी बोतल उतारकर चेतनदास के कमंडल में उंड़ेलती है, चेतनदास पी जाते हैं)

चेतनदास — यह प्रसाद तुम भी पान करो।

ज्ञानी — भगवन्, मुझे क्षमा कीजिए।

चेतनदास — प्रिये, यह तुम्हारी पहली परीक्षा है।

ज्ञानी — (कमंडल मुँह से लगाकर पीती है। तुरंत उसे अपने शरीर में एक विशेष स्फूर्ति का अनुभव होता है) स्वामी, यह तो कोई अलौकिक वस्तु है।

चेतनदास — प्रिये, यह ऋषियों का पेय पदार्थ है। इसे पीकर वह चिरकाल तक तरुण बने रहते थे। उनकी शक्तियाँ कभी क्षीण न होती थीं। थोड़ा-सा और दो। आज बहुत दिनों के बाद यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

(ज्ञानी बोतल उठाकर कमंडल में उंड़ेलती है। चेतनदास पी जाते हैं। ज्ञानी स्वयं थोड़ा-सा निकालकर पीती है)

चेतनदास — (ज्ञानी के हाथों को पकड़कर) प्रिये, तुम्हारे हाथ कितने कोमल हैं, ऐसा जान पड़ता है मानो फूल की पंखड़ियाँ हैं। (ज्ञानी झिझककर हाथ खींच लेती है) प्रिये, झिझको नहीं, यह वासनाजनित प्रेम नहीं है। यह शुद्ध, पवित्र प्रेम है। यह तुम्हारी दूसरी परीक्षा है।

ज्ञानी — मेरे हृदय में बड़े वेग से धड़कन हो रही है।

चेतनदास — यह धड़कन नहीं है, विमल प्रेम की तरंगें हैं जो वक्ष के किनारों से टकरा रही हैं। तुम्हारा शरीर फूल की भाँति

कोमल है। उस वेग को सहन नहीं कर सकता। इन हाथों के स्पर्श से मुझे वह आनंद मिल रहा है जिसमें चंद्र का निर्मल प्रकाश, पुष्पों की मनोहर सुगंध, समीर के शीतल मंद झोंके और जल-प्रवाह का मधुर गान सभी समाविष्ट हो गए हैं।

ज्ञानी — मुझे चक्कर-सा आ रहा है। जान पड़ता है लहरों में बही जाती हूँ।

चेतनदास — थोड़ा-सा सोमरस और निकालो। संजीवनी है।

(ज्ञानी बोतल से कमंडल में उंड़ेलती है, चेतनदास पी जाता है, ज्ञानी भी दो-तीन घूंट पीती है)

चेतनदास — आज जीवन सफल हो गया। ऐसे सुख के एक क्षण पर समग्र जीवन भेंट कर सकता हूँ (ज्ञानी के गले में बांहें डालकर आलिंगन करना चाहता है, ज्ञानी झिझककर पीछे हट जाती है) प्रिये, यह भक्ति मार्ग की तीसरी परीक्षा है!

(ज्ञानी अलग खड़ी होकर रोती है)

चेतनदास — प्रिये!

ज्ञानी — (उच्च स्वर से) कोचवान, गाड़ी लाओ।

चेतनदास — इतनी अधीर क्यों हो रही हो? क्या मोक्षपद के निकट पहुँचकर फिर उसी मायावी संसार में लिप्त होना चाहती हो? यह तुम्हारे लिए कल्याणकारी न होगा।

ज्ञानी — मुझे मोक्षपद प्राप्त हो या न हो, यह ज्ञान अवश्य प्राप्त हो गया कि तुम धूर्त, कुटिल, भ्रष्ट, दुष्ट, पापी हो, तुम्हारे इस भेष का अपमान नहीं करना चाहती, पर यह समझ रखो कि तुम सरला स्त्रियों को इस भाँति दगा देकर अपनी आत्मा को नर्क की ओर ले जा रहे हो, तुमने मेरे शरीर को अपने कलुषित हाथों से स्पर्श करके सदा के लिए विकृत कर दिया। तुम्हारे मनोविकारों के संपर्क से मेरी आत्मा सदा के लिए दूषित हो गई। तुमने मेरे व्रत की हत्या कर डाली। अब मैं अपने ही को अपना मुँह नहीं दिखा सकती। सतीत्व जैसी अमूल्य वस्तु खोकर मुझे ज्ञात हुआ कि मानव-चरित्र का कितना पतन हो सकता है। अगर तुम्हारे हृदय में मनुष्यत्व का कुछ भी अंश शेष है तो मैं उसी को संबोधित करके विनय करती हूँ कि अपनी आत्मा पर दया करो और इस दुष्टाचरण को त्याग कर सद्वृत्तियों का आवाह्न करो।

(कुटी से बाहर निकलकर गाड़ी में बैठ जाती है)

कोचवान — किधर से चलूँ?

ज्ञानी — सीधे घर चलो।

चौथा दृश्य

(स्थान — राजेश्वरी का मकान। समय — दस बजे रात)

राजेश्वरी — (मन में) मेरे ही लिए जीवन का निर्वाह करना क्यों इतना कठिन हो रहा है? संसार में इतने आदमी पड़े हुए हैं। सब अपने-अपने धंधों में लगे हुए हैं। मैं ही क्यों इस चक्कर में डाली गई हूँ? मेरा क्या दोष है? मैंने कभी अच्छा खाने, पहनने या आराम से रहने की इच्छा की, जिसके बदले में मुझे यह दंड मिला है? जबरदस्ती इस कारागार में बन्द की गई हूँ। यह सब विलास की चीजें जबरदस्ती मेरे गले मढ़ी गई हैं। एक धनी पुरूष मुझे अपने इशारों पर नचा रहा है। मेरा दोष इतना ही है कि मैं

रूपवती हूँ और निर्बल हूँ। इसी अपराध की यह सजा मुझे मिल रही है। जिसे ईश्वर धन दे, उसे इतना सामर्थ्य भी दे कि धन की रक्षा कर सके निर्बल प्राणियों को रत्न देना उन पर अन्याय करना है। हा! कंचनसिंह पर आज न जाने क्या बीती! सबलसिंह ने अवश्य ही उनको मार डाला होगी। मैंने उन पर कभी क्रोध चढ़ते नहीं देखा था। क्रोध में तो मानो उन पर भूत सवार हो जाता है। मर्दों को उत्तेजित करना सरल है। उनकी नाड़ियों में रक्त की जगह रोष और ईर्ष्या का प्रवाह होता है। ईर्ष्या की ही मिट्टी से उनकी सृष्टि हुई है। यह सब विधाता की विषम लीला है। (गाती है)

दयानिधि तेरी गति लखि न परी।

(सबलसिंह का प्रवेश)

राजेश्वरी — आइए, आपकी ही बाट जोह रही थी। उधर ही मन लगा हुआ था। आपकी बातें याद करके शंका और भय से चित्त बहुत व्याकुल हो रहा था। पूछते डरती हूँ

सबल — (मलिन स्वर से) जिस बात की तुम्हें शंका थी वह हो गई।

राजेश्वरी — अपने ही हाथों?

सबल — नहीं मैंने क्रोध के आवेग में चाहे मुँह से जो बक डाला हो पर अपने भाई पर मेरे हाथ नहीं उठ सके पर इससे मैं अपने पाप का समर्थन नहीं करना चाहता। मैंने स्वयं हत्या की और उसका सारा भार मुझ पर है। पुरूष कड़े-से कड़े आघात सह सकता है, बड़ी-से बड़ी मुसीबतें झेल सकता है, पर यह चोट नहीं सह सकता, यही उसका मर्मस्थान है। एक ताले में दो कुंजियाँ साथ-साथ चली जाएँ, एक म्यान में दो तलवारें साथ-साथ रहें, एक कुल्हाड़ी में दो बेंट साथ लगें, पर एक स्त्री के दो चाहने वाले नहीं रह सकते, असंभव है।

राजेश्वरी — एक पुरूष को चाहने वाली तो कई स्त्रियाँ होती हैं।

सबल — यह उनके अपंग होने के कारण हैं। एक ही भाव दोनों के मन में उठते हैं। पुरूष शक्तिशाली है, वह अपने क्रोध को व्यक्त कर सकता है, स्त्री मन में ऐंठकर रह जाती है।

राजेश्वरी — क्या आप समझते थे कि मैं कंचनसिंह को मुँह लगा रही हूँ। उन्हें केवल यहाँ बैठे देखकर आपको इतना उबलना न चाहिए था।

सबल — तुम्हारे मुँह से यह तिरस्कार कुछ शोभा नहीं देता। तुमने अगर सिरे से ही उसे यहाँ न घुसने दिया होता तो आज यह

नौबत न आती। तुम अपने को इस इल्जाम से मुक्त नहीं कर सकती।

राजेश्वरी — एक तो आपने मुझ पर संदेह करके मेरा अपमान किया, अब आप इस हत्या का भार भी मुझ पर रखना चाहते हैं। मैंने आपके साथ ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया था। कि आप इतना अविश्वास करते।

सबल — राजेश्वरी, इन बातों से दिल न जलाओ। मैं दुःखी हूँ, मुझे तस्कीन दो; मैं घायल हूँ, मेरे घाव पर मरहम रखो। मैंने वह रत्न हाथ से खो दिया जिसका जोड़ अब संसार में मुझे न मिलेगी। कंचन आदर्श भाई था। मेरा इशारा उसके लिए हुक्म था। मैंने जरा-सा इशारा कर दिया होता तो वह भूलकर भी इधर पग न रखता। पर मैं अंधा हो रहा था, उन्मत्त हो रहा था। मेरे हृदय की जो दशा हो रही है वह तुम देख सकतीं तो कदाचित् तुम्हें मुझ पर दया आती। ईश्वर के लिए मेरे घावों पर नमक न छिड़को। अब तुम्हीं मेरे जीवन का आधार हो, तुम्हारे लिए मैंने इतना बड़ा बलिदान किया। अब तुम मुझे पहले से कहीं अधिक प्रिय हो, मैंने पहले सोचा था।, केवल तुम्हारे दर्शनों से, तुम्हारी तिरछी चितवनों से मैं तृप्त हो जाऊँगी। मैं केवल तुम्हारा सहवास चाहता था। पर अब मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं गुड़ खाना और गुलगुलों से परहेज करना चाहता था। मैं भरे प्याले को

उछालकर भी चाहता था कि उसका पानी न छलके। नदी में जाकर भी चाहता था कि दामन न भीगे। पर अब मैं तुमको पूर्णरूप से चाहता हूँ। मैं तुम्हारा सर्वस्व चाहता हूँ। मेरी विकल आत्मा के लिए संतोष का केवल यही एक आधार है। अपने कोमल हाथों को मेरी दहकती हुई छाती पर रखकर शीतल कर दो।

राजेश्वरी — मुझे अब आपके समीप बैठते हुए भय होता है। आपके मुख पर नम्रता और प्रेम की जगह अब क्रूरता और कपट की झलक है।

सबल — तुम अपने प्रेम से मेरे हृदय को शांत कर दो। इसीलिए इस समय तुम्हारे पास आया हूँ। मुझे शांति दो। मैं निर्जन पार्क और नीरव नदी से निराश लौटा आता हूँ। वहाँ शांति नहीं मिली। तुम्हें यह मुँह नहीं दिखाना चाहता था। हत्यारा बनकर तुम्हारे सम्मुख आते लज्जा आती थी। किसी को मुँह नहीं दिखाना चाहता। केवल तुम्हारे प्रेम की आशा मुझे तुम्हारी शरण लाई। मुझे आशा थी, तुम्हें मुझ पर दया आएगी, पर देखता हूँ तो मेरा दुर्भाग्य वहाँ भी मेरा पीछा नहीं छोड़ता। राजेश्वरी, प्रिये, एक बार मेरी तरफ प्रेम की चितवनों से देखो। मैं दुःखी हूँ। मुझसे ज्यादा दुःखी कोई प्राणी संसार में न होगी। एक बार मुझे प्रेम से गले लगा लो, एक बार अपनी कोमल बाहें मेरी गर्दन में डाल दो,

एक बार मेरे सिर को अपनी जांघों पर रख लो। प्रिये, मेरी यह अंतिम लालसा है। मुझे दुनिया से नामुराद मत जाने दो। मुझे चंद घंटों का मेहमान समझो।

राजेश्वरी — (सजल नयन होकर) ऐसी बातें करके दिल न दुखाइए।

सबल — अगर इन बातों से तुम्हारा दिल दुखता है तो न करूँगा। पर राजेश्वरी, मुझे तुमसे इस निर्दयता की आशा न थी। सौंदर्य और दया में विरोध है; इसका मुझे अनुमान न था। मगर इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह अवस्था ही ऐसी है। हत्यारे पर कौन दया करेगा? जिस प्राणी ने सगे भाई को ईर्ष्या और दंभ के वश होकर वध करा दिया, वह इसी योग्य है कि चारों ओर उसे धिक्कार मिले। उसे कहीं मुँह दिखाने का ठिकाना न रहे। उसके पुत्र और स्त्री भी उसकी ओर से आँखें फेर लें, उसके मुँह में कालिमा पोत दी जाए और उसे हाथी के पैरों से कुचलवा दिया जाए। उसके पाप का यही दंड है। राजेश्वरी, मनुष्य कितना दीन, कितना परवश प्राणी है। अभी एक सप्ताह पहले मेरा जीवन कितना सुखमय था। अपनी नौका में बैठा हुआ धीमी-धीमी लहरों पर बहता, समीर की शीतल, मंद तरंगों का आनंद उठाता चला जाता था। क्या जानता था कि एक ही क्षण में वे मंद तरंगें इतनी भयंकर हो जाएँगी, शीतल झोंके इतने प्रबल हो जाएँगे कि नाव

को उलट देंगे। सुख और दुःख, हर्ष और शोक में उससे कहीं कम अन्तर है जितना हम समझते हैं। आँखों को एक जरा-सा इशारा, मुँह का एक जरा-सा शब्द हर्ष का शोक और सुख को दुःख बना सकता है। लेकिन हम यह सब जानते हुए भी सुख पर लौ लगाए रहते हैं। यहाँ तक कि फांसी पर चढ़ने से एक क्षण पहले तक हमें सुख की लालसा घेरे रहती है। ठीक वही दशा मेरी है। जानता हूँ कि चंद घंटों का और मेहमान हूँ, निश्चय है कि फिर ये आँखें सूर्य और आकाश को न देखेंगी; पर तुम्हारे प्रेम की लालसा हृदय से नहीं निकलती।

राजेश्वरी — (मन में) इस समय यह वास्तव में बहुत दुःखी हैं। इन्हें जितना दंड मिलना चाहिए था। उससे ज्यादा मिल गया। भाई के शोक में इन्होंने आत्मघात करने की ठानी है। मेरा जीवन तो नष्ट हो ही गया, अब इन्हें मौत के मुँह में झोंकने की चेष्टा क्यों करूँ? इनकी दशा देखकर दया आती है। मेरे मन के घातक भाव लुप्त हो रहे हैं। (प्रकट) आप इतने निराश क्यों हो रहे हैं? संसार में ऐसी बातें आए दिन होती रहती हैं। अब दिल को संभालिए। ईश्वर ने आपको पुत्र दिया है, सती स्त्री दी है। क्या आप उन्हें मंझधार में छोड़ देंगे? मेरे अवलंब भी आप ही हैं। मुझे द्वार-द्वार की ठोकर खाने के लिए छोड़ दीजिएगा? इस शोक को दिल से निकाल डालिए।

सबल — (खुश होकर) तुम भूल जाओगी कि मैं पापी-हत्यारा हूँ?

राजेश्वरी — आप बार-बार इसकी चर्चा क्यों करते हैं!

सबल — तुम भूल जाओगी कि इसने अपने भाई को मरवाया है?

राजेश्वरी — (भयभीत होकर) प्रेम दोषों पर ध्यान नहीं देता। वह गुणों ही पर मुग्ध होता है। आज मैं अंधी हो जाऊँ तो क्या आप मुझे त्याग देंगे?

सबल — प्रिये, ईश्वर न करे, पर मैं तुमसे सच्चे दिल से कहता हूँ कि काल की कोई गति, विधाता की कोई पिशाच लीला, तापों का कोई प्रकोप मेरे हृदय से तुम्हारे प्रेम को नहीं निकाल सकता, हाँ, नहीं निकाल सकता। (गाता है)

> दफ्न करने ले चले थे जब मेरे घर से मुझे
> काश, तुम भी झाँक लेते रौज-ए दर से मुझे।
> सांस पूरी हो चुकी, दुनिया से रूखसत हो चुका
> तुम अब आए हो उठाने मेरे बिस्तर से मुझे।
> क्यों उठाता है मुझे मेरी तमन्ना को निकाल
> तेरे दर तक खींच लाई थी वही घर से मुझे।
> हिज्र की शब कुछ यही मूनिस था मेरा, ऐ कजा
> रुक जरा रो लेने दे मिल-मिलके बिस्तर से मुझे।

राजेश्वरी — मेरे दिल में आपका वही प्रेम है।

सबल — तुम मेरी हो जाओगी?

राजेश्वरी — और अब किसकी हूँ?

सबल — तुम पूर्ण रूप से मेरी हो जाओगी?

राजेश्वरी — आपके सिवा अब मेरा कौन है?

सबल — तो प्रिये, मैं अभी मौत को कुछ दिनों के लिए द्वार से टाल दूँगा। अभी न मरूँगा। पर हम सब यहाँ नहीं रह सकते। हमें कहीं बाहर चलना पड़ेगा, जहाँ अपना परिचित प्राणी न हो, चलो, आबू चलें, जी चाहे कश्मीर चलो, दो-चार महीने रहेंगे, फिर जैसी अवस्था होगी वैसा करेंगी। पर इस नगर में मैं नहीं रह सकता। यहाँ की एक-एक पत्ती मेरी दुश्मन है।

राजेश्वरी — घर के लोगों को किस पर छोड़िएगा?

सबल — ईश्वर पर! अब मालूम हो गया कि जो कुछ करता है, ईश्वर करता है। मनुष्य के किए कुछ नहीं हो सकता।

राजेश्वरी — यह समस्या कठिन है। मैं आपके साथ बाहर नहीं जा सकती।

सबल — प्रेम तो स्थान के बंधनों में नहीं रहता।

राजेश्वरी — इसका यह कारण नहीं है। अभी आपका चित्त अस्थिर है, न जाने क्या रंग पकड़े। वहाँ परदेश में कौन अपना

हितैषी होगा, कौन विपत्ति में अपना सहायक होगा? मैं गँवारिन, परदेश करना क्या जानूँ? ऐसा ही है तो आप कुछ दिनों के लिए बाहर चले जाएँ।

सबल — प्रिये, यहाँ से जाकर फिर आना नहीं चाहता, किसी से बताना भी नहीं चाहता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे सिवा और सारे संसार के लिए मर जाना चाहता हूँ। (गाता है)

किसी को देके दिल कोई नवा संगे फुगाँ क्यों हो,
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुँह में जबाँ क्यों हो,
वफा कैसी, कहाँ का इश्क, जब सिर फोड़ना ठहरा,
तो फिर ऐ संग दिल तेरा ही संगे आस्ताँ क्यों हो,
कफ़स में मुझसे रूदादे चमन कहते न डर हमदम,
गिरी है जिस पै कल बिजली वह मेरा आशियाँ क्यों हो,
यह फितना आदमी की खानावीरानी को क्या कम है,
हुए तुम दोस्त जिसके उसका दुश्मन आसमाँ क्यों हो,
कहा तुमने कि क्यों हो गैर के मिलने में रुसवाई,
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हाँ क्यों हो,

राजेश्वरी — (मन में) यहाँ हूँ तो कभी-न-कभी नसीब जागेंगे ही। मालूम नहीं वह (हलधर) आजकल कहाँ हैं, कैसे हैं, क्या करते हैं, मुझे अपने मन में क्या समझ रहे हैं। कुछ भी हो, जब मैं जाकर सारी रामकहानी सुनाऊँगी तो उन्हें मेरे निरपराध होने का

विश्वास हो जाएगी। इनके साथ जाना अपना सर्वनाश कर लेना है। मैं इनकी रक्षा करना चाहती हूँ, पर अपना सत खोकर नहीं,इनको बचाना चाहती हूँ, पर अपने को डुबाकर नहीं अगर मैं इस काम में सफल न हो सकूँ तो मेरा दोष नहीं है। (प्रकट) मैं आपके घर को उजाड़ने का अपराध अपने सिर नहीं लेना चाहती।

सबल — प्रिये, मेरा घर मेरे रहने से ही उजड़ेगा, मेरे अन्तर्धान होने से वह बच जाएगी। इसमें मुझे जरा भी संदेह नहीं है।

राजेश्वरी — फिर अब मैं आपसे डरती हूँ, आप शक्की आदमी हैं। न जाने किस वक्त आपको मुझ पर शक हो जाए। जब आपने जरा-से शक पर...

सबल — (शोकातुर होकर) राजेश्वरी, उसकी चर्चा न करो। उसका प्रायश्चित कुछ हो सकता है तो वह यही है कि अब शक और भ्रम को अपने पास फटकने भी न दूँ। इस बलिदान से मैंने समस्त शंकाओं को जीत लिया है। अब फिर भ्रम में पड़ूँ, तो मैं मनुष्य नहीं पशु हूँगा।

राजेश्वरी — आप मेरे सतीत्व की रक्षा करेंगे? आपने मुझे वचन दिया था। कि मैं केवल तुम्हारा सहवास चाहता हूँ।

सबल — प्रिये, प्रेम को बिना पाए संतोष नहीं होता। जब तक मैं गृहस्थी के बंधनों में जकड़ा था।, जब तक भाई, पुत्र, बहिन का मेरे प्रेम के एक अंश पर अधिकार था। तब मैं तुम्हें न पूरा प्रेम दे सकता था। और न तुमसे सर्वस्व माँगने का साहस कर सकता था। पर अब मैं संसार में अकेला हूँ, मेरा सर्वस्व तुम्हारे अर्पण है। प्रेम अपना पूरा मूल्य चाहता है, आधे पर संतुष्ट नहीं हो सकता।

राजेश्वरी — मैं अपने सत को नहीं खो सकती।

सबल — प्रिये, प्रेम के आगे सत, व्रत, नियम, धर्म सब उन तिनकों के समान हैं जो हवा से उड़ जाते हैं। प्रेम पवन नहीं, आंधी है। उसके सामने मान-मर्यादा, शर्म-हया की कोई हस्ती नहीं।

राजेश्वरी — यह प्रेम परमात्मा की देन है। उसे आप धन और रोब से नहीं पा सकते।

सबल — राजेश्वरी, इन बातों से मेरा हृदय चूर-चूर हुआ जाता है। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मुझे तुमसे जितना अटल प्रेम है उसे मैं शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। मेरा सत्यानाश हो जाए अगर धन और संपत्ति का ध्यान भी मुझे आया हो, मैं यह मानता हूँ कि मैंने तुम्हें पाने के लिए बेजा दबाव से काम लिया, पर इसका कारण यही था। कि मेरे पास और कोई

साधन न था। मैं विरह की आग में जल रहा था।, मेरा हृदय फूँका जाता था, ऐसी अवस्था में यदि मैं धर्म-अधर्म का विचार न करके किसी व्यक्ति के भरे हुए पानी के डोल की ओर लपका तो तुम्हें उसको क्षम्य समझना चाहिए।

राजेश्वरी — वह डोल किसी भक्त ने अपने इष्टदेव को चढ़ाने के लिए एक हाथ से भरा था। जिसे आप प्रेम कहते हैं वह काम-लिप्सा थी। आपने अपनी लालसा को शांत करने के लिए एक बसे-बसाये घर को उजाड़ दिया, उसको तितर-बितर कर दिया। यह सब अनर्थ आपने अधिकार के बल पर किया। पर याद रखिए, ईश्वर भी आपको इस पाप का दंड भोगने से नहीं बचा सकता। आपने मुझसे उस बात की आशा रखी जो कुलटाएँ ही कर सकती हैं। मेरी यह इज्जत आपने की। आंख की पुतली निकल जाए तो उसमें सुरमा क्या शोभा देगा? पौधे की जड़ काटकर फिर आप दूध और शहद से सींचें तो क्या फायदा? स्त्री का सत हर कर आप उसे विलास और भोग में डुबा ही दें तो क्या होता है! मैं अगर यह घोर अपमान चुपचाप सह लेती तो मेरी आत्मा का पतन हो जाता। मैं यहाँ उस अपमान का बदला लेने आई हूँ। आप चौंकें नहीं, मैं मन में यही संकल्प करके आई थी।

(ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — देवी, तुझे धन्य है। तेरे पैरों पर शीश नवाती हूँ।

सबल — ज्ञानी! तुम यहाँ?

ज्ञानी — क्षमा कीजिए। मैं किसी और विचार से नहीं आई। आपको घर पर न देखकर मेरा चित्त व्याकुल हो गया।

सबल — यहाँ का पता कैसे मालूम हुआ?

ज्ञानी — कोचवान की खुशामद करने से।

सबल — राजेश्वरी, तुमने मेरी आँखें खोल दीं! मैं भ्रम में पड़ा हुआ था। तुम्हारा संकल्प पूरा होगी। तुम सती हो, तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी होगी। मैं पापी हूँ, मुझे क्षमा करना... (नीचे की ओर जाता है)

ज्ञानी — मैं भी चलती हूँ। राजेश्वरी, तुम्हारे दर्शन पाकर कृतार्थ हो गई। (धीरे से) बहिन, किसी तरह इनकी जान बचाओ। तुम्हीं इनकी रक्षा कर सकती हो। (राजेश्वरी के पैरों पर फिर पड़ती है)

राजेश्वरी — रानी जी, ईश्वर ने चाहा तो सब कुशल होगी।

ज्ञानी — तुम्हारे आशीर्वाद का भरोसा है।

(प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान — गंगा के करार पर एक बड़ा पुराना मकान। समय — बारह बजे रात, हलधर और उसके साथी डाकू बैठे हुए हैं)

हलधर — अब समय आ गया, मुझे चलना चाहिए।

एक डाकू रंगी — हम लोग भी तैयार हो जाएँ न? शिकारी आदमी है, कहीं पिस्तौल चला बैठे तो?

हलधर — देखी जाएगी। मैं जाऊँगा अकेले।

(कंचन का प्रवेश)

हलधर — अरे, आप अभी तक सोए नहीं?

कंचन — तुम लोग भैया को मारने पर तैयार हो, मुझे नींद कैसे आए?

हलधर — मुझे आपकी बातें सुनकर अचरज होता है। आप ऐसे पापी आदमी की रक्षा करना चाहते हैं जो अपने भाई की जान लेने पर तुल जाए।

कंचन — तुम नहीं जानते, वह मेरे भाई नहीं, मेरे पिता के तुल्य हैं। उन्होंने भी सदैव मुझे अपना पुत्र समझा है। उन्होंने मेरे प्रति जो कुछ किया, उचित किया। उसके सिवा मेरे विश्वासघात का और कोई दंड न था। उन्होंने वही किया जो मैं आप करने जाता था। अपराध सब मेरा है। तुमने मुझ पर दया की है। इतनी दया और करो। इसके बदले में तुम जो कुछ कहो करने को तैयार हूँ। मैं अपनी सारी कमाई जो बीस हजार से कम नहीं है, तुम्हें भेंट कर दूँगा। मैंने यह रुपये एक धर्मशाला और देवालय बनवाने के लिए संचित कर रखे थे। पर भैया के प्राणों का मूल्य धर्मशाला और देवालय से कहीं अधिक है।

हलधर — ठाकुर साहब, ऐसा कभी न होगी। मैंने धन के लोभ से यह भेष नहीं लिया है। मैं अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूँ। मेरा मर्याद इतना सस्ता नहीं है।

कंचन — मेरे यहाँ जितनी दस्तावेजें हैं वह सब तुम्हें दे दूँगा।

हलधर — आप व्यर्थ ही मुझे लोभ दिखा रहे हैं। मेरी इज्जत बिगड़ गई। मेरे कुल में दाग लग गया। बाप-दादों के मुँह में कालिख पुत गई। इज्जत का बदला जान है, धन नहीं जब तक सबलसिंह की लाश को अपनी आँखों से तड़पते न देखूँगा, मेरे हृदय की ज्वाला शांत न होगी।

कंचन — तो फिर सबेरे तक मुझे भी जीता न पाओगी। (प्रस्थान)

हलधर — भाई पर जान देते हैं।

रंगी — तुम भी तो हक-नाहक की जिद कर रहे हो, बीस हजार नकद मिल रहा है। दस्तावेज भी इतने की ही होगी। इतना धन तो ऐसा ही भाग जागे तो हाथ लग सकता है। आधा तुम ले लो। आधा हम लोगों को दे दो। बीस हजार में तो ऐसी-ऐसी बीस औरतें मिल जाएँगी।

हलधर — कैसी बेगैरतों की-सी बात करते हो! स्त्री चाहे सुंदर हो, चाहे कुरूप, कुल-मरजाद की देवी है। मरजाद रुपयों पर नहीं बिकती।

रंगी — ऐसा ही है तो उसी को क्यों नहीं मार डालते। न रहे बांस न बजे बंसुरी।

हलधर — उसे क्यों मारूँ? स्त्री पर हाथ उठाने में क्या जवाँमरदी है?

रंगी — तो क्या उसे फिर रखोगे?

हलधर — मुझे क्या तुमने ऐसा बेगैरत समझ लिया है। घर में रखने की बात ही क्या, अब उसका मुँह भी नहीं देख सकता। वह कुलटा है, हरजाई है। मैंने पता लगा लिया है। वह अपने-आप घर से निकल खड़ी हुई है। मैंने कब का उसे दिल से निकाल दिया। अब उसकी याद भी नहीं करता। उसकी याद आते ही शरीर में ज्वाला उठने लगती है। अगर उसे मारकर कलेजा ठंडा हो सकता तो इतने दिनों चिंता और क्रोध की आग में जलता ही क्यों?

रंगी — मैं तो रुपयों का इतना बड़ा ढेर कभी हाथ से न जाने देता। मान-मर्यादा सब ढकोसला है। दुनिया में ऐसी बातें आए दिन होती रहती हैं। लोग औरत को घर से निकाल देते हैं। बस।

हलधर — क्या कायरों की-सी बातें करते हो, रामचन्द्र ने सीताजी के लिए लंका का राज विध्वंस कर दिया। द्रोपदी की मानहानि करने के लिए पांडवों ने कौरवों को निरबंस कर दिया। जिस आदमी के दिल में इतना अपमान होने पर भी क्रोध न आए,

मरने-मारने पर तैयार न हो जाए, उसका खून न खौलने लगे, वह मर्द नहीं हिजड़ा है। हमारी इतनी दुर्गत क्यों हो रही है? जिसे देखो वही हमें चार गालियाँ सुनाता है, ठोकर मारता है। क्या अहलकार, क्या जमींदार सभी कुत्तों से नीच समझते हैं। इसका कारण यही है कि हम बेहया हो गए हैं। अपनी चमड़ी को प्यार करने लगे हैं। हममें भी गैरत होती, अपने मान?अपमान का विचार होता तो मजाल थी कि कोई हमें तिरछी आँखों से देख सकता। दूसरे देशों में सुनते हैं गालियों पर लोग मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं। वहाँ कोई किसी को गाली नहीं दे सकता। किसी देवता का अपमान कर दो तो जान न बचे। यहाँ तक कि कोई किसी को ला-सखुन नहीं कह सकता, नहीं तो, खून की नदी बहने लगे। यहाँ क्या है, लात खाते हैं, जूते खाते हैं, घिनौनी गालियाँ सुनते हैं, धर्म का नाश अपनी आँखों से देखते हैं, पर कानों पर जूं नहीं रेंगती, खून जरा भी गर्म नहीं होता। चमड़ी के पीछे सब तरह की दुर्गत सहते हैं। जान इतनी प्यारी हो गई है। मैं ऐसे जीने से मौत को हजार दर्जे अच्छा समझता हूँ। बस यही समझ लो कि जो आदमी प्रान को जितना ही प्यारा समझता है वह उतना ही नीच है। जो औरत हमारे घर में रहती थी, हमसे हँसती थी, हमसे बोलती थी, हमारे खाट पर सोती थी वह अब भी

(क्रोध से उन्मत्त होकर) तुम लोग मेरे लौटने तक यहीं रहो, कंचनसिंह को देखते रहना।

(चला जाता है)

छठा दृश्य

(स्थान — सबलसिंह का कमरा। समय — एक बजे रात)

सबल — (ज्ञानी से) अब जाकर सो रहो, रात कम है।

ज्ञानी — आप लेटें, मैं चली जाऊँगी। अभी नींद नहीं आती।

सबल — तुम अपने दिल में मुझे बहुत नीच समझ रही होगी?

ज्ञानी — मैं आपको अपना इष्टदेव समझती हूँ।

सबल — क्या इतना पतित हो जाने पर भी?

ज्ञानी — मैली वस्तुओं के मिलने से गंगा का माहात्म्य कम नहीं होता।

सबल — मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि तुम्हें स्पर्श कर सकूँ। पर मेरे हृदय में इस समय तुमसे गले मिलने की प्रबल उत्कंठा है। याद ही नहीं आता कि कभी मेरा मन इतना अधीर हुआ हो, जी चाहता है तुम्हें प्रिये कहूँ, आलिंगन करूँ पर हिम्मत नहीं पड़ती। अपनी ही आँखों में इतना गिर गया हूँ। (ज्ञानी रोती हुई जाने लगती है, सबल रास्ते में खड़ा हो जाता है) प्रिये, इतनी निर्दयता न करो। मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। (रास्ते से हटकर) जाओ! मुझे तुम्हें रोकने का कोई अधिकार नहीं है। मैं पतित हूँ, पापी हूँ, दुष्टाचारी हूँ। न जाने क्यों पिछले दिनों की याद आ गई, जब मेरे और तुम्हारे बीच में यह विच्छेद न था।, जब हम-तुम प्रेम-सरोवर के तट पर विहार करते थे, उसकी तरंगों के साथ झूमते थे। वह कैसे आनंद के दिन थे? अब वह दिन फिर न आएँगी। जाओ, न रोयँगा, पर मुझे बिल्कुल नजरों से न गिरा दिया हो तो प्रेम की चितवन से मेरी तरफ देख लो। मेरा संतप्त हृदय उस प्रेम की फुहार से तृप्त हो जाएगी। इतना भी नहीं कर सकतीं? न सही। मैं तो तुमसे कुछ कहने के योग्य ही नहीं हूँ। तुम्हारे सम्मुख खड़े होते, तुम्हें यह काला मुँह दिखाते, मुझे लज्जा आनी चाहिए थी। पर मेरी आत्मा का पतन हो गया है। हाँ, तुम्हें मेरी एक बात अवश्य माननी पड़ेगी, उसे मैं जबरदस्ती मनवाऊँगा,

जब तक न मानोगी जाने न दूँगा। मुझे एक बार अपने चरणों पर सिर झुकाने दो।

(ज्ञानी रोती हुई अंदर के द्वार की तरफ बढ़ती है)

सबल — क्या मैं अब इस योग्य भी नहीं रहा? हाँ, मैं अब घृणित प्राणी हूँ, जिसकी आत्मा का अपहरण हो चुका है। पूजी जाने वाली प्रतिमा टूटकर पत्थर का टुकड़ा हो जाती है, उसे किसी खंडहर में फेंक दिया जाता है। मैं वही टूटी हुई प्रतिमा हूँ और इसी योग्य हूँ कि ठुकरा दिया जाऊँ। तुमसे कुछ कहने का, तुम्हारी दया-याचना करने के योग्य मेरा मुँह ही नहीं रहा। जाओ। हम तुम बहुत दिनों तक साथ रहे। अगर मेरे किसी व्यवहार से, किसी शब्द से, किसी आक्षेप से तुम्हें दुःख हुआ हो तो क्षमा करना। मुझ-सा अभागा संसार में न होगा जो तुम जैसी देवी पाकर उसकी कद्र न कर सका।

(ज्ञानी हाथ जोड़कर सजल नेत्रों से ताकती है, कंठ से शब्द नहीं निकलता। सबल तुरंत मेज पर से पिस्तौल उठाकर बाहर निकल जाता है)

ज्ञानी — (मन में) हताश होकर चले गए। मैं तस्कीन दे सकती, उन्हें प्रेम के बंधन से रोक सकती तो शायद न जाते। मैं किस मुँह से कहूँ कि यह अभागिनी पतिता तुम्हारे चरणों का स्पर्श करने योग्य नहीं है। वह समझते हैं, मैं उनका तिरस्कार कर रही हूँ, उनसे घृणा कर रही हूँ। उनके इरादे में अगर कुछ कमजोरी थी तो वह मैंने पूरी कर दी। इस यज्ञ की पूर्णाहुति मुझे करनी पड़ी। हा विधाता, तेरी लीला अपरम्पार है। जिस पुरूष पर इस समय मुझे अपना प्राण अर्पण करना चाहिए था। आज मैं उसकी घातिका हो रही हूँ। हा अर्थलोलुपता! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया। मैंने संतान-लालसा के पीछे कुल को कलंक लगा दिया, कुल को धूल में मिला दिया। पूर्वजन्म में न जाने मैंने कौन-सा पाप किया था। चेतनदास, तुमने मेरी सोने की लंका दहन कर दी। मैंने तुम्हें देवता समझकर तुम्हारी आराधना की थी। तुम राक्षस निकले। जिस रूखार को मैंने बाग समझा था। वह बीहड़ निकला। मैंने कमल का फूल तोड़ने के लिए पैर बढ़ाए थे, दलदल में फंस गई, जहाँ से अब निकलना दुस्तर है। पतिदेव ने चलते समय मेज पर से कुछ उठाया था।न जाने कौन-सी चीज थी। काली घटा छाई हुई है। हाथ को हाथ नहीं सूझता। वहाँ कहाँ गए? भगवन्, कहाँ जाऊँ? किससे पूछूँ, क्या करूँ? कैसे उनकी

प्राण-रक्षा करूँ? हो न हो राजेश्वरी के पास गए हों! वहीं इस लीला का अन्त होगी। उसके प्रेम में विह्वल हो रहे हैं। अभी उनकी आशा वह लगी हुई है। मृग-तृष्णा है। वह नीच जाति की स्त्री है, पर सती है। अकेली इस अंधेरी रात में वहाँ कैसे पहुँचूँगी। कुछ भी हो, यहाँ नहीं रहा जाता। बग्घी पर गई थी। रास्ता कुछ-कुछ याद है। ईश्वर के भरोसे पर चलती हूँ। या तो वहाँ पहुँच ही जाऊँगी या इसी टोह में प्राण दे दूँगी। एक बार मुझे उनके दर्शन हो जाते तो जीवन सफल हो जाता। मैं उनके चरणों पर प्राण त्याग देती। यही अंतिम लालसा है। दयानिधि, मेरी अभिलाषा पूरी करो। हा, जननी धरती, तुम क्यों मुझे अपनी गोद में नहीं ले लेतीं! दीपक का ज्वाला-शिखर क्यों मेरे शरीर को भस्म नहीं कर डालता! यह भयंकर अंधकार क्यों किसी जल-जंतु की भाँति मुझे अपने उदर में शरण नहीं देता!

(प्रस्थान)

सातवाँ दृश्य

(स्थान — सबलसिंह का मकान। समय — ढाई बजे रात। सबलसिंह अपने बाग में हौज के किनारे बैठे हुए हैं)

सबल — (मन में) इस जिंदगी पर धिक्कार है। चारों तरफ अंधेरा है, कहीं प्रकाश की झलक तक नहीं सारे मनसूबे, सारे इरादे खाक में मिल गए। अपने जीवन को आदर्श बनाना चाहता था।, अपने कुल को मर्यादा के शिखर पर पहुंचाना चाहता था।, देश और राष्ट' की सेवा करना चाहता था।, समग्र देश में अपनी कीर्ति फैलाना चाहता था। देश को उन्नति के परम स्थान पर देखना चाहता था। उन बड़े-बड़े इरादों का कैसा करुणाजनक अन्त हो रहा है। फले-फूले वृक्ष की जड़ में कितनी बेदर्दी से आरा चलाया जा रहा है। कामलोलुप होकर मैंने अपनी जिन्दगी तबाह कर दी। मेरी दशा उस माँझी की-सी है जो नाव को बोझने के बाद शराब पी ले और नशे में नाव को भंवर में डाल दे। भाई की हत्या करके भी अभीष्ट न पूरा हुआ। जिसके लिए इस पापकुंड में कूदा, वह भी अब मुझसे घृणा करती है। कितनी घोर निर्दयता है। हाय! मैं क्या जानता था। कि राजेश्वरी मन में मेरे अनिष्ट का दृढ़ संकल्प करके यहाँ आई है। मैं क्या जानता था। कि वह मेरे साथ त्रियाचरित्र खेल रही है। एक अमूल्य अनुभव प्राप्त हुआ। स्त्री अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए,

अपने अपमान का बदला लेने के लिए, कितना भयंकर रूप धारण कर सकती है। गऊ कितनी सीधी होती है, पर किसी को अपने बछड़े के पास आते देखकर कितनी सतर्क हो जाती है। सती स्त्रियाँ भी अपने व्रत पर आघात होते देखकर जान पर खेल जाती हैं। कैसी प्रेम में सनी हुई बातें करती थी। जान पड़ता था।, प्रेम के हाथों बिक गई हो, ऐसी सुंदरी, ऐसी सरला, मृदु-प्रकृति, ऐसी विनयशीला, ऐसी कोमल-हृदया रमणियाँ भी छल-कौशल में इतनी निपुण हो सकती हैं! उसकी निठुरता मैं सह सकता था। किंतु ज्ञानी की घृणा नहीं सही जाती, उसकी उपेक्षासूचक दृष्टि के सम्मुख खड़ा नहीं हो सकता। जिस स्त्री का अब तक आराध्य देव था।, जिसकी मुझ पर अखंड भक्ति थी, जिसका सर्वस्व मुझ पर अर्पण था।, वही स्त्री अब मुझे इतना नीच और पतित समझ रही है। ऐसे जीने पर धिक्कार है! एक बार प्यारे अचल को भी देख लूँ। बेटा, तुम्हारे प्रति मेरे दिल में बड़े-बड़े अरमान थे। मैं तुम्हारा चरित्र आदर्श बनाना चाहता था।, पर कोई अरमान न निकला। अब न जाने तुम्हारे उसपर क्या पड़ेगी। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें! लोग कहते हैं प्राण बड़ी प्रिय वस्तु है। उसे देते हुए बड़ा कष्ट होता है। मुझे तो जरा भी शंका, जरा भी भय नहीं है। मुझे तो प्राण देना खेल-सा मालूम हो रहा है। वास्तव में जीवन ही खेल है, विधाता का क्रीड़ा-क्षेत्र! (पिस्तौल निकालकर) हाँ, दोनों गोलियाँ

हैं, काम हो जाएगी। मेरे मरने की सूचना जब राजेश्वरी को मिलेगी तो एक क्षण के लिए उसे शोक तो होगा ही, चाहे फिर हर्ष हो, आँखों में आँसू भर आएँगी। अभी मुझे पापी, अत्याचारी, विषयी समझ रही है, सब ऐब-ही-ऐब दिखाई दे रहे हैं। मरने पर कुछ तो गुणों की याद आएगी। मेरी कोई बात तो उसके कलेजे में चुटकियाँ लेगी। इतना तो जरूर ही कहेगी कि उसे मुझसे सच्चा प्रेम था। शहर में मेरी सार्वजनिक सेवाओं की प्रशंसा होगी। लेकिन कहीं यह रहस्य खुल गया तो मेरी सारी कीर्ति पर पानी फिर जाएगी। यह ऐब सारे गुणों को छिपा लेगा, जैसे सफेद चादर पर काला धब्बा, या स्वर्ग सुंदर चित्र पर एक छींटा। बेचारी ज्ञानी तो यह समाचार पाते ही मूर्च्छित होकर फिर पड़ेगी, फिर शायद कभी न सचेत हो, यह उसके लिए वज्राघात होगी। चाहे वह मुझसे कितनी ही घृणा करे, मुझे कितना ही दुरात्मा समझे, पर उसे मुझसे प्रेम है, अटल प्रेम है, वह मेरा अकल्याण नहीं देख सकती। जब से मैंने उसे अपना वृत्तांत सुनाया है, वह कितनी चिंतित, कितनी सशंक हो गई है। प्रेम के सिवा और कोई शक्ति न थी जो उसे राजेश्वरी के घर खींच ले जाती।

(हलधर चारदीवारी कूदकर बाग में आता है और धीरे-धीरे इधर-उधर ताकता हुआ सबल के कमरे की तरफ जाता है)

हलधर — (मन में) यहाँ किसी की आवाज आ रही है। (भाला संभालकर) यहाँ कौन बैठा हुआ है। अरे! यह तो सबलसिंह ही है। साफ उसी की आवाज है। इस वक्त यहाँ बैठा क्या कर रहा है? अच्छा है यहीं काम तमाम कर दूँगा। कमरे में न जाना पड़ेगा। इसी हौज में फेंक दूँगा। सुनूँ क्या कह रहा है।

सबल — बस अब बहुत सोच चुका। मन इस तरह बहाना ढूंढ रहा है। ईश्वर, तुम दया के सागर हो, क्षमा की मूर्ति हो, मुझे क्षमा करना। अपनी दीनवत्सलता से मुझे वंचित न करना। कहाँ निशाना लगाऊँ? सिर में लगाने से तुरत अचेत हो जाऊँगी। कुछ न मालूम होगा, प्राण कैसे निकलते हैं। सुनता हूँ प्राण निकलने में कष्ट नहीं होता। बस छाती पर निशाना मारूँ।

(पिस्तौल का मुँह छाती की तरफ फेरता है। सहसा हलधर भाला फेंककर झपटता है और सबलसिंह के हाथ से पिस्तौल छीन लेता है)

सबल — (अचम्भे में) कौन?

हलधर — मैं हूँ हलधर।

सबल — तुम्हारा काम तो मैं ही किए देता था। तुम हत्या से बच जाते। उठा लो पिस्तौल।

हलधर — आपके उसपर मुझे दया आती है।

सबल — मैं पापी हूँ, कपटी हूँ। मेरे ही हाथों तुम्हारा घर सत्यानाश हुआ। मैंने तुम्हारा अपमान किया, तुम्हारी इज्जत लूटी, अपने सगे भाई का वध कराया। मैं दया के योग्य नहीं हूँ।

हलधर — कंचनसिंह को मैंने नहीं मारा।

सबल — (उछलकर) सच कहते हो?

हलधर — वह आप ही गंगा में कूदने जा रहे थे। मुझे उन पर भी दया आ गई। मैंने समझा था, आप मेरा सर्वनाश करके भोग-विलास में मस्त हैं। तब मैं आपके खून का प्यासा हो गया था। पर अब देखता हूँ तो आप अपने किए पर लज्जित हैं, पछता रहे हैं, इतने दुःखी हैं कि प्राण तक देने को तैयार हैं। ऐसा आदमी दया के योग्य है। उस पर क्या हाथ उठाऊँ!

सबल — (हलधर के पैरों पर गिरकर) तुमने कंचन की जान बचा ली, इसके लिए मैं मरते दम तक तुम्हारा यश मानूँगा। मैं न जानता था। कि तुम्हारा हृदय इतना कोमल और उदार है। तुम पुण्यात्मा हो, देवता हो, मुझे ले चलो। कंचन को देख लूँ। हलधर,

मेरे पास अगर कुबेर का धन होता तो तुम्हारी भेंट कर देता। तुमने मेरे कुल को सर्वनाश से बचा लिया।

हलधर — मैं सबेरे उन्हें साथ लाऊँगा।

सबल — नहीं, मैं इसी वक्त तुम्हारे साथ चलूँगा। अब सब्र नहीं है।

हलधर — चलिए।

(दोनों फाटक खोलकर चले जाते हैं)

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

(स्थान — डाकुओं का मकान। समय — ढाई बजे रात। हलधर डाकुओं के मकान के सामने बैठा हुआ है)

हलधर — (मन में) दोनों भाई कैसे टूटकर गले मिले हैं। मैं न जानता था। कि बड़े आदमियों में भाई-भाई में भी इतना प्रेम होता है। दोनों के आँसू ही न थमते थे। बड़ी कुशल हुई कि मैं मौके से पहुँच गया, नहीं तो वंश का अन्त हो जाता। मुझे तो दोनों भाइयों से ऐसा प्रेम हो गया है मानो मेरे अपने भाई हैं। मगर आज तो मैंने उन्हें बचा लिया। कौन कह सकता है वह फिर एक-दूसरे के दुश्मन न हो जायेंगी। रोग की जड़ तो मन में जमी हुई है। उसको काटे बिना रोगी की जान कैसे बचेगी। राजेश्वरी के रहते हुए इनके मन की मैल न मिटेगी। दो-चार दिन में इनमें फिर अनबन हो जाएगी। इस अभागिनी ने मेरे कुल में आग लगायी, अब इस कुल का सत्यानाश कर रही है। उसे मौत भी नहीं आ जाती। जब तक जियेगी मुझे कलंकित करती रहेगी। बिरादरी में कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहा। सब लोग मुझे बिरादरी से निकाल देंगे। हुक्का-पानी बन्द कर देंगे। हेठी और बदनामी होगी वह घाते में। यह तो यहाँ महल में रानी बनी बैठी अपने कुकर्म का आनंद उठाया करे और मैं इसके कारण बदनामी उठाऊँ। अब तक उसको मारने का जी न चाहता था। औरतों पर हाथ उठाना नीचता का काम समझता था। पर अब वह नीचता करनी पड़ेगी। उसके किए बिना सब खेल बिगड़ जाएगी।

(चेतनदास का प्रवेश)

चेतनदास — यहाँ कौन बैठा है?

हलधर — मैं हूँ हलधर।

चेतनदास — खूब मिले। बताओ सबलसिंह का क्या हाल हुआ? वध कर डाला?

हलधर — नहीं, उन्हें मरने से बचा लिया

चेतनदास — (खुश होकर) बहुत अच्छा किया। मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई सबलसिंह कहाँ हैं?

हलधर — मेरे घर।

चेतनदास — ज्ञानी जानती है कि वह जिंदा है?

हलधर — नहीं, उसे अब तक इसकी खबर नहीं मिली।

चेतनदास — तो उसे जल्द खबर दो नहीं तो उससे भेंट न होगी। वह घर में नहीं है। न जाने कहाँ गयी? उसे यह खबर मिल जाएगी तो कदाचित् उसकी जान बच जाए। मैं उसकी टोह में जा रहा हूँ। इस अंधेरी रात में कहाँ खोजूँ? (प्रस्थान)

हलधर — (मन में) यह डायन न जाने कितनी जानें लेकर संतुष्ट होगी। ज्ञानीदेवी है। उसने सबलसिंह को कमरे में न देखा होगी। समझी होगी वह गंगा में डूब मरे। कौन जाने इसी इरादे से वह भी घर से निकल खड़ी हुई हो, चलकर अपने आदमियों को उसका पता लगाने के लिए दौड़ा दूँ। उसकी जान मुफ्त में चली जाएगी। क्या दिल्लगी है कि रानी तो मारी-मारी फिरे और कुलटा महल में सुख की नींद सोये।

(अचल दूसरी ओर से हवाई बंदूक लिये आता है)

हलधर — कौन?

अचल — अचलसिंह, कुँअर सबलसिंह का पुत्र।

हलधर — अच्छा, तुम खूब आ गये पर अंधेरी रात में तुम्हें डर नहीं लगा?

अचल — डर किस बात का? मुझे डर नहीं लगता। बाबूजी ने मुझे बताया है कि डरना पाप है`

हलधर — जाते कहाँ हो?

अचल — कहीं नहीं।

हलधर — तो इतनी रात गए घर से क्यों निकले?

अचल — तुम कौन हो?

हलधर — मेरा नाम हलधर है।

अचल — अच्छा, तुम्हीं ने माताजी की जान बचायी थी?

हलधर — जान तो भगवान् ने बचायी, मैंने तो केवल डाकुओं को भगा दिया था। तुम इतनी रात गए अकेले कहाँ जा रहे हो?

अचल — किसी से कहोगे तो नहीं?

हलधर — नहीं, किसी से न कहूँगा।

अचल — तुम बहादुर आदमी हो, मुझे तुम्हारे उसपर विश्वास है। तुमसे कहने में शर्म नहीं है। यहाँ कोई वेश्या है। उसने चाचा जी को और बाबूजी को विष देकर मार डाला है। अम्माँजी ने शोक से प्राण त्याग दिए। वह स्त्री थीं, क्या कर सकती थीं। अब मैं उसी वेश्या के घर जा रहा हूँ। इसी वक्त बंदूक से उसका सिर उड़ा दूँगा। (बंदूक तानकर दिखाता है)

हलधर — तुमसे किसने कहा?

अचल — मिसराइन ने, चाचाजी कल से घर पर नहीं हैं। बाबूजी भी दस बजे रात से नहीं हैं। न घर में अम्माँ का पता है। मिसराइन सब हाल जानती हैं।

हलधर — तुमने वेश्या का घर देखा है?

अचल — नहीं, घर तो नहीं देखा है।

हलधर — तो उसे मारोगे उसे?

अचल — किसी से पूछ लूँगा।

हलधर — तुम्हारे चाचाजी और बाबूजी तो मेरे घर में हैं।

अचल — झूठ कहते हो, दिखा दोगे?

हलधर — कुछ इनाम दो तो दिखा दूँ।

अचल — चलो, क्या दिखाओगे! वह लोग अब स्वर्ग में होंगे। हाँ, राजेश्वरी का घर दिखा दो तो जो कहो वह दूँ।

हलधर — अच्छा मेरे साथ आओ, मगर बंदूक ले लूँगा।

(दोनों घर में जाते हैं, सबल और कंचन चकित होकर अचल को देखते हैं, अचल दौड़कर बाप की गरदन से चिमट जाता है)

हलधर — (मन में) अब यहाँ नहीं रह सकता। फिर तीनों रोने लगे? बाहर चलूँ। कैसा होनहार बालक है। (बाहर आकर मन में) यह बच्चा तक उसे वेश्या कहता है। वेश्या है ही। सारी

दुनिया यही कहती होगी। अब तो और भी गुल खिलेगी। अगर दोनों भाइयों ने उसे त्याग दिया तो पेट के लिए उसे अपनी लाज बेचनी पड़ेगी। ऐसी हयादार नहीं है कि जहर खाकर मर जाए। जिसे मैं देवी समझता था। वह ऐसी कुल-कलंकिनी निकली! तूने मेरे साथ ऐसा छल किया! अब दुनिया को कौन मुँह दिखाऊँ। सब की एक ही दवा है। न बांस रहे न बांसुरी बजे। तेरे जीने से सबकी हानि है। किसी का लाभ नहीं तेरे मरने से सबका लाभ है, किसी की हानि नहीं उससे कुछ पूछना व्यर्थ है। रोएगी, गिड़गिड़ाएगी, पैरों पड़ेगी। जिसने लाज बेच दी वह अपनी जान बचाने के लिए सभी तरह की चालें चल सकती है। कहेगी, मुझे सबलसिंह जबरदस्ती निकाल लाए, मैं तो आती न थी। न जाने क्या-क्या बहाने करेगी! उससे सवाल-जवाब करने की जरूरत नहीं चलते ही काम तमाम कर दूँगा

(हथियार संभालकर चल खड़ा होता है)

दूसरा दृश्य

(स्थान — शहर की एक गली। समय — तीन बजे रात, इंस्पेक्टर और थानेदार की चेतनदास से मुठभेड़)

इंस्पेक्टर — महाराज, खूब मिले। मैं तो आपके ही दौलतखाने की तरफ जा रहा था। लाइए दूध के धुले हुए पूरे एक हजार, कमी की गुंजाइश नहीं, बेशी की हद नहीं।

थानेदार — आपने जमानत न कर ली होती तो उधर भी हजार-पाँच सौ पर हाथ साफ करता।

चेतनदास — इस वक्त मैं दूसरी फिक्र में हूँ। फिर कभी आना।

इंस्पेक्टर — जनाब, हम आपके गुलाम नहीं हैं जो बार-बार सलाम करने को हाजिर हों। आपने आज का वादा किया था। वादा पूरा कीजिए। कील व काल की जरूरत नहीं।

चेतनदास — कह दिया, मैं इस समय दूसरी चिंता में हूँ। फिर इस संबंध में बातें होंगी।

इंस्पेक्टर — आपका क्या एतबार, इसी वक्त की गाड़ी से हरिद्वार की राह लें। पुलिस के मुआमले नकद होते हैं।

एक सिपाही — लाओ नगद-नारायन निकालो। पुलिस से ई फेरफार न चल पइहैं। तुमरे ऐसे साधुन का इहाँ रोज चराइत हैं।

इंस्पेक्टर — आप हैं किस गुमान में! यह चालें अपने भोले-भाले चेले-चापड़ों के लिए रहने दीजिए, जिन्हें आप नजात देते हैं। हमारी नजात के लिए आपके रुपये काफी हैं। उससे हम फरिश्तों को भी राह पर लगा हुई। दारोगाजी, वह शेर आपको याद है?

दारोगा — जी हाँ, ऐ तू ख़ुदा नई, बलेकिन बख़ुदा हाशा रब्बी व गाफिल हो जाती।

इंस्पेक्टर — मतलब यह है कि रुपया ख़ुदा नहीं है लेकिन ख़ुदा के दो सबसे बड़े औसाफ उसमें मौजूद हैं। परवरिश करना और इंसान की जरूरतों को रफा करना।

चेतनदास — कल किसी वक्त आइए।

इंस्पेक्टर — (रास्ते में खड़े होकर) कल आने वाले पर लानत है। एक भले आदमी की इज्जत खाक में मिलवाकर अब आप यों झांसा देना चाहते हैं। कहीं साहब बहादुर ताड़ जाते तो नौकरी के लाले पड़ जाते।

चेतनदास — रास्ते से हटो। (आगे बढ़ना चाहता है)

इंस्पेक्टर — (हाथ पकड़कर) इधर आइए, इस सीनाजोरी से काम न चलेगा!

(चेतनदास हाथ झटककर छुड़ा लेता है और इंस्पेक्टर को जोर से धक्का मार कर गिरा देता है)

दारोगा — गिरफ्तारी कर लो। रहजन है।

चेतनदास — अगर कोई मेरे निकट आया तो गर्दन उड़ा दूँगा।

(दारोगा पिस्तौल उठाता है, लेकिन पिस्तौल नहीं चलती, चेतनदास उसके हाथ से पिस्तौल छीनकर उसकी छाती पर निशाना लगाता है)

दारोगा — स्वामीजी, ख़ुदा के वास्ते रहम कीजिए। ताजीस्त आपका गुलाम रहूँगा।

चेतनदास — मुझे तुझ-जैसे दुष्टों की गुलामी की जरूरत नहीं (दोनों सिपाही भाग जाते हैं। थानेदार चेतनदास के पैरों पर फिर पड़ता है) बोल, कितने रुपये लेगा?

थानेदार — महाराज, मेरी जाँ बख्श दीजिए। जिंदा रहूँगा तो आपके एकबाल से बहुत रुपये मिलेंगे!

चेतनदास — अभी गरीबों को सताने की इच्छा बनी हुई है। तुझे मार क्यों न डालूँ। कम-से-कम एक अत्याचारी का भार तो पृथ्वी पर कम हो जाये।

थानेदार — नहीं महाराज, खुदा के लिए रहम कीजिए। बाल-बच्चे दाने बगैर मर जाएँगी। अब कभी किसी को न सताऊँगा। अगर एक कौड़ी भी रिश्वत लूँ तो मेरे अस्ल में गर्क समझिए। कभी हराम के माल के करी। न जाऊँगी।

चेतनदास — अच्छा, तुम इस इंस्पेक्टर के सिर पर पचास जूते गिनकर लगाओ तो छोड़ दूँ।

थानेदार — महाराज, वह मेरे अफसर हैं। मैं उनकी शान में ऐसी बे-अदबी क्यों कर सकता हूँ। रिपोर्ट कर दें तो बर्खास्त हो जाऊँ।

चेतनदास — तो फिर आँखें बन्द कर लो और ख़ुदा को याद करो, घोड़ा गिरता है।

थानेदार — हुज़ूर जरा ठहर जायें, हुक्म की तामील करता हूँ। कितने जूते लगाऊँ?

चेतनदास — पचास से कम न ज्यादा।

थानेदार — इतने जूते पड़ेंगे तो चांद खुल जाएगी। नाल लगी हुई है।

चेतनदास — कोई परवाह नहीं उतार लो जूते।

(थानेदार जूते पैर से निकालकर इंस्पेक्टर के सिर पर लगाता है, इंस्पेक्टर चौंककर उठ बैठता है, दूसरा जूता फिर पड़ता है)

इंस्पेक्टर — शैतान कहीं का।

थानेदार — मैं क्या करूँ? बैठ जाइए, पचास लगा लूँ। इतनी इनायत कीजिए! जान तो बचे।

(इंस्पेक्टर उठकर थानेदार से हाथापाई करने लगता है, दोनों एक दूसरे को गालियाँ देते हैं, दांत काटते हैं)

चेतनदास — जो जीतेगा उसे इनाम दूँगा। मेरी कुटी पर आना। खूब लड़ो, देखें कौन बाजी ले जाता है। (प्रस्थान)

इंस्पेक्टर — तुम्हारी इतनी मजाल! बर्खास्त न करा दिया तो कहना।

थानेदार — क्या करता, सीने पर पिस्तौल का निशाना लगाए तो खड़ा था।

इंस्पेक्टर — यहाँ कोई सिपाही तो नहीं है?

थानेदार — वह दोनों तो पहले ही भाग गए।

इंस्पेक्टर — अच्छा, खैरियत चाहो तो चुपके से बैठ जाओ और मुझे गिन कर सौ जूते लगाने दो, वरना कहे देता हूँ कि सुबह को तुम थाने में न रहोगी। पगड़ी उतार लो।

थानेदार — मैंने तो आपकी पगड़ी नहीं उतारी थी।

इंस्पेक्टर — उस बदमाश साधु को यह सूझी ही नहीं।

थानेदार — आप तो दूसरे ही हाथ पर उठ खड़े हुए थे!

इंस्पेक्टर — खबरदार, जो यह कलमा फिर मुँह से निकला। दो के दस तो तुम्हें जरूर लगाऊँगा। बाकी फी पापोश एक रुपये के हिसाब से माफ कर सकता हूँ।

(दोनों सिपाही आ जाते हैं, दारोगा सिर पर साफा रख लेता है, इंस्पेक्टर क्रोधपूर्ण नेत्रों से उसे देखता है और सब गश्त पर निकल जाते हैं)

तीसरा दृश्य

(स्थान — राजेश्वरी का कमरा। समय — तीन बजे रात। फानूस जल रही है, राजेश्वरी पानदान खोले फर्श पर बैठी है)

राजेश्वरी — (मन में) मेरे मन की सारी अभिलाषाएँ पूरी हो गयीं। जो प्रण करके घर से निकली थी वह पूरा हो गया। जीवन सफल हो गया। अब जीवन में कौन-सा सुख रखा है। विधाता की लीला विचित्र है। संसार के और प्राणियों का जीवन धर्म से सफल होता है। अहिंसा ही सबकी मोक्षदाता है। मेरा जीवन अधर्म से सफल हुआ, हिंसा से ही मेरा मोक्ष हो रहा है। अब कौन मुँह लेकर मधुबन जाऊँ, मैं कितनी ही पतिव्रता बनूँ, किसे विश्वास आएगा? मैंने यहाँ कैसे अपना धर्म निबाहा, इसे कौन

मानेगा? हाय! किसकी होकर रहूँगी? हलधर का क्या ठिकाना? न जाने कितनी जानें ली होंगी, कितनों का घर लूटा होगा, कितनों के खून से हाथ रंगे होंगे, क्या?क्या कुकर्म किये होंगे। वह अगर मुझे पतिता और कुलटा समझते हैं तो मैं भी उन्हें नीच और अधम समझती हूँ। वह मेरी सूरत न देखना चाहते हों तो मैं उनकी परछाई भी अपने उसपर नहीं पड़ने देना चाहती। अब उनसे मेरा कोई संबंध नहीं मैं अनाथा हूँ, अभागिनी हूँ, संसार में कोई मेरा नहीं है।

(कोई किवाड़ खटखटाता है, लालटेन लेकर नीचे जाती है, और किवाड़ खोलती है, ज्ञानी का प्रवेश)

ज्ञानी — बहिन, क्षमा करना, तुम्हें असमय कष्ट दिया। मेंरे स्वामीजी यहाँ हैं या नहीं? मुझे एक बार उनके दर्शन कर लेने दो।

राजेश्वरी — रानीजी, सत्य कहती हूँ वह यहाँ नहीं आये।

ज्ञानी — यहाँ नहीं आये!

राजेश्वरी — न! जब से गए हैं फिर नहीं आये।

ज्ञानी — घर पर भी नहीं हैं। अब किधर जाऊँ? भगवन्, उनकी रक्षा करना। बहिन, अब मुझे उनके दर्शन न होंगे। उन्होंने कोई भयंकर काम कर डाला। शंका से मेरा हृदय कांप रहा है। तुमसे उन्हें प्रेम था। शायद वह एक बार फिर आएँ। उनसे कह देना, ज्ञानी तुम्हारे पदरज को शीश पर चढ़ाने के लिए आयी थी। निराश होकर चली गयी। उनसे कह देना वह अभागिनी, भ्रष्टा, तुम्हारे प्रेम के योग्य नहीं रही।

(हीरे की कनी खा लेती है)

राजेश्वरी — रानीजी, आप देवी हैं! वह पतित हो गए हों, पर आपका चरित्र उज्ज्वल रत्न है। आप क्यों क्षोभ करती हैं!

ज्ञानी — बहिन, कभी यह घमंड था।, पर अब नहीं है।

(उसका मुख पीला होने लगता है और पैर लड़खड़ाते हैं)

राजेश्वरी — रानीजी, कैसा जी है?

ज्ञानी — कलेजे में आग-सी लगी हुई है। थोड़ा-सा ठंडा पानी दो। मगर नहीं, रहने दो। जबान सूखी जाती है। कंठ में कांटे पड़ गए हैं। आत्मगौरव से बढ़कर कोई चीज नहीं उसे खोकर जिये तो क्या जिये!

राजेश्वरी — आपने कुछ खा तो नहीं लिया?

ज्ञानी — तुम आज ही यहाँ से चली जाओ। अपने पति के चरणों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा करा लो। वह वीरात्मा हैं। एक बार मुझे डाकुओं से बचाया था। तुम्हारे उसपर दया करेंगी। ईश्वर इस समय उनसे मेरी भेंट करवा देते तो मैं उनसे शपथ खाकर कहती, इस देवी के साथ तुमने बड़ा अन्याय किया है। वह ऐसी पवित्र है जैसे फूल की पंखड़ियों पर पड़ी हुई ओस की बूंदें या प्रभात काल की निर्मल किरणें। मैं सिद्ध करती कि इसकी आत्मा पवित्र है।

(पीड़ा से विकल होकर बैठ जाती है)

राजेश्वरी — (मन में) इन्होंने अवश्य कुछ खा लिया। आँखें पथरायी जाती हैं, पसीना निकल रहा है। निराशा और लज्जा ने अन्त में इनकी जान ही लेकर छोड़ी, मैं इनकी प्राणघातिका हूँ।

मेरे ही कारण इस देवी की जान जा रही है। इसे मर्यादा-पालन कहते हैं। एक मैं हूँ कि कष्ट और अपमान भोगने के लिए बैठी हूँ। नहीं देवी, मुझे भी साथ लेती चलो। तुम्हारे साथ मेरी भी लाज रह जाएगी। तुम्हें ईश्वर ने क्या नहीं दिया। दूध-पूत, मान-महातम सभी कुछ तो है। पर केवल पति के पतित हो जाने के कारण तुम अपने प्राण त्याग रही हो, तो मैं, जिसका आँसू पोंछने वाला भी कोई नहीं, कौन-सा सुख भोगने के लिए बैठी रहूँ।

ज्ञानी — (सचेत होकर) पानी-पानी...

राजेश्वरी — (कटोरे में पानी देती हुई) पी लीजिए।

ज्ञानी — (राजेश्वरी को ध्यान से देखकर) नहीं, रहने दो। पतिदेव के दर्शन कैसे पाऊँ। मेरे मरने का हाल सुनकर उन्हें बहुत दुःख होगा राजेश्वरी, उन्हें मुझसे बहुत प्रेम है। इधर वह मुझसे इतने लज्जित थे कि मेरी तरफ सीधी आंख से ताक भी न सकते थे। (फिर अचेत हो जाती है)

राजेश्वरी — (मन में) भगवन् अब यह शोक देखा नहीं जाता। कोई और स्त्री होती तो मेरे खून की प्यासी हो जाती। इस देवी के हृदय में कितनी दया है। मुझे इतनी नीची समझती हैं कि मेरे हाथ का पानी भी नहीं पीतीं, पर व्यवहार में कितनी भलमनसाहत

है। मैं ऐसी दया की मूरत की घातिका हूँ। मेरा क्या अन्त होगा!

ज्ञानी — हाय, पुत्र-लालसा! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया। राजेश्वरी, साधुओं का भेस देखकर धोखे में न आना। (आँखें बन्द कर लेती है)

राजेश्वरी — कभी किसी साधु ने इसे जट कर रास्ता लिया होगा। वही सुध आ रही है। तुम तो चली, मेरे लिए कौन रास्ता है? वह डाकू ही हो गए हैं। अब तक सबलसिंह के भय से इधर न आते थे। अब वह मुझे कब जीता छोड़ेंगे? न जाने क्या?क्या दुर्गति करें? मैं जीना भी तो नहीं चाहती। मन, अब संसार का मायामोह छोड़ो। संसार में तुम्हारे लिए अब जगह नहीं है। हा! यही करना था। तो पहले ही क्यों न किया? तीन प्राणियों की जान लेकर तब यह सूझी। कदाचित् तब मुझे मौत से इतना डर न लगता। अब तो जमराज का ध्यान आते ही रोयें खड़े हो जाते हैं। पर यहाँ की दुर्दशा से वहाँ की दुर्दशा तो अच्छी। कोई हँसने वाला तो न होगा। (रस्सी का फंदा बना कर छत से लटका देती है) बस, एक झटके में काम तमाम हो जाएगी। इतनी-सी जान के लिए आदमी कैसे-कैसे जतन करता है। (गले में फंदा डालती है) दिल काँपता है। जरा-सा फंदा खींच लूँ और बसब दम घुटने लगेगी। तड़प-तड़पकर जान निकलेगी। (भय से

काँप उठती है) मुझे इतना डर क्यों लगता है? मैं अपने को इतनी कायर न समझती थी। सास के एक ताने पर, पति की एक कड़ी बात पर स्त्रियाँ प्राण दे देती हैं। लड़कियाँ अपने विवाह की चिंता से माता-पिता को बचाने के लिए प्राण दे देती हैं। पहले स्त्रियाँ पति के साथ सती हो जाती थीं। डर क्या है? जो भगवान् यहाँ हैं वही भगवान् वहाँ हैं। मैंने कोई पाप नहीं किया है। एक आदमी मेरा धर्म बिगाड़ना चाहता था। मैं और किसी तरह उससे न बच सकती थी। मैंने कौशल से अपने धर्म की रक्षा की। यह पाप नहीं किया। मैं भोग-विलास के लोभ से यहाँ नहीं आई! संसार चाहे मेरी कितनी ही निन्दा करे, ईश्वर सब जानते हैं। उनसे डरने का कोई काम नहीं

(फंदा खींच लेती है। तलवार लिए हुए हलधर का प्रवेश)

हलधर — (आश्चर्य से) अरे! यहाँ तो इसने फाँसी लगा रखी है।

(तलवार से तुरत रस्सी काट देता है और राजेश्वरी को संभालकर फर्श पर लिटा देता है)

राजेश्वरी — (सचेत होकर) वही तलवार मेरी गर्दन पर क्यों नहीं चला देते?

हलधर — जो आप ही मर रही है उसे क्या मारूँ?

राजेश्वरी — अभी इतनी दया है?

हलधर — वह तुम्हारी लाज की तरह बाजार में बेचने की चीज नहीं है।

ज्ञानी — (होश में आकर) कौन कहता है कि इसने अपनी लाज बेच दी? यह आज भी उतनी ही पवित्र है जितनी अपने घर थी। इसने अपनी लाज बेचने के लिए इस मार्ग पर पग नहीं रखा, बल्कि अपनी लाज की रक्षा करने के लिए अपनी, लाज की रक्षा के लिए इसने मेरे कुल का सर्वनाश कर दिया। इसीलिए इसने यह कपटभेष धारण किया। एक सम्पन्न पुरूष से बचने का इसके सिवा और कौन-सा उपाय था। तुम उस पर लांछन लगाकर बड़ा अन्याय कर रहे हो, उसने तुम्हारे कुल को कलंकित नहीं किया, बल्कि उसे उज्ज्वल कर दिया। ऐसी बिरली ही कोई स्त्री ऐसी अवस्था में अपने व्रत पर अटल रह सकती थी। यह चाहती तो आजीवन सुख भोग करती, पर इसने धर्म को स्वाद-लिप्सा की भेंट नहीं चढ़ाया। आह! अब नहीं बोला जाता। बहुत-सी बातें मन में

थीं, सिर में चक्कर आ रहा है, स्वामी के दर्शन न कर सकी (बेहोश हो जाती है)

हलधर — ज्ञानी हैं क्या?

राजेश्वरी — सबल का दर्शन पाने की आशा से यहाँ आयी थीं, किंतु बेचारी की लालसा मन में रही जाती है। न जाने उनकी क्या गत हुई?

हलधर — मैं अभी उन्हें लाता हूँ।

राजेश्वरी — क्या अभी वह...

हलधर — हाँ, उन्होंने प्राण देना चाहा था, पिस्तौल का निशाना छाती पर लगा लिया था, पर मैं पहुँच गया और उनके हाथ से पिस्तौल छीन ली। दोनों भाई वहीं हैं। तुम इनके मुँह पर पानी के छींटे देती रहना। गुलाबजल तो रखा ही होगा, उसे इनके मुँह में टपकाना, मैं अभी आता हूँ। (जल्दी से चला जाता है)

राजेश्वरी — (मन में) मैं समझती थी इनका स्वरूप बदल गया होगा। दया नाम को भी न रही होगी। नित्य डाका मारते होंगे, आचरण भ्रष्ट हो गया होगा। पर इनकी आँखों में तो दया की जोत झलकती हुई दिखाई देती है। न जाने कैसे दोनों भाइयों की जान बचा ली। कोई दूसरा होता तो उनकी घात में लगा रहता

और अवसर पाते ही प्राण ले लेता। पर इन्होंने उन्हें मौत के मुँह से निकाल दिया। क्या ईश्वर की लीला है कि एक हाथ से विष पिलाते हैं और दूसरे हाथ से अमृत मुझी को कौन बचाता। सोचता कि मर रही है, मरने दो। शायद यह मुझे मारने के ही लिए यहाँ तलवार लेकर आए होंगे। मुझे इस दशा में देखकर दया आ गई। पर इनकी दया पर मेरा जी झुंझला रहा है। मेरी यह बदनामी यह जगहंसाई बिल्कुल निष्फल हो गई। इसमें जरूर ईश्वर का हाथ है। सबलसिंह के परोपकार ने उन्हें बचाया। कंचनसिंह की भक्ति ने उनकी रक्षा की। पर इस देवी की जान व्यर्थ जा रही है। इसका दोष मेरी गरदन पर है। इस एक देवी पर कई सबलसिंह भेंट किए जा सकते हैं! (ज्ञानी को ध्यान से देखकर) आँखें पथरा गई, सांस उखड़ गई, पति के दर्शन न कर सकेंगी, मन की कामना मन में ही रह गयी। (गुलाबजल के छींटें देकर) छनभर और...

ज्ञानी — (आँखें खोलकर) क्या वह आ गए? कहाँ हैं, जरा मुझे उनके पैर दिखा दो।

राजेश्वरी — (सजल नयन होकर) आते ही होंगे, अब देर नहीं है। गुलाबजल पिलाऊँ?

ज्ञानी — (निराशा से) न आएँगे, कह देना तुम्हारे चरणों की याद में (मूर्च्छित हो जाती है)

(चेतनदास का प्रवेश)

राजेश्वरी — यह समय भिक्षा माँगने का नहीं है। आप यहाँ कैसे चले आए?

चेतनदास — इस समय न आता तो जीवनपर्यन्त पछताता। क्षमा-दान माँगने आया हूँ।

राजेश्वरी — किससे?

चेतनदास — जो इस समय प्राण त्याग रही है।

ज्ञानी — (आँखें खोलकर) क्या वह आ गए? कोई अचल को मेरी गोद में क्यों नहीं रख देता?

चेतनदास — देवी, सब-के-सब आ रहे हैं। तुम जरा यह जड़ी मुँह में रख लो। भगवान् चाहेंगे तो सब कल्याण होगा।

ज्ञानी — कल्याण अब मेरे मरने में ही है।

चेतनदास — मेरे अपराध क्षमा करो।

(ज्ञानी के पैरों पर फिर पड़ता है)

ज्ञानी — यह भेष त्याग दो। भगवान् तुम पर दया करें।

(उसके मुँह से खून निकलता है और प्राण निकल जाते हैं, अन्तिम शब्द उसके मुँह से यही निकलता है, अचल तू अमर हो...)

राजेश्वरी — अन्त हो गया। (रोती है) मन की अभिलाषा मन में ले गई। पति और पुत्र से भेंट न हो सकी।

चेतनदास — देवी थी।

(सबलसिंह, कंचनसिंह, अचल, हलधर सब आते हैं)

राजेश्वरी — स्वामीजी, कुछ अपनी सिद्धि दिखाइए। एक पल-भर के लिए सचेत हो जाती तो उनकी आत्मा शांत हो जाती।

चेतनदास — अब ब्रह्मा भी आएँ तो कुछ नहीं कर सकते।

(अचल रोता हुआ माँ के शव से लिपट जाता है, सबल को ज्ञानी की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं पड़ती।

राजेश्वरी — आप लोग एक पल-भर पहले आ जाते तो इनकी मनो- कामना पूरी हो जाती। आपकी ही रट लगाए हुए थीं। अन्तिम शब्द जो उनके मुँह से निकला वह अचलसिंह का नाम था।

सबल — यह मेरी दुष्टता का दंड है। हलधर, अगर तुमने मेरी प्राण रक्षा न की होती तो मुझे यह शोक न सहना पड़ता। ईश्वर बड़े न्यायी हैं। मेरे कर्मों का इससे उचित दंड हो ही नहीं सकता था। मैं तुम्हारे घर का सर्वनाश करना चाहता था। विधाता ने मेरे घर का सर्वनाश कर दिया। आज मेरी आँखें खुल गयीं। मुझे विदित हो रहा है कि ऐश्वर्य और सम्पत्ति जिस पर मानव-समाज मिटा हुआ है, जिसकी आराधना और भक्ति में हम अपनी आत्माओं को भी भेंट कर देते हैं, वास्तव में एक प्रचंड ज्वाला है, जो मनुष्य के हृदय को जलाकर भस्म कर देती है। यह समस्त पृथ्वी किन प्राणियों के पाप-भार से दबी हुई है? वह कौन से लोग हैं जो दुर्व्यसनों के पीछे नाना प्रकार के पापाचार कर रहे हैं? वेश्याओं की अट्टालिकाएँ किन लोगों के दम से रौनक पर हैं? किनके घरों

की महिलाएँ रो-रोकर अपना जीवनक्षेप कर रही हैं? किनकी बंदूकों से जंगल के जानवरों की जान संकट में पड़ी रहती है? किन लोगों की महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आए दिन समर भूमि रक्तमयी होती रहती है। किनके सुख भोग करने के लिए गरीबों को आए दिन बेगारें भरनी पड़ती हैं? यह वही लोग हैं जिनके पास ऐश्वर्य है, सम्पत्ति है, प्रभुत्व है, बल है। उन्हीं के भार से पृथ्वी दबी हुई है, उन्हीं के नखों से संसार पीड़ित हो रहा है। सम्पत्ति ही पाप का मूल है, इसी से कुवासनाएँ जागृत होती हैं, इसी से दुर्व्यसनों की सृष्टि होती है। गरी। आदमी अगर पाप करता है तो क्षुधा की तृप्ति के लिए। धनी पुरूष पाप करता है अपनी कुवृत्तियों, और कुवासनाओं की पूर्ति के लिए। मैं इसी व्याधि का मारा हुआ हूँ। विधाता ने मुझे निर्धन बनाया होता, मैं भी अपनी जीविका के लिए पसीना बहाता होता, अपने बाल-बच्चों के उदर-पालन के लिए मजूरी करता होता तो मुझे यह दिन न देखना पड़ता, यों रक्त के आँसू न रोने पड़ते। धनीजन पुण्य भी करते हैं, दान भी करते हैं, दुःखी आदमियों पर दया भी करते हैं। देश में बड़ी-बड़ी धर्मशालाएँ, सैकड़ों पाठशालाएँ, चिकित्सालय, तालाब, कुएँ उनकी कीर्ति के स्तम्भ रूप खड़े हैं, उनके दान से सदाव्रत चलते हैं, अनाथों और विधवाओं का पालन होता है, साधुओं और अतिथियों का सत्कार होता है, कितने ही विशाल

मन्दिर सजे हुए हैं, विद्या की उन्नति हो रही है, लेकिन उनकी अपकीर्तियों के सामने उनकी सुकीर्तियाँ अंधेरी रात में जुगुनू की चमक के समान हैं, जो अंधकार को और भी गहन बना देती हैं। पाप की कालिमा दान और दया से नहीं धुलती। नहीं, मेरा तो यह अनुभव है कि धनी जन कभी पवित्र भावों से प्रेरित हो ही नहीं सकते। उनकी दानशीलता, उनकी भक्ति, उनकी उदारता, उनकी दीन-वत्सलता वास्तव में उनके स्वार्थ को सिद्ध करने का साधन-मात्र है। इसी टट्टी की आड़ में वह शिकार खेलते हैं। हाय क्क तुम लोग मन में सोचते होगे, यह रोने और विलाप करने का समय है, धन और सम्पदा की निंदा करने का नहीं मगर मैं क्या करूँ? आँसुओं की अपेक्षा इन जले हुए शब्दों से, इन फफोलों के फोड़ने से, मेरे चित्त को अधिक शांति मिल रही है। मेरे शोक हृदय-दाह, और आत्मग्लानि का प्रवाह केवल लोचनों द्वारा नहीं हो सकता, उसके लिए ज्यादा चौड़े, ज्यादा स्थूल मार्ग की जरूरत है। हाय! इस इस देवी में अनेक गुण थे। मुझे याद नहीं आता कि इसने कभी एक अप्रिय शब्द भी मुझसे कहा हो, वह मेरे प्रेम में मग्न थी। आमोद और विलास से उसे लेश-मात्र भी प्रेम न था। वह संन्यासियों का जीवन व्यतीत करती थी। मेरे प्रति उनके हृदय में कितनी श्रद्धा थी, कितनी शुभकामना। जब तक जी मेरे लिए जी और जब मुझे सत्पथ से हटते देखा तो यह शोक उसके

लिए असह्य हो गया। हाय ,मैं जानता कि वह ऐसा घातक संकल्प कर लेगी तो अपने आत्मपतन का वृत्तांत उससे न कहता! पर उसकी सहृदयता और सहानुभूति के रसास्वादन से मैं अपने को रोक न सका। उसकी यह क्षमा, आत्मकृपा कभी न भूलेगी जो इस वृत्तांत को सुनकर उसके उदास मुख पर झलकने लगी। रोष या क्रोध का लेश-मात्र भी चिन्ह न था। वह दयामूर्ति सदा के लिए मेरे हृदयगृह को उजाड़ कर अदृश्य हो गई। नहीं, मैंने उसे पटककर चूर-चूर कर दिया। (रोता है) हाय, उसकी याद अब मेरे दिल से कभी न निकलेगी।

चौथा दृश्य

(स्थान — गुलाबी का मकान। समय — दस बजे रात)

गुलाबी — अब किसके बल पर कूदूँ। पास जो जमापूंजी थी वह निकल गई। तीन-चार दिन के अन्दर क्या-से-क्या हो गया। बना-बनाया घर उजड़ गया। जो राजा थे वह रंक हो गए। जिस देवी की बदौलत इतनी उम्र सुख से कटी वह संसार से उठ

गयीं। अब वहाँ पेट की रोटियों के सिवा और क्या रखा है। न उधर ही कुछ रहा, न इधर ही कुछ रहा। दोनों लोक से गई। उस कलमुँहे साधु का कहीं पता नहीं न जाने कहाँ लोप हो गया। रंगा हुआ सियार था। मैं भी उसके छल में आ गई। अब किसके बल पर कूदूँ। बेटा-बहू यों ही बात न पूछते थे, अब तो एक बूंद पानी को तरसूँगी। अब किस दावे से कहूँगी, मेरे नहाने के लिए पानी रख दे, मेरी साड़ी छांट दे, मेरा बदन दाब दे। किस दावे पर धौंस जमाऊँगी। सब रुपये के मीत हैं। दोनों जानते थे, अम्माँ के पास धन है। इसलिए डरते थे, मानते थे, जिस कल चाहती थी उठाती थी, जिस कल चाहती थी बैठाती थी। उस धूर्त साधु को पाऊँ तो सैकड़ों गालियाँ सुनाऊँ, मुँह नोच लूँ। अब तो मेरी दशा उस बिल्ली की-सी है जिसके पंजे कट गए हों, उस बिच्छु की-सी जिसका डंक टूट गया हो, उस रानी की-सी जिसे राजा ने आँखों से गिरा दिया हो,

चम्पा — अम्माँ, चलो, रसोई तैयार है।

गुलाबी — चलो बेटी, चलती हूँ। आज मुझे ठाकुर साहब के घर से आने में देर हो गई। तुम्हें बैठने का कष्ट हुआ।

चम्पा — (मन में) अम्माँ आज इतने प्यार से क्यों बातें कर रही हैं, सीधी बात मुँह से निकलती ही न थी। (प्रकट) कुछ कष्ट नहीं हुआ, अम्माँ, कौन अभी तो नौ बजे हैं।

गुलाबी — भृगुनाथ ने भोजन कर लिया है न?

चम्पा — (मन में) कल तक को अम्माँ पहले ही खा लेती थीं, बेटे को पूछती तक न थीं, आज क्यों इतनी खातिर कर रही हैं? (प्रकट) तुम चलकर खा लो, हम लोगों को तो सारी रात पड़ी है।

(गुलाबी रसोई में जाकर अपने हाथों से पानी निकालती है)

चम्पा — तुम बैठो अम्माँ, मैं पानी रख देती हूँ।

गुलाबी — नहीं बेटी, मटका भरा हुआ है, तुम्हारी आस्तीन भीग जाएगी।

चम्पा — (पंखा झलने लगती है) नमक तो ज्यादा नहीं हो गया?

गुलाबी — पंखा रख दो बेटी, आज गरमी नहीं है। दाल में जरा नमक ज्यादा हो गया है। लाओ, थोड़ा-सा पानी मिलाकर खा लूँ।

चम्पा — मैं बहुत अंदाज से छोड़ती हूँ, मगर कभी-कभी कम-बेस हो ही जाता है।

गुलाबी — बेटी, नमक का अंदाज बुढ़ापे तक ठीक नहीं होता, कभी-कभी धोखा हो ही जाता है। (भृगु आता है) आओ बेटा, खाना

खा लो, देर हो रही है। क्या हुआ, कंचनसिंह के यहाँ जवाब मिल गया?

भृगु — (मन में) आज अम्माँ की बातों में कुछ प्यार भरा हुआ जान पड़ता है। (प्रकट) नहीं अम्माँ, सच पूछो तो आज ही मेरी नौकरी लगी है। ठाकुरद्वारा बनवाने के लिए मसाला जुटाना मेरा काम तय हुआ है।

गुलाबी — बेटा, यह धरम का काम है, हाथ?पांव संभालकर रहना।

भृगु — दस्तूरी तो छोड़ता नहीं, और कहीं हाथ मारने की गुंजाइश नहीं ठाकुर जी सीधे से दे दें तो उंगली क्यों टेढ़ी करनी पड़े।

(भोजन करने बैठता है)

चम्पा — (भृगु से) कुछ और लेना हो तो ले लो, मैं जाती हूँ अम्माँ का बिछावन बिछाने।

गुलाबी — रहने दो बेटी, मैं आप बिछा लूँगी।

भृगु — (चम्पा से) यह आज दाल में नमक क्यों झोंक दिया? नित्य यही काम करती हो, फिर भी तमीज नहीं आती?

चम्पा — ज्यादा हो गया, हाथ ही तो है।

भृगु — शर्म नहीं आती, उसपर से हेकड़ी करती हो,

गुलाबी — जाने दो बेटा, अंदाज न मिला होगी। मैं तो रसोई बनाते-बनाते बुड्ढी हो गई, लेकिन कभी-कभी नमक घट-बढ़ जाता ही है।

भृगु — (मन में) अम्माँ आज क्यों इतनी मुलायम हो गई हैं। शायद ठाकुरों का पतन देख के इनकी आँखें खुल गई हैं। यह अगर इसी तरह प्यार से बातें करें तो हम लोग तो इनके चरण धो-धोकर पियें। (प्रकट) मैं तो किसी तरह खा लूँगा, पर तुम तो न खा सकोगी।

गुलाबी — खा लिया बेटा, एक दिन जरा नमक ज्यादा ही सही। देखो बेटी, खा-पीकर आराम से सो रहना, मेरा बदन दाबने मत आना। रात अधिक हो गई है।

चम्पा — (मन में) आज तो ऐसा जी चाहता है कि इनके चरण धोकर पीऊँ इसी तरह रोज रहें तो फिर यह घर स्वर्ग हो जाये। (प्रकट) जरा बदन दबा देने से कौन बड़ी रात निकल जाएगी

गुलाबी — (मन में) आज कितने प्रेम से बहू मेरी सेवा कर रही है, नहीं तो जरा-जरा-सी बात पर नाकभौं सिकोड़ा करती थी (प्रकट) जी चाहे तो थोड़ी देर के लिए आ जाना, तुम्हें प्रेमसागर सुनाऊँगी

(चेतनदास का प्रवेश)

गुलाबी — (आश्चर्य से) महाराज, आप कहाँ चले गए थे? मैं दिन में कई बार आपकी कुटी पर गई

चेतनदास — आज मैं एक कार्यवश बाहर चला गया था। अब एक महातीर्थ पर जाने का विचार है। अपना धन ले लो, गिन लेना, कुछ-न-कुछ अधिक ही होगी। मैं वह मन्त्र भूल गया जिससे धन दूना हो जाता था। ।

गुलाबी — (चेतनदास के पैरों पर गिरकर) महाराज, बैठ जाइए, आपने यहाँ तक आने का कष्ट किया है, कुछ भोजन कर लीजिए। कृतार्थ हो जाऊँगी।

चेतनदास — नहीं माताजी, मुझे विलम्ब होगी। मुझे आज्ञा दो और मेरी यह बात ध्यान से सुनो। आगे किसी साधु-महात्मा को अपना धन दूना करने के लिए मत देना नहीं तो धोखा खाओगी। (चम्पा और भृगु आकर चेतनदास के चरण छूते हैं) माता, तेरे पुत्र

और वधू बहुत सुशील दीखते हैं। परमात्मा इनकी रक्षा करें। तू भूल जा कि मेरे पास धन है। धन के बल से नहीं, प्रेम के बल से अपने घर में शासन कर।

(चेतनदास का प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान — स्वामी चेतनदास की कुटी। समय — रात, चेतनदास गंगा तट पर बैठे हैं)

चेतनदास — (आप-ही-आप) मैं हत्यारा हूँ, पापी हूँ, धूर्त हूँ। मैंने सरल प्राणियों को ठगने के लिए यह भेष बनाया है। मैंने इसीलिए योग की क्रियाएँ सीखीं, इसीलिए हिप्नाटिज्म सीखी, मेरा लोग कितना सम्मान, कितनी प्रतिष्ठा करते हैं। पुरूष मुझसे धन माँगते हैं, स्त्रियाँ मुझसे सन्तान माँगती हैं। मैं ईश्वर नहीं कि सबकी मुरादें पूरी कर सकूँ तिस पर भी लोग मेरा पिंड नहीं छोड़ते। मैंने कितने घर तबाह किए, कितनी सती स्त्रियों को जाल

में फँसाया, कितने निश्छल पुरुषों को चकमा दिया। यह सब स्वाँग केवल सुखभोग के लिए, मुझ पर धिक्कार है! पहले मेरा जीवन कितना पवित्र था। मेरे आदर्श कितने ऊँचे थे। मैं संसार से विरक्त हो गया। पर स्वार्थी संसार ने मुझे खींच लिया। मेरी इतनी मान-प्रतिष्ठा थी, मैं पाखंडी हो गया, नर से पिशाच हो गया। हाँ, मैं पिशाच हो गया। हाँ! मेरे कुकर्म मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं। उनके स्वरूप कितने भयंकर हैं। वह मुझे निगल जाएँगी। भगवन्, मुझे बचाओ! वह सब अपने मुँह खोले मेरी ओर लपके चले आते हैं। (आँखें बन्द कर लेते हैं) ज्ञानी! ईश्वर के लिए मुझे छोड़ दो। कितना विकराल स्वरूप है। तेरे मुख से ज्वाला निकल रही है। तेरी आँखों से आग की लपटें आ रही हैं। मैं जल जाऊँगा। भस्म हो जाऊँगा। तू कैसी सुन्दर थी। कैसी कोमलांगी थी! तेरा यह रौद्र रूप नहीं, तू वह सती नहीं, वह कमल की-सी आँखें, वह पुष्प के-से कपोल कहाँ हैं। नहीं, यह मेरे अधर्मों का, मेरे दुष्कर्मों का मूर्तिमान स्वरूप है, मेरे दुष्कर्मों ने यह पैशाचिक रूप धारण किया है। यह मेरे ही पापों की ज्वाला है। क्या मैं अपने ही पापों की आग में जलूँगा? अपने ही बनाए हुए नरक में पड़ूँगा? (आँखें बन्द करके हाथों से हटाने की चेष्टा करके) नहीं, मैं ईश्वर की शपथ खाता हूँ, अब कभी ऐसे कर्म न करूँगा। मुझे प्राणदान दे। आह, कोई विनय नहीं सुनता। ईश्वर,

मेरी क्या गति होगी! मैं इस पिशाचिनी के मुख का ग्रास बना जा रहा हूँ। यह दया-शून्य, हृदय-शून्य राक्षसी मुझे निगल जाएगी भगवन्! कहाँ जाऊँ, कहाँ भागूँ? अरे रे जला...

(दौड़कर नदी में कूद पड़ता है, और एक बार फिर ऊपर आकर नीचे डूब जाता है)

छठा दृश्य

(स्थान — मधुबन। समय — सावन का महीना, पूजा-उत्सव, ब्रह्मभोज, राजेश्वरी और सलोनी गाँव की अन्य स्त्रियों के साथ गहने-कपड़े पहने पूजा करने जा रही हैं)

गीत

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती, सरनागत प्रतिपालनहारी।
चंद्रजोत-सा बदन बिराजे, सीस मुकुट माला फलधारी। जय जगदीश्वरी मात सरस्वती, सरनागत प्रतिपालनहारी।
बीना बाम अंग में सोहे, सामगीत धुन मधुर पियारी। जय...

श्वेत बसन कमलासन सुन्दर, संग सखी अरू हंस सवारी।
जय जगदीश्वरी मात सरस्वती, सरनागत प्रतिपालनहारी।

सलोनी — (देवी की पूजा करके राजेश्वरी से) आ, तेरे गले में माला डाल दूँ, तेरे माथे पर भी टीका लगा दूँ। तू भी हमारी देवी है। मैं जीती रही तो इस गाँव में तेरा मन्दिर बनवाकर छोड़ूँगी।

एक वृद्धा — साक्षात् देवी है। इसके कारन हमारे भाग जाग गए, नहीं तो बेगार भरने और रो-रोकर दिन काटने के सिवा और क्या था।!

सलोनी — (राजेश्वरी से) क्यों बेटी, तूने वह विद्या कहाँ पढ़ी थी। धन्न है तेरे माई-बाप को, जिनके कोख से तूने जन्म लिया। मैं तुझे नित्य कोसती थी, कुल-कलंकिनी कहती थी। क्या जानती थी कि तू वहाँ सबके भाग संवार रही है।

राजेश्वरी — काकी, मैंने तो कुछ नहीं किया। जो कुछ हुआ ईश्वर की दया से हुआ। ठाकुर सबलसिंह देवता हैं। मैं तो उनसे अपने अपमान का बदला लेने गई थी। मन में ठान लिया था। कि उनके कुल का सर्वनाश करके छोड़ूँगी। अगर तुम्हारे भतीजे ने उनकी जान न बचा ली होती तो आज कोई कुल में पानी देने वाला भी न रहता।

सलोनी — ईश्वर की लीला अपार है।

राजेश्वरी — ज्ञानीदेवी ने अपने प्राण देकर हम सभी को उबार लिया। इस शोक ने ठाकुर साहब को विरक्त कर दिया। कोई दूसरा समझता, बला से मर गई, दूसरा ब्याह कर लेंगे, संसार में कौन लड़कियों की कमी है। लेकिन उनके मन में दया और धर्म की जोत चमक रही थी। ग्लानि उत्पन्न हुई कि मैंने इस कुमार्ग पर पैर न रखा होता तो यह देवी क्यों लज्जा और शोक से आत्महत्या करती। उनके मन ने कहा - तुम्हीं हत्यारे हो, तुम्हीं ने इसकी गरदन पर छुरी चलाई है। इसी ग्लानि की दशा में उनको विदित हुआ कि इन सारी विपत्तियों का मूल कारन मेरी सम्पत्ति है। यह न होती तो मेरा मन इतना चंचल न होता। ऐसी सम्पत्ति ही क्यों न त्याग दूँ जिससे ऐसे-ऐसे अनर्थ होते हैं। मैं तो बखानूँगी उस दुधमुँहे अचलसिंह को जो ठाकुर साहब के मुँह से बात निकलते ही सब कोठी, महल, बाग-बगीचा त्यागने पर तैयार हो गया। उनके छोटे भाई कंचनसिंह पहले ही से भगवद्-भजन में मग्न रहते थे। उनकी अभिलाषा एक ठाकुरद्वारा और एक धर्मशाला बनवाने की थी। राजभवन खाली हो गया। उसी को धर्मशाला बनायेंगे। घर में सब मिलाकर कोई पचास-साठ हजार नकद रुपये थे। हवागाड़ी, फिटन, घोड़े, लकड़ी के सामान, झाड़-फानूस, पलंग, मसहरी, कालीन, दरी, इन सब चीजों के बेचने से

पच्चीस हजार मिल गए, दस हजार के ज्ञानीदेवी के गहने थे। वह भी बेच दिए गए। इस तरह सब जोड़कर एक लाख रुपये ठाकुरद्वारा के लिए जमा हो गए। ठाकुरद्वारे के पास ही ज्ञानीदेवी के नाम का एक पक्का तालाब बनेगा। जब कोई लोभ ही न रह गया तो जमींदारी रखकर क्या करते। सब जमीन असामियों के नाम दर्ज कराके तीरथयात्रा करने चले गए।

सलोनी — और अचलसिंह कहाँ गया? मैं तो उसे देख लेती तो छाती से लगा लेती। लड़का नहीं है, भगवान् का अवतार है।

एक स्त्री — उसके चरन धोकर पीना चाहिए।

राजेश्वरी — गुरूकुल में पढ़ने चला गया। कोई नौकर भी साथ नहीं लिया। अब अकेले कंचनसिंह रह गए हैं। वह ठाकुरद्वारा बनवा रहे हैं।

सलोनी — अच्छा अब चलो, अभी दस मन की पूरियाँ बेलनी हैं।

(सब स्त्रियाँ गाती हुई लौटती हैं, लक्ष्मी की स्तुति करती हुई जाती हैं)

फत्तू — चलो, चलो, कड़ाह की तैयारी करो। रात हुई जाती है। हलधर देखो, देर न हो, मैं जाता हूँ मौलूद सरीफ का इंतजाम करने। फरस और सामियाना आ गया।

हलधर — तुम उधर थे, इधर थानेदार आए थे ठाकुर सबलसिंह की खोज में। कहते थे उनके नाम वारंट है। मैंने कह दिया उन्हें जाकर अब स्वर्गधाम में तलाश करो। मगर यह तो आने का बहाना था। असल में आए थे नजर लेने। मैंने कहा , नजर तो देते नहीं, हाँ हजारों रुपये खैरात हो रहे हैं, तुम्हारा जी चाहे तुम भी ले लो। मैंने तो समझा था। कि यह सुनकर अपना-सा मुँह लेके चला जाएगा लेकिन इस महकमे वालों को हया नहीं होती, तुरन्त हाथ फैला दिए। आखिर मैंने पच्चीस रुपये हाथ पर रख दिए।

फत्तू — कुछ बोला तो नहीं?

हलधर — बोलता क्या, चुपके से चला गया।

फत्तू — गाने वाले आ गए?

हलधर — हाँ, चौपाल में बैठे हैं, बुलाता हूँ।

मंगरू — (गाँव की ओर से आकर) हलधर भैया, सबकी सलाह है कि तुम्हारा विमान सजाकर निकाला जाए, वहाँ से लौटने पर गाना-बजाना हो,

हरदास — तुम्हारी बदौलत सब कुछ हुआ है, तुम्हारा कुछ तो महातम होना चाहिए।

हलधर — मैंने कुछ नहीं किया। सब भगवान् की इच्छा है। जरा गाने वालों को बुला लो!

(हरदास जाता है)

मंगरू — भैया, अब तो जमींदार को मालगुजारी न देनी पड़ेगी?

हलधर — अब तो हम आप ही जमींदार हैं, मालगुजारी सरकार को देंगी।

मंगरू — तुमने कागद-पत्तर देख लिये हैं? रजिस्टरी हो गई है?

हलधर — मेरे सामने ही हो गई थी।

(हलधर किसी काम से चला जाता है, हरदास गाने वालों को बुला लाता है, वह सब साज मिलाने लगते हैं)

मंगरू — (हरदास से) इसमें हलधर का कौन एहसान है? इनका बस होता तो सब अपने ही नाम चढ़वा लेते।

हरदास — एहसान किसी का नहीं है। ईश्वर की जो इच्छा होती है वही होता है। लेकिन यह तो समझ रहे हैं कि मैं ही सबका ठाकुर हूँ। जमीन पर पांव ही नहीं रखते। चंदे के रुपये ले लिये, लेकिन हमसे कोई सलाह तक नहीं लेते। फत्तू और यह दोनों जो जी चाहता है, करते हैं।

मंगरू — दोनों खासी रकम बना हुई। दो हजार चंदा उतरा है। खरचा वाजिबी-ही-वाजिबी हो रहा है।

(गाना होता है)

जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है
भूमि, नीर, अगिन, पवन, सूरज, चंद, शैल, गगन
तेरा किया चौदह भुवन का पसार है।
जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है।
सुर, नर, पशु, जीव?जंतु, जल, थल, चर है अनंत,
तेरी रचना का नहीं अन्त पार है।
जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है।
करुनानिधि, विश्वभरण, शरणागत, तापहरण,

सत चित सुखरूप सदा निरविकार है।
जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है।
निरगुन सब गुन-निधान निगमागम करत गान,
सेवक नमन करत बार-बार है।
जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है।

•••

प्रेम की वेदी

प्रथम दृश्य

(एक बंगलानूमा मकान — सामने बरांडा है, जिसमें ईंटों के गोल खंबे हैं। बरांडे में दो-तीन मोढ़े बेदंगेपन के साथ रखे हुए है। बरामदे के पीछे तीन दरवाजों का एक कमरा है। कमरे में दोनों तरफ दो कोठरियाँ है। कमरे में दरी का फर्श है जो कई जगह फटा हुआ है। बीच में एक गोल मेज है, जिस पर मेजपोश पड़ा हुआ है और एक गुलदस्ता पड़ा हुआ है, जिसके फूल सूख गए हैं। पाँच बेंत की कुर्सियाँ हैं, जिन पर गर्द पड़ी हुई है, मैली और फटी हुई दीवारों पर कई ईसाई धर्म-विषय के पुराने चित्र हैं, जिन पर गर्द पड़ी है। एक कैलेन्डर है और एक तरफ एक बड़ा शीशा हैं। दाहिनी तरफ वाली कोठरी में दो कोच हैं, बेंत के मगर टूटे हुए। बायीं तरफ वाली कोठरी में एक कुर्सी और प्यानो है। कमरे के पीछे वाली दीवार में एक दरवाजा है, जो अंदर जाता है। भीतर एक छोटा-सा आंगन है, आंगन में पानी का

नल और मुर्गियों का दरबा है, एक कोने में बावर्चीखाना है। सभी दरवाजों पर मैले परदे पड़े हुए है)

(मिस जेनी बायीं तरफ वाली कोठरी में प्यानो पर बैठी गा रही है। उसकी उम्र 18-20 साल की होगी, साँवला रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पारसी फैशन से पहने हुए रहन-सहन से ऐसा मालूम होता है, औसत दरजे की ईसाई परिवार है। फर्नीचर, फर्श सब कुछ उसी तरह का है, जैसा गुदड़ी बाजार में मिला करता है। मिस जेनी गाती है — 'कभी हमसे तुमसे भी प्यार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो।')

(मिसेज गार्डन अन्दर से आँखें मलती हुई आती है। वह अधेड़ स्त्री है, गोरी, सिर के बाल खिचड़ी, मुख से चिन्ता झलक रही है। वह स्कर्ट पहने हुए है। स्कर्ट मैला हो गया है, जो उसके निर्बल शरीर पर खिलता नहीं)

मिसेज गार्डन — आज विलियम आता होगा। तू अभी तक यूँ ही बैठी हुई है?

जेनी — तो क्या करूँ, नाचूँ, या ढोल बजाऊँ?

मिसेज गार्डन — इसी तरह मेहमानों का स्वागत किया जाता है? अभी तक न मुँह धोया, न कुछ मेक-अप किया।

जेनी — मैंने कह दिया, मेरी तबीयत उनसे नहीं मिलती। आप बरबस उनके पीछे पड़ी हुई है।

मिसेज गार्डन — तुम तो बेटी, कभी-कभी ऐसी बातें करने लगती हो, जैसे घर का हाल कुछ जानती ही न हो। विलियम में क्या बुराई है, जरा सुनूँ? या यह भी कोई जिद है कि मेरी तबीयत उससे नहीं मिलती। अच्छा-खासा जवान है। शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, बड़ा ही हँस-मुख, बड़ा नेक चलन, बड़ा चरित्रवान, न शराब से मतलब, न किसी और शौक़ से, और मुझे कैसा आदमी चाहिए चार पैसे कमाता है, घर में भी कुछ जायदाद है, और आदमी में क्या चाहिए। फैशनेबल नहीं है, यही ऐब है। मगर तू इसे ऐब समझ, मैं तो हुनर समझती हूँ। मैं सच कहती हूँ, बूढ़ी न होती, तो उससे जरूर शादी कर लेती। तुम्हारे पापा को गुज़रे आज पाँचवाँ साल है। हाथ में जो कुछ था, वह सब निकल गया। अब काम कैसे चले? माना अब तू ग्रेजुएट हो गयी;! लेकिन ऐसी कौन-सी बड़ी नौकरी तुझे मिली जाती है। ज्यादा-से-ज्यादा सौ की। तेरे पापा पाँच सौ लाते थे, तब गुज़र होता था, और चार पैसे हाथ में रह गये। विलियम की आमदनी चार-पाँच सौ से कम नहीं है। फिर यह अच्छा भी तो नहीं लगता, कि औरत अपनी गुज़र-बसर के

लिए नौकरी करे। मैं इसे पसन्द नहीं करती। मुझे सौ रुपये की जगह मिलती थी, लेकिन तेरे पापा कभी राज़ी न हुए।

जेनी — मैं तो आप से कह चुकी, मैं शादी नहीं करना चाहती।

मिसेज गार्डन — आख़िर क्यो, वही तो पूछती हूँ।

जेनी — इसलिए कि मैं किसी मर्द की गुलामी पसन्द नहीं करती।

मिसेज गार्डन — शादी करना गुलामी है? वे सभी औरतें जो शादी करती हैं, गुलाम है?

जेनी — गुलाम नहीं तो और क्या है। रानियाँ है, वह भी गुलाम है। मजदूरिनें हैं, वह भी गुलाम हैं। मर्द की दुनिया वह है, जहाँ नाम है, धन है, सम्मान है। स्त्री की दुनिया वह, जहाँ पिसना और घुलना और कुढ़ना है। हर काम में औरत को मर्द की जवाबदेही करनी पड़ती है। अगर उसने चार पैसे ज्यादा ख़र्च कर दिये, तो मर्द की त्योरियाँ चढ़ गयीं। मर्द के नाश्ते में ज़रा देर हो गयी, तो औरत के सिर आफ़त आ गयी। अगर वह बगैर मर्द से पूछे कहीं चली गयी, तो मर्द उसके खून का प्यासा हो गया। अगर किसी मर्द से हँसकर बोली, तो फिर समझ लो कि उसकी कुशल नहीं। दिखाने को तो मर्द स्त्री की बड़ी इज़्ज़त करता है, मोटर पर अच्छी जगह स्त्री की है, सलाम पहले मर्द करता है, स्त्री का

ओवरकोट पुरुष सँभालता है, स्त्री का हाथ पकड़कर गाड़ी से उतारता है, पहले स्त्री को बिठाकर आप बैठता है; लेकिन यह सब दिखावे का शिष्टाचार है। पुरुष दिल में खूब समझता है कि उसने स्त्री की वह चीज़ छीन ली जिसकी पूर्ति में वह जितनी ख़ातिरदारी करे, वह थोड़ी है। वह चीज़ स्त्री की आज़ादी है।

मिसेज गार्डन — तेरे विचार बड़े विचित्र है जेनी!

जेनी — विचित्र नहीं, यथार्थ है। हम अपने टामी की कितनी ख़ातिर करते है। उसे ताँगे पर साथ बैठाते है, गोद में उठाते है, उसका मुँह चूमते है। गले से लगाते है, उसे साबुन से नहलाते हैं; लेकिन क्या बराबर हमारे मन में यह भाव नहीं रहता, कि वह हमारा कुत्ता है? उसने ज़रा भी कोई काम हमारी इच्छा के विरुद्ध किया और हमने उस पर हंटर जमाया। पुरुष विवाह करके स्त्री का स्वामी हो जाता है। स्त्री विवाह करके पुरुष की लौंड़ी हो जाती है। अगर वह पुरुष की खुशामद करती रहे, उसके इशारों पर नाचती रहे, तो उसके लिए रुपये है, गहने हैं, रेशमी कपड़े हैं, उस पर जान छिड़की जाती है, हृदय न्योछावर किया जाता है; लेकिन स्त्री न ज़रा भी स्वेच्छा का परिचय दिया, ज़रा भी आत्म-सम्मान प्रकट किया, फिर वह त्याज्य हैं, कुलटा है। पुरुष उसे क्षमा नहीं कर सकता। पुरुष कितना ही दुराचारी हो, स्त्री जबान

नहीं हिला सकती। उसका धर्म है, पुरुष को अपना खुदा समझे। मैं यह नहीं बरदाश्त कर सकती।

मिसेज गार्डन — मैं समझती हूँ, तेरी बातों में कुछ सच्चाई है; लेकिन गुज़ारे की तो कोई फ़िक्र करनी ही पड़ेगी।

जेनी — तो क्या तुम समझती हो, मैं निश्चिंत हूँ, पर यह न समझना। मैं सौ-पचास की टीचरी करके लड़कियों को ग्रामर रटाऊँगी। अगर तक़दीर ने मदद की तो मैं दिखा दूँगी कि मैं कितना कमा सकती हूँ; विलियम कभी उसका स्वप्न भी नहीं देख सकता।

(मिस उमा आती है। बड़ी रूपवती है। माँग का सिन्दूर और भाल-तिलक बतला रहा है कि वह विवाहित है। उनकी गोल कलाई पर जड़ाऊ कंगन है, गले में जड़ाऊ हार, मूल्यवान बनारसी साड़ी पहने हुए, बहुत प्रसन्न बदन, मानो संसार में वसन्त-ही-वसन्त, फूल-ही-फूल हैं)

जेनी — (कुर्सी पर बैठे-बैठे) मैं पहले कुरसी से उठकर तुम्हारा सत्कार करती थी; लेकिन आज न उठूँगी। इसलिए कि तुम मेरी निगाह में वह नहीं रहीं, जो पहले थीं।

उमा — क्यों? क्या मैं कुछ और हो गयी हूँ?

जेनी — बेशक! पहले तुम स्वतन्त्र कुमारी थीं। अब तुम एक पुरुष की दासी हो।

उमा — (मुस्कराकर) लेकिन तुम्हारी सहेली तो हूँ। तुम्हारे साथ पढ़ी तो हूँ, तुम्हारे साथ खेली तो हूँ। यदि मैं अपने पद से गिर गयी हूँ, तब तो तुम्हें मेरा और सत्कार करना चाहिए जिसमें मुझे दुःख न हो।

जेनी — अगर तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आ गयी होती — ईश्वर न करे — तो मैं तुम्हारे पैरों-तले आँखें बिछाती; लेकिन तुमने जान-बूझकर अपने पैरों में बेड़ियाँ डाली है, अपनी स्वाधीनता को, अपनी आत्मा को, सोने और रेशम पर बेचा है।

उमा — (हँसकर) अच्छा, ईमान से कहना, मैं पहले से ज़्यादा खूबसूरत नहीं मालूम हो रही हूँ?

जेनी — अपने स्वामी की आँखों में मालूम होती होगी। मेरी आँखों में तो तुम्हारा रूप-लावण्य इस सोने और रेशम के नीचे दबा-सा मालूम होता है।

उमा — देखो यह कंगन, कितना बारीक़ काम है!

जेनी — (मुँह फेरकर) गुलामी की हथकड़ी है।

उमा — यह हार देखो, हीरे जड़ें हैं।

जेनी — गुलामी का तौक़ है।

उमा — (कुछ चिढ़कर) जिसे तुम गुलामी की हथकड़ी और गुलामी की तौक़ कहती हो, उसे मैं व्रत और कर्तव्य और आत्म-समर्पण का चिह्न समझती हूँ।

जेनी — यह व्रत यह कर्तव्य और यह आत्म-समर्पण एकतरफा क्यों? तुम्हारे ही लिए क्यों इन चिह्नों की ज़रूरत है? तुम्हारे पति के लिए क्यों ज़रूरी नहीं? जहाँ तक मेरा अनुभव है, उसके हाथों में न चूड़ियाँ हैं, न कंगन है, न गले में हार है, न माथे पर सिन्दूर का टीका है। यह क्यों? तुम्हें अपने व्रत पर स्थिर रखने के लिए बन्धन चाहिए, उसे बन्धन की ज़रूरत नहीं?

(उमा निरुत्तर हो जाती हो जाती है और उपालंभ की दृष्टि से मिसेज गार्डन की ओर देखती है)

उमा — सुनती है मामा, आप इनकी बातें?

मिसेज — मैं इसे कुबुद्धि कहती हूँ। निरी मूर्खता।

जेनी — (विजय के भाव से) जवाब दो न। क्यों तुम्हारे पति ने इन बन्धनों को स्वीकार नहीं किया? क्यों तुम्हारे लिए इन बन्धनों को लाज़िम समझा गया? कर्तव्य और प्रेम उसके लिए भी उतना ही आवश्यक है, जितना तुम्हारे लिए। तुम्हें अपने कर्तव्य की याद दिखाते रहने के लिए निशानियों की ज़रूरत है, उसे क्यों नहीं? इसका कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है, कि तुम गुलाम हो, वह आज़ाद है।

उमा — (एक जवाब सूझता है) पुरुष अपने कर्तव्य की ओर से आँखें बन्द कर ले, तो क्या स्त्री भी बन्द कर ले? अगर पुरुष अपने व्रत का पालन न करे, अपनी आत्मा को भूल जाय तो क्या स्त्री भी भूल जाय? मेरा विचार है कि स्त्री परिवार का मुख्य अंग है, इसलिए उसे बन्धनों की ज़्यादा ज़रूरत है। उसी तरह जैसे शूद्रों के लिए किसी निशानी की ज़रूरत नहीं, पर द्विजों के लिए यज्ञोपवीत अनिवार्य है।

जेनी — लचर दलील है। असली बात यह है कि आदि में स्त्री पुरुष की सम्पत्ति समझी जाती थी, उसी तरह जैसे पशु, अनाज या घर। जैसे आज जायदाद पर डाके पड़ते हैं, चोरियाँ होती है, उसी तरह उस समय भी होता था। लड़की बहुधा सबसे बहुमूल्य सम्पत्ति समझी जाती थी। इसलिए ज्यों ही वह सयानी हो जाती थी, उस पर डाके पड़ने लगते थे पुरुष अपने सूरमाओं को लेकर

अस्त्र-शस्त्र के साथ, लड़की के ऊपर छापा मारता था। दोनों दलों में खूब लड़ाई होती थी, खूब रक्तपात होता था। लुटेरे विजय पाते, तो लड़की को ले भागते और उसके साथ घर में जो चल सम्पत्ति मिल जाती, उसे भी उठा ले जाते। लड़की वाले रो-पीटकर रह जाते थे। कन्या विजेताओं के घर में क़ैद कर दी जाती थी। उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी जाती थीं, पैरों में बेड़ियाँ, गले में तौंक़ और उस संग्राम के स्मृति-स्वरूप उसके माथे पर रक्त का टीका लगा दिया जाता होगा, जिससे कन्या समझती रहे कि उसके कभी भागने का प्रयत्न किया, तो उसकी भी वही दशा होगी जो उसके घरवालों की हुई है। कन्या को कभी घरवालों की याद न आये, वह इन नये स्वामियों को ही अपना सर्वस्व समझने लगे, इसलिए कन्या को उपदेश दिया जाता था कि पति ही तेरी स्वामी है, तेरा देवता है, उसको प्रसन्न रखकर ही तू स्वर्ग में जाएगी। यह है इन निशानियों का तथ्य। आज उन पाशविक प्रथाओं का रूप कुछ बदल गया है अवश्य; किन्तु मूलाधार वहीं है। नयी संस्कृति ने कुछ लेप-थोप की है; लेकिन पुरुषों की मनोवृत्ति अब भी वही है और समाज-संस्था का आचार भी वही है। बिलकुल वही।

मिसेज गार्डन — यह तुम्हारे मस्तिष्क की उपज है या तुमने कहीं पढ़ा है?

जेनी — यह एक बड़े फ्रांसीसी तत्त्ववेत्ता के विचार है।

मिसेज गार्डन — तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी होगी। स्त्री-पुरुष दोनों अपनी रुचि के अनुसार अपना-अपना बनाव-सिंगार करते है। स्त्री पुरुष को आकर्षित करना चाहती है, पुरुष स्त्री को। पुरुष में पशुबल अधिक है, स्त्री में बुद्धिबल अधिक है, इसलिए बाहर की कड़ी मेहनत-मजूरी, लड़ाई-दंगा मर्द के हिस्से पड़ा, भीतर का काम औरत के हिस्से आया। मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं को हीरों के हार और मोतियों के कंगन पहने देखा है। फिर देस-देस की रिवाज़ अलग-अलग है। भूटान में तो स्त्री-पुरुष एक-से जान पड़ते हैं। पता नहीं चलता, कौन स्त्री है, कौन पुरुष। मज़दूर औरतें भी बहुत कम गहने पहनती है योरप में साधारणतः स्त्रियाँ गहने पहनती ही नहीं है। केवल ऊँचे कुलवाली महिलाएँ दो-एक चीज़ पहन लेती है। भारत में पोर-पोर गहनों से लदा होता है। अपने-अपने देश की प्रथा है।

जेनी — आप इसे स्वीकार नहीं करतीं कि पुरुष स्त्री पर शासन करता है?

मिसेज — नहीं। अगर ऐसे पुरुष हैं जो स्त्री पर शासन करते हैं, तो ऐसी स्त्रियाँ भी है जो पुरुष पर शासन करती है। मैं खुद तुम्हारे पापा पर शासन करती थी। वह मुझसे पूछे बिना किसी

से मिलने भी न जाते थे। उन्हें लौटने में एक मिनट की भी देर हो जाती थी, तो मैं उनकी बुरी तरह ख़बर लेती थी। यह मैं मान लूँगी कि पुरुष में यह प्रवृत्ति अधिक होती है लेकिन इसका कारण यही है कि पुरुष ने पशुबल के साथ बुद्धिबल में उन्नति की, हमने आलस्य और विलास में पड़कर हर तरह से अपनी मिट्टी ख़राब कर ली। समाज की यह जो वर्तमान अधोगति है, इसकी जिम्मेदारी स्त्री-पुरुष दोनों ही पर जाती है। केवल पुरुषों को इलजाम देना अन्याय है।

जेनी — यह तो आप मानेंगी ही कि नब्बे फ़ीसदी पुरुष व्यभिचारी होते हैं। ऐसा कोई बिरला ही पुरुष संसार में होगा, जिसने स्त्री पर निगाह न डाली हो।

मिसेज गार्डन — अगर ऐसे दग़ाबाज़ मर्द है तो ऐसी दग़ाबाज़ औरतें भी कम नहीं है। हो सकता है, मरदों की संख्या अधिक हो; लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि औरतें स्वभावतः विदुषी होती है; बल्कि उसे प्रकृति ने जकड़ रखा है। मैं तो मोटी बात यह जानती हूँ कि जो स्त्री-पुरुष सुख-शान्ति से ज़िन्दगी बसर करना चाहते है, वह जानते हैं कि पूर्ण विश्वास और प्रेम से ही यह सिद्धि हाथ आ सकती है। जो स्त्री-पुरुष वासना-तृप्ति के उपासक है, वह दोनों रोकर और झींककर ज़िन्दगी के दिन काटते हैं।

जेनी — आप तो मामा, आज मरदों की वकालत करने पर तुली हुई है। आपका यही निर्णय है कि पुरुष स्त्री को बराबर समझता है और उस पर किसी तरह का दबाव नहीं डालता?

मिसेज — हाँ, जो पुरुष जीवन का सच्चा अर्थ समझता है, उसका यही व्यवहार होता है। सुशिक्षित जोड़ों में इसका विचार ही नहीं आने पाता कि कौन छोटा है, कौन बड़ा। स्त्री से कोई भूल हुई, पुरुष ने डाँटा। पुरुष से कोई ग़लती हुई, स्त्री ने गरदन नापी। दोनों हर हालत में सन्तुष्ट रहते हैं। मैं यह नहीं कहती कि ऐसा पुरुष सच्चा साधु हो जाता है और उसका मन किसी स्त्री पर चंचल नहीं होता, अथवा हरेक विवाहित स्त्री देवी होती है, लेकिन उन्हें अपने ऊपर निग्रह करना होता है, और कभी-कभी गुप्त प्रेम की आँच में जलकर मर जाता होता है। यदि मुझे अपने पति से अधिक रूपवान् पुरुष को देखकर दिल पर हाथ रखने का अधिकार है, तो मेरे पति को भी मुझसे अधिक रूपवती स्त्री को देखकर यह अधिकार समान रूप से प्राप्त है; लेकिन हम दोनों समझते हैं कि इस विश्वासघात से हमारे सुख-शान्ति में बाधा पड़ेगी। इसलिए ज़ब्त करते है। कुलीन और विचारशील स्त्री-पुरुषों में यह भावना आने ही नहीं पाती।

उमा — (प्रसन्न होकर) अब कह जेनी, मामा ने तुम्हारी ज़बान बन्द कर दी या नहीं?

जेनी — वाह! इन पुराने विचारों से मेरी ज़बान बन्द हो जाती, तो अब तक मेरी शादी विलियम से हो गयी होती। मेरा तो विचार है, जिन स्त्रियों में कोई व्यक्तित्व नहीं है, कोई उत्साह नहीं, आदर्श नहीं हैं, उन्हें विवाह कर लेना चाहिए। लेकिन जिनमें अपने विचार हैं, अपना व्यक्तित्व है, अपनी इच्छा है, जिन्हें कीर्ति और ख्याति की लालसा है, उन्हे अविवाहित रहना चाहिए। अपनी हस्ती को पति की हस्ती में डूबा देना, इतना बड़ा त्याग है, जो मैं नहीं कर सकती।

(मोटर का हार्न सुनाई देता है)

उमा — लो, यह महाशय आ पहुँचे। इनके मारे घर से निकलना मुश्किल है।

(मोटर द्वार पर आकर रुकती है और उमा का पति योगराज उतरकर अन्दर आता है। उमा दोनों महिलाओं का अपने पति से परिचय कराती है)

योगराज — तुमने मुझसे क्यों न कहा, मिस गार्डन के पास जा रही हूँ, मैं भी तुम्हारे साथ आता।

उमा — तुमने भी तो अपने मित्रों से मेरा परिचय नहीं कराया। मैं क्यों कराती?

योगराज — मेरे मित्रों में शायद ही कोई ऐसा हो, जो तुम्हें देखकर मेरा शत्रु न हो जाता। मेरे विचार में तुम्हें अपनी सहेलियों से यह शिकायत न होगी।

उमा — आप अपने मित्रों की जिस चंचलता से डरते हैं, क्या आप उससे मुस्तसना हैं?

योगराज — था तो नहीं, लेकिन तुमने कर दिया। (मुस्कराता है)

उमा — मेरी यह बहन कहती हैं, स्त्री विवाह करके पुरुष की गुलाम हो जाती है। क्या तुम मुझे अपना गुलाम समझते हो?

जेनी — (झेंपकर) यह इस बहस का अवसर नहीं उमा, आप हमारे मेहमान हैं। हमें आपका कुछ स्वागत करने दो। आपके लिए चाय बनाऊँ।

(जेनी योगराज को सिर से पाँव तक अनुरक्त नेत्रों से देखकर आँखें झुका लेती है)

योगराज — जी नहीं, मैं चाय पी चुका हूँ, आप कष्ट न करें।

जेनी — उमा शायद डर रही है कि मैं चाय में कोई जादू कर दूँगी।

योगराज — मैं तो चाहता हूँ, आप मुझ पर जादू करें, उमा ने मुझ पर जो वशीकरण डाल रखा है, उससे जरा छुटकारा तो मिले।

जेनी --आप हैं बड़े भाग्यवान कि उमा जैसी स्त्री पाई।

योगराज — मैंने उस जन्म में कोई बड़ी तपस्या की थी।

उमा — तु दोनों मिलकर मुझे बनाओगे तो मैं चली जाऊँगी।

(जेनी की आँखें फिर योगराज से मिलती हैं। वह आँखें झुका लेता है। उमा जेनी को तीव्र नेत्रों से देखती हैं)

योगराज — (प्यानो देखकर) अच्छा, आपको प्यानो का भी शौक है? फिर तो मेरा जी चाहता है, यहाँ कुछ देर बैठकर संगीत का आनन्द उठाऊँ। क्यों मिस गार्डन, आप हमें निराश तो न करेंगी?

जेनी — आप तो तकल्लुफ की बातें करते है, बाबूजी, आइए जो कुछ कहिए सुनाऊँ।

(दोनों प्यानो वाली कोठरी में जाते हैं)

उमा — (अधीर होकर) भाई गाना-वाना सुनाने लगेगी, तो देर होगी। मैंने अम्माँ से कहा भी नहीं, चली आई। वह मुझ पर नाराज होने लगेंगी।

जेनी — (मुस्कराकर) तो तुम जाओ न। बाबूजी मेरी एक चीज सुनकर जायेंगे।

उमा — (खिसियाकर) मुझे ड्राइव करना नहीं आता।

जेनी — तो जरा देर बैठ जाओ न, अम्माँ मार न डालेंगी।

योगराज — नहीं मिस गार्डन, इस वक्त क्षमा कीजिए। यह दोष मुझ पर आ जायगा। फिर कभी।

(वह जेनी और मिसेज गार्डन से हाथ मिलता है। उमा भी दोनों से हाथ मिलाती है)

जेनी — कल आना उमा, और बाबूजी को लाना।

(उमा कोई जवाब नहीं देती। दोनों चले जाते हैं)

मिसेज गार्डन — बड़ा सुशील लड़का है।

जेनी — एक यह आदमी है एक आपका विलियम। सूरत से उजड्डपन बरसता है। चेहरे पर सौम्यता की परछाई तक नहीं।

मिसेज गार्डन — बेटी सभी आदमी एक-से नहीं होते। यह लोग कुलीन हैं। विलियम का बाप रेलवे गार्ड था। हाँ, उसने बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाई।

जेनी — और आप चाहती है कि मैं उस गँवार से विवाह कर लूँ।

मिसेज गार्डन — मेरे पास भी दस हजार देने को होते, तो मैं भी कोई ऐसा ही वर खोजती। जितना गुड़ डालोगी, उतना ही मीठा तो होगा।

जेनी — इसीलिए तो मैंने निश्चय कर लिया है, विवाह न करूँगी। तुमने देखा मामा उमा कितनी जली जाती थी।

मिसेज गार्डन — अभी नई मुहब्बत है न?

जेनी — देख लेना इन दोनों में बहुत दिन पटेगी नहीं। उमा अल्हड़ छोकरी है। योगराज रसिया है। महीने-दो-महीने में वह उसकी तरफ से ऊब उठेगी।

मिसेज गार्डन — नहीं जेनी, देख लेना दोनों जीवन-पर्यन्त सुखी रहेंगे।

जेनी — मैं तो कभी पसन्द न करूँ कि कोई मेरे गले में रस्सी डाले फिराया करे।

(मिसेज गार्डन चली जाती है। जेनी प्यानो पर बैठकर गाने लगती है — कभी हमसे तुमसे भी प्यार था!)

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(वही मकान, अन्दर का बावर्चीखाना। विलियम एक बेंत के मोढ़े पर बावर्चीखाने के द्वार पर बैठा हुआ है। मिसेज गार्डन पतीली में कुछ पका रहा है। विलियम बड़ा भीमकाय, गठीला, पक्के रंग

का आदमी है, बड़ी मूँछें, चौड़ी छाती, फौजी जवान-सा मालूम होता है।

मिसेज गार्डन — तुमने कभी प्रोपोज भी नहीं किया, या यों ही समझ लिया, कि वह इंकार कर देगी?

विलियम — मेरी हिम्मत ही जवाब दे देती है। औरतों के सम्मुख मर्द इतना मूक होता जाता है, इसका अनुभव मुझे अब हुआ।

मिसेज गार्डन — कायर कहो। ऐसे कायर प्राणी कभी फलीभूत नहीं हो सकते। तुम ताकते ही रह जाओगे और कोई दूसरा आदमी आ कूदेगा।

विलियम — इसकी तो मुझे चिन्ता नहीं मिसेज गार्डन, उसका और अपना खून एक कर दूँगा। मैं चाहे जेनी को न पा सकूँ पर कोई दूसरा भी उसे मेरे जीते-जी नहीं पा सकता।

मिसेज गार्डन — फिर वही उजड्डपन की बात! अरे तो प्रोपोज क्यों नहीं करता भई?

विलियम — कैसे प्रोपोज करूँ, यही तो मुझे नहीं आता। कई किताबें देखीं, मगर कुछ साफ न खुला।

मिसेज गार्डन — उसे कभी पार्क-वार्क में ले जाओ और वहाँ एकान्त में प्रोपोज करो और मैं क्या बताऊँ?

विलियम — वह जब मेरे साथ कहीं जाय भी। मुझे देखते ही तो उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है। चाहती है कि मैं उठकर चला जाऊँ। कभी खातिर से बैठाए, कुछ बातचीत करे, त तो मेरा दिल बढ़े।

मिसेज गार्डन — तो क्या तुम साल-भर से यों ही रास्ता नापने आते हो?

विलियम — मेरी पहुँच तो आप ही तक हैं।

मिसेज गार्डन — तो क्यो मुझसे शादी करेगा? कैसा युवक है! होशियार मर्द एक घंटे में औरत को रास कर लेता है, तुम्हें सालभर दौड़ते हो गया और अभी 'क' 'ख' की नौबत भी नहीं आई। कुछ तुम में बूता हो तो मैं भी जोर लगाऊँ। बछ्ड़ा तो खूँटे ही के बल पर कूदेगा। आखिर तुमने उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अब तक क्या-क्या कार्रवाई की?

विलियम — मैंने अंग्रेजी बोलने का अच्छा अभ्यास कर लिया है।

मिसेज गार्डन — खूब तो क्या आप अंग्रेजी में प्रोपोज करेंगे, या वह तुम्हारे अंग्रेजी भाषण का प्रवाह देखकर तुम्हारे ऊपर लट्टू हो जायगी?

विलियम — मैंने गाना भी सीख लिया है।

मिसेज गार्डन — यह तुमने बहुत अच्छा किया। वह गाने में कुशल है। सम्भव है रुचि की समानता आगे चलकर मैत्री का रूप धारण कर ले। प्यानो बजा लेते हो।

विलियम — जी हाँ, अच्छी तरह।

मिसेज गार्डन — अभी तो जेनी के आने में देर है। अपनी सहेली से मिलने गई है। चलो देखूँ तुम कैसी प्यानो बजा लेते हो?

मिसेज गार्डन — लाहौल-विला-कूवत! यही आपका गाना है! खुदा के लिए कहीं उसके सामने न बजाने लगना, नहीं उसे तुम्हारी सूरत से घृणा हो जाएगी।

विलियम — अभी तो सीख रहा हूँ मिसेज गार्डन, कुछ दिनों में देखिएगा!

मिसेज गार्डन — जाओ भी, चले हो गाना सीखने। अच्छा और क्या सीखा?

विलियम — टेनिस खेलने लगा हूँ।

मिसेज गार्डन — हाँ, इसकी बड़ी जरूरत थी। खूब अच्छी तरह खेल लेते हो?

विलियम — जी हाँ, कहिए तो दिखाऊँ?

मिसेज गार्डन — टेनिस भी तो प्यानो ही की तरह नहीं सीखा है?

विलियम — नहीं जी, खूब खेलता हूँ। अच्छे-अच्छों के छक्के छुड़ा दिये हैं।

मिसेज गार्डन — सच! अच्छा कमरे में चलकर दिखाओ तो जरा अपना खेल।

(दोनों कमरे में आते हैं। मिसेज गार्डन खूंटी पर से दोनों रैकेट उतार लेती है। दोनों एक-एक रैकेट लेकर आमने-सामने खड़े हो जाते है। विलियम गेंद सर्व करता है। मिसेज गार्डन गेंद को उसकी ओर लौटाती है। वह गेंद की तरफ लपकता है और जोर से आकर लुढ़क जाता है। फिर सँभलकर खड़ा होता है)

मिसेज गार्डन — यही आपका खेल है! तुम इसमे भी फेल हो गए। खुदा के लिए कहीं जेनी के सामने न खेलना, नहीं मुफ्त में भद हो।

विलियम — मैं गिरा थोड़े ही थी। जोर सो दौड़ा तो जरा पाँव फिसल गया।

मिसेज गार्डन — अच्छा, टेनिस-सूट तो बनवा लिया है?

विलियम — यह तो मुझसे किसी ने बताया ही नहीं!

मिसेज गार्डन — शाबाश! तो यहाँ लांग बूट पहनकर टेनिस खेलते हो?

विलियम — बूट पहनकर खूब दौड़ते बनता है।

मिसेज गार्डन — वही हो और क्या। मैं पूछती हूँ, आखिर तुम किस दुनिया में रहते हो? पहले टेनिस सूट बनवाओ, तब टेनिस खेलो। यह नहीं कि यह लक्कड़तोड़ जूते और यह नीचा कोट पहनकर टेनिस खेलने लगे। तुम्हारी हँसी उड़ती होगी और क्या?

विलियम — मुझसे तो लेडी डगलस ने यही कहा कि फौजी आदमियों के लिए टेनिस सूट की जरूरत नहीं।

मिसेज गार्डन — अच्छा, अब आदमी बनना सीखो। यह जंगल-सी मूँछें साफ कराओ। वह जमाना दूसरा था, जब औरत मर्द की मूँछें देखकर खुश होती थी। मुझे ही ले लो। मुंड़ी हुई मूँछें मुझे एक आँख नहीं भाती; लेकिन अब जमाना बदल गया है। अब

स्त्री चाहती है कि मर्द का चेहरा साफ हो। बालों का चिह्न तक न हो।

विलियम — तो कल ही लीजिए। इसमे कौन छुप्पन टके का खर्च है।

मिसेज गार्डन — अच्छा कुछ नाचना-वाचना भी सीखा है? जेनी बहुत अच्छा नाचती है।

विलियम — जी हाँ, नाचना तो पहले ही से आता है।

मिसेज गार्डन — अच्छा जरा दिखाओ।

(विलियम वहीं बन्दरों की भाँति उचकने लगता है। नाचते समय अपने स्थूल शरीर को सँभालने में उसकी मुखाकृति विकृत हो जाती है कि मिसेज गार्डन हँसते-हँसते लोट जाती है)

मिसेज गार्डन — रहने भी दो। यह आपका नाच है, जैसे बनैला सुअर किलोल करे। भई यह बेल मुँढ़े चढ़ने की नहीं। अभी तुममें बड़ी-बड़ी त्रुटियाँ हैं। पहले इनको दूर करो! तब हिम्मत करके एक दिन प्रोपोज करो।

विलियम — त्रुटियाँ तो मैं पूरी कर लूँगा, लेकिन प्रोपोज करना टेढ़ी खीर है।

मिसेज गार्डन — मैं एक बात कहूँ - जरा-सी शराब पी लेना।

विलियम — ऐसा न हो, बहकने लगूँ?

मिसेज गार्डन — अजी नहीं, थोड़ी-सी पीना और बढ़िया किस्म कीं, जिसमें मुँह से सुगंध आवे! और देखो, गँवारों की तरह बातचीत न किया करो। शिष्टाचार सीखो। पहनावा भी भले आदमियों-सा रखो। टाई और कॉलर रेशमी लो। कोट के बटन में एकाध गुलाब लगा लिया करो। यह मोटा-सोटा लेड़ियों के पसंद की चीज नहीं। हलकी-सी सोफियानी छड़ी लो। यह तुमने डिबिया-सी घड़ी और जंजीर लगा रखी है, इसे धता बताओ और सुनहरी घड़ी कलाई पर बाँधो। तुम्हारे घर में कितने नौकर है?

विलियम — नौकर! नौकरों की क्या जरूरत है? एक बूढ़ी दाई है, वह रोटी और गोश्त पका देती है — दोनों वक्त। सुबह को दो सेर दूध खुद दुहा लाता हूँ। कच्चा ही पी जाता हूँ। बुढ़िया बिस्तर डाल देती है। दफ्तर से आकर दो ढाई सौ सौ हाथ लेजिम के फेर लेता हूँ। खाना खाकर सो जाता हूँ।

मिसेज गार्डन — अगर तुम्हारी यह रहन-सहन है तो जेनी से हाथ धो रखो। वह मजदूर पति नहीं, जेंटिलमैन पति चाहती है।

विलियम — अब तो मुझे किसी ने कुछ बताया ही नहीं। अब आपने सलाह दी है, देखिए कितनी जल्द जेंटिलमैन बन जाता हूँ.

मिसेज गार्डन — कुछ न हो तो एक बेयरा, एक खानसामाँ, और एक अर्दली तो होना ही चाहिए। बावरची अलग। एक मेहतर, एक धोबी और एक बागवान भी रख लो। और कैसे मालूम होगा कि तुम साहब हो। अभी मोटर न हो तो कोई हरज नहीं, लेकिन दो साल में उसका प्रबन्ध भी करना पड़ेगा। घर में कुछ तस्वीरें हैं?

विलियम — जी हाँ, अखबारों में जो अच्छी तस्वीर नजर आ जाती है। फ्रेम करा लेता हूँ।

मिसेज गार्डन — शाबाश? तब तो तुम आर्ट के बड़े रसिक हो। अच्छा कभी सिनेमा देखने जाते हो?

विलियम — वहाँ जाकर नींद कौन खराब करे मिसेज गार्डन? मुझे तो उसमे कुछ मजा नहीं आता।

मिसेज गार्डन — तो तुम निरे गँवार हो। खाना, काम करना और सोना जानते हो। सभ्यता तो तुम्हें छू नहीं गई...।

(जेनी की आहट मिलती है। विलियम पिछवाड़े के द्वार से बदहवास भागता है!)

जेनी — आज उमा और उसका पति विदा हो गये मामा! उमा बहुत रोती थी। मेरे गले लिपटकर रोने लगी। मुझे भी रोना आ गया। अब बेचारी न जाने बक आएगी!

मिसेज गार्डन — इन लोगों में विदाई के समय रोने का बुरा रिवाज है।

जेनी — क्या जाने मामा! मुझे तो खुद रोना आ गया। मैं तो तुम्हारे पास से जाने लगूँ, तो मुझ जरूर रोना आये। योगराज एक सिनेमा कम्पनी का डायरेक्टर है मामा! पंद्रह सौ वेतन पाता है।

मिसेज गार्डन — अच्छा! मगर अभी उम्र तो कुछ नहीं है। अपनी-अपनी तकदीर है।

जेनी — अमेरिका और इग्लैंड हो आये हैं मामा! अमेरिका में एक कम्पनी के डायरेक्टर रहे। कितनी ही युवतियाँ वहाँ उनसे शादी करने पर तुली हुई थीं। कितनी ही तो लाखों की सम्पति उन्हें दे रही थीं, लेकिन उनकी मँगनी पहले ही उमा से हो गई थी। सबको सूखा जवाब दिया। वहाँ होते तो अब तक उन्हें चार-पाँच हजार मिलते होते। इन फन में उन्हें कमाल है। उमा है बड़ी

नसीबों वाली। मुझे उन्होंने अपनी कम्पनी मे बुलाया है। पहले एक हजार देंगे।

मिसेज गार्डन — (बेटी को गले लगाकर) सच!

जेनी — हाँ मामा! वह तो मुझे अपने साथ ले चलने पर जोर दे रहे थे। मैंने कहा, अभी मुझे कुछ तैयारी करने है। मुझे पाँच सौ का चैक तैयारियों के लिए दे गए।

मिसेज गार्डन — खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने आड़े वक्त में हमारी मदद की। बड़ी शरीफ आदमी मालूम होता है।

जेनी — (कुछ शरमाते हुए) अगर उमा मेरी सहेली न होती और मुझसे इतना प्रेम न करती होती, तो एक बार मैं अपने भाग्य की परीक्षा करती।

मिसेज गार्डन — क्या कहती है जेनी! विवाहित पुरुष के साथ?

जेनी — शादी-विवाह बच्चों का खेल है, मामा! यह केवल स्त्री और पुरुष के मन का समझौता है। इसमें धर्म को घसीटना मूर्खता है। मैं रूप-रंग में उमा जैसी नहीं! लेकिन उन्हें मैं जितना आकर्षित करती हूँ, उमा नहीं कर सकती। काश विवाह के पहले इनसे मेरा परिचय हो गया होता! मेरा गाना सुनकर मस्त हो गए। और तुमसे क्या कहूँ? खेद यही है, कि उमा के पति हैं और

उमा इतनी निष्कपट और सरल है कि मुझे उस पर दया आती है। वह तो चाहती है कि उन्हें किसी औरत की हवा भी न लगे।

मिसेज गार्डन — (चिंता-भाव से) अब तेरे मन की यह दशा है जेनी, तो मैं तेरा उस कम्पनी में जाना उचित नहीं समझती।

जेनी — तुम भी मामा, मुझे छोकरी समझती हो। मैं योगराज को दिल से चाहती हूँ, लेकिन क्या मजाल कि मेरे मुँह से एक शब्द भी निकले, या इशारों से भी इसका आभास मिले। मैं न इतनी कृतघ्न हूँ औ न इतनी मदमाती।

मिसेज गार्डन — खुदा तेरे इरादों को पाक रखे बेटी! यही सज्जनों का धन है। खुदा ने चाहा, तो तुझे इससे अच्छा आदमी मिल जाएगा। चलो खाना तैयार है।

(दोनों खाना खाने जाती है)

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(वर्षा काल का एक प्रभात। बादल घिरे हुए हैं। एक शानदार बंगला। दरवाजों पर जाली लोट के परदे पड़े हुए हैं! उमा एक कमरे में पलंग पर पड़ी है। एक औरत उसके सिर में तेल डाल रही है। उमा का मुख पीला पड़ गया है। देह सूख गई है। कमरे के पीछे की तरफ दो खिड़कियाँ हैं जो बाग में खुलती हैं।

उमा — (आईने की ओर देखकर) यौवन इतना अस्थिर है, इसकी मैंने कल्पना भी न की थी। मानो एक स्वप्न था कि आँख खुलते ही गायब हो गया! मगर कितना मधुर स्वप्न था! मैं स्वर्ग की अप्सरा की भाँति विमान पर बैठी आकाश में विहार करती थी। अब वह न वह विमान है, न स्वर्ग। मैं अपनी सारी निधि खोकर दया की भिक्षा पर पड़ी हुई हूँ। क्यों चम्पा, तू भी कुछ देखती है बाबूजी के स्वभाव में कितना परिवर्तन हो गया है। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अब उन्हें मेरे समीप बैठने में आनन्द नहीं आता।

चम्पा — नहीं बहूजी, ऐसा न कहें। बाबूजी को मैंने कई बार आपके सिरहाने खड़े रोते देखा है। मुझे देखते ही उन्होंने रूमाल

से आँखें छिपा लीं और बाहर चले गए। आप वहाँ लेटी रहती हैं और वह दबे पाँव कमरे के द्वार पर टहलते रहते हैं। शायद उन्हें शंका होती है कि उनके आने से आपको कष्ट होगा।

उमा — (अविश्वास से देखकर) मुझे उनके आने से कष्ट होगा! यह उनका प्रेम है, जो मुझे जिन्दा रखे हुए है चम्पा! वही ज्योति मुझे जीवन प्रदान कर रही है। नहीं अब तक यह दीपक कब का बुझ गया होता।

(लेडी डाक्टर के साथ योगराज कमरे में आता है और उसे कुरसी पर बैठाकर बाहर चला जाता है)

लेडी डाक्टर — आज तो आपकी तबियत अच्छी मालूम होती है।

उमा — होगी! मुझे तो कोई फर्क नहीं मालूम होता।

लेडी डाक्टर — रात को नींद आई थी?

उमा — जी नहीं। पलक तक नहीं झपकी।

लेडी डाक्टर — मैंने तो आपसे पहले ही कहा था, कुछ दिनों के लिये पहाड़ पर चली जाइए। आप राजी न हुई। कम-से-कम सुबह को हवा खाने तो चली जाया करो।

उमा — इच्छा ही नहीं होती मेम साहब! सोचती हूँ, जब मरना ही है तो क्या छः महीने पहले और क्या छः महीने पीछे।

लेडी डाक्टर —नहीं-नहीं, तुम बहुत जल्दी अच्छी हो जाओगी, उमा देवी! अगर तुम पहाड़ों पर चली जाओ, तो एक महीने में चंगी हो जाओगी। मैं आज बाबूजी से कहती हूँ, तुम्हें कल ही भेज दें।

उमा — आप मुझे अकेले जाने को कहती हैं। मैं अकेली नहीं रह सकती।

लेडी डाक्टर —नहीं, अब मैं अकेली जाने को न कहूँगी। बाबूजी तुम्हारे साथ जाएँगे।

उमा — (प्रसन्न होकर) हाँ! तह मुझे जाने में कोई इंकार नहीं है।

(लेडी डाक्टर थर्मामीटर लगाकर ज्वर देखती है और नुस्खा लिखकर चली जाती है। द्वार पर योगराज खड़े हैं।

लेडी डाक्टर — इनकी हालत खराब होती जाती है। आप इन्हें पहाड़ पर ले जाएँ। मैंने पहले इस पर ज्यादा जोर न दिया था। मैंने समझा था, दवाओं से काम चल जायगा! लेकिन अब मालूम होता है, पहाड़ों पर जरूर ले जाना पड़ेगा।

योगराज — मैं कल ही चला जाऊँगा।

(दोनों योगराज के कमरे में आकर बैठते हैं)

लेडी डाक्टर — हाँ जाइए! मगर आपने किसी तरह का कुपथ्य किया, तो आपको इनसे हाथ धोना पड़ेगा। अब मैं साफ-साफ कहती हूँ, आपके ही कारण इनकी यह दशा हुई। सालभर में दो गर्भपात और तीसरा गर्भ! एक कमसिन, कोमल प्रकृति की बालिका कितना अत्याचार सह सकती है! आप शिक्षित हैं, दुनिया देख चुके है, आपको विवाह करने के पहले इस विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए था। पहले गर्भपात के बाद आपको कम-से-कम सालभर के लिए उन्हें मैके भेज देना चाहिए था। इनसे पृथक् रहना जरूरी थी, पर आपने जरा भी परवाह न की। जिस वक्त उमादेवी आई थीं, मैंने उन्हें देखा था। खिले हुए गुलाब का-सा

चेहरा था। एक साल के अन्दर उनकी यह दशा हो गई, कि देह में रुधिर का नाम नहीं। इसके जिम्मेदार आप है।

योगराज — लेडी विलसन, ईश्वर के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं आपसे कसम खाकर कहता हूँ, कि मुझे कुछ न मालूम था।

लेडी डाक्टर — तो यह किसका दोष है? अगर कोई आदमी तैरना न जानने पर भी दरिया में कूदे, तो यह किसका दोष है? जिसने घोड़े पर सवारी करना न सीखा हो, उसे क्या अधिकार है कि वह घोड़े दौड़ावे? उमादेवी बालिका थी। अपने कर्तव्य का उसे ज्ञान न था। इस विषय में न उसने कुछ पढ़ा, न किसी से बात-चीत की। वह तो इतना ही जानती थी कि आप उसके स्वामी है, आपकी इच्छाओं के आगे सिर झुकाना उसका कर्तव्य है। उसे क्या मालूम था कि वह आपकी कामुकता के सामने सिर झुकाकर अपने लिए विष बो रही है। आपको भी चाहे अभी कुछ न मालूम होता हो, पर जल्द या देर में इसका असर अवश्य होगा। प्रकृति उन लोगों को कभी क्षमा नहीं करती, जो उसके नियमों को तोड़ते हैं।

(योगराज निस्पंद बैठा रहता है, मानो निष्प्राण हो। जब लेडी विलसन टोपी उठाकर जाने लगती हैं, तो वह चौंककर खड़ा हो जाता है)

योगराज — लेडी विलसन, ईश्वर के लिए इन्हें किसी तरह बचा लीजिए। मैं उम्र भी आपकी गुलामी करूँगा। आप मुझसे मेरा सब कुछ ले लें, केवल इन्हें बच्चा लें, मुझ पर दया कीजिए।

लेडी डाक्टर — लाला योगराज बच्चों की-सी बातें न करो। बचाना मेरे वश की बात नहीं हैं। मैं यथाशक्ति यत्न करूँगी, यह मेरा धर्म है। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकती आपने भी वही नादानी की जो आपके दूसरे भाई किया करते हैं। स्त्री उनके लिए केवल विषय-भोग का यन्त्र है। वह स्त्री पर जितना अत्याचार चाहें कर सकते हैं। अगर स्त्री की ओर से कुछ अरुचि हो, तो उसके शत्रु हो जायँगे। वह बेचारी पति को प्रसन्न रखने के लिए सब कुछ झेलने को तैयार रहती है। सभी घरों में यही तमाशा देखती हूँ। अगर क्षय रोग न फैले, तो क्या हो; लेकिन अब भी घबराने की कोई बात नहीं। कल आप इन्हें पहाड़ पर ले जाइए और पूरा विश्राम दीजिए। नहीं तो आपको पछताना पड़ेगा।

(लेडी विलसन चलती जाती है। योगराज फिर उमा के पास आता है)

उमा — क्या कहती थीं लेडी विलसन? तुमसे अलग-अलग बातें कर रही थीं?

योगराज — कुछ नहीं, वह पहाड़ पर जाने की बातचीत थी। मैंने निश्चय किया है, कल हम लोग चल दें।

उमा — तो मेरे घर एक खत लिख दो। अम्माँ और दादा से मुलाकात तो कर लूँ। जेनी से भी मिलने को जीर चाहता है। उसे भी एक खत लिख दो।

योगराज — इसमें कई दिन लग जायेंगे, उमा!

उमा — जैसी तुम्हारी इच्छा। कहीं मर गई तो उन लोगों को देख भी न सकूँगी!

(उसकी आँखों से आँसू की दो बूँदें गिर पड़ती हैं। योगराज झुककर उसके माथे का चुम्बन लेता है)

योगराज — (भर्राई हुई आवाज में) नहीं, नहीं, उमा! ईश्वर ने चाहा, तो तुम वहाँ से स्वस्थ होकर आओगी। वहाँ के जलवायु का जरूर असर होगा।

उमा — (चम्पा) अब रहने दे चम्पा! बाहर जा, फिर बुलाऊँ, तो आ जाना। (चम्पा चली जाती हैं)

मेरे पास आ जाओ राजा। कुछ याद है तुम्हें, आज हमारे विवाह की पहली वर्ष-गाँठ है। आज ही के दिन तुम मेरे घर गए थे। ज्योंही मुझे बारात आने की खबर मिली, मैं कोठे पर चढ़कर तुम्हें देखने गई थी। तुम नहीं देख सकते थे! पर मैंने तुम्हें खूब देखा था। कितनी जल्द एक साल बीत गया! आज उसका उत्सव मनाऊँगी। तुम भी दफ्तर न जाना। आज मेरा जी कुछ हलका मालूम होता है। तुम्हारे साथ खूब बातें करूँगी। तुम चले जाते हो, तो घर फाड़ खाने लगता है। एक छन भी तुम्हें नहीं देखती तो जी घबरा उठता है। आज मैं अपना कमरा फूलों से सजाऊँगी, लेकिन नहीं। फूलों को न तोड़ना (बाग की ओर देखकर) अपनी डालियों पर कितने सुन्दर लगते है। तोड़ने से मुरझा जाएँगे। (चम्पा को बुलाती है, वह आकर खड़ी हो जाती है)

देख चम्पा, जरा मेरी वह साड़ी निकाल ला, जो कई महीने हुए कश्मीर से मँगवाई थी। एक बार भी नहीं पहन सकी। आज उसे पहनूँगी, देख और कपड़ों की तह न बिगड़े। साड़ी में थोड़ा अगर मल देना। आज इनसे इनाम लूँगी। (चम्पा चली जाती है)

बताओ आज मुझे क्या सौगात दोगे? कोई अच्छी-सी चीज देना।

योगराज — (काँपते हुए स्वर में) क्या लोगी उमा? मेरे पास जो कुछ है वह तुम्हारा है।

उमा — (मुस्कराकर उसके गले में हाथ डाल देती है) जी नहीं, इन बातों में मैं नहीं आती। मैं जो कुछ माँगूँगी वह तुम्हें देना होगा।

योगराज — तुम्हारे लिए मेरी जान हाजिर है उमा!

उमा — मैं तुमसे एक वचन माँगती हूँ।

योगराज — यह तो तुमने कुछ न माँगा।

उमा — नहीं मैं वही वचन लूँगी। उसमें मुझे जितना आनन्द मिलेगा उतना और किसी चीज से न मिलेगा। वचन दो कि मैं मर जाऊँगी, तो मेरी सोहाग-सिंदूर की डिबिया पर रोज दो फूल चढ़ाओगे। उसी सिंदूर ने तो मुझे तुम्हारा प्रेमदान दिया था।

तुम्हें छोड़कर मुझे संसार में उससे प्रिय और कोई वस्तु नहीं है। उसकी याद बनाए रखना।

(योगराज मुँह फेरकर रुमाल आँखों पर रख लेता है और आँसुओं को रोकता हुआ कमरे के बाहर चला जाता है। एक मिनट तक वह सामने के अशोक-वृक्ष के नीचे खड़ा फूट-फूटकर रोता है। फिर उमा की पुकारना सुनकर द्वार की ओर चलता है! पर अश्रु-विह्वल हो जाने के कारण द्वार पर रुक जाता है।

(परदा)

चौथा दृश्य

(जेनी का मकान, संध्या का समय। विलियम टेनिस सूट पहने, मूँछें मुँडाए, एक रैकेट हाथ में लिए, नशे में चूर आता है।(

जेनी — आज तो तुमने नया रूप भरा है विलियम। यह किस गधे ने तुमसे कहा कि मूँछें मुँड़ा लो! बिल्कुल हिजड़ों से लगते हो। अपने सिर की कसम! यह तुम्हें क्या सनक सवार हुई। अच्छी खासी मूँछे थीं, मुँडाकर सफाया कर दिया। जब जाकर आईने में अपनी सूरत देखो। एक तो माशा अल्लाह आप यों ही बड़े रूपवान हैं, उस पर मूँछें मुँड़ा लीं। हो निरे गावदी।

विलियम — (कुर्सी जेनी के पास खींचकर) आज का दिन बड़ा मुबारक है जेनी!

जेनी — (मुँह फेरकर) अरे तुमने तो शराब पी है। (नाक बन्द करके) नाक फटी जाती है। अलग बैठिए आप। आज तुम्हें हो क्या गया है?

विलियम — (जेनी की तरफ झुककर) आज मेरा दिमाग सातवें आसमान पर है जेनी। मैं विलियम नहीं हूँ अब। आज मैं उस जीवन का स्वप्न देख रहा हूँ, जिस पर फरिश्ते भी लट्टू होते हैं। आज मुझे यह वरदान मिलने वाला है। जिस पर तीनों लोक की निधि कुरबान है, आज मैं तुम्हें अपनी जीवन-सहचरी बनने की दावत देने आया हूँ। आज मैं प्रोपोज कर रहा हूँ। (कुर्सी से उतरकर जेनी के पैरों पर सिर रख देता है) देखो जेनी, खुदा के लिए इंकार मत करना। बोलो, मेरी प्रार्थना स्वीकार करती हो?

तुम्हारे मुख के एक शब्द पर मेरे भाग्य का दारमदार है। अगर 'हाँ' कहती हो तो मुझसे बड़ा भाग्यशाली संसार में नहीं। 'न' कहती हो, तो मुझसे बड़ा अभागा संसार में न होगा। यदि तुम्हें मुड़ी हुई मूँछें पसंद नहीं हैं तो मैं फिर रख लूँगा। देखो, मैंने इसी दिन के लिए यह सूट बनवाया है, और मुझे यकीन है कि यह मुझे बुरा नहीं लगता।

जेनी — बिल्कुल नहीं, खुदा बुरी नजर से बचाए।

विलियम — (अकड़कर) मैं टेनिस बहुत अच्छा खेलने लगा हूँ।

जेनी — सच?

विलियम — अपने सिर की कसम! और प्यानो भी खूब बजा लेता हूँ।

जेनी — ओहो! अब तुम पूरे उस्ताद हो गए।

विलियम — नाचता ऐसा हूँ कि तुम देखो तो खुद नाचने लगो।

जेनी — वाह! अब तो कोई वजह नहीं हैं कि मैं तुमसे शादी न करूँ।

विलियम — वह मेरी जिन्दगी का सबसे मुबारक दिन होगा।

जेनी — अच्छा तो आओ हमारी-तुम्हारी शर्ते तै हो जायँ।

विलियम — सब कुछ गिरजे में हो जायेगा, जेनी! ओ हो! जिस वक्त मैं तुम्हें आलटर की तरफ ले चलूँगा, तुम रेशमी गाउन पहने, हाथ में गुलदस्ता लिये मेरे कंधे पर सिर रखे चलोगी, वह कितनी मुबारक घड़ी होगी।

जेनी — मुझे उस स्वांग से नफरत है।

विलियम — (ताज्जुब से) तो फिर और कैसे शादी होगी जेनी!

जेनी — तुम मेरी शर्तें मान लो, बस शादी हो गई। इसकी क्या जरूरत कि गिरजे चलें, पादरी आए, मेहमान जमा हों, बाजे बजे, रस्में अदा हों। मुझे वह तमाशा पसंद नहीं। बोलो, मेरी शर्तें मंजूर करोगे।

विलियम — (निराश होकर) क्या शर्तें हैं जेनी?

जेनी — मेरी पहली शर्त यह होगी कि जिस दिन तुम्हें किसी दूसरी औरत से बातें करते देखूँ, उसी दिन तुम्हें घर से निकाल दूँ।

विलियम — (प्रसन्न होकर) हाँ, मंजूर है जेनी?

जेनी — मेरी दूसरी शर्त यह होगी कि शादी के बाद भी मुझे अख्तियार होगा, जिससे चाहूँ हँसूँ-बोलूँ, जहाँ चाहे आऊँ-जाऊँ, जिससे चाहूँ प्रेम करूँ। बोलो मानते हो?

विलियम — यह कैसे मुमकिन है, जेनी! तुम हँसी करती हो। उस वक्त अगर कोई मर्द तुम्हारी तरफ आँखें भी उठाये, तो उसका खून पी जाऊँ, खोदकर जमीन में गाड़ दूँ, जीता निगल जाऊँ।

जेनी — तो फिर हमारी-तुम्हारी विधि नहीं मिलती।

विलियम — देखो जेनी, मेरी अभिलाषाओं का खून न करो। मेरी जिन्दगी बरबाद हो जाएगी।

जेनी — अच्छा बस, अब हँसी हो चुकी विलियम! तुमने कभी सोचा है, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

विलियम — (हक्का-बक्का होकर) आखिर और सब लोग क्यों शादी करते हैं?

जेनी — और सब लोग झक मारते हैं। मैं तुमसे पूछती हूँ, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

(विलियम सिर खुजलाता है और बगलें झाँकता है)

जेनी — तुम्हें नहीं मालूम। अच्छा मुझसे सुनो। तुम केवल इसलिए विवाह करना चाहते हो, कि तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे घर में एक खिलौना आ जाय।

विलियम — बस-बस यही बात है जेनी! तुम कितनी बुद्धिमती हो।

जेनी — तुम इसलिए विवाह करना चाहते हो कि जब मैं बढ़िया सूफियाना साड़ी पहनकर तुम्हारी मोटर साइकिल पर तुम्हारे साथ निकलूँ, तो लोग हँस-हँसकर कहे, 'वह जा रहा भाग्य का धनी विलियम!'

विलियम — बस-बस यही बात है, जेनी! सचमुच तुम बड़ी बुद्धिमती हो।

जेनी — इसलिए कि जब तुम अपने अफसरों की दावत करो, तो मैं उनसे मीठी-मीठी बातें करके उनका दिल खुश करूँ और अफसर खुश होकर तुम्हारी तरक्की करें

विलियम — बस-बस यही बात है जेनी।

जेनी — इसलिए कि तुम्हारे बच्चे हो जायँ और तुमने जो थोड़ी-सी चाँदी जमा कर रखी है, उसके वारिस पैदा हो जायँ।

विलियम — बस-बस जेनी! सुभान अल्लाह!

जेनी — तो मैंने इसके लिए बहुत अच्छी औरत तलाश कर रखी है। वह मुझसे कहीं अच्छी बीवी होगी तुम्हारी। तुम जैसे रखोगे वैसे रहेगी। जो चाहोगे वह करेगी। तुम्हारे घर में झाड़ू लगाएगी, तुम्हारा खाना बनाएगी, तुम्हारी बिस्तर लगाएगी।

विलियम — (प्रसन्न होकर) वह कौन है जेनी।

जेनी — मेरी मेहतरानी। गोरी, हँस-मुख, चंचल, बाँकी औरत है।

विलियम — तुम मेरा अपमान कर रही हो जेनी! मैं मेहतरानी से विवाह करूँगा? मैं भी खानदान का शरीफ हूँ।

जेनी — अच्छा! तो तुम ऐसी बीवी चाहते हो, जिससे तुम्हारे खानदान की इज्जत में बट्टा न लगे?

विलियम — तो तुम अभी शादी का अर्थ नहीं समझे।

विलियम — तो क्या मैं नालायक हूँ? मेरे पास ऐसे-ऐसे सर्टिफिकेट हैं कि देखो तो दंग रह जाओ।

जेनी — अच्छा! यह नई बात सुनी।

विलियम — मैं जो जरा चुपचाप रहता हूँ, तो तुमने समझ लिया बस यूँ ही है। अपने मुँह अपनी तारीफ नहीं करना चाहता। इसे मैं ओछापन समझता हूँ! लेकिन अब ऐसा अवसर आ पड़ा है, तो मुझे उन सनदों को पेश करना पड़ेगा। देखो। (जेब से कई चिट्ठियों का पुलिंदा निकालकर) यह मिसेज डगलस का खत है। उन्होंने मेरे टेनिस खेलने की तारीफ की है।

(जेनी खत पढ़ती है — It is hereby certified that Doby William handles his tennis ball just as a skillful wife handles her husband and consequently he should not be disqualified in matrimonial game on this account.)

जेनी — इस सनद ने तो मेरी जबान बन्द कर दी। तुम्हारे पेट में ऐसे-ऐसे गुण भरे हैं?

विलियम — जी हाँ, और आप क्या समझती हैं। देखती जाइए। यह मिस डासन का खल है।

(जेनी दूसरा खत पढ़ती है — It is hereby certified that Doby William ha invented an altogether new dance, never heard of before, and nobody else can compete him there. It is an extra qualification in his favour for a matrimonial job.)

जेनी — तुमने ऐसे-ऐसे लाजवाब सर्टिफिकेट छिपा रखे हैं! तुम तो छिपे रुस्तम निकले।

विलियम — देखती जाइए। इस चिट्ठी में हेडमास्टर साहब ने मेरे चाल-चलन की प्रशंसा की है और यह सनद दिखाना तो मैं भूल

ही गया। वह हिज़ हाइनेस गवर्नर ने मेरे फादर को दिया था। मुझे कोई मामूली आदमी न समझिए।

(मिसेज डगलस और मिस डासन दो औरतों के साथ आती नजर आती हैं। विलियम फौरन भाग खड़ा होता है)

मिस डासन — मैंने कहा चलूँ विलियम का तमाशा देखती जाऊँ। आज तुम्हें प्रोपोज करने आया था। मेरे सिर हो गया कि मुझे एक सर्टिफिकेट लिख दो। बताओ क्या लिखती।

मिसेज डगलस — निरा अहमक है। मुझसे जिद करने लगा कि टेनिस का सर्टिफिकेट दे दीजिए। रैकेट पकड़ने का तो शऊर नहीं। भला मैं क्या लिखती।

मिस डासन — क्या हुआ, उसने प्रोपाज किया? जरा उसका किस्सा कहो।

मिसेज डगलस — यही सुनने के लिए तो भागी आ रही हूँ।

जेनी — तुम्हें देखते ही भाग खड़ा हुआ। मगर तुमने बड़े मजे का सर्टिफिकेट दिया। फूला न समाता था। जेब में लिए फिरता है।

दोनों लेडियाँ — क्या-क्या! हमने कब कोई चिट्ठी दी!

जेनी — दिखाता तो था!

मिस डासन — तो कमबख्त ने अपने हाथ से लिख ली होगी। जभी भागा। कहाँ हैं दोनों चिट्ठियाँ?

जेनी — चिट्ठियाँ तो लेता गया! पर उसका मजमून मुझे याद है। हजरत ने अपनी दानिस्त में अपनी तारीफ लिखी थी।

(जेनी एक कागज पर दोनों खतों को याद से लिखती है और तीनों हँसते-हँसते लोट जाती हैं)

(परदा)

पाँचवा दृश्य

(योगराज का बंगला। प्रातःकाल। योगराज और जेनी एक कमरे में बैठे बातें कर रहे हैं। योगराज के मुख पर शोक का गाढ़ा

रंग झलक रहा है! आँख सूजी हुई है, नाक का सिरा लाल, कंठ स्वर भारी। जेनी सफरी कपड़े पहने हुए हैं। मालूम होता है, अभी बाहर से आई है)

जेनी — मुझे यही पछतावा हो रहा है कि एक दिन पहले क्यों न आई। जिस समय मुझे तार मिला, अम्माँ कुछ अस्वस्थ थीं। मैंने समझा जरा इनकी तबियत सँभल जाए, तो चलूँ! अगर जानती यह आफत आने वाली है, तो तुरन्त भागती देखने भी न पाई।

योगराज — आपका नाम अन्त समय तक उनकी जबान पर था। बार-बार आपको पूछती थीं। (लम्बी साँस खींचकर) मैं तो कहीं का न रहा, मिस जेनी! मुझे जीवन में यह विभूति मिल गई थी कि उसे खोकर अब संसार मेरी आँखों में सूना हो गया। और यह सब मेरे ही कर्मों का फल है। मैं ही उनका घातक हूँ। मेरी ही भोग-लिप्सा ने उस कच्चे फल को तोड़कर जमीन पर गिरा दिया। उन्हें दो-बार गर्भपात हुआ; पर मेरी अंधी आँखों को कुछ न सूझता था। जिस फूल को सिर और आँखों और हृदय से लगाना चाहिए था, जिसकी सुगन्ध से मुझे अपने जीवन को बसाना चाहिए था, उसे मैंने पैरों से कुचला। कभी-कभी जी में ऐसा

उबाल आता है कि दीवार से सिर पटक दूँ; यह दाग दिल से कभी न मिटेगा, यह घाव कभी न भरेगा! (रोता है)

जेनी — यों अधीर होने से कैसे काम चलेगा बाबूजी! मैं तो उसकी सहेली थी, लेकिन मुझे उससे जितना प्रेम था, उतना अपनी सगी बहन से भी न होता। फिर आपके शोक का अनुमान कौन कर सकता है। उसका शील-स्वभाव ही ऐसा था कि बेअख्तियार दिल को खींच लेता था, किन्तु अब धैर्य के सिवा और क्या कीजिएगा! खुदा की यही मर्जी थी, आदमी की उसमें क्या दखल! अब इसी विचार से दिल को तसल्ली दीजिए कि यह संसार उसके लिए उपयुक्त स्थान था। सब स्वर्ग के योग्य थी और स्वर्ग ने उसे ले लिया।

योगराज — हाय! किसी तरह दिल को तसल्ली नहीं होती, मिस जेनी! यों अपनी मृत्यु से मर जातीं, तो मैं सब्र कर लेता; लेकिन यह कैसे भूल जाऊँ कि मैंने ही उनकी हत्या की, मेरी ही विषयासक्ति ने उनकी जान ली। मैंने अमृत को इस तरह खाया, जैसे पशु घास खाता है। वह देवी मुझ पर कुरबान हो गई। मुझे प्रसन्न रखना उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। मेरी इच्छा के विरुद्ध कभी एक शब्द भी मुँह से न निकाला। प्रातःकाल नींद खुलती, तो उनकी सहास मूर्ति सामने आमोद की वर्षा-सी करती हुई दिखाई देती थी। दिन-दिन दुर्बल होती जाती

थी; लेकिन मेरी खातिरदारी में अणुमात्र भी कमी न करती थी। इस घर की एक-एक वस्तु पर उनका प्रेम अंकित है। वह खुद फूलों की तरह कोमल थीं। और फूलों से उन्हें असीम प्रेम था। यह गमले जो सामने रखे हुए हैं, उन्हीं के लगाए हुए हैं। खाने को जिस वस्तु में मेरी रुचि देखती, उसे अपने हाथों से पकातीं। कुर्सियों पर जो यह फूलदार गद्दे है, उन्हीं के काढ़े हुए हैं। मेज पर जो मेजपोश है, उन्हीं का काढ़ा हुआ है। तकियों के गिलाफ उन्हीं के बनाएँ हुए है, किस-किस बात को रोऊँ। उन्होंने अपने को मुझ पर अर्पित कर दिया। मुझ जैसा अनाचारी, व्यसनी, अधम व्यक्ति इस योग्य न थी कि उसे ऐसी देवी मिलती। ईश्वर ने सुअर के गले मे मोतियों की माला डाल दी?

(वह चुप हो जाता है और कई मिनट तक आँख बन्द किए बैठा रहता है। सहसा सिर पर जोर से हाथ मारकर कमरे से निकलता है और बगीचे की ओर भागता है। जेनी उसके पीछे-पीछे जाती है वह बगीचे में खड़ा होकर फूलों की क्यारियों की ओर ध्यान से देखता है, जैसे किसी को खोज रहा हो। फिर वहीं से लपका हुआ आता है और उमा के कमरे का परदा हटाकर धीरे से अन्दर जाता है और कमरे को खाली पाकर जोर से छाती पीटकर जमीन पर गिर जाता है। जेनी की आँक से आँसू बहने

लगते हैं। दौड़कर पानी लाती है और उसके मुँह पर पानी के छींटे देती है। एक मिनट में योगराज चौंककर उठ बैठता हैं)

जेनी — बाबूजी, आप बुद्धिमान होकर नादान बनते हैं। इस तरह होश-हवास खो देने से क्या फायदा होगा।

योगराज — कह नहीं सकता मुझे क्या हो जाता है, मिस गार्डन! मुझे ऐसा मालूम होगा है जैसे उमा अपने कमरे में बैठी हुई है, जैसे बगीचे में घूम रही है! जानता हूँ, अब इस जीवन में उनके दर्शन न होंगे, लेकिन न जाने क्यों यह भ्रम हो जाता है! मन किसी के मुँह से यह सुनने के लिए लालायित रहता है कि वह दस-पाँच दिन के लिए कहीं चली गयी है। कभी न मिलेंगी, सदा के लिए चली गई, यह असह्य है, मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता...! (एक क्षण के बाद सिर पर हाथ मार कर) मुझे इसका ध्यान ही न रहा कि आप सफर करके आ रही हैं! हाय? आज वह होतीं, तो आपको देखकर कितनी खुश होतीं। मैं आपकी क्या खातिर कर सकता हूँ, खातिर करने वाली तो चली गई!

(महाराज को पुकारता है) देखो, मिस साहब के लिए नाश्ता लाओ। बहुत जल्द और महरी को भेजो, आपका हाथ-मुँह धुलाए।

जेनी — आप जरा भी तकल्लुफ न करे बाबूजी! अभी नाश्ता करने की जरा भी इच्छा नहीं। जी नहीं चाहता।

योगराज — तो फिर आपकी खातिर क्या करूँ। आइए, आपको उमा का कमरा दिखाऊँ। देखिए उन्होंने कैसी-कैसी साहित्य की पुस्तकें जमा कर रखी थी। उनकी कविताएँ आपको सुनाऊँ।

(दोनों उमा के कमरे में जाते हैं जो कालीन और गद्देदार कोचों और शीशे के सामानों से सजा हुआ है। योगराज एक आल्मारी खोलता है। उसमें उमा के आभूषणों की संदूकची निकल आती है। योगराज तुरन्त उसे निकाल लेता है और उसे खोलकर एक-एक आभूषण लेकर जेनी को दिखाता है)

योगराज — यह उनके आभूषण हैं। इन्हें पहनकर वह कितनी प्रसन्न होती थीं। इनके एक-एक अणु में उनके स्पर्श का सौरभ है। इन्होंने अपनी सुनहरी आँखों से उनके रूप की छटा देखी है। यह उनके आदर और प्रेम के पात्र रह चुके हैं। यह इस दुरवस्था में पड़े रहें, यह मैं नहीं देख सकता। उन्हें अपने आभूषणों की यह दशा देखकर स्वर्ग में भी कितना दुःख होता होगा। मैं आपके मनोभावों पर आघात नहीं करना चाहता, मिस

गार्डन। क्षमा कीजिएगा, लेकिन आप इन चीज़ों को स्वीकार कर लें, तो उनकी आत्मा को कितनी शान्ति होगी! इनका कोई दूसरा उपयोग ऐसा नहीं है, जिससे उन्हें इतना आनन्द हो। आपको वह अपनी बहन समझती थीं और इ नाते से मैं आपको इन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ।

(विक्षिप्तों की तरह मुस्कराता है)

जेनी — (सजल नेत्रों से) आपने तो मेरे लिए कुछ कहने की गुंजाइश नहीं रखी बाबूजी! लेकिन मैं अपने को इस योग्य नहीं समझती, आप इन्हें उनकी स्मृति-स्वरूप अपने पास सुरक्षित रखें। शायद कोई ऐसा समय आवे, जब इनका दावेदार घर में आ जाय। इन्हें मेरी ओर से उसकी भेंट कीजिएगा।

योगराज — (ठट्ठा मारता है) वह समय कभी न आएगा — जेनी! उमा ने जो स्थान खाली कर दिया है, वह हमेशा खाली रहेगा — हमेशा! आप मेरी इस याचना को अस्वीकार करके मुझे बड़ा सदमा पहुँचा रही हैं, और उनकी आत्मा को भी; लेकिन मैं जिद्दी आदमी हूँ, जेनी। कभी-कभी पागलों के-से काम करने लगता हूँ।

आइए, मैं आपको एक चीज पहनाऊँ। चोट खाए हुए दिल की गुस्ताखियों को क्षमा कीजिएगा।

(वह उस हार को जेनी के गले में डाल देता है। जेनी सिर झुकाए सजल नेत्र शोकातुर बैठी हुई है। योगराज उसकी कलाइयों पर कंगन, शेरदहाँ, ब्रेसलेट पहनाता है, गले में नेकलेस डाल देता है। पैरों में पाजेब डालने के झुकता है। जेनी जल्दी से पाँव हटा लेती है और उसके हाथ से पाजेब लेकर पहन लेती है। सामने आईना रखा हुआ है। जेनी की उस पर नजर पड़ जाती है, वह उसमें अपनी सूरत देखती है और खिलखिलाकर हँस पड़ती है।

जेनी — आपने तो मुझे गुड़िया बना दिया। मुझे तो यह चीज बिल्कुल शोभा नहीं देती।

योगराज — आप मेरी आँखों से नहीं देख रही हैं मिस जेनी! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि उमा मेरे ऊपर तरस खाकर आकाश से उतर आई है। आप में और उसमें इतना सादृश्य है, इसका अब तक मुझे अनुमान न था। तुम मेरी उमा हो, जेनी! तुममें उसी आत्मा का आभास है, वही रूप-माधुर्य है, वही कोमलता है। तुम वही हो, मेरी प्यारी उमा! तुम मुझसे क्यों रूठ

गई थीं? बोलो, मैंने क्या अपराध किया था? इस तरह कोई अपने प्रेमी से आँखें फेर लेता है!

(वह फूट-फूटकर रोने लगता है)

जेनी — (घबराकर) बाबूजी! होश में आइए। यह आपकी क्या दशा है।

(आदमियों को पुकारती है)

(पटाक्षेप)

छटा दृश्य

(योगराज का बंगला। जेनी और योग बैठे बातें कर रहे हैं)

जेनी — आयी थी दो दिन के लिए और रह गयी तीन महीने! माँ मुझे रोज कोसती होगी। मैंने कितनी ही बार लिखा कि यहीं आ

जाओ, पर आती ही नहीं। मैं सोचती हूँ, दो-चार दिन के लिए घर हो आऊँ।

योगराज — अजीब स्वभाव है उनका। रुपये भी वापस करत देती है, घर से आती भी नहीं। आखिर चाहती क्या है?

जेनी — बस यही कि मैं शादी कर लूँ और उनके पास रहूँ। शायद उन्हे यह ख़ौफ़ भी हो किय कहीं तुम मुझे लेकर भाग न जाओ।

योगराज — (हँसकर) तुम जाओगी, तो फिर लौटकर न आने पाओगी। मेरा फिल्म अधूरा रह जाएगा। जब तक ड्रामा पूरा न हो जाय, मैं तुम्हें एक दिन के लिए भी नहीं छोड़ सकता। और अब तुमसे क्या छिपाऊँ जेनी! छिपाना व्यर्थ है। शायद तुमने पहले ही भाँप लिया है। अब मैं तुम्हारे बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता। मैंने तुममें अपनी उमा को फिर से पाया है। अगर उस वक़्त तुम न आती, मालूम नहीं मेरी क्या हालत होती। शायद दीवाना हो जाता, यह कहीं डूब मरा होता। तुमने आकर मेरे तड़पते हुए हृदय पर मरहम रखा और मुझे जिला लिया।

जेनी — इसीलिए अब मेरा यहाँ से जाना ज़रूरी है। मैं जाना नहीं चाहती। शायद इतना तुम भी समझ गये होंगे, क्यों नहीं जाना चाहती। लेकिन इसका नतीज़ा क्या है? खुद रो-रोकर मरूँ और

तुम्हें भी हैरान करूँ। मैं तो रोने की आदी हूँ। लेकिन तुम्हारे रास्ते का काँटा क्यों बनूँ? तुम्हारा जी थोड़े दिनों में बदल जाएगा। जीवन के आमोद-प्रमोद तुम्हें फिर अपनी ओर खींच लेंगे और जीवन की अभिलाषाएँ फिर जाग उठेंगी। तुम इतने सहृदय, इतने उदार, इतने सज्जन, इतने उन्नतात्मा हो कि जिस किसी से भी तुम्हारा सम्पर्क हो जाएगा, उसमें तुम अपना आदर्श आरोपित कर दोगे। जब मुझ जैसी औरत में तुमने गुण देख लिए, तो मुझे मालूम हो गया कि तुम अपना स्वर्ग आप बना सकते हो मिट्टी को भी सोना बनाने का मन्त्र तुम्हें आता है। मैं कभी किसी से प्रेम कर सकूँगी, इसकी मैंने कल्पना तक न की थी। प्रेम मेरे लिए विनोद और परिहास की वस्तु थी। तुमने मेरे हृदय में प्रेम की ज्योति जलायी और अब उस पिछले जीवन की याद करती हूँ तो मालूम होता है कितना नीरस, कितना अस्वाभाविक था, लेकिन इसका कोई इलाज नहीं। विधि हमारे और तुम्हारे बीच में खड़ी है और –

योगराज — क्या उस विधि पर हम विजय नहीं पा सकते जेनी?

जेनी — कैसे?

योगराज — हमारी शादी नहीं हो सकती?

जेनी — धर्म-बन्धन को क्या करोगे!

योगराज — मैं धर्म के बन्धन को तोड़ दूँगा?

जेनी — (हाथ से मना करके) नहीं नहीं, मैं तुम्हें समाज में अछूत नहीं बनाना चाहती। तुम्हारा समाज से निकाल दिया जाना, मेरे लिए असह्य है मैं तुम्हें इतने घोर धर्म-संकट में नहीं डाल सकती। मेरे प्रति तुम्हारा जो सद्भाव हो, उस पर इतना भारी बोझ लादना कि कुछ दिनों मं वह दब जाय, न मेरे लिए अच्छा है, न तुम्हारे लिए। मैं मानती हूँ, तुम मेरी खातिर वह अरमान और उपहास बर्दाश्त करोगे, लेकिन मैं इतनी स्वार्थिनी नहीं हूँ।

योगराज — मैं समाज और उसके बन्धनों की परवा नहीं करता जेनी! अगर मैं कोई ऐसा काम करूँ, जिससे समाज का अहित होता हो, तो बेशक समाज मेरा बहिष्कार कर सकता है, लेकिन मैं अपने व्यक्तिगत अधिकार को समाज के भय से नहीं छोड़ना चाहता।

जेनी — (सोचकर) नहीं, ऐसे मामलों में तर्क से काम नहीं चल सकता। मुझे जाने दो। मैं जानती हूँ, तुमसे अलग रहकर संसार मेरे लिए सूना हैं, लेकिन मुझे इस विचार से सन्तोष होता रहेगा कि मैंने संसार के निर्दय आघातों से तुम्हारी रक्षा की।

योगराज — यह संतोष बहुत थोड़े दिन रहेगा, जेनी! अगर तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारे जाने के बाद मैं यह सब कुछ भूल जाऊँगा और फिर किसी रूपमती रमणी से विवाह करके आनन्द से रहूँगा,

तो वह गलत है। तुमने सोचा है, मैं अपना स्वर्ग आप बना सकता हूँ। तुमसे मुझे जो प्रेम है, उसे तुम मेरी शक्ति का प्रमाण समझ रही हो। वास्तव में तुम अपना मूल्य बहुत कम समझ रही हो। मैंने तुम में जो कुछ पाया, जो कुछ देखा, वह फिर कहीं और देख सकूँगा, यह असम्भव है। इसका प्रमाण शायद तुम्हें जल्द मिल जाय। निःस्वार्थ प्रेम ऐसी सस्ती चीज नहीं है जो बाजार में मिलती हो।

(दोनों कुछ देर तक सिर झुकाए विचारों में डूबे बैठे रहते हैं)

योगराज — अगर यही समाज का भय है, तो क्यों न हम किसी दूसरी जगह चलें,जहाँ कोई हमें जानता हू न हो?

जेनी — (मुस्कराकर) किसान की खेती उसकी आँखों के सामने चरी जाय, क्या तभी उसे दुःख होगा? बिना कोई अपराध किए चोरों की तरह रहना बहुत सुखी जीवन नहीं हो सकता। हम जिनसे आदर और सम्मान चाहते हैं, उन्हीं से निंदा पाकर दुखी होते हैं। और लोग क्या कहते हैं, इसकी हमें परवा नहीं होती? मामा तो जहर ही खा लेंगी और शायद तुम्हारे घर वाले भी प्रसन्न न होंगे।

योगराज — तुम तो किसी बात पर राजी नहीं हो जेनी!

जेनी — जिन हालातों में ईश्वर ने हम दोनों को पैदा किया है, उसका एक ही इलाज है कि हम दोनों एक-दूसरे से अलग हो जायँ। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ झेलने के लिए तैयार हूँ, लेकिन तुम्हें संकट में नहीं डाल सकती। तुम्हारे ऊपर यह आक्षेप मैं नहीं सुन सकती कि औरत के पीछे ईसाई हो गया और न शायद तुम मेरे ऊपर यह आक्षेप सुनना पसन्द करोगे के दौलत के पीछे एक आदमी के साथ चली गई। मैं आजकल की प्रथानुसार शुद्ध होकर तुम्हें उस आक्षेप से बचा सकती हूँ, लेकिन शुद्ध को मैं बिल्कुल ढोंग समझती हूँ। मैं अपने स्वभाव से, अपने संस्कारों से, जो कुछ हूँ, वही रहूँगी। हवन कर लेने या दो-चार मन्त्र पढ़ लेने से मेरे संस्कार नहीं बदल सकते। ईसाई-धर्म में कम-से-कम एक तत्व अब भी है, और वह सेवा है। हिन्दू-धर्म में तो वह चीज भी नहीं। यहाँ तो केवल रूढ़ियाँ हैं, केवल पुरानी लकीरों को पीटना है। इसके लिए मेरी आत्मा तैयार नहीं। मुझे हँसकर विदा कर दो। मगर देखना यह विच्छेद हमारे आत्मिक ऐक्य को शिथिल न कर दे। मुझसे नाराज न होना, मेरी तरफ से आँखें न फेरना। जेनी तुम्हारी है, और तुम्हारी रहेगी, संसार की आँखों में नहीं — ईश्वर की आँखों में, जो संसार की सृष्टि करता है।

योगराज — (कम्पित स्वर में) तो यह तुम्हारा अंतिम फैसला है, जेनी?

जेनी — हाँ, प्यारे, यही मेरा अंतिम फैसला है। तुम थोड़े दिनों में मुझे भूल जाओगे। ईश्वर से मेरी यही दुआ होगी कि तुम मुझे जल्द-से-जल्द भूल जाओ! लेकिन भूलकर भी कभी-कभी याद कर लिया करना। (रोकर) ये दिन कितनी जल्द गुजर जाएँगे, यह मैंने न सोचा था! लेकिन जीवन के लिए जिस प्रेमाधार की जरूरत है वह तुमने मुझे दे दिया और वह मेरी उम्र भर के लिए काफी है। विवाह मेरी दृष्टि में आत्मिक संबंध है। उसे रस्म के बन्धनों से जकड़ना मैं अनावश्यक ही नहीं, पाप समझती हूँ। दिल का मिलना ही विवाह है। रस्म के बन्धन से स्त्री-पुरुष को बाँध देना तो वैसा ही है, जैसे दो पशु एक रस्सी में जोत दिए गए हों। जिस बन्धन का आधार समाज या धर्म का भय है, वह कभी सुखकर नहीं हो सकता। सुख का मूल स्वच्छंदता है, बन्धन नहीं। प्रेम भी जल-प्रवाह की भाँति मुक्त रहना चाहता है। अवरोध से उसमें कीट पैदा हो जाते हैं, दुर्गन्ध आने लगती है। मेरा तो विचार है कि प्रेम बन्धनों में पड़कर उस प्रकार निष्प्राण हो जाता है जैसे कोई पौधा प्रकाश न पाकर निर्जीव हो जाता है। मैं स्वेच्छा से यहाँ रात भर बैठी रह सकती हूँ, लेकिन कोई यह

द्वार बन्द कर दे तो मैं इसी क्षण यहाँ से निकल भागने के लिए विकल हो जाऊँगी।

योगराज — मैं तो इसके लिए तैयार हूँ, जेनी!

जेनी — लेकिन मैं तो तुम्हें काँटों में नहीं उलझाना चाहती। समाज में तुम्हारा जो स्थान है, उसकी रक्षा करना भी मेरे प्रेम का अंग हो गया है। यह मेरे जीवन का नया अनुभव है। मुझे विश्वास है तुम अपने ऊपर इस निंदा और अपमान का कोई असर न होने दोगे! लेकिन मनुष्य तो प्रकृति के नियमों में जकड़ा हुआ है। उससे तुम कैसे बच सकते हो। इस ग्लानि और संकट के वातावरण में तुम बहुत दिन अपने का संभाल न सकोगे। मैं तुम्हारे ऊपर संदेह नहीं कर रही हूँ, लेकिन टॉल्स्टॉय की अन्नाकारेनिना का अन्त मेरी आँखों के सामने फिरा करता है। मैं उसे भूलना चाहती हूँ पर असफल होती हूँ।

योगराज — (निराश होकर) तुम्हारी जैसी इच्छा हो जेनी! मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता। जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। कभी-कभी मेरी खोज-खबर लेती रहना — ! आज मुझे मालूम हुआ कि उमा मर गई और अब फिर नहीं आ सकती! (रोने लगता है। फिर अपने को संभालकर)

यह सदमा शायद मैं बर्दाश्त न कर सकूँ, जेनी, लेकिन जाओ जहाँ रहो सुखी रहो।

जेनी — अपनी शादी में मुझे जरूर बुलाना।

योगराज — जल्द ही होगी, जेनी! सुनकर तुम खुद आओगी।

जेनी — हाँ, मैं खुद आऊँगी, कम-से-कम इत्तला तो देना।
(आभूषणों की संदूकची उठाकर)

और यह आभूषण उस सौभाग्यवती को मेरी ओर से भेंट कर देना।

योगराज — (संदूकची लेकर) धन्यवाद!

(उठाकर सिर झुकाए आहिस्ता कमरे के बाहर चला जाता है। जेनी एक क्षण तक उसे देखती रहती है, फिर आँखों से आँसू भरे अपना सामान बँधवाने लगती है)

(पटाक्षेप)

सातवाँ दृश्य

(जेनी का मकान। मिसेज गार्डन मुर्गियों को दाना चुगा रही है)

विलियम — मिस गार्डन का कोई पत्र आया थी?

मिसेज गार्डन — हाँ, वह खुद दो-एक दिन में आ रही है।

विलियम — मैं तो उसकी ओर से निराश हो गया हूँ, मिसेज गार्डन! मैं जो कुछ हूँ, वही रहूँगा। मैंने सब कुछ करके देख लिया। वह मेरे वश की नहीं। फिर अब वह खुद एक हजार महीना कमाती है। मेरे तीन सौ उसकी नजरों में क्या जँचेंगे। अब तो वह मुझसे विवाह भी करना चाहे तो न करूँ।

मिसेज गार्डन — सच! आखिर क्यों उससे नाराज हो गए? उसके एक हजार के साथ तुम्हारे तीन सौ मिलाकर तेरह सौ हो जाएँगे। इतना हिसाब भी नहीं जानते?

विलियम — लेकिन घर में मेरा पोजीशन क्या होगा, इसका भी आफ ख्याल करती हैं? मैं अपनी बीवी की नजरों में गिरना नहीं चाहता। आखिर वह किसलिए मेरा दबाव मानेगी, मेरा लिहाज

करेगी। सब लोग यही कहेंगे कि अपनी बीबी की रोटियाँ खाता है, बीबी की कमाई पर शान जमाता है।

मिसेज गार्डन — (मुस्कराकर) तो इसमें क्या बुराई है? औरत अपने मर्द की कमाई खाती है, उस पर शान जमाती है, तब तो उसे जरा भी शर्म नहीं आती।

विलियम — अब मैं आपको कैसे समझाऊँ। मर्द मर्द है, औरत औरत है।

मिसेज गार्डन — अच्छा? आज मुझे यह नई बात मालूम हुई। मैं तो समझती थी, मर्द औरत है, औरत मर्द है।

विलियम — आप तो मजाक करती हैं। मेरे दिल में जो भाव है उसे कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। मर्द चाहता है कि स्त्री उसका मुँह ताके, जिस चीज की जरूरत हो उससे कहे, उसका अदब और लिहाज करे। इसीलिए वह रात-दिन जी तोड़कर परिश्रम करता है, दगा-फरेब, छल-कपट सब कुछ केवल इसीलिए करता है कि स्त्री की निगाहों में उसकी शाख हो। उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा यही होती है कि स्त्री की ज्यादा-से-ज्यादा खातिर कर सके, ज्यादा-से-ज्यादा आराम दे सके। वह स्त्री ही के लिए जीता है और स्त्री के लिए मरता है। वह उस पर न्यौछावर हो

जाना चाहता है। लेकिन जब स्त्री खुद पुरुष से ज्यादा कमाती हो तो उसकी नजर में पुरुष का महत्त्व होगा?

मिसेज गार्डन — अच्छा, तुम्हारा यह मतलब है! लेकिन मैंने तो देखा है कि अक्सर पुरुषों को मालदार स्त्रियों की तलाश रहती है।

विलियम — ऐसे पुरुष बेहया है, मिसेज गार्डन! मैं उन्हें निर्लज्ज समझता हूँ। वह हमेशा स्त्री के मोहताज रहते हैं, उसकी खुशामद करते है, उसके इशारे पर चलते हैं। स्त्री उन पर शासन करती है, उनके काम पकड़कर जिस तरह चाहती है, उठाती और बैठाती है। मैं तो यह जिल्लत नहीं सह सकता।

मिसेज गार्डन — मैंने तो ऐसे मर्द भी देखे हैं, जो स्त्री के धन पर मजे उड़ाते हैं, और उस पर रोब भी जमाते हैं।

विलियम — उन लोगों को मैं भाग्यवान् समझता हूँ। मैं अपना शुमार उन भाग्यवानों में नहीं कर सकता। उनमें कुल-प्रतिष्ठा होगी, रूप-आकर्षण होगा, विद्या-गौरव होगा। मुझमें तो इनमें से एक गुण भी नहीं। मैं तो सीधा-साध गरीब मजदूर हूँ। मेरी हिमाकत थी कि मैंने जेनी का रोग पाला। वास्तव मे मैं उसके योग्य नहीं हूँ।

मिसेज गार्डन — इसीलिए कि वह तुमसे ज्यादा कमाती है?

विलियम — हाँ, प्यारी मिसेज गार्डन! मैंने अपनी गलती मालूम कर ली। इस बीच में मैंने एक बात और मालूम कर ली। देखिए, मेरी हँसी न उड़ाइएगा। मुझे मालूम हुआ है कि जीवन में मुझे ऐसी सहचरी की जरूरत है, जो मुझसे ज्यादा अनुभव, ज्यादा बुद्धि, ज्यादा धैर्य रखती हो, जो अपनी सलाहों से मेरी सहायता करती रहे, जिस पर मैं विश्वास कर सकूँ! मैं तुममें ये सभी गुण पाता हूँ। (जमीन पर घुटने टेकता है) मैं आपसे प्रोपोज करता हूँ, मिसेज गार्डन! देखिए खुदा के लिए इंकार न कीजिएगा। मुझे अब ज्ञात हुआ कि जीवन के आनन्द के लिये रूप और यौवन की इतनी जरूरत नहीं है, जितनी अनुभव और सेवाभाव की। रूपवती युवती मुझमें हजारों त्रुटियाँ पाएगी। वह अपने साथ संदेह और ईर्ष्या लाती है। मुझे उसकी जासूसी करनी पड़ेगी। वह किससे बोलती है, किससे हँसती है, कहाँ जाती है, मुझे उसकी एक-एक गति पर निगाह रखनी पड़ेगी। यह झंझट मेरे मान का नहीं। आपके ऊपर मैं पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ।

मिसेज गार्डन — (हर्षोन्मत्त होकर) भला सोचो तो विलियम, दुनिया क्या कहेगी, कि इस औरत को बुढ़ापे में यह हवस पैदा हुई है। यही करना था तो तीन साल पहले क्यों न किया। तब तो मैं इतनी बूढ़ी न थी। तब शायद तुम्हें कुछ अधिक संतुष्ट कर सकती।

विलियम — इसका तो मुझे भी खेद है।

मिसेज गार्डन — अच्छा बतलाओ, मुझ पर रोब तो न जमाओगे?

विलियम — नहीं, खुदा की कसम! मैं आपके हुक्म के बगैर एक कदम भी न चलूँगा।

(मिसेज गार्डन विलियम को छाती से लगती है)

मिसेज गार्डन — मैं तुम्हारी ओर से बहुत आशंकित थी विलियम, कि कहीं तुम किसी मायाविनी के जाल में फँस न जाओ। तुम इतने सरल, इतने निष्कपट, इतने भोले-भाले हो कि मुझे तुम्हारी ओर से बराबर यही खटका लगा रहता था। इसीलिए मैं तुम्हें जेनी से मिलाती रहती थी। जेनी में और चाहे कितनी बुराइयाँ हो, चंचलता नहीं है। तुम्हें याद है प्यार विलियम, मेरी तुमसे पहली मुलाकात पार्क मे हुई थी। मैं गिरजे से लौट रही थी। उसी दिन तुमने मेरे हृदय में स्थान पा लिया था। मेरे दिल ने उसी दिन कहा था कि वह चिड़िया एक दिन तेरे पिंजरे में आएगी। आज वह सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। चलो हम दोनों गिरजा में खुदा का शुक्र करें।

(पटाक्षेप)

आठवाँ दृश्य

(जेनी का विशाल भवन। जेनी एक सायेदार वृक्ष के नीचे एक कुर्सी पर विचारमग्न बैठी है)

जेनी — (स्वगत) मन को विद्वानों ने हमेशा चंचल कहा है। लेकिन मैं देखती हूँ कि इसके ज्यादा स्थिर वस्तु संसार में न होगी। कितना प्रयत्न किया कि रंजन को भूल जाऊँ, लेकिन जितना ही उससे दूर भागती हूँ उतना फंदा और कठोर होता जाता है। महीनों से प्यानो पर नहीं बैठी। दिल जैसे मर गया है। वही सूरत आँखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूँजती है। यही रंजन से रूपवान पुरुष पड़े हुए है, उनसे कहीं विद्वान्, पर किसी से बोलने की इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूँ मैं जरा भी हिम्मत दिखाऊँ तो वे मुझ पर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं। किसी से दो एक बात कर लेती हूँ तो कितने निहाल हो जाते है, पर उस देवता के सामने

सब ये खिलौने हैं। खिलौने में रंग है, रूप है कला है, उस देवता से कहीं ज्यादा, पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है, खिलौनों के प्रति केवल विनोद का भाव। वह क्या बात है? प्यारे रंजन, तुमने मुझ पर क्या जादू कर दिया।

(मिसेज विलियम आती है)

मिसेज विलियम — तू यहाँ कब तक बैठी रहेगी, जेनी! अब तो शबनम पड़ने लगी?

जेनी — कमरे में तो मेरा दम घुटता है मामा!

मिसेज विलियम — मैं बहुत अच्छा पुडिंग बनाया है। चल थोड़ा-सा खा ले। तूने दिन-भर कुछ नहीं लिया। जरा आईने में अपनी सूरत देख। जैसे छः महीने की रोगिनी हो।

जेनी — मेरी अभी कुछ खाने की इच्छा नहीं है, मामा! क्षमा करो। इधर कई दिनों से रंजन को कोई खत नहीं आया। मेरा दिल धड़क रहा है। कहीं दुश्मनों की तबियत खराब न हो।

मिसेज विलियम — जब तेरी तबियत का यह हाल है तो क्यों रंजन से विवाह नहीं कर लेती? वह बेचारा हर तरह राजी है, पर

तुझे न जाने क्या खब्त हो गया है। खुद भी मरती है और उस बेचारे को भी रुलाती है। जब वह धर्म की ओर संबंधियों की परवाह नहीं करता तो उससे क्यों नहीं कहतीं — प्रभु मसीह पर ईमान लाए। प्रेम का उद्देश्य जीवन का सुख है, या सारी उम्र रोते रहना?

जेनी — यही तो मैं भी सोचती हूँ। मुझे में तो कोई तब्दीली हो न जाती, हाँ उनके समाज को संतोष हो जाता। अगर मैं जानती, उनका हृदय इतना कोमल है तो उन्हें छोड़कर न आती। मुझे तो अब अपनी जिद्द पर पछतावा हो रहा है। धर्म और सिद्धांत आदमी के लिए हैं। आदमी उनके लिए नहीं हैं। मामा, मैं तुमसे अपनी विकलता क्या कहूँ। ऐसा मन होता है कि पर होते तो इसी वक्त उड़कर पहुँच जाती और कहती — डार्लिंग, मुझे क्षमा करो। यह तीन महीने मैंने जिस तरह काटे हैं, वह तुमने देखा है? एक क्षण के लिए भी उनकी सूरत आँखों से नहीं उतरी। ऐसे प्रेम पर अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले प्राणी भी संसार में हैं, वह मैंने उन्हीं को देखा। मुझे स्वर्ग की विभूति मिल रही थी, मामा! मैंने समाज के भय से उसे ठुकरा दिया। मैंने समझा था मामा, मेरे चले जाने के बाद भोग-विलास में उनका जी बहल जाएगा, फिर किसी युवती से विवाह करके इनका जीवन सुखी हो जाएगा। क्या जानती थी वह मेरे वियोग में अपने को घुला

डालेंगे। कल अगर उनका पत्र न आएगा तो मैं चली जाऊँगी मामा! तब मुझे तुम्हारी बड़ी चिंता थी, मामा? मैं डरती थी कहीं मैं उनसे विवाह कर लूँ तो तुम जहर न खा लो। अब मैं तुम्हारी ओर से भी निश्चिंत हूँ।

मिसेज विलियम — क्या तू समझती है विलियम से शादी कर लेने से मेरे दिल में तेरी मुहब्बत नहीं रही?

जेनी — यह बात नहीं है मामा! कम-से-कम तुम्हारे साथ एक आदमी तो है, जो तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।

मिसेज विलियम — विलियम मेरे पीछे पड़ गया, प्राण दिए देता था, नहीं, इस उम्र में मुझे शौहर की हवस नहीं थी।

जेनी — तो मैं तुम्हें कुछ कहती थोड़े ही हूँ मामा! विलियम में अगर दो-एक बुराइयाँ हैं तो हजारों खूबियाँ भी है। मैं तो ज्यों-ज्यों उसका परिचय पाती हूँ, उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती है। वह सचमुच ही तुम्हारे योग्य थे, मामा!

(तार का चपरासी तार लाता है। जेनी का रंग उड़ जाता है। काँपते हुए हाथों से लेती है और पढ़ते ही मूर्छित होकर गिर पड़ती है — Yograj breathed his last with Jenny's name on his lips to the last moment.)

मिसेज विलियम — या खुदा, या मेरे परवरदिगार, यह क्या गजब हुआ।

(जेनी के हृदयस्थल पर हाथ रखती है। फिर बदहवास दौड़ी अंदर जाती है और गुलाबजल लाकर जेनी के मुख पर छिड़कती है। समीप कोई पंखा न होने के कारण उस समाचार-पत्र से हवा करती है, जो जेनी ने पढ़कर कुर्सी के नीचे रख दिया था। बीच-बीच में खुदा का नाम लेती है और इंतजार भरी आँखों से फाटक की ओर देखती है कि विलियम आता होगा। एक मिनट के बाद जेनी सचेत हो जाती है)

जेनी — मैं बिल्कुल अच्छी हूँ मामा, तुम जरा न घबराओ। न जाने कैसा जी हो गया था, जैसे दिल बैठ गया हो। अब बिल्कुल अच्छी हूँ। इसका भय तो मुझे पहले से था। जिस वक्त मैं वहाँ से चली उसी वक्त उनकी हालत देखकर मुझे शंका हुई थी, लेकिन मैंने सोचा मर्द है, दस-पाँच दिन में इनका जी बहाल हो जायगा। क्या जानती थी वह दिन देखना पड़ेगा।

(एक क्षण में उसकी आँखें फिर चंचल हो जाती हैं। हिस्टीरिया की-सी दशा हो जाती है)

कौन कहता है वह मर गए? बिल्कुल झूठ है। वह मेरे सामने हैं, मेरी आँखों में हैं, मेरे हृदय में हैं। हाँ, उसी तरह खड़े मुझे प्रेमातुर नेत्रों से देख रहे हैं। जरा उनकी नटखटी तो देखो मामा, परदे की आड़ में छिप-छिपकर मुझे धोखा देते हैं। मुँह धो रखिए, मैं ऐसे धोखों में नहीं आने की।

(यकायक उठकर कमरे की तरफ चलती है। उसकी माँ भी पीछे-पीछे आती है। जेनी अपनी मेज पर से योगराज का चित्र उठाकर उसे हृदय से लगाती है और उसका चुम्बन लेती है!)

मिसेज विलियम — जेनी खुदा के लिए दिल को समझाओ।

जेनी — दिल को समझाकर क्या होगा, मामा। अब वह किसके काम का है। फिर जब वह मेरे पास भी हो! वह तो रंजन के साथ गया, नहीं मैं इस तरह बैठी रहती? रंजन मर जाते और मैं इस तरह बैठी रहती? ऐं! मैं इस तरह बैठी रहती! आँखों से खून निकल पड़ता, मेरी लाश जमीन पर पड़ी होती। लेकिन मैं यहीं बैठी हूँ, जैसे मुझे कुछ हुआ ही नहीं है।

(वह तस्वीर को मेज पर रख देती है और योगराज के पत्रों को निकालती है जो एक मखमली केस में रखे हुए हैं)

मेरी अच्छी मामा, जरा बैठ जाओ, मैं तुम्हें उनके पत्र सुनाऊँ —

'मेरी बेवफा जेनी!' मैं उस वक्त उनसे रूठ गई थी कि मुझे बेवफा क्यों कहा; लेकिन अब मालूम हुआ उन्होंने मुझे खूब पहचान लिया था। बेवफा तो मैं हूँ ही, नहीं उन्हें वहाँ छोड़कर चली आती। मैं बेवफा हूँ, बेदर्द हूँ, मायाविनी हूँ! हाय! ये गालियाँ कितनी प्यारी लगती हैं। तब मैंने उन्हें डाँट बताई थी! इस आक्षेप को स्वीकार न सकती थी। अब मुझे कौन बेवफा कहेगा? कौन बेदर्द कहेगा! कौन मायाविनी कहेगा? अब किसके साथ बेवफाई करूँगी? मामा, बताओ कैसे दिल को समझाऊँ? कैसे इस अभागे को समझाऊँ?

(सिर से बाल नोचती है। मिसेज विलियम उसे छाती से लगाती है)

मिसेज विलियम — बेटा! जेनी, मेरा कलेजा।

जेनी — मामा मैं भूली जाती हूँ, उन्हें छोड़कर यहाँ क्या करने आई थी। बिल्कुल याद नहीं आता। बताओं मैं यहाँ क्या करने आई थी? मैंने क्यों उन्हें कत्ल किया? हाँ, याद आ गया। उनके

कुल-मर्यादा और धर्म की रक्षा करने के लिए! अपने धर्म की रक्षा करने के लिए! सोचो इस अनर्थ को? जिसके चरणों पर अपने प्राणों को अर्पित कर देना मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा थी, उसे मैंने इन्हीं हाथों से कत्ल कर दिया। मैंने नहीं, मेरे धर्म ने कत्ल कर दिया। धर्म ने भी नहीं, मेरी अभिलाषा ने कत्ल किया। लोगों ने यह तरह-तरह के मत बनाकर संसार में कितना विष बोया है, कितनी आग लगाई है, कितनी द्वेष फैलाया है। क्या धर्म इसीलिए आया है कि आदमियों की अलग-अलग टोलियाँ बनाकर उनमें भेद-भाव भर दे? ऐसा धर्म लुटेरों का हो सकता है, स्वार्थियों का हो सकता है, मूर्खों का हो सकता है, ईश्वर का नहीं हो सकता।

मिसेज विलियम — बेटा, धर्म खुदा ने न भेजा होता, तो दुनिया अब तक तबाह हो गई होती। आदमी-आदमी को खा गया होता। बाइबिल तो खुदा का कलामे पाक है।

जेनी — खुदा के तो सभी कलामे पा हैं; लेकिन उन पाककलामों ने संसार का क्या उपकार किया, इंसान की इंसानियत को कितना सुधारा? आज दौलत जिस तरह आदमियों का खून बहा रही है, उसी तरह, उससे ज्यादा बेदर्दी से, धर्म ने आदमियों का खून बहाया है। दौलत कम-से-कम इतनी निर्दय, कठोर नहीं होती! लेकिन दौलत वही कर रही है, जिसकी उससे आशा थी, धर्म तो प्रेम का संदेश लेकर आता है और काटता है — आदमियों का

गला! वह मनुष्य के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर देता है जिसे पार नहीं किया जा सकता। आखिर सम्पूर्ण जगत की एक ही आत्मा तो है। धर्म का यह भेद क्या आत्मा की एकता को मिटा सकता है? वह खुदा जो एक-एक अणु में मौजूद है, उसे हम गिरजे और मसजिद और मंदिरों में बन्द कर देते हैं और एक-दूसरे को काफिर और म्लेच्छ कहते हैं। पूछो, उन विश्वात्मा को तुम्हारे इन झगड़ों से क्या मतलब? उसे इसकी क्या परवाह कि तुम गिरजे में जाते हो या मसजिद में। वह तो केवल इतना देखती है, कि तुम प्रेम से रहते हो या नहीं! उसके मुक्त प्रवाह में जो कोई भी मेंड़ बाँधेगा, वह प्रकृति के नियम को तोड़ेगा और उसे इसकी सजा जरूर मिलेगी। हम आए दिन वह सजा पा रहे हैं, फिर भी हमारी आँखें नहीं खुलतीं, आदमी की शक्ति है कि उस जगदात्मा को टुकड़ों में बाँट सके? उस व्यापक चेतना को! कभी नहीं। यह तो कोई धर्म नहीं।

मिसेज विलियम — खुदा ने केवल हमारे नबी को भेजा था।

जेनी — खुदा ने किसी नबी को नहीं भेजा, मामा। हमारे जितने धर्म हैं, सभी बिगड़े हुए समाज को सुधारने की तदबीरें हैं, लेकिन धर्मों पर खुदा की कुछ ऐसी मार है कि वह आते तो हैं सुधार के लिए; लेकिन उल्टे और बिगाड़कर जाते हैं। यह वही पुराने जमाने की गिरोह बन्दी है, जब गुफाओं में बसने वाला आदमी

हिंसक पशुओं या अपनी ही जाति की दूसरी टोलियों में अपनी रक्षा करने के लिए गिरोह बनाकर रहता था। नबी आए, वली आए, अवतार हुए, खुदा खुद आया। बार-बार आया। नतीजा क्या हुआ? लड़ाई और कत्ल! रंग का भेद, नस्ल का भेद, इन सब भेदों को मिटाने का ठेका लिया था धर्म ने! लेकिन वह स्वयं भेद का कारण बन गया — ऐसे भेद का — जो सब भेदों से कठोर है। मैं तुम्हारी लड़की हूँ, मुझे तुमने अपने प्राणों का रक्त पिलाकर पाला है। मैं जानती हूँ तुम्हें संसार में मुझसे न्यारी कोई वस्तु नहीं हैं; लेकिन आज मैं गिरजे न जाकर मस्जिद में प्रार्थना करने जाऊँ तो तुम मेरी सूरत से नफरत करोगी। संभव है, अपने हाथों से मेरी हत्या कर डालो। मैं भी वही हूँ, तुम भी वही हो, फिर यह द्वेष कहाँ से आ गया। मैं कहती हूँ यह धर्म का प्रसाद है जिसने हमारे मन को संकीर्ण बना डाला है।

मिसेज विलियम — तू मुझे इतनी धर्मान्ध समझती है, बेटी! मुझे अफसोस जरूर होगा, मैं खुदा से तेरी मुक्ति के लिए दुआ करूँगी, लेकिन तेरा अहित नहीं कर सकती, कभी नहीं।

जेनी — मामा, खुदा तुझे जन्नत में जगह दे, तुमने मेरे हृदय का बोझ उतार दिया। अब मुझे कोई शंका नहीं, कोई बाधा नहीं। आज मैं इन सारे ढकोसलों को, इन सारे बनावटी बंधनों को, 'प्रेम की वेदी' पर अर्पण करती हूँ। यही ईश्वर का धर्म है। धन का

धर्म है, विद्या का धर्म, राष्ट्र का धर्म संघर्ष हो सकता है। खुदा का धर्म प्रेम है और इसी धर्म को स्वीकार करती हूँ। शेष धोखा है। आप फौरन मोटर मँगवाइए। गाड़ी तो दो बजे रात को जाएगी। मैं उसका इंतजार नहीं सकती। मोटर से जाऊँगी। सबेरे तक पहुँच जाऊँगी। वहीं प्रभात के शुभ-मुहूर्त में रंजन से मेरा विवाह होगा, बड़ी धूमधाम के साथ, हवन-कुंड की परिक्रमा करके, श्लोक और मंत्र पढ़कर। मेरे लिए आलटर और हवन-कुंड में कोई अन्तर नहीं रहा। मुझे शक्ति दो ईश्वर! कि आजीवन इस व्रत को निभा सकूँ। परम पिता! मुझे बल दो, धैर्य दो, और बुद्धि दो।

•••